पंजीयन संख्या / RNI No.:-TELHIN/2016/70799
ISSN : 2456-9445
पीयर रिव्यूड एंड रेफर्ड जर्नल
यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित

समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड-9, अंक-1, पौष-फाल्गुन, 2081 / जनवरी-मार्च, 2025

(साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित दिगंबर कवि निखिलेश्वर पर केंद्रित अंक)

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
हैदराबाद केंद्र
(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

पद्मभूषण डॉ. मोटूरि सत्यनारायण

(2 फरवरी, 1902 – 6 मार्च, 1995)

आंध्र प्रदेश के कृष्णा जिले के दोण्डपाडु ग्राम में जन्मे, केंद्रीय हिंदी संस्थान के संस्थापक, हिंदी सेवी, पद्मभूषण श्री मोटूरि सत्यनारायण जी भारतीय संविधान सभा के सदस्य के रूप में हिंदी को राजभाषा के पद पर आसीन करवाने वालों में से थे। उनकी स्मृति में संस्थान द्वारा प्रति वर्ष भारतीय मूल के दो विद्वानों को विदेशों में हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

RNI No.:-TELHIN/2016/70799
पीयर रिव्यूड एंड रेफर्ड जर्नल
यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित

ISSN : 2456-9445

समन्वय दक्षिण

दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति केंद्रित पत्रिका

खंड–9, अंक–1, पौष–फाल्गुन, 2081/जनवरी–मार्च, 2025

संरक्षक

प्रो. सुरेंद्र दुबे
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी मंडल, आगरा
ई–मेल : vcofficekhs@gmail.com

परामर्श मंडल

प्रो. आर. एस. सर्राजू
पूर्व सम–कुलपति, हैदराबाद विश्वविद्यालय, हैदराबाद
ई–मेल : rssarraju@gmail.com

डॉ. जयशंकर बाबू
सह आचार्य एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुच्चेरी
ई–मेल : professorbabuji1@gmail.com

डॉ. संदीप रणभीरकर
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी, कर्नाटक
ई–मेल : sandeepvr25@gmail.com

डॉ. ए. अच्युतन
सेवानिवृत्त प्रोफेसर, कालीकट विश्वविद्यालय, कालीकट, केरल
ई–मेल : achyuthpanchamvedi@yahoo.com

प्रो. एम. ज्ञानम
पूर्व क्षेत्रीय निदेशक, कें.हिं.सं., मैसूर केंद्र
ई–मेल : gandhignanam@yahoo.co.in

प्रधान संपादक

प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी
निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल : directorkhs1960@gmail.com

संपादक

डॉ. गंगाधर वानोडे
क्षेत्रीय निदेशक, कें.हिं.सं., हैदराबाद केंद्र
ई–मेल : gdwanode@gmail.com

सह–संपादक

डॉ. रंजीत भारती
क्षेत्रीय निदेशक, कें.हिं.सं., मैसूर केंद्र
ई–मेल : cihmysore@gmail.com

संपादक मंडल

डॉ. फत्ताराम नायक
एसोसिएट प्रोफेसर, कें.हिं.सं., हैदराबाद केंद्र
ई–मेल : fattaramnayak@gmail.com

डॉ. योगेंद्र मिश्र
एसोसिएट प्रोफेसर, कें.हिं.सं., मैसूर केंद्र
ई–मेल : ymishra1967@gmail.com

प्रकाशन प्रबंधक

डॉ. निरंजन सिंह
पुस्तकाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
ई–मेल publicationmanagerkhs@gmail.com

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

हैदराबाद केंद्र

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

दक्षिण भारत की भाषा, संस्कृति, शिक्षा, साहित्य एवं समाज आधारित रचनाओं (मौलिक, अनूदित एवं तुलनात्मक) की हिंदी में प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका– **समन्वय दक्षिण** (पीयर रिव्यूड एंड रेफर्ड जर्नल)। **यह पत्रिका यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित है।**

खंड–9, अंक–1, पौष–फाल्गुन, 2081 / जनवरी–मार्च, 2025

स्वामित्व © : **सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा**

प्रकाशक : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र

संपादकीय कार्यालय : क्षेत्रीय निदेशक, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र
सर्वे नं. 9, बापूजी नगर, सौजन्या कॉलोनी के पास,
पोस्ट–बोयनपल्ली, सिकंदराबाद–500011 (तेलंगाना)
फोन / फैक्स – 040–29561035
मोबाइल – 9456010035
ई–मेल – khshyderabad@yahoo.com

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत प्रति अंक रु. 40.00, वार्षिक रु. 150.00
संस्थागत वार्षिक शुल्क रु. 250 / –
(डाक व्यय प्रति अंक रु.35 / – तथा
वार्षिक रु.100 / – अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक $ 10, वार्षिक $ 40.00

सहयोग : **डॉ. एस. राधा / डॉ. संदीप कुमार**

कला एवं परिकल्पना : **डॉ. विजय एम. ढोरे**

मुद्रक : **कर्षक आर्ट प्रिंटर्स, हैदराबाद**

आवरण चित्र : **दिगंबर कवि निखिलेश्वर**

• इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं के विचारों से केंद्रीय हिंदी संस्थान या संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक एवं अनिवार्य नहीं है।
• प्रकाशित सामग्री के उपयोग के लिए स्वामी / प्रकाशक की अनुमति आवश्यक है।

संस्थान वेबसाइट : **www.khsindia.org**

अनुक्रम

आमुख : डॉ.सुनील बाबुराव कुळकर्णी 5

संपादकीय

संपादक की कलम से : डॉ. गंगाधर वानोडे 7

आलेख

1. 'दिगंबरता की मानवता' शब्दाग्रह के अन्वेषी निखिलेश्वर : आई. एन. चंद्रशेखर रेड्डी 9
2. दिगंबर काव्यांदोलन : एक अवलोकन (निखिलेश्वर के विशेष संदर्भ में) : ऋभषदेव शर्मा 18
3. निखिलेश्वर की कहानियों में मानवीय एवं सामाजिक चेतना : देवा प्रसाद मायला 22
4. तेलुगु–हिंदी साहित्य के पर्यवेक्षक निखिलेश्वर: के. श्यामसुंदर 28
5. तेलुगु की दिगंबर कविता और निखिलेश्वर : विनीता कृष्णा 33
6. निखिलेश्वर के 'इतिहास के मोड़ पर' में हाशिए का समाज : अजित चुनिलाल चव्हाण 44
7. निखिलेश्वर के काव्य में व्यक्त सामाजिक और राजनीतिक चेतना : लक्ष्मणाचार्युलु म. 53
8. निखिलेश्वर के काव्य में व्यक्त सामाजिक–राजनीतिक चेतना : दत्ता शिवराम साकोले 60
9. दिगंबर कवि निखिलेश्वर का काव्यात्मक संसार : सुरेश कुमार मिश्रा 64
10. निखिलेश्वर के काव्य में असंतोष और विद्रोह: सुपर्णा मुखर्जी 68
11. दिगंबर कविता के एक हस्ताक्षर निखिलेश्वर : अपर्णा चतुर्वेदी 74
12. तेलुगु कवि निखिलेश्वर की कविता में चित्रित प्रगतिशील विचार : एक अवलोकन : दोड्डा शेषु बाबु 77
13. सदैव जिंदा रहने का वरदान प्राप्त दिगंबर कवि–निखिलेश्वर : प्रवीण प्रणव 82
14. निखिलेश्वर के काव्य में यथार्थबोध : एल. अनिल 90
15. 'गुड़िया भीतर गुड़िया' रूपी व्यवस्था पर दिगंबर बाण 'अग्नि श्वास'–विद्रोही लेखक निखिलेश्वर : टी. सी. वसंता 96
16. निखिलेश्वर के काव्य में व्यक्त सामाजिक और राजनीतिक चेतना : प्रकाश 100
17. निखिलेश्वर की चुनिंदा कविताओं में चित्रित मानवीय संवेदनाएँ : रजनी धारी 105
18. तेलुगु की दिगंबर कविता और साहित्य : संतोष वसंत कांबळे 109

	अकादमी से पुरस्कृत निखिलेश्वर का काव्य	: अजित चुनिलाल चव्हाण	
19.	मानवीय संवेदनाओं के सशक्त स्वर : कवि निखिलेश्वर	: सुरभि दत्त	115
20.	दिगंबर कवि निखिलेश्वर का व्यक्तित्व व कृतित्व	: पुट्टपर्ति नाग पद्मिनी	125
21.	निखिलेश्वर के काव्य में व्यक्त सामाजिक चेतना	: टी. श्रीलक्ष्मी	136
22.	मानवतावाद के हस्ताक्षर कवि निखिलेश्वर	: जयप्रकाश नागला	139

- **लेखकों के नाम और पते**
- **सदस्यता फॉर्म**
- **आलेख की मौलिकता/कॉपीराइट फॉर्म**
- **संस्थान का संक्षिप्त परिचय**

आमुख

'समन्वय दक्षिण' पत्रिका केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के हैदराबाद केंद्र से प्रकाशित दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति पर केंद्रित पत्रिका है जिसमें दक्षिण भारतीय साहित्य, संस्कृति, भाषा, कला आदि पर शोध आलेख आमंत्रित किए जाते हैं। दक्षिण भारतीय संस्कृति का अर्थ दक्षिण भारतीय राज्यों तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल की संस्कृति से है। तेलुगु, तमिल, कन्नड और मलयालम भाषा–भाषी इलाकों में हिंदी पारस्परिक संपर्क का माध्यम ही नहीं बल्कि साहित्यिक अभिव्यंजना की वाहिका भी है।

'समन्वय दक्षिण' के प्रस्तुत अंक में तेलुगु साहित्य के दिगंबर कविता आंदोलन के प्रवर्तक कवि निखिलेश्वर जी की साहित्यिक यात्रा पर केंद्रित है। जनवरी–मार्च, 2025 का यह अंक तेलुगु की आधुनिक कविता में निखिलेश्वर जी में मार्क्सवादी विचारों द्वारा नई क्रांति का अघोष है।

तेलुगु साहित्य के अंतर्गत निखिलेश्वर को 'क्रांतिकारी लेखक संघ' के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। इनके सात कविता संकलन एवं पाँच गद्य रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। इन्होंने अन्य भाषाओं में रचित साहित्य का तेलुगु भाषा में अनुवाद भी किया। एक अंग्रेज़ी अध्यापक होते हुए एक समाज सुधारक कवि के रूप में सामाजिक आंदोलन में सक्रिय रहे हैं। निखिलेश्वर को उनकी तेलुगु कृति 'अग्निश्वासा' कविता संग्रह के लिए सन् 2020 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। निखिलेश्वर ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के दलित, निम्न एवं हाशिए के समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। उनकी कविताओं में मार्क्सवादी चिंतन का भी प्रभाव दिखाई देता है।

'गंदगी के चारों ओर/चक्कर लगाते
रीढ़–विहीन बुद्धिजीवी/अपार अमृत जन सागर में
गिरता विष–बिंदु।'

कवि की इन पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि कवि जनता को सर्वोपरि मानते हैं। उन्हें पूर्ण विश्वास है कि जनता अगर विप्लव का बिगुल बजाएगी तो कहीं कोई भ्रष्टाचारी नेता, पाश्विक आतंकवादी अपने आपको सुरक्षित नहीं रख सकेगा।

कुंभम यादव रेड्डी 'निखिलेश्वर' का जन्म सन् 1938 में गाँव वीरावल्ली जिला यादाद्री, तेलंगाना में हुआ। उन्होंने उस्मानिया विश्वविद्यालय से बी.ए. और बी.एड्. की उपाधि प्राप्त की। 1960–1964 तक उन्होंने क्लर्क के रूप में काम किया। 1964–1966 तक 'गोलकोंडा' पत्रिका दैनिक समाचार पत्र में संपादक के रूप में अपनी सेवा प्रदान की। 1966–1996 तक उन्होंने केशव मेमोरियल स्कूल में अंग्रेज़ी के अध्यापक के रूप में अपनी सेवा प्रदान की।

1979–1982 तक वे 'जन साहिती समस्कृतिका समक्या' नामक संस्था के प्रवर्तक और सदस्य रहे। इसके अलावा वे अनेकों संस्थाओं के सदस्य रहे।

साहित्य अकादमी पुरस्कार से पुरस्कृत, तेलुगु एवं हिंदी भाषा पर भी अपनी पकड़ रखनेवाले, मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित तेलुगु कवि एवं साहित्यकार 'निखिलेश्वर' जी पर शोध पत्रिका का विशेषांक प्रकाशित कर हम बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं। 'समन्वय दक्षिण' पत्रिका के इस अंक में जिन लेखकों ने शोध–सामग्री प्रकाशन हेतु भेजी है, मैं उनका एवं संपादक, परामर्श मंडल और उनके सहयोगी को बहुत–बहुत बधाई देता हूँ। जिनके सद्प्रयासों से यह बेहतरीन अंक प्रकाशित हो रहा है।

धन्यवाद।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी
प्रधान संपादक 'समन्वय दक्षिण'
निदेशक
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

संपादक की कलम से

दक्षिण भारत की झलक

'समन्वय दक्षिण' पत्रिका में दक्षिण भारतीय साहित्य, संस्कृति, भाषा, कला आदि पर आलेख आमंत्रित किए जाते हैं। दक्षिण भारतीय संस्कृति का अर्थ दक्षिण भारतीय राज्यों तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, पांडिचेरी और केरल की संस्कृति से है। तेलुगु, तमिल, कन्नड़ और मलयालम भाषा–भाषी इलाकों में हिंदी पारस्परिक संपर्क का माध्यम ही नहीं, बल्कि साहित्यिक अभिव्यंजना की वाहिका भी है। दक्षिण भारत में अधिक संख्या में हिंदी में अनूदित साहित्य ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैं। दक्षिण भारतीय साहित्य, भाषा, कला, संस्कृति आदि को देशभर से परिचय कराना ही इस पत्रिका का मूल उद्‌देश्य है।

'समन्वय दक्षिण' का प्रस्तुत अंक खंड–9, अंक–1, पौष–फाल्गुन, 2081/जनवरी–मार्च, 2025 साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित तेलुगु भाषी साहित्यकार श्री निखिलेश्वर के साहित्य लेखन पर केंद्रित है। उनका पूरा नाम 'कुंभम यादव रेड्डी' है। निखिलेश्वर का जन्म सन् 1938 को तेलंगाना के यदाद्री जिले के वीरावल्ली गाँव में हुआ। आपने अंग्रेजी विषय के शिक्षक के रूप में नौकरी की। आपने तेलुगु, अंग्रेजी तथा हिंदी में लेखन कार्य किया। आपकी रचनाओं का अनुवाद भी हिंदी में हुआ। आपकी क्रांतिकारी रचनाओं, तथा विचारों के आधार पर आपको 'दिंगबर कवि' भी कहा जाता है। आपको क्रांतिकारी कविताएँ लिखने के कारण 1971 में आंतरिक सुरक्षा अधिनियम के अंतर्गत जेल भी भेजा गया था। आप छह 'दिगंबर कावुलु' में से एक हैं। आपको आपकी रचना 'अग्निश्वासा' के लिए केंद्रीय साहित्य अकादमी द्‌वारा सन् 2020 में सम्मानित किया गया। केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के हैदराबाद केंद्र द्‌वारा आपकी साहित्यिक यात्रा पर 14–15 मार्च, 2024 को राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई थी। इस दौरान संस्थान ने भी आपको सम्मानित किया।

प्रस्तुत अंक में कुल 22 शोधपरक लेख हैं। डॉ. आई. एन. चंद्रशेखर रेड्डी ने 'दिगंबरता की मानवता' शब्दाग्रह के अन्वेषी निखिलेश्वर विषयक लेख में आपके व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। डॉ. ऋषभदेव शर्मा द्‌वारा 'दिगंबर काव्यांदोलन : एक अवलोकन' (निखिलेश्वर के विशेष संदर्भ में) लेख साभार प्राप्त हुआ। डॉ. देवा प्रसाद मायला ने निखिलेश्वर की कहानियों में मानवीय एवं सामाजिक चेतना पर विस्तार से विवेचन प्रस्तुत किया। डॉ. के. श्याम सुंदर ने तेलुगु–हिंदी साहित्य के पर्यवेक्षक निखिलेश्वर विषयक लेख में अपने विचार प्रकट किए। डॉ. विनीता कृष्णा ने तेलुगु की दिंगबर कविता और निखिलेश्वर विषय पर अपना लेख प्रस्तुत किया। डॉ. अजित चुनीलाल चव्हाण ने निखिलेश्वर के 'इतिहास के मोड़ पर' में हाशिए का समाज विषयक लेख के माध्यम से उनके दूरदृष्टि पर प्रकाश डाला। डॉ. लक्ष्मणाचार्युलु म. ने निखिलेश्वर के काव्य में व्यक्त सामाजिक और राजनीतिक

चेतना विषयक लेख पर विवेचन प्रस्तुत किया। डॉ. दत्ता शिवराम साकोले ने 'निखिलेश्वर के काव्य में व्यक्त सामाजिक–राजनीतिक चेतना' विषयक लेख के माध्यम से अपने विचार विस्तार से प्रस्तुत किए। डॉ. सुरेश कुमार मिश्र ने 'दिगंबर कवि निखिलेश्वर का काव्यात्मक संसार' विषयक लेख में उनके साहित्य पर प्रकाश डाला। डॉ. सुपर्णा मुखर्जी ने 'निखिलेश्वर के काव्य में असंतोष और विद्रोह' विषयक लेख में विस्तार से जानकारी प्रस्तुत की है। डॉ. अपर्णा चतुर्वेदी ने 'दिगंबर कविता के एक हस्ताक्षर निखिलेश्वर' विषयक लेख प्रस्तुत किया गया।

डॉ. दोड्डा शेषु बाबु ने 'तेलुगु कवि निखिलेश्वर की कविता में चित्रित प्रगतिशील विचार : एक अवलोकन' विषयक लेख में उनकी साहित्यिक यात्रा की संपूर्ण जानकारी प्रदान की। डॉ. प्रवीण प्रणव ने 'सदैव जिंदा रहने का वरदान प्राप्त दिगंबर कवि–निखिलेश्वर' नामक लेख प्रस्तुत किया। डॉ. एल. अनिल ने 'निखिलेश्वर के काव्य में यथार्थबोध' नामक लेख प्रस्तुत किया। डॉ. टी. सी. वसंता ने 'गुड़िया भीतर गुड़िया रूपी व्यवस्था पर दिगंबर बाण 'अग्निश्वास'–विद्रोही लेखक निखिलेश्वर' विषयक लेख के माध्यम से उनके रचनात्मक दृष्टिकोण का परिचय दिया। डॉ. प्रकाश ने 'निखिलेश्वर के काव्य में व्यक्त सामाजिक और राजनीतिक चेतना' विषयक लेख में अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. रजनी धारी ने 'निखिलेश्वर की चुनिंदा कविताओं में चित्रित मानवीय संवेदनाएँ' विषयक लेख प्रस्तुत किया। श्री संतोष वसंत कांबळे तथा डॉ. अजित चुनिलाल चव्हाण द्वारा तेलुगु की दिगंबर कविता और साहित्य अकादमी पुरस्कृत निखिलेश्वर का काव्य' लेख प्रस्तुत किया। डॉ. सुरभि दत्त ने 'मानवीय संवेदनाओं के सशक्त स्वर : कवि निखिलेश्वर' विषयक लेख में अपने विचार व्यक्त किए। डॉ. पुट्टपर्ति नाग पद्मिनी ने 'दिगंबर कवि निखिलेश्वर का व्यक्तित्व व कृतित्व' विषयक लेख प्रस्तुत किया। डॉ. टी श्रीलक्ष्मी ने 'निखिलेश्वर के काव्य में व्यक्त सामाजिक चेतना' विषयक लेख के माध्यम से जानकारी प्रस्तुत की। डॉ. जयप्रकाश नागला ने 'मानवतावाद के हस्ताक्षर कवि निखिलेश्वर' विषयक लेख प्रस्तुत किया।

इस तरह 'समन्वय दक्षिण' का यह अंक केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित तेलुगु साहित्यकार दिगंबर कवि निखिलेश्वर के साहित्य लेखन पर प्राप्त शोधपरक आलेखों से सुसज्जित है। लेखकों ने अपने शोधालेख प्रस्तुत कर इस अंक को सुशोभित किया। जिन रचनाकारों ने अपनी रचनाएँ उपलब्ध कराकर इस अंक को ज्ञानवर्धक एवं समृद्ध किया है, उन सभी को साधुवाद साथ ही सभी सहयोगियों को भी साधुवाद। सभी लेखकों से अपेक्षा है कि इस पत्रिका के प्रति आपका अनुराग यथावत बना रहेगा। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि पाठकों को यह अंक पसंद आएगा। आपके अमूल्य सुझावों एवं प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

डॉ. गंगाधर वानोडे
संपादक एवं क्षेत्रीय निदेशक
केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र
ई–मेल : khshyderabad@yahoo.com

आलेख

'दिगंबरता की मानवता' शब्दाग्रह के अन्वेषी निखिलेश्वर

आई. एन. चंद्रशेखर रेड्डी

शोध सार : आधुनिक तेलुगु कविता ने तटवर्ती आंध्र प्रदेश की तरह अनेक बवंडरों, तुफानों एवं सुनामियों को झेला है। समय समय पर विविध काव्यांदोलन उस में हुए हैं। दिगंबर कविता आंदोलन भी ऐसा ही एक आंदोलन है जिसने कम समय में पाठकों को अपनी तेज शक्ति से चकाचौंध करने के साथ साथ मानवता को विकीर्ण किया है। निखिलेश्वर मूलतः इस काव्यांदोलन के प्रतिनिधि रहे है। अपनी साठ साल की साहित्य–साधना में सदा उन्होंने एक ऐसे मनुष्य की तलाश की है। उन्होंने अपनी पूरी संवेदना को पूरी ईमानदारी और बल के साथ समर्थन किया है। वह ऐसा लघुमानव या साधारण मनुष्य है। कवि निखिलेश्वर ऐसे सामान्य मनुष्य के प्रति असीम अनुकंपा व्यक्त करते हैं। ऐसे सामान्य मनुष्य की अंतरात्मा को छूकर अपनी अंतरात्मा की पुकार को उन्होंने शब्दों के माध्यम से आकार दिया है। सदा उसी मनुष्य के प्रति वे रहना पसंद करते हैं। वह मनुष्य अल्पजीवी चींटी की तरह है। कवि निखिलेश्वर का यह मानवतावादी प्रतीक ही चीटी है। उन की समस्त विचार धारा और संवेदना इसी चींटी की चारों ओर घूमती आक्रमण करती दिखाई देती है। निखिलेश्वर ने मनुष्यों में ऐसे मनुष्य की खोज निकाली है जो सब की सहानुभूति और हृदयस्पर्शी प्रतिक्रिया व्यक्त करने के योग्य है। उन की संपूर्ण काव्य साधना में ऐसे लघु मानव या सामान्य मनुष्य के दर्शन होते हैं।

बीज शब्द : दिगंबरता–वस्त्रहीनता, नग्नता–आत्म–दर्शन, आत्म स्तैर्य–आत्म विश्वास, अल्पजीवी–लघु मानव, लघु प्राणी जैसी चींटी, अनुकंपा–सहानुभूति, अन्वेषी–खोज करनेवाला, नट्ट नडि संद्राना–बीच सागर में, अहरम–हमेशा, मनुगड–अस्तित्व, चरम श्वासल–अंतिम साँस, अमरावती–नए आंध्र प्रदेश की घोषित राजधानी, मल्लन्न सागर–तेलंगाना राज्य का एक रिजरवायर।

समाज सो गया अफीम खाकर/जगाना होगा ऐसे शब्दों से उनकी/आंतडियों को टटोल कर/आंखें खोलनी होगी न आँसू बहाकर/विसर्जन करना होगा/जो खाया अपहार पूरे को/शब्दों की दिगंबरता की जरिए/षाक ट्रीट मेंट से अफीम को उगलाना होगा।

आधुनिक तेलुगु कविता समेकित आंध्र प्रदेश के तटवर्ती आंध्र की तरह नित्य तूफानों, बवंडरों एवं सुनामियों का सामना करती आई है। अन्य भारतीय भाषा साहित्यों की तरह तेलुगु कविता भी बीसवीं सदी के प्रथमार्ध में ही पूरी तरह आधुनिक बनी है। अनेक साहित्यांदोलनों की अंतर्ज्वालाओं को लेकर

तेलुगु कविता आजादी के पहले और बाद में तुरंत भभक उठी है। तेलुगु कविता में व्यावहारिक भाषांदोलन के साथ साथ भाव कविता, अभ्युदय कविता, दिगंबर कविता, विप्लव कविता, वचन कविता आदि आंदोलनों की अग्नि–ज्वालाओं से जलकर कांतिमय एवं समाजोपयोगी बन कर समाज सापेक्ष प्रयोजनकारी सिद्ध हुई है। तेलुगु कविता आधुनिक काल के उत्तरोत्तर आंदोलनों के उर्वरक खेती बनी है। आगे दलित, नारी, मैनारिटी आदि अनेक वर्ग–उपवर्गों में उसकी शाखाओं को पहचान कर उस का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है।

जैसे बार–बार सोने को जलाने से उसका निखार बढ़ता जाता है वैसे ही तेलुगु की आधुनिक कविता बार–बार के आंदोलनों से निखरती गई है। इस में किस आंदोलन का कितना योगदान है यह कहना आसान नहीं है। व्यावहारिक भाषा आंदोलन के साथ–साथ अंतर्लीन रूप से उद्भूत इन सारे आंदोलनों ने तेलुगु की कविता को अधिक उर्वरक बना दिया है। ऐसे ही एक उर्वरक एवं नेत्रों को भयभीत एवं उज्जवलमय बिजली की चकाचौंध की तरह धमकानेवाला आंदोलन 'दिगंबर कविता' का आंदोलन रहा है। कम समय के लिए ही सही, कम काव्य संग्रहों के प्रकाशित कराने से ही सही यह काव्यांदोलन आधुनिक तेलुगु कविता में काफी समय तक चर्चित रहा है। जनता की आंखों को खोलना ही नहीं बल्कि कवि–साहित्यकारों के नेत्रों को चौडे करके देखने के लिए इसने विवश किया है। सन् साठ के बाद भारतीय समाज में पहले रोग की पहचान करके और उसका ट्रीटमेंट एक अलग ढंग से करने का प्रयास ही दिगंबर कवियों ने किया है।

दिगंबर कविता को समझना है तो उसकी पृष्ठभूमि और उसकी भाषा को समझना अत्यंत आवश्यक है। नहीं समझ पाने से ही सिर्फ तेलुगु में ही नहीं बल्कि पूरी भारतीय भाषाओं में ऐसी दिगंबर रचनाओं के प्रति गलतफहमियाँ उत्पन्न हुई हैं। उसे गाली गलौज तक का नामकरण करके उसे साहित्य से बहिष्कार करने की कोशिशें भी हुई हैं। उसकी पृष्ठभूमि और भाषा को समझने से ये सारी गलतफहमियाँ दूर हो जाती हैं। उसकी साहित्यिकता निखर आती है। उसका साहित्यिक धर्म समझ में आता है। यह विचार अमर और शाश्वत है कि साहित्य सदा मानवता का उद्गाथा है। साहित्य का कोई भी रूप इससे भिन्न हो ही नहीं सकता है। दिगंबर कविता भी सोलह आना मानवता का उद्गाथा रही है। उस के केंद्र में मनुष्य ही है। वह मनुष्य के लिए मनुष्य के द्वारा मानवोचित मूल्यों से लिखी गयी है। इस के लिए उस की भाषा को समझना होगा। उस के पहले उसकी पृष्ठभूमि को।

दिगंबर कविता का समय सन 1965 से 1975 तक ही रहा है। इतने कम समय में बाण–सूइयों की तरह दिगंबर कवियों ने कुछ ही तीर चला पाये हैं। यह समय वह समय है जब आधुनिकाल कहा जानेवाले बीसवीं सदी में एक नयी सोच, एक नया चिंतन, एक नयी विचारधारा की आवश्यकता को बुदधिजीवियों ने जन्म दिया है। अपमान, दमन, असंतुलन, महंगाई, असफलता, अराजकता से भरी व्यवस्था को ठीक करना आवश्यक समझा गया। आजादी

की लड़ाई लडकर आजादी को पानेवाली वह पीढ़ी कुछ ही सालों में देश के लिए नहीं बल्कि सिर्फ अपने लिए जीना शुरु कर दिया। आस पड़ोस के देशों से बुरी तरह पराजित होने के बाद देश के बुद्धिजीवियों की आंखें खुल गयी। व्यवस्था किसके अधीन है?, वह किस दिशा में जा रही है?, उस का क्या परिणाम होगा?, उससे प्रयोजन किसे होगा?, इसने सन 1960 के आस पास एक नयी विचारधारा को जन्म दिया। इस का नामकरण किया गया मोह भंग। क्या मोह था?, समसमाज की स्थापना। इतनी बड़ी लडाई आजादी के लिए लडी गयी। सिर्फ गोरों से काले बनने के लिए?, नए गोरे भारत में ही बने? सिर्फ राजा का नाम बदला। राजशासन नहीं बदला। बल्कि पहले से बदतर बन गया। भारत के आम नागरिक ने यह अनुभव किया कि स्वार्थी भारतीय जन मानस ने देश के उर्वरक सारे स्रोतों को अपनी मुट्ठी में धरकर अंधाधुंध शोषण शुरु किया है। समाज से सामाजिक न्याय उठ गया। समान अवसर, समान अधिकार कागजी आजादी के गुडिया बन कर रह गये। चेतना संपन्न भारतीय समाज चेतना हीन होकर आजादी की अफीम खाकर सो गया। अधिकार की बागडौर अपने हाथ में लेकर स्वार्थी नेताओं ने अधिकार को अपने लिए इस्तेमाल करना शुरु किया। भारत में नेता बनना आसान और आराम का हो गया। ऐसे में युवा पीढ़ी और उस का भविष्य खतरे में पड़ते देखा गया। ऐसी उस युवा पीढी और उस के भविष्य को बचाने की आवश्यकता हुई। इस पर सन् साठ के पहले के कवियों ने ही कुछ प्रकाश डाला है। अभ्युदय के नाम पर समाज की प्रगति और उपेक्षित के उन्नयन के लिए तेलुगु के अभ्युदय कवियों ने इस समाजिक व्यवस्था के विरोध में कविताएं प्रस्तुत की हैं।

दिगंबर कविता में व्यवस्था के प्रति विरोध, विद्रोह, विध्वंस करने के स्वर नहीं हैं। सिर्फ ऐसी गलतफहमी पैदा की गयी है। दिगंबर कवियों का विरोध और विद्रोह व्यवस्था के प्रति नहीं है बल्कि उन परंपराओं, मूल्यों, क्रीड़ाओं के प्रति है, जो मनुष्य के शोषण, दमन, दबाने के कुकर्मों के लिए प्रेरित करती है। इसी शोषण–दमन के कारण ही मनुष्य मनुष्य नहीं रह पाया है। वह राक्षस बन गया है। अपने ही खून को पीने के लिए तैयार हो गया है। दिगंबर कवि इस का विरोध करता है। ऐसी परंपराओं एवं सिद्धांतों के प्रति विद्रोह प्रकट करता है। निखिलेश्वर ने लिखा है। "कर्म सिद्धांतों के भय से पत्थरों को पूजनेवाला आदमी आत्म विश्वासी नहीं हो सकता। अपनी अंतरात्मा के विश्वास पर जीनेवाले सच्चे सुख देनेवाले, कर्म के लिए जीनेवाले, बिना किसी आवरण के निडर होकर रहनेवाले आदमी का हम चिल्लाकर हाथ पसार कर स्वागत करते हैं।"[1] निखिलेश्वर ने यह स्पष्ट किया है कि मनुष्य को अपनी अंतरात्मा से पूछना चाहिए कि वह सही कर रहा है या नहीं। अंतरात्मा पर परदा डालकर ऊल–जलूल काम करना ही व्यवस्था के प्रति ही नहीं बल्कि अपने प्रति और मानवता के प्रति पाप करना है। यही राक्षसी गुण है। दिगंबर कवियों ने उस का विरोध किया है। दिगंबर कवि मनुष्यों में ऐसे मनुष्य की तलाश ही नहीं बल्कि उस का समर्थन करने की ललक है।

"मंचि चच्चि पुच्चिन मानवतलो / शवालुग मिगिलिन मनुषुल
आशल चरम श्वासल चूसि / जालि पडि,......

मनिषिलो अट्टडुगुन/बुरद गुंटलो
पडिवुन्न मनिषिनि/लेव दिय्य डानिकि।"[2]

दलदल की कीचड़ में गिरे मनुष्य को पुनः ऊपर उठाने की ललक दिगंबर कवियों में दिखाई देती है। दिगंबर कवियों के मूल स्वर बन कर नग्नमुनि ने कहा है–

"ऊ ले/मुसुगु तोलगिंचु/ई कंपु कोट्टे बट्टल्नि विप्पि
आत्म मुंदु निलबडि निन्नु नीवु चूसुको
मनिषिला/मंचिगा/आकाशमुलाकृअवनिला ब्रतुकु।"[3]

ये पंक्तियाँ निखिलेश्वर के कविता–स्वर को स्पष्ट करती हैं।

अश्लीलता और दिगंबरता

दिगंबर कविता को अपने समय में अश्लील और गाली गलौज कहकर नकारा गया है। दिगंबर कविता में साहित्य में निषेधित शब्दों का प्रयोग हुआ है। इतने मात्र से वह अश्लील नहीं बनेगी। यौन प्रतीकों के प्रयोग मात्र से दिगंबर कविता किसी यौन विकृति को नहीं जगाती है। बीभत्स गुण मनुष्य के मन को झकझोरता है। सोचने के लिए विवश करता है। जिसे गाली गलौज नहीं कहा जा सकता है। असल में गाली गलोज करने की मानसिकता के विश्लेषण से इस सत्य का बोध होता है। असल में तीन मुख्य संदर्भों में मनुष्य गाली गलौज पर उतरता है। 1. बलवान के सामने उस का विरोध नहीं कर पाने की निस्सहायता में कमजोर आदमी गाली गलौज करता है। 2. बलवान आदमी अपने स्वामित्व को दर्शाने के लिए अपने सामनेवाले कमजोर पर गाली गलौज करके आत्म तुष्टि करता है। 3. आत्मीय जन जब चेतनहीन होकर अकर्मन्य रह जाते हैं, तब उनके हितैषी बन कर, पुनः उन्हें कार्योन्मुख करने के लिए उनमें ओज और पौरुष को जगाकर पीठ थप–थपाकर सचेत करने के लिए अश्लील शब्द या गाली गलौज करना पड़ता है। दिगंबर कवियों में इस तीसरे प्रकार की अश्लीलता है, जो मानवता के हित में ही नहीं बल्कि पूरी व्यवस्था के हित में है।

लघु मानव की प्रतिष्ठा

निखिलेश्वर की कविता में ऐसे मानव की प्रतिष्ठा हुई जो हर तरफ से शोषित, दमित, पीड़ित, उपेक्षित, निराश्रित, निस्सहाय, अपने अधिकारों के प्रति अनभिज्ञ, आकाश–अवनि की तरह सब कुछ सहनेवाले, दर्द को सहकर मुँह खोलने में संघर्ष करने में डरनेवाले, निरीह अल्पजीवी मनुष्य है। उन्हीं के शब्दों में वह चींटी है। निखिलेश्वर मनुष्य के लिए बहुत सोच समझकर चींटी को सार्थक व सफल प्रतीक बना लिया है। होटल के सफाई कर्मचारी, ठेले पर फल–सब्जी बेचनेवाले, मजदूर, दुकानों में काम करनेवाले कर्मचारी, छोटे–मोटे काम धंधे करनेवाले, गलियों एवं नुक्कड़ों पर व्यापार करनेवाले, भवन निर्माण कर्मचारी, ऑटो कर्मचारी, कम कीमत की चीजें बेचनेवाले ऐसी कम आय के लोगों के साथ साथ व्यवस्था से फेंके गए निर्वासित बेरोजगार निराश्रित मनुष्य, भिखमंगे लोग निखिलेश्वर की कविता के केंद्र बिंदु हैं। जो मानवाधिकार प्राप्त

करने में पूरी तरह योग्य है। श्रम जीवि है। श्रम की लूट का शिकार हुआ मनुष्य है। कवि निखिलेश्वर ने निरंतर ऐसे सामान्य मनुष्य की खोज की है। भारत की सारी जातियों में ऐसे करोड़ों लोग हैं। उन्हें भूख–प्यास से मतलब है। किसी जाति, धर्म, भाषा, प्रदेश से कोई मतलब नहीं है। किसी संगठित वर्ग से दोस्ती नहीं है। इस विस्तृत फॉर्मेट में निखिलेश्वर ने अपने लघु मानव या सामान्य मनुष्य की पहचान की है। उनकी कविता ऐसे मनुष्यों से बात करती है। वार्तालाप जोड़ती है, प्रेम दिखाती है, आत्मीय शब्द बोलती है, आत्मधैर्य जगाती है, डर को दूर करती है आखिर क्रांति व संघर्ष करने के लिए ललकारती है। मानवतावादी निखिलेश्वर का यही दिगंबर कोण है। इस मनुष्य के लिए समर्पित उनकी कविता दिगंबर है। ऐसे मनुष्य का आत्म साक्षी बनकर कवि निखिलेश्वर व्यवस्था से संघर्ष करते रहे हैं। यह मनुष्य कमजोर है किंतु अपने बल का बोध नहीं रखनेवाला मनुष्य है।

ऐसे बहुसंख्या में रहनेवाले उपेक्षित एवं वंचित लोग निखिलेश्वर के लघु मानवों के प्रतिनिधि हैं। इन सबके लिए उन्होंने एक पसंदीदा प्रतीक चुना है 'चींटी'। उन की कविता ने 'चीटी का सफर' ऐसे लोगों के प्रति पूरी करुणा, विश्वास, अनुशासन, कर्मठता, अथक प्रयास व श्रम करने का गुण आदि से ओत प्रोत करके चींटी की महानता का उच्च स्वर में समर्थन किया है।

आखिर चींटी का सफर कहाँ तक/चींटी से पूछोगे तो क्या कहेगी
घास फूस से बतियाती/मिट्टी की सरिताओं को पार करता हुआ
छोटे–छोटे कांकर पत्थर को चढ़ती उतरती
निरंतर चलनशील चींटी का सफर।[4]

यह चींटी रूपी लघु मानव का श्रमणशील उद्योग है। अनथक निरंतर श्रम करने की चलनशील जिजिविषा गुण है। रास्ते में अनेक संकटों को झेलती फिर भी वह चलनशील है। शोषक–राक्षसों से मुठभेड़ करती....

बड़ी बड़ी काली चींटियों के बीच से/गुजरती है बहुत छोटी है
अल्पजीवी है/लेकिन हाथी की कान में घुस गई/तो पहाड़–सा
हाथी तक छटपटाता/बिखर बिखर जाता है।[5]

निखिलेश्वर उस लघु मानव की प्रतिष्ठा ही नहीं बल्कि लघुमानवों में एकता को जगाकर व्यवस्था रूपी हाथी को तिलमिला देनेवाले संघर्ष करने के लिए सचेत करते हैं।

निखिलेश्वर का विचार है कि इस लघु मानवों के अधिकारों के लिए अभी बहुत युद्ध करने हैं। क्यों कि व्यवस्था संबंधी यह बदलाव आसानी से नहीं होगा। उस के लिए युद्ध को जारी रखना पड़ेगा। इसी को वे उन को संदेश के रूप में बताते हैं–

"कई युद्ध लड़ने हैं" कविता में उन्होंने लिखा है....
धरती को चीर–फाड़कर/सींचा जा रहा है/और युद्ध जारी है
आपस में बटोरने/इतनी दूर आने के बाद भी/फिर वही सिलसिला कि
जिसकी लाठी उसकी भैंस/तो अब हम फिर से लोकतंत्र की

बदलने को परिभाषा/अभी बहुत दूर जाना है
और कई युद्ध लडने है.. ।[6]

इस युद्ध में निखिलेश्वर जाति पाति को कोई अवसर नहीं देते हैं। ”युग युगों से/जाति कुल का वट वृक्ष जकड़ता ही गया/आत्म सम्मान को/आखिर दफना ही दिया गीताचार्य को/शासन की बागडोर को हथियाने/प्रतिशोध की इच्छा जाग उठी/अस्तित्व के संघर्ष में/किसी भी जाति का/कमजोर एक सजीव ह़डडियों का ढाँचा।[7]

सत्तालोलुप शासन में ऐसे लघु मानवों की तरफ देखने वाला सोचने वाला कौन है? नेता भ्रम उगाते हैं। वोट बटोरते हैं। फिर मुँह छिपा लेते हैं– निखिलेश्वर कह उठते हैं....

आलमपुर के मदिंरों के खंडहरों में/सांपों के निवाले बन जाते हैं गरीब
रायलसीमा में नहीं बरसनेवाली बूंदों के लिए
आंसू की भाप बने जीते हैं जनसाधारण/भाड़े के कुत्ती की बंदूकों से
कोंडापुर के खेत–खलिहानों से/किसान मजदूरों की मृत्यू.... ।[8]

कवि निखिलेश्वर ने ‘चलते फिरते मोहरे’, ‘यह कैसा समय है’ कविताओं में लघु मानव या साधारण मनुष्य को निर्वासित करनेवाली विकास की योजनाओं एवं इस वर्ग के लिए किसी भी प्रकार के प्रयोजन नहीं पहुंचानेवाले प्रवासी जीवन एवं वैश्वीकरण का भी कड़ा विरोध किया है।

मानवाधिकारों की रक्षा :

दिगंबर कविता में विरोध, विद्रोह की प्रवृत्ति अधिक दिखाई पड़ती है। देखना यह चाहिए कि यह किसके प्रति है? इसके द्वारा दिगंबर कवि क्या चाहता है? निखिलेश्वर का दिगंबर कवि सदा मानवाधिकारों की रक्षा चाहता है। मानवाधिकारों की रक्षा किए बिना अंधाधुंध व्यवस्था का विरोध करने से कोई फायदा नहीं है। व्यवस्था के ऐसे ठेकेदार समाज के सब से दमित एवं शक्तिहीन लोगों के अधिकारों का हनन करके, बाहरी भ्रम दिखाकर प्रगति का झूठा मोह दिखाकर उन्हें बर्गलाकर उनका सर्वनाश कर रहा है। पूरी व्यवस्था इसे देख रही है। वह चेतनाहीन है। बेरोजगारी से पीड़ित युवा पीढ़ी महँगाई की भट्टी में झुलस रही है। दाने दाने के लिए तरस रही है। रोजगार के बिना युवापीढ़ी का और देश का कोई उद्धार संभव नहीं है। इस मानवाधिकार के हनन का जिम्मेदार कौन है? ऐसे शासकों का अंत निखिलेश्वर के ही शब्दों में

इक चरित्र चेत्तनु केलुकुतू / वक्रीकररिंचे व्याख्यानालतो
श्रम संपदनु कबलिस्तुन्न / दलारुल राजीबेराल
पैरवील सर्दुबाट्लतो / ऊरेगुतुन्न महानुभावुलंता
चरित्रहीनुलुगा तिरिगि चरित्र चेत्तकुप्पलोकि.. ।[9]

शोषकों का समर्थन करनेवाले बुद्धिजीवि वर्ग का परिणाम यही होगा। क्योंकि इनके निष्क्रिय होने तथा शोषक वर्ग के साथ हाथ मिलाने से ही आम आदमी को मावाधिकारों से वंचित होना पड़ रहा है।

प्रजातंत्र के नाम पर मनुष्य को लाशों की ढेर बनानेवाली व्यवस्था के कीड़ों को शाश्वत नाश करने की पुकार निखिलेश्वर एक कविता में देते हैं––

ई प्रजास्वाम्यान्नि / शासिस्तुन्न वंशपरंपरलो
युवराजुल पट्टाभिषेकमतो / ऊरेगुतुन्न कुलीन तंत्रमु
मानव हक्कुल समाधुलपै / दिक्कुलेनि समाचार हक्कुल शवालु... ।[10]

किसानों के प्रति सहानुभूति :

भारत की प्रगति की रीढ़ और भारतीयों के अन्नदाता किसान हैं। भारत पहले से कृषि प्रधान देश रहा है। भारतीयता भी कृषि प्रधान संस्कृति के साथ ही जुड़ी हुई है। निखिलेश्वर इस सच्चाई को पूरी ईमानदारी के साथ स्वीकार करते हैं। किसानों की दयनीय स्थिति पर उन्होंने तीखे बाण चलाए हैं–

आशल अडियासलऩ / एंडमावुल्लो / दुक्कि दुन्नेवाडु दुन्नु अंटुन्नाडु
देवरहस्यामैन कालम/ भक्ति व्यापारुल चेतुल्लो / वोक सरुकु... ।[11]

कवि ऐसे निस्सहाय किसानों का समर्थन करते हैं और उनका पक्ष लेते हैं। आश्वासन देते हैं....

ई अनीति अव्यवस्थलोने / निन्नु जइंचे संकल्पमुतो
अजेयमैन नी वेसमुतोने / "कालमा नीवेक्कडा?" अनि प्रश्निस्तू
आत्मस्थैर्यान्नि निंपुकुंटुन्न ई वेल / मा लोने नुव्वु / नी लोने मेमु[12]

निखिलेश्वर ऐसे किसानों के साथ चलते और किसानों को कविता के साथ देखना पसंद करते हैं। इसी में भारतीय मानवता की सुरक्षा वे देखते हैं।

निखिलेश्वर किसानों के जीवन की दयनीय स्थिति का वर्णन करते हुए उनमें असीम आत्मविश्वास को पैदा करने का बिगुल बजाते हैं। किसानों को यह बताते हैं कि उनका संघर्ष न तो अधूरा रह जाएगा न ही वह व्यर्थ जाएगा। बल्कि आगे किसान ही अधिकार के पीठ पर बैठेगा। भविष्य में उसी का शासन होगा–

रगिले रक्तमु मट्टिलो पारिना / एदुरुतिरिगे वारसत्वमु वृदापोदु
चट्टसभल पुनादुलने कदिलिंचि / एनाटिकैन पंट पंडिंचे वाडे
अधिकार पीठान्नि––/ अदिलिंचि पालिंच गलडु ।[13]

भूखमरी और शोषण के प्रति रोष :

निखिलेश्वर समाज के अत्यंत निम्न वर्गों के प्रति असीम अनुकंपा रखते हैं। सदा उनकी रक्षा करने के लिए लाठी लेकर खड़े हो जाते हैं। उनके जीवन के सत्य को भारतीयों के जीवन सत्य के रूप में परिणत करके प्रस्तुत करते हैं। अपनी "अंतिम सत्यमु" कविता में उन्होंने लिखा है...

चिति मंटल चुट्टु / आकलि मंटलतो / गुन गुन नडुस्तू
बिय्यम गिंजल कोसम / जावल नालिकल मीरगा / मृत्युवुनु जयिस्तू
एगिरि वस्तुन्न पावुरालु / ए जीविकैन मनुगडे
कादनलेनि––/ अंतिम सत्यम /[14]

प्रत्येक प्राणी को अपने प्राण ही अंतिम सत्य है। भूख से तिलमिलाने पर भी रोटी के लिए संघर्ष करते हुए भी उसे अपने प्राण ही प्रिय है। किंतु यह भूख से मरनेवाला मनुष्य अपने प्राणों की परवाह भी नहीं कर रहा है। यह भी जीवन सत्य है। जीवन की लड़ाई लड़ने वह अपने गाँव को और अपने प्रदेश को छोड़ने के लिए विवश है। उन्हें ऐसी विवशता में डालनेवाली व्यवस्था की निंदा वे करते हैं। सवाल करते हैं कि आम आदमी अपने गाँव से और प्रदेश से निर्वासित करके यह व्यवस्था रोजगार के नाम पर उन्हें निरीह जीवन जीने के लिए विवश कर रही है। मनुष्यों की बलि चाहनेवाली ऐसी प्रगति एवं विकास की योजनाओं का निखिलेश्वर कड़ा विरोध करते हैं–

सिरिया लिबिया नुंचि / नट्ट नडि संद्रान यूरोप दाका
गालिलो दीपमुला मनुषेले कदा/ केरटाल मध्य आरि पोतुन्न वाल्लु
अमरावति, मल्लन्न सागर एक्कडैन / अभिवृद्दि बलि कोरेदि
एवरिनो कादु मनुषलने कदा।[15]

निखिलेश्वर सामान्य मनुष्य के मानवाधिकारों के लिए संघर्ष करनेवाले कवि हैं। उनके लिए सामान्य मनुष्य ही प्रिय है। चाहे वह कर्मचारी हो, कृषक हो, मजूदर हो, भूख का शिकार होनेवाले प्रत्येक श्रमिक उनके लिए प्रिय हैं। इनके अतिरिक्त समाज में जितने सारे उपेक्षित हैं। जो अपने अधिकारों के लिए संगठित होकर संघर्ष करने में असमर्थ हैं। निखिलेश्वर ऐसे लोगों की वकालत करते हैं। उन्हें संघर्ष के लिए तैयार करते हैं। पीठ थप थपाकर उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। उन के वर्ग विरोधी के प्रति रोष एवं आवेश प्रकट करते हैं। ऐसे शब्दों एवं भावों का वे निर्माण करते हैं, जो एक सुचारू भवन का सक्षम कुशलता के साथ निर्माण करनेवाला इंजीनियर करता है। इसके लिए वे सदा ऐसे शब्दों का चयन करते हैं जो अपने अभिप्रेत भाव को संप्रेषित करने में सक्षम होते हैं। निखिलेश्वर इस रूप में शब्दाग्रह के अन्वेषक हैं। साठ साल की अपनी साहित्य साधना में उन्होंने सदा इस अन्वेषण को जारी रखा है। और सदा जारी रखने की शपथ खायी है। अपनी कविता में स्वयं ने अपने आप से यह सवाल कर लिया है...

आत्म शोधना?/ आत्म हननमा?/ अंतुलेनि दाहमा?/ नलुमूलला
पेनु मार्पु कोसमु/ कविताक्षर वेंट/ तन्मयत्वमुतो/ अविश्रांतंगा
अहरम तपिंचे/ ई जीवितमंता.. / अन्वेषणे?[16]

स्पष्ट है कि अपने आप से सवाल करते हुए कविता के प्रति, अपनी कविता के केंद्र में रहनेवाले उपेक्षितों के प्रति अपने समर्थन की ईमानदारी की निखिलेश्वर सदा शपथ लेते हैं। बलवानों का यशस्वी–गायन करके सफलता के मोह में पड़नेवाले कवियों एवं बुद्धिजीवियों की तुलना में उपेक्षितों के उन्नयन करने में वे अपने शब्दाग्रह को जारी रखना पसंद करते हैं। इसके लिए वे शब्दों की दिगंबरता और भावों की दिगंबरता को अपनाने में भी कोई संकोच नहीं करते हैं। इसके लिए सदा वे अन्वेषक बने रहने की घोषणा करते हैं। मानवता के प्रति यह ललक उनकी कविता का केंद्रबिंदु है, ऐसा कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं है। ○

संदर्भ सूची :

1. डॉ. एम. रंगय्या, धर्म युग में 1 जनवरी, 1967 में छपा लेख, तेलुगु की दिगंबर कविता, पृ.12, 2004, प्रतिभा प्रकाशन, सिकंदराबाद–500003
2. डॉ. आई. एन. चंद्रशेखर रेड्डी, बीसवीं सदी का तेलुगु साहित्य, आईरेड्डी पब्लिकेशन्स, तिरुपति, 2004, पृः168–169
3. वही–पृ.169
4. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद–पृ. 99–100
5. वही–पृ.100
6. वही–पृ.92–93
7. वही–पृ.55–56
8. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड पर, 'मौत का पीछा करते हुए', 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद–पृ.41
9. निखिलेश्वर, अग्निश्वास, 2021, नवतेलंगाना पब्लिशिंग हाउस, हैदराबाद–20–पृ.57
10. वही–पृ.21
11. निखिलेश्वर, काल रहस्यमु, अग्निश्वास, 2021, नवतेलंगाना पब्लिशिंग हाउस, हैदराबाद–20, निखिलेश्वर–पृ.15
12. निखिलेश्वर, अग्निश्वास, 2021, नवतेलंगाना पब्लिशिंग हाउस, हैदराबाद–20–पृ.22
13. वही–पृ.23
14. वही–पृ.27
15. वही–पृ.44
16. वही–पृ.61

दिगंबर काव्यांदोलन : एक अवलोकन
(निखिलेश्वर के विशेष संदर्भ में)

ऋषभदेव शर्मा

डॉ. एम. रंगय्या द्वारा अनूदित पुस्तक 'तेलुगु की दिगंबर कविता' (युवा शक्ति के क्रांतिकारी स्वर) 2004 में प्रतिभा प्रकाशन, सिकंदराबाद से प्रकाशित हुई। इस पुस्तक की भूमिका में प्रो. ऋषभदेव शर्मा लिखते हैं कि–

"अब हौं उघरि नचन चहत हों...."

बीसवीं शती के सातवें दशक के उतरार्ध में तेलुगु साहित्य विद्रोह को उपजीव्य बनाकर परिवर्तन की कामना करने वाला दिगंबर काव्यांदोलन उभरा। संपूर्ण परंपरा का निषेध करने वाले इस काव्यांदोलन को छह युवा कवियों ने प्रवर्तित किया, जिन्हें काव्यजगत में उनके उपनामों नग्नमुनि, निखिलेश्वर, चेरबंडराजु, महास्वप्न, ज्वालामुखी और भैरवय्या से पहचाना जाता है। इस काव्यांदोलन के उन्नायकों और समर्थकों ने इसे पूरी तरह भारतीय (विशेषतः आंध्र की) परिस्थितियों की उपज माना है। तथापि अपने सर्वनकारवादी तेवर के कारण इसे एक ओर तो अमेरिका, ब्रिटेन, हंगरी और हॉलैंड के इसी प्रकार के काव्यांदोलनों के प्रभाववश उठी लहर के रूप में देखा जा सकता है तथा दूसरी ओर हिंदी और बांग्ला से लेकर मणिपुरी भाषा तक भारतीय कविता में उभरे अकविता, बुभुक्षित कविता और क्रुद्ध युवा कविता के साठोत्तरकालीन उभार की सहगामी काव्यधारा के रूप में भी विवेचित किया जा सकता है।

हिंदी कविता के पाठक दिगंबर कविता के मन–मस्तिष्क को झकझोरने वाली मुद्राओं से अपरिचित तो नहीं है लेकिन इनका कोई प्रतिनिधि संकलन लंबे समय से प्रतीक्षित है। तेलुगु में प्रकाशित तीन कविता–संग्रहों से चुनी गई दिगंबर कविता के हिंदी अनुवाद का प्रस्तुत संकलन इसी दिशा में एक स्वागत योग्य प्रयास है। यद्यपि आज का पाठक क्रांति के नाम पर नग्नता की वकालत के प्रति चार दशक पुराने पाठक जैसी प्रतिक्रिया दिखाने वाला नहीं है, तथापि भारतीय कविता की समान प्रवृत्तियों के ऐतिहासिक आकलन और तुलनात्मक अनुशीलन के लिए ऐसे अनुवादों की अभी और आवश्यकता है। भारतीय कविता और उसमें भी विशेषतः युवतर पीढ़ी की गत शताब्दी के साठोत्तरकालीन मानसिकता और उसके अंतर्विरोधों को समझने के लिए भी तेलुगु कविता के इस काव्यांदोलन का व्यापक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन अभिप्रेत है। प्रस्तुत संग्रह ऐसे अध्ययन का आधार बनने में सक्षम है, इसमें संदेह नहीं।

निषेध क्यों? नग्नता किसलिए?? यह प्रश्न कवियों के सामने भी रहा है। और पाठकों के भी। चौंकने के लिए? विद्रोह के लिए?? विकृति फैलाने के लिए? विकृति दर्शाने के लिए?? विकृति मिटाने के लिए??? यह भी पूछा जाना स्वाभाविक है कि कविताएँ हताशा से उपजी हैं या अति उत्साह से? या फिर

सस्ती लोकप्रियता की कामना से?? किसी–न–किसी हद तक ये सभी चीजें इसमें शामिल प्रतीत होती हैं लेकिन वैचारिक स्तर पर यह काव्यांदोलन स्वयं को मार्क्सवादी चिंतन से जोड़ता है और इसीलिए इसे तेलुगु प्रगतिशील कविता के साठोत्तरकालीन नवोन्मेष के रूप में भी देखा जा सकता है।

दिगंबर–कविता परंपरा मात्र का निषेध करती है तथापि उसका दिगंबरत्व–उसकी नग्नता की कथित रूप से मौलिक मुद्रा–असंतोष को अभिव्यक्त करने की चरम हताश मुद्रा के रूप में मनुष्य जीवन में सदा से विद्यमान रही है। गाली–गलौज को अभद्रता और अशिष्टता कहकर खारिज भले किया जाता हो, उसकी अपरिहार्यता से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। खीज, क्रोध और विद्रोह को अभिव्यक्त करने के लिए यौन प्रतीक भाषा के आदिम हथियार हैं। यह बात अलग है कि सभ्यता और आचार–विचार के इतने विकास के बावजूद दिगंबर कवियों को आदिम युग में पहुँचना पड़ा! यह कहीं–न–कहीं तत्कालीन काव्यभाषा के जड़ हो जाने का भी प्रतीक है। इस आंदोलन से एक नई हलचल पैदा हुई और कवियों की नई पीढ़ी अधिक समर्थ और संप्रेषणीय काव्यभाषा की तलाश में प्रवृत्त हुई–दिगंबरत्व की आदिम भाषा से आगे बढ़ी।

जड़ता को तोड़ने के लिए दिगंबरता का सहारा लेना ही पड़ता है अन्य माध्यमों के चुक जाने पर। नाथों–संतों की भाषा में जो आक्रामकता है उसका उद्देश्य समाज की जड़ता को तोड़ना है, भले ही उससे अक्खड़ता उभरे या तथाकथित साहित्यिकता की क्षति हो। सूरदास जैसे शिष्ट और शालीन भक्तकवि भी जब अपने आराध्य की ओढ़ी हुई जड़ता से खिन्न होते हैं तो नंगई पर उतर आते हैं–"अब हाँ उघरि नचन चहत हों, तुम्हें बिरद बिनु करि हों।"– अब मैं नंगा नाच करूँगा, तुम्हारे यश का नाश करूँगा! निराला का कुकुरमुत्ता भी जब गुलाब को संबोधित करता है तो शालीन काव्यभाषा की परंपरा के टूटने की परवाह नहीं करता। अकविता और दिगंबर कविता ने इस मुद्रा को स्थायी मुद्रा के रूप में अपनाकर तत्कालीन सामाजिक व्यवस्था के प्रति युवतर पीढ़ी के चरम असंतोष, आक्रोश और विद्रोह को ही अभिव्यक्ति प्रदान की। लेकिन इस प्रयत्न में कहीं–न–कहीं कवित्व की भी क्षति तो हुई ही–चाहे वह यशपाल की कहानी 'फूलों का कुर्ता' की नायिका की भाँति नादानी में ही हुई हो!

दिगंबर कविता वीभत्स और कुरूप यथार्थ से पलायन करके कल्पित सुंदरता का प्रतिसंसार रचने को कवियों का मनोविलास मानती है। वह तो अपने परिवेश में परिव्याप्त भूख से उत्पन्न दारुण करुणा की वास्तविकता से पाठक को परिचित कराना चाहती है और इस स्थिति के लिए जिम्मेदार शोषक और शासक वर्ग की नीचताओं का पर्दाफाश करने पर उतारू है। उसका काव्यनायक वह व्यक्ति है जो "पराजित है/परिच्युत है/पीड़ित ताड़ित/दरिद्र और/भगाया गया है" (ज्वालामुखी)। उसे लोकतंत्र के नाम पर भी तानाशाही ही विरासत में मिली है और इसके नाम पर उपयोग राजनेता सदा अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए करते हैं। उसकी दशा किसी खजुले कुत्ते की तरह है जिसे तमाम व्यवस्था पागल करार देकर मारने पर आमादा है। राजनीति और

धर्म मिलकर उसके खिलाफ हो गए हैं। कवि उनके इस षड्यंत्रपूर्ण गठबंधन पर गालियों और अपशब्दों की बौछार करने में नहीं चूकता– "तोंदधारी लुटेरे/फोते वाले मरद/ढोंगी तिलकधारी पंडे/चोटी वाले नेता–सियार/दादी वाले घूस/मूँछ वाली औरतें/मूँछ विहीन हिजड़े/XX खद्दर टोपीधारी/हरामजादे नेता/कुमार्गी कुटिल क्रूर/मंदिरों के म्लेच्छ/मस्जिदों के काफिर/गुरुद्वारे के गुंडे/ चर्च के पापी" (ज्वालामुखी)। कहना न होगा कि कवि के लिए यहाँ कवित्व और लालित्य के स्थान पर आमजन की तिलमिलाहट और गुस्से की अभिव्यक्ति अधिक महत्वपूर्ण है ।

इस काव्यधारा ने कलावाद के नाम पर यथास्थितिवाद का पोषण करने वाली तथा व्यवस्था की मुखापेक्षी कविता को जनविरोधी मानते हुए आम आदमी को सक्रिय प्रतिक्रिया अथवा विद्रोह के लिए पुकारा। कला को जीवन से काटने की साजिश का पर्दाफाश करते हुए दिगंबर कवि का आह्वान है–"जाति धर्म का राग अलापते/कवि–सम्राटों के तर्क को/मटियामेट करने में/आमंत्रित करता हूँ तुम्हें/मध्यमवर्ग की फफूँदी को/झुकी रीढ़ और कपट आचरण वाले/युवा वर्ग को/कला के नाम पर/पलायन का पाठ पढ़ाते/नामों को/नरम मौकापरस्तों को/जवान खून खौल उठने के लिए/मैं आमंत्रित करता हूँ तुम्हें।" (निखिलेश्वर)।

दिगंबर कवि अपने समसामयिक समाज की तुलना असाध्य यौन रोगों से ग्रस्त किसी घृणित एवं क्रूरकर्मा व्यक्ति से करते हैं और उनसे मुक्ति के लिए अतीत और वर्तमान को ध्वस्त करके नई व्यवस्था को कायम करने की इच्छा प्रकट करते हैं। उनकी दृष्टि में वर्तममान व्यवस्था बाँझ हो चुकी है तथा उसका दूध तक पीना अपराध है। मानवता को इन रोगों से छुटकारा दिलाने का एक ही उपाय है–"बाल पकड़ कर/खींचकर/पेड़ से बाँध कर/सभ्यता के शरीर भर/घाव कर दो/मानवता को रोगमुक्त कर दो।" (नम्नमुनि)। दिगंबर कवि को सारी धरती एक साथ 'अनधोई सूखी गुदा–सी' और 'बिल्कुल भारत–सी' दिखाई पड़ती है। यहाँ तक कि ब्रह्म भी उसके लिए स्त्री, छायावादी कवि अथवा हिजड़ा भर है, क्योंकि उसके संसार में भूख किसी नीग्रो सखी की तरह ठहाका लगा रही है। ये कवि कतार में प्राण विसर्जित करने वाले 'भूखों' की निशानदेही करते हैं और बलात्कार की शिकार बनी गलियों तक से प्रश्न करते हैं। इनका उद्बोधन विचित्र लग सकता है पर खीझ और विद्रोह को मूर्तित करने के लिए अपनाई गई उनकी अभिव्यक्ति प्रणाली पाठक की परंपरा प्रिय चेतना पर चोट करती है–"मान मर्यादा आदि को/नाले में फेंक दे/ मैली शरम की साड़ी/बदबू फैला रही है। (महास्वप्न)। कवि ने परंपरा के बोझ से पीछा छुड़ाकर दृढ़तापूर्वक निर्भीक होकर जन–विरोधी शक्तियों के खिलाफ खड़ा होने की गुहार लगाई है–"सूर्योदय हो गया है/पात्र में जंग लग गया है। साफ कर ले सच्चाई सा। ध्वजा सा सीधा उठ जा/भय तज कर। नंगा बन बाजार में आ जा!" (महास्वप्न) ।

इतना ही नहीं दिगंबर रचनाकार पागल कुत्तों की गति को प्राप्त हो चुकी सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक व्यवस्था पर सामूहिक प्रहार के लिए भी प्रेरणा देते हैं। राजनीति के आश्रित बुद्धिजीवियों को भी वे नहीं बख्शते।

ऐसे बुद्धिजीवी वेश्याओं के दलालों के समान हैं–"निर्लज्ज हो रंडी के नखरे/दिखाते हुए/राजनीति के बाजारू/सूअरों के पीछे/रात–दिन/दौड़ते फिरा करते हैं। शोहरत के मल में/कीड़ों–सा बढ़ रहे हैं।" (चेरखंड राजु)। बीभत्स कृत्यों में लिप्त रहने वालों का वर्णन भी ये कवि बीभत्स रूप में ही करते हैं।

असंतोष, आक्रोश, विद्रोह और आमूलचूल परिवर्तनकारी क्रांति को कविता का सामाजिक लक्ष्य मानने वाले दिगंबर कवि वास्तव में मानवतावादी समता मूलक समाज के स्वप्नदृष्टा हैं। उनके निकट कविकर्म भी वर्गयुद्ध का एक संवेदनाशील मोर्चा है जिस पर रचनाकार डटे हुए हैं– "उद्विग्न मैं/प्रेरित होकर/साहसी बन/कलम से काल से टकराता/कविता में प्रवेश करता/चारों ओर/भयंकर दृश्यों का सृजन करता/घबराते हुए/आ गया।/आग–सा नग्न हो, विकसित हो/दिल में जलती आशा सा/उत्ताल सागर में बडवानल–सा/आसमान के भोर के तारे–सा/आया हूँ मैं।" (भैरवय्या)। दिगंबर कवि की प्रतिज्ञा है कि–"अरे!/असमर्थ को अधिकार देने वाले बैलों/चमड़ा उधेड़कर तुम्हारा/उस पर मिर्च छिड़ककर/आग पर लुढ़काकर/तुम्हें मैं खा जाऊँगा।" लेकिन अफसोस कि भारतीय जनता का चमड़ा बहुत मोटा है और वह आज भी लोकतंत्र के नाम पर तानाशाही को ही पीठ पर लादे विनाश के गर्त की ओर दौड़ी जा रही है। जबकि दिगंबर कविता अपनी तमाम दिगंबरता सहित इतिहास की वस्तु बन चुकी है।

डॉ. एम. रंगय्या ने प्रयासपूर्वक चुनी हुई दिगंबर कविता का यह अनुवाद उपलब्ध कराया है। इसमें ? ? इस से एक बार भारतीय साहित्य की मूलभूत चिंताओं की समानता और युग विशेष की मानसिकता के अनुरूप साहित्यकारों की एक जैसी प्रतिक्रिया का पता चलता है। ○

(साभार : तेलुगु की दिगंबर कविता (युवा शक्ति के क्रांतिकारी स्वर) की भूमिका पृ. सं. xiii से पृ. सं. xvii तक)

निखिलेश्वर की कहानियों में मानवीय एवं सामाजिक चेतना

देवा प्रसाद मायला

शोध सार : जीवन में सामना होती भीषण समस्याओं और गहरे अनुभवों में से जन्मी कहानियाँ प्रस्तुत करना हो, तो कथावस्तु, भाषाशैली तथा शिल्प जैसे मूल तत्वों का बोध होना आवश्यक है... केवल समय ज़ाया करने के लिए गुदगुदाहट देकर विस्मृत हो जानेवाली कथावस्तु इस बदलती दुनिया के लिए 'उपभोक्ता माल' के रूप में काम आ सकती है। परंतु आज की व्यवस्था में, मनुष्य के जीवन से जुड़ी घटनाओं तथा स्थितियों के नेपथ्य में तात्विकता से 'सच' की खोज करने वाली कहानियों की रचना करना तलवार की धार पर चलने वाली बात होगी। इन 22 संग्रहीत कहानियों में मैंने क्रांति–संघर्ष, हमारी विद्या–व्यवस्था, मध्यमवर्ग की समस्याएँ, स्त्री–पुरुष–संबंध, युद्ध, धर्म, भूमि–समस्या तथा विदेशी जीवनों से संबंधित कथावस्तुओं का चयन किया है।

– ***निखिलेश्वर*** *(मेरी 'कथा' यात्रा – एक आपबीती!)*

बीज शब्द : कहानियाँ, मानवीय चेतना, सामाजिक चेतना, वर्णन, भाषा, तेलुगु आदि।

जब से भाषा मनुष्यों के बीच परस्पर संपर्क का माध्यम बनी है, तब से मनुष्य अपने इतिहास को या अपने इर्द–गिर्द घटी घटनाओं को किसी–न–किसी रूप में कहकर बताने की कोशिश करता आया है। घटना के संक्षिप्त या दीर्घ प्रस्तुतीकरण को कथनी या कहानी कहते हैं।

विभिन्न विद्वानों ने भिन्न–भिन्न प्रकार से कहानी की व्याख्या की है। ऐडलर ऐलन के शब्दों में, 'कहानी एक प्रकार का वर्णनात्मक गद्य है जिसे पढ़ने में आधे घंटे से लेकर एक घंटे तक का समय लगता है'। ऐलन पो के अनुसार पाठक पर आवश्यक छाप छोडना कहानी का आवश्यक तत्व है। हडसन नामक विद्वान ने कहा है कि 'कहानी में चरित्र की अभिव्यक्ति होती है। एक अन्य अंग्रेज़ी विद्वान के अनुसार घटना और कौतूहल कहानी के आवश्यक तत्व हैं।'

हिंदी के विद्वानों ने भी कहानी की परिभाषा अपने–अपने ढंग से दी है। श्री चंद्रगुप्त विद्यालंकार का कहना है, 'घटनात्मक इकहरे चित्रण का नाम कहानी है और साहित्य के सभी अंगों के समान रस उसका आवश्यक गुण है'। मुंशी प्रेमचंद के अनुसार 'कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है।'

आज समीक्षक कहानी के प्रमुख तत्व–कथावस्तु, चरित्र–चित्रण, कथोपकथन, देश, काल और वातावरण के साथ–साथ, कथाकार की भाषा–शैली और कहानी के उद्देश्य पर दृष्टि रखते हुए उसकी जाँच करते हैं।

आज कहानी के माध्यम से विविध परिस्थितियों, मानव स्वभाव की गुत्थियों, मनोवैज्ञानिक तथ्यों तथा विचारधाराओं की अभिव्यक्ति की जा रही है। लिखी जा रही कहानियाँ घटना प्रधान, चरित्रप्रधान, वातावरण प्रधान और भावप्रधान हैं। जनचेतना एवं क्रांतिकारी विचारधाराओं की अनेक कहानियाँ लिखी जा रही हैं।

साहित्यकार निखिलेश्वर को कथाकार के रूप में देखा है। उनकी संग्रहीत कहानियों को 'निखिलेश्वर कथलु' (निखिलेश्वर की कहानियाँ) शीर्षक से प्रचलित कहानी–संग्रह में पढ़ा है। ये 22 कहानियाँ पहले ही पत्रिकाओं में छपकर पाठकों की सराहना पा चुकी हैं। उनकी कहानियाँ कथित परिभाषाओं के अनुकूल अपने उद्देश्यों को लेकर दृष्टिगोचर होती हैं। कहानी के तत्व कैसे उभरते हैं, कहानी के गुण किस प्रकार निखर आते हैं, कहानियों के विस्तृत रूप में उनके प्रारूप अर्थात् उनकी रूपरेखा, कल्पना एवं योजना से जाना जा सकता है।

यह विधित है कि **निखिलेश्वर की कहानियों में** मानवीय एवं सामाजिक दृष्टिकोण को प्रधानता मिली है। मानवीय मूल्य विशुद्ध समाज के निर्माण में किस प्रकार उपयोगी हैं, स्पष्ट दृष्टिगोचर है।

कहानियाँ पाठकों को मानसिक, बौद्धिक एवं मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करती ही है, मन पर अपना छाप छोड़ने की क्षमता भी रखती हैं।

संग्रहीत कहानियाँ भावप्रधान, आदर्शोन्मुख, यथार्थवादी हैं। संघर्ष एवं क्रांति का पुट लगभग हर कहानी में दृष्टिगोचर है।

निखिलेश्वर की किसी भी कहानी के विश्लेषण से जाना जा सकता है कि कहानियाँ कथित सूक्तियों के अनुरूप ही गढ़ी गई हैं। उदाहरण के लिए–

'खटमल' कहानी का आरंभ खून चूसनेवाले कीड़ों के दृश्य से होता है, जो कौतूहलपूर्ण, जिज्ञासोत्पादक एवं सुरुचिपूर्ण है।

कहानीकार ने अपनी कथनी को इस तरह आगे बढ़ाया कि आरंभ से आगे पहुँचकर पाठक अपने तथा मुख्य पात्र, लेखक एवं कवि आत्माराव के बीच तादात्मय बिठाने में सक्षम रहते हैं।

आखिर ये 'खून चूसनेवाले कीड़े' समाज में किन व्यक्तियों के बिंब हैं, पाठक समझ जाते हैं। कहानिकार का मुख्य 'खटमल' हर उस जगह प्रकट होता है, जहाँ समाज की रीढ़–से मुनष्यों के अस्तित्व को कमज़ोर बनानेवाली स्थिति उत्पन्न होती है। मानवीय दृष्टिकोण को उजागर करते दृश्य सामने आते हैं।

जहाँ एक उधार के ब्याज की चुकता के लिए कहीं ओर से एक और उधार लेना पड़ता है और इस तरह अनेकों उधार... ऊपर से घर चलाने की नौबत... आगे सहायता करने से सभी मुकरते दिखते हैं, मित्र उसकी दृष्टि से बचने के बहाने ढूँढ़ते हैं... कुछ खटमल भी होते हैं!

चरम स्थिति में पाठक के मन में उत्सुकता, जिज्ञासा, आशा–आशंका के भाव एक अवस्था पर पहुँच जाते हैं, कि आखिर यह कवि जियेगा तो कैसे?. ..

चरम स्थिति के बाद पाठक की उत्सुकता, जिज्ञासा और कौतुहलता का समाधान करते हुए कहानीकार ने कहानी का रोचक अंत किया है। आत्माराव को अपने लिखे उपन्यास के लिए एक प्रकाशक से कुछ धन मिल जाता है... इस स्थिति में संक्षिप्तता और मार्मिकता पर कहानीकार ने विशेष ध्यान दिया है।

कहानी में वर्णनात्मक रीति में कहानीकार ने पात्रों का प्रत्यक्ष चरित्र–चित्रण किया है। जबकि अधिकांश कहानियों में सांकेतिक रीति में पात्र परिचय दिया है। पात्रों के क्रिया–कलापों के द्‌वारा उनके गुणगान का संकेत किया है। सूक्ष्म तथा व्यंजक शब्दों, हाव–भावों और संकेतों से कथाकार ने पात्रों के चरित्र का विश्लेषण किया है।

कहानी 'मूडुरोड्‌ला कूड़लि' अर्थात्‌ 'तिराहा', वह जंक्शन जहाँ से तीन दिशाओं में सड़कें निकलती हैं, अद्‌भुत शैली में चित्रित की गई है। दृश्य नेत्र समक्ष घटते दिखते हैं। दो ही पात्र और दोनों ही मुख्य! एक आदर्शपात्र, तो दूसरा उसके साथ–साथ चलते हुए उसके आदर्शों को जग से साझा करता पात्र। जीवन में पहले का साथ छूट जाने पर भी, उन्हीं राहों में, साथी के नक्शेकदम पर चलता वह दूसरा पात्र... जीवन में अपने कदमों के आगे तीन राहें सामने आती हैं– एक जो दूर प्राकृतिक सौंदर्य की ओर जाती है, दूसरी, जो जन अरण्य की ओर, तो तीसरी प्रजाविमुक्ति के लिए लड़ने की दिशा में... इसमें से एक को चुनना पड़े तो तीसरी ही हमारे जीवन के उद्‌देश्यों को सार्थक बनाने में सक्षम है। उसी दिशा में कदम बढ़ाते जाना है... भावुक स्मृतियों की तार से दृश्यों की कड़ियों को जोड़ते हुए स्फूर्तिदायक कथाकार अपने उद्‌देश्य को सटीकता से प्रदर्शित करता है।

कहानी 'निराश्रयुलु' (निराश्रित) में कहानीकार जेल के कैदियों के रात के भोजन के समय का आखों देखा हाल–सा समूचे जेल के दृश्य को चित्रित करते हुए कहानी का आरंभ करता है। काले–सफेद धारियोंवाले कमीज–निक्कर में फैले कैदियों के भोजन की समाप्ति पर, एकाएक एक कैदी की सीटी और कैदियों में हलचल, पुलिस को मात देकर बहुत से कैदियों का मुख्यद्‌वार से बाहर भाग निकलने का दृश्य। जेल के ऊपर तैनात पुलिस वालों की गोलियों से गिरते कुछ कैदी तो चकमादेकर भाग निकलते बहुत से कैदी, जिनमें सबसे आगे रहा सीटी मारनेवाला वह युवा कैदी। वृक्षों–पत्थरों की आड़ लेता हुआ वेग से अंधा–धुंध दौड़कर स्वयं को बचाता हुआ दूर निकल जाने का दृश्य का चित्रण, जैसे स्वयं कथाकार भी उस कैदी संग दौड़ रहा हो...

वस्त्रों के साथ हाथों में लोहे के मोटे कड़े उस भागे हुए व्यक्ति को कैदी की पहचान दे रहे थे। गाढ़े अँधेरे की आड़ में एक गाँव की ओर भागकर किसी लोहार से कड़े निकलवाने की पहली इच्छा से दौड़ता थका–हारा वह युवक गलियों में सँभलकर चल रहा है। एकएक घर लूटकर घर के एक वृद्ध की हत्या करके निकले तीन चोरों की निगाहों से वह कैदी बच न सका। उसे ही 'चोर–चोर' कहकर वे चोर पुकारते हुए उसका पीछा करने लगे तो कैदी उनसे बचकर भाग निकलने में कामयाब होते समय वहाँ पुलिस आ पहुँचती है। उसे चोरों में से एक को पुलिस को बताते सुनाई पड़ता है, "कैदी के वेश में एक चोर किसी की हत्या करके भाग गया है।" उस कैदी पर एक और आरोप... बचते–बचाते वह कहीं दूर खंडहर–से स्थान में एक निराश्रित फकीर से मिलता है, जो उस आधी रात के समय कैदी को अपने साथ बिठाता है... दोनों के बीच अल्प संवाद... इसी कथोपकथन से पाठक जान पाते हैं कि वह विवश निर्दोष युवा सत्यम किन स्थितियों के कारण आजीवन कैदी घोषित हुआ। सत्यम भी जान जाता है कि वह फकीर, किसी समय एक सुसंपन्न व्यक्ति, अब इस विशाल जग में एक कैदी–सा जीवन व्यतीत कर रहा है... सत्यम एक कैद से छूटकर अब आश्रय न देनेवाले जग समान दूसरी कैद में आ गिरा है... फिर इस कैद से कैसे छुटकारा पाए? यहीं कहानीकार दोनों निराश्रित कैदियों की गुत्थी को तर्क से सुलझाता है... कहानी का अंत होता है। पाठक का मन चलता जाता है कि यह क्या हो गया!... कहानीकार ने जीवन के सत्य का बोध कितनी सुंदता से कराया है, निश्चित ही प्रशंसनीय है।

इसी प्रकार देखा जा सकता है कि निखिलेश्वर की कुछ कहानियों में पात्रों के व्यक्तित्व के उद्घाटन के लिए सटीक कथोपकथन का आश्रय लिया गया है। इसमें पात्रों के बीच जो परस्पर वार्तालाप हुआ है, उसी के द्वारा कहानीकार ने उनके चरित्र पर प्रकाश डाला है।

बातचीत अर्थात् कथोपकथन विचारों का संवाहक होता है। अतः इसके द्वारा पात्रों के विचारों, मनोभावों, और अंतर्द्वंद्व की अभिव्यक्ति होती है। इसी से पाठक कहानी के पात्रों के स्वभाव और चरित्र का परिचय पाते हैं। चूँकि कथोपकथन कहानी का महत्वपूर्ण भाग होता है, कहानीकार ने पात्रों की परस्पर बातचीत में रोचकता, सजीवता और स्वाभाविकता को समाहित करके अपनी कहानियों को यथार्थ रूप दिया है। साथ ही सभी शिल्पीकृत अत्यावश्यक अल्प संवाद पात्र, स्थान, समय और वातावरण के अनुकूल ही हैं।

कहानी की कथावस्तु को प्रस्तुत करने के लिए कहानीकार जो ढंग अपनाता है उसे उसकी 'शैली' कहते हैं। यहाँ कहानीकार निखिलेश्वर ने अपनी भाषा, भाव और कल्पनाओं के द्वारा कथानक को बहुत ही प्रभावशाली बनाकर अपनी शैली का उत्कृष्ट रूप प्रस्तुत किया है।

निखिलेश्वर की कहानी गढ़ने की कला अद्भुत है, शैली भी प्रभावशाली इतनी कि कथानक का प्रभाव मन–मस्तिक पर देर तक सजीव रहता है, स्मरण रहता है।

कहानियाँ अपने उद्देश्य को कहीं पीछे छोड़ती नहीं दिखती। मनमानस की रुचि को अपनी ओर आकर्षित करती हैं।

किसी घटना या स्थिति का उल्लेख करके, पात्रों के चरित्र के माध्यम से उसे कैसे उजागर करके चरमसीमा तक पहुँचाया जाता है, **निखिलेश्वर के कथनी–सामर्थ्य को देखकर जाना जा सकता है।**

निखिलेश्वर की कहानियाँ इन सभी तत्वों से ओत–प्रोत हैं। इनमें पाठकों के हृदय को छूने की क्षमता निहित है। जनसामान्य तक अपने उद्देशित संदेश पहुँचाने का सामर्थ्य रखती हैं।

श्री जैनेंद्र कुमार जैन के अनुसार 'कहानी मनुष्य के निरंतर प्रश्नों, शंकाओं और चिंताओं की उचित समाधान की खोज है'। **निखिलेश्वर की कहानियाँ इसका सटीक उदाहरण हैं।**

महाकथाकार मुंशी प्रेमचंद ने कहा, 'कहानी एक ऐसी रचना है जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रदर्शित करना लेखक का उद्देश्य रहता है। कहानी के चरित्र, उसकी शैली और कथा–विन्यास सब एक भाव को पुष्ट करते हैं'। **निखिलेश्वर की कहानियाँ प्रेमचंद के कहे का सार्थक रूप हैं।**

साधारणतयः कहानी की घटनाएँ अनायास ही नहीं घटतीं, अपितु उनका विकास धीरे–धीरे होता है। कहानी में सहज और स्वाभाविक घटनाक्रम की भव्य अट्टालिका सूक्ष्म और संवेदनशील अनुभूति से अनुरंजित तथा अनुप्राणित कथावस्तु की नींव पर ही खड़ी की जा सकती है। **निखिलेश्वर इस कला में सिद्धहस्त ज्ञात होते हैं।**

कहानीकार ने यह भी दर्शाया है कि कहानी में जीवन की केवल बाह्य घटनाओं की ही अभिव्यक्ति नहीं होती, बल्कि उनमें मानव हृदय का भी उद्घाटन होता है।

अपनी कहानियों में घटनाओं के घात–प्रतिघात के साथ–साथ कहानीकार ने पात्रों के मनोलोक को व्यक्त करने का भी प्रयास किया है।

स्व. विजयराघव रेड्डी जी ने इनकी एक तेलुगु कहानी 'नेलवंका' का हिंदी में 'धूमिल हो गया नेह का चाँद' शीर्षक से अनुवाद किया है, जिसमें हमारे पुराने शहर में हिंदू–मुस्लिम भाइयों का बहुत सुंदर सामाजिक चित्रण किया गया है।

निष्कर्ष

कथानकों में विविधता है और सभी कहानियाँ जनमानस में मानवीय एवं सामाजिक चेतना जागृत करती हैं। कहानी गढ़ने की शिल्प–शैली उभरते कहानीकारों के लिए आदर्श एवं मार्गदर्शक बनने की योग्यता रखती है। परिभाषा की दृष्टि में खरी एवं सर्वगुण संपन्न, उत्तम शिल्प–शैली में गढ़ी शुद्ध कहानियों के माध्यम से कहानीकार निखिलेश्वर ने दबाये जा रहे मनुष्य के उत्थान की लालसा व्यक्त की है। जहाँ हमारा कानून दुष्कर्मियों में भय नहीं

बिठा पाता है, वहाँ समाज की दुर्नीतियों को हटाने के लिए कठोर कदम उठाने की सोच को भी बल दिया है। श्रमशक्ति को महत्व दिया है। जनांदोलन को अनिवार्य आयुध माना है। जहाँ सत्य के लिए लड़ते कुछ लोगों के कदमों के बाँधे जाने की स्थितियाँ सशक्त हैं, वहाँ वे इस दिशा में अपने कदम बढ़ाने के रहस्य मार्ग अपनाने को ही सही मानते हैं। कहानीकार का मुख्य उद्देश्य यह भी, कि सत्य के समर में त्याग और बलिदान व्यर्थ न जाए, सार्थक रहें...

संदर्भ सूची :

1. निखिलेश्वर, निखिलेश्वर कथलु (निखिलेश्वर की कहानियाँ) – कहानी–संग्रह
2. श्रेष्ठ कहानियाँ (पूर्व सी.बी.एस.ई की पाठ्यपुस्तक)

तेलुगु–हिंदी साहित्य के पर्यवेक्षक निखिलेश्वर

के. श्यामसुंदर

शोध सार : भाषा अभिव्यक्ति का माध्यम है। हर भाषा मनुष्य से मनुष्य को जोड़ने का कार्य परोक्ष अपरोक्ष करती है। तेलुगु भाषा के वरिष्ठ साहित्यकार निखिलेश्वर को पढ़ने पर इस बात को अवश्य माना जा सकता है कि साहित्यकार, कवि, लेखक किसी भी भाषा का हो, उसका दायित्व होता है कि वह समाज को मानवता और समन्वय की दिशा प्रदान करें। निखिलेश्वर भी बहुत ही संवेदनशील कवि होने के साथ ही हिंदी और तेलुगु साहित्य के बीच समन्वय साधने का सराहनीय प्रयास उन्होंने किया है। इस विषय पर उन्हें साहित्यिक पर्यवेक्षक कहा जा सकता है। हाल ही में उन्हें साहित्य अकादमी का पुरस्कार प्राप्त हुआ है। समस्त साहित्य जगत की ओर से उन्हें हार्दिक शुभकामनाएँ।

बीज शब्द : आलोकित, परिप्रेक्ष्य, शृंखला, पुरस्कार

मेरे लिए तेलुगु के साहित्यकार निखिलेश्वर एक अपरिचित नाम है। मैंने जब उनके साहित्य पर कुछ लिखने के बारे में सोचा तब यह भी पता चला कि निखिलेश्वर हिंदी विषय के भी ज्ञाता हैं। वैसे तेलुगु साहित्यकारों ने भी हिंदी साहित्य को मात्र पढ़ा ही नहीं, उसे जी भर के जिया भी है। भाषा कोई भी हो, लेकिन उसके साहित्य को और साहित्यकारों को अपनी अभ्यासक वृति से देखो तब निश्चित ही पता चलता है कि वह भाषा कितनी समृद्ध है। बस हल्के में इतना अवश्य कहा जा सकता है कि जितना ज्यादा साहित्य उतनी ही भाषा समृद्ध।

तेलुगु साहित्यकार निखिलेश्वर को इसलिए मैंने पर्यवेक्षक कहा है कि उन्होंने तेलुगु साहित्य को हिंदी भाषा में बहुत ही सरलता और आत्मीयता से परोसा है। वे एक ऐसे पर्यवेक्षक है जिन्होंने उनके द्वारा संपादित 'विविधा' पुस्तक में तेलुगु के उन साहित्यकारों का परिचय कराया है जिन तेलुगु साहित्यकारों ने तेलुगु भाषा साहित्य को 20वीं शताब्दी में विभिन्न विधाओं से और भाषा से जोड़कर एक पुल बनाया, जिसे वर्तमान समय की नितांत आवश्यकता कहना अनुचित नहीं होगा। प्रादेशिक भाषाओं के साहित्यकारों द्वारा राष्ट्रभाषा हिंदी के साथ समन्वय साधना भी वर्तमान समय की माँग है, इसे नकारा नहीं जा सकता।

तेलुगु साहित्यकार निखिलेश्वर ने 'विविधा' में 20वीं सदी का तेलुगु साहित्य आलेख लिखकर, पुस्तक में अपनी पैनी दृष्टि और कलम से हिंदी के कलमकारों को तेलुगु साहित्य के यथार्थ को आलौकित किया है। उन्होंने इस बात को स्पष्ट लिखा है कि बीसवीं सदी में भारतीय भाषाओं के साहित्य पर पश्चिमी विचारों का प्रभाव नज़र आ रहा है। निखिलेश्वर में इस बारे में मात्र तेलुगु भाषी साहित्यकारों के बदलते साहित्यिक विचारों के बारे में ही नहीं

लिखा, बल्कि सभी भारतीय भाषाओं पर होते पश्चिमात्य प्रभाव के बारे में बताया। विगत तीन सौ वर्षो में बदलाव पश्चिमी साहित्य में हुए, वह बदलाव तेलुगु भाषा में मात्र सौ वर्षों में हुए हैं। उन्नीसवी तथा बीसवीं सदी में तेलुगु साहित्य का कालजयी नाटक 'कन्या शुल्कम' प्रकाशित हुआ। इस नाटक के लेखक एवं प्रवर्तक गुरजाड़ा अप्पाराव एक युगदृष्टा लेखक रहे हैं। उन्होंने सभी विधाओं में लिखा अपितु उनकी कन्या शुल्कम रचना एक यादगार रचना मानी जाती है। तेलुगु के ही वरिष्ठ साहित्यकार कंदकूरि वीरेशलिंगम जो तेलुगु के समाज सुधारक साहित्यकार माने जाते हैं, उनका साहित्य तेलुगु की सरल भाषा शैली में माना जाता है। कंदुकूरि ने तेलुगु साहित्य को मुख्य रूप से नव चिंतन साहित्य के परिप्रेक्ष्य में देखा जाता है। उन्होंने अपने साहित्य में रूढ़िवाद और अनावश्यक परंपरा को अपने चिंतन में पिरोया है। उनकी इस विचारधारा ने समस्त समाज को झकझोर कर रख दिया। पश्चिमी सभ्यता से प्रभावित उनका साहित्य उन दिनों चर्चा का विषय हुआ करता था। दक्षिण प्रांत की एक भाषा तेलुगु और अनेक सामाजिक विषयों पर उनका गहन चिंतन ही उन्हें भाषा और समाज का एक महान दार्शनिक बनाता है। कंदुकूरि के साहित्य पर कुछ अंशो में गांधीवाद का भी असर माना जा सकता है।

निखिलेश्वर ने तेलुगु के विद्रोही साहित्यकार चलम के साहित्य को भी भली–भांति खंगाला है। चलम तेलुगु के उन विद्रोही साहित्यकारों में से एक कद्दावर साहित्यकार माने जाते हैं जिन्होंने खुलकर समाजवाद के रूढ़िवाद पर लिखा। नारी जीवन को केंद्रित करते हुए चेलम ने नारी और पुरुष के वास्तविक मर्म को उजागर करते हुए लिखा है कि जीवन के दो ही परम आशय है– आंनद और सेक्स। मनुष्य के जीवन का यही यथार्थ है स्वतंत्र जीवन परिवेश में सेक्स द्वारा आनंद। स्त्री और पुरुष के बीच यही उत्कृष्ट परंपरा सत्य है, शेष संबंध धर्म या परंपरा की दीवार में कैद है। इसी को उनका विद्रोही चिंतन माना जाता है।

साथ ही उन्होंने लिखा कि दृढ़ विश्वास का विच्छेद करते हुए जीवन के उन सिद्धांतो को जो जीवन के अंतिम समय तक मनुष्य को अपने में जकड़े रखते हैं जो नारी को मात्र दासत्व की श्रृंखला में बाँधकर रखता है। चलम ने इसी श्रृंखला को तोड़ा है अपनी कहानियों में। चलम ने अपने नाटक, उपन्यास आदि में भारतीय स्त्री को लेकर बहुत कुछ लिखा है। उनके द्वारा लिखित 'अमीना' नामक उपन्यास में एक स्त्री की स्वेच्छावृत्ति और हृदय के बीच की ऊहापोह को दर्शाया गया है। इस उपन्यास में उनकी गद्य शैली का मुक्त छंद में सृजन बहुत ही सराहनीय है। उनके 'प्रेमलेखलु' जैसे ग्रंथ में विद्रोह गतिमान है तो स्त्री–पुरुष के यौन संबंध के बारे में भी दोनों के बीच अटूट विश्वास समान अधिकारों का प्रतीक माना जाता है। उन दिनों चलम के विद्रोही साहित्य ने इस तरह ऊधम मचाया कि तेलुगु साहित्यकारों ने उनको निर्वासित करने की साजिश रची। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनकी तुलना अमेरिका के नोबल पुरस्कार विजेता विलियम फोकनर से की गई।

'विविधा' नामक निखिलेश्वर द्वारा संपादित पुस्तक में तेलुगु भाषी साहित्यकारों की कृतियाँ बहुत ही सरल शब्दों में लिखी गई है। 'विविधा' में कहानी और कविताओं का अनूठा संगम पढ़ने को मिला। वैसे इन दिनों इसी तरह के साझा संकलन प्रकाशित करने का नया चलन भी चल पड़ा है। कहानीकारों में देवरकोंडा बालगंगाधर तिलक, ए. मुरली, स्माईल, चलम तथा संकलन के संपादक की भी कहानियाँ अपने समय की कहानियों के साथ चलती नज़र आ रही हैं तो कविताओं के कविवर श्री श्री, बैरागी, डॉ. सी. नारायण रेड्डी, मदिराजू रंगाराव, मदिराजू गंगाधर, कोंडेपूरी निर्मला आदि तेलुगु भाषी सृजनकार जिसमें अधिकतम हैं। निखिलेश्वर के अनुसार सामाजिक सृजन को लेकर ही बिसवीं सदी का तेलुगु साहित्य विकसित हुआ। साठ के दशक में सामाजिक और साहित्य स्थब्ध, दिगंबर कविता जैसी तेलुगु विधि में रचनाएँ प्रकाशित हुईं। स्वतंत्रता के पूर्व साम्यवादी क्रांति के लिए विप्लव रचयीतलु (विरसम) तत्पश्चायात स्त्रीवाद (नारीवाद) दलित साहित्य और अल्पसंख्यक मुस्लिम साहित्य आदि धाराओं में तेलुगु साहित्य का सृजात्मक स्वरूप दृष्टिगत होता है। तेलुगु कविताओं में क्रांतिकारी का दर्शन होता है तो कहानियाँ तत्कालीन समाज और व्यवस्था के दर्शन कराती है। स्वतंत्रता के कुछ दिनों बाद हैदराबाद में होते दंगो को उजागर करती कहानियों में हिंदू–मुस्लिम जातीय संघर्ष में भी जो कुछ लोग मानवता को भूले नही थे, इस बात के दर्शन कराती निखिलेश्वर द्वारा लिखी कहानी 'धूमिल हो गया नेह का चाँद' हृदय के मर्म को झकझोरती है। जिसमे जंगय्या नामक एक किरदार है। वह हैदराबाद के चार मीनार इलाके में उस समय आता है जिस समय वहाँ हिंदू–मुस्लिम दंगे–फसाद हो रहे हैं। वह दोनों ओर की भीड़ को देखकर सहम जाता है, बचते–बचाते उस दंगे–फसाद के इलाके से निकलने की कोशिश करता है। हैदराबाद के चारमीनार इलाके की पत्थरगट्टी, गुलजार हॉउस, चार कमान आदि स्थान पर हुए दंगों का यथावत वर्णन निखिलेश्वर ने बहुत ही ईमानदारी से शब्दों के केनवास पर उतारा है। एक ओर मुस्लिम समुदाय की भीड़ हिंदु मारवाड़ी व्यापारियों की दुकानों को तोड़–फोड़ कर लूट रही है, आग के हवाले कर रही है तो कुछ ही दूरी पर मुसलमानों की दुकानों को हिंदु समुदाय की भीड़ आग के हवाले कर रही है। निज़ाम नवाब की नवाबी ठाठ–बाट से सजी हैदराबाद की संस्कृति को दोनों तबके के लोग स्वयं अपने हाथों से उजाड़ रहे थे। इसी तरह के दृश्यों को देखते तथा अपने–आप को बचाते हुए जंगय्या चल रहा था। वह चारमीनार के गली–कुंचो से भली–भांति परिचित है, परंतु आज वह सहमा हुआ है, भीतर ही भीतर डरा–डरा–सा है। हैदराबाद का व्यस्ततम इलाकों में से एक चारमीनार का इलाका जैसे दो देशों में, हिंदुस्तान और पाकिस्तान में बंट गया है। एक तरफ या अल्लाह बचाओ की चीख है तो दूसरी ओर हिंदू गली से भी बचाओ की चीखें सुनाई दे रही हैं। पुलिस हवा में फायरिंग करते हुए फसाद रोकने में जुटी है। जलती और लुटती दुकानों, दहशत गर्दों की भीड़ को देखते हुए अपनी राह चल रहा है। जंगय्या स्वयं को बचाने के लिए एक गली में घुस जाता है। तभी उग्र भीड़ उसे घेर लेती है। कुछ इसी तरह के तमाशबीन भी उसी की तरह घेर लिए जाते हैं। मारो साले को कहते हुए उग्र भीड़ उसे लातों और घूंसो से पीटती है और

आगे बढ़ जाती है। जंगय्या के सिर से खून बहता है। फिर भी उस पर और घूँसे पड़ते हैं। भीड़ आगे बढ़ जाती है। तभी उसके पास आकर एक स्कूटर सवार रुक जाता है। वह अपनी पत्नी के साथ जा रहा है, लेकिन जंगय्या को देखकर रुक जाता है।

वह व्यक्ति जंगय्या को अपने घर ले जाता है तथा उसके सिर से बहते खून को रोकने का प्रयास करते हुऐ स्वयं का परिचय देता है। मेरा नाम महबूब हुसैन है। मैं पास के कॉलेज में पढ़ाता हूँ। जंगय्या का परिचय पूछने के बाद वह कहता है जंगय्या साहब, आप जैसे बेकसूर इस तरह मारना ठीक नही है। आप हिंदू हैं और मैं मुसलमान। लेकिन सबसे पहले तो हम इंसान हैं, इस बात को हम क्यों भूल जाते हैं। इन सांप्रदायिक फसादों में निहित स्वार्थ होता है, वही लोग ऐसी मूर्खता करते हैं। जंगय्या ने भी उस मुस्लिम व्यक्ति की हमदर्दी का जवाब देते हुए कहा कि धर्म और मजहब की लड़ाई में बेकसूर ही मारे जाते हैं। मेहनत से अपने परिवार को पालनेवाले का कोई धर्म या मज़हब नहीं होता। सब एक से होते हैं। जंगय्या की बात पर हुसैन मियां ने कहा–हाँ जंगय्या जी, आपने ठीक फ़रमाया। ये लूट–पाट के ठेकेदार ही सब कराते हैं। इस कहानी की यह बानगी बस इतना तय करने के लिए काफ़ी है कि दंगे और फसाद से किसी का भला नहीं होता। कभी मंदिर या कभी मस्जिद को लेकर हुए दंगे सिर्फ इंसानियत को शर्मसार करते हैं। इस प्रकार निखिलेश्वर ने 'धूमिल हो गया नेह का चाँद' में बहुत ही मर्मस्पर्शी चित्र अपने सर्व साधारण शब्दों में उकेरा है। सांप्रदायिक दंगे और फसाद को लेकर एक वास्तविक तथ्य को समेटे उनकी यह कहानी मानव मन को कहीं–न–कहीं टटोलती अवश्य है। हिंदू और मुस्लिम फसादों ने अब तक क्या पाया, यह बहुत बड़ा चिंतन का विषय हमारे सामने निखिलेश्वर ने रखा है। इस तरह के समाज उपयोगी तथा समाज, धर्म व समुदाय के बीच समन्वय स्थापित करने पर प्रशस्त विचारधारा की हर समय आवश्यकता है। उनकी कविताओं में भी मानवतावाद की झलक ही परोक्ष–अपरोक्ष मिलती है। उन्होंने नूतन पीढ़ी को अपनी दिगंबर पीढ़ी नामक कविता में संदेश दिया है कि–

''मेरी यह पीढ़ी
आकाश तले स्वच्छ मेघ–सा
दुनिया की धूल को झटकते
रास्ते भर ढो रही है,
प्रश्नों के सलीब!''

मनुष्य के जीवन में कितने प्रश्न और समस्याएँ होती हैं। हर मनुष्य उनको ढोता रहता है। यह प्रश्न सदियों से अनुत्तरित है। पीढ़ी है जो पूरी तरह दिगंबर होती जा रही है। इस तरह की अनुमान लगाना मुश्किल है। वह इस तरह व्याप्त दुनिया की धूल को ढो रही है। दिगंबर पीढ़ी कविता के अंतिम बंध में कविवर निखिलेश्वर ने लिखा है कि–

''मनुष्य कि सुंदर मूर्ति
अब आँखों के आगे

उतारे गए कपड़ों को चिढ़ाते
उतने ही असीम अनुभूति के दाता
दिगंबर मानव के लिए
यहाँ यह पीढ़ी, दिगंबर पीढ़ी।''

अब उनकी इस पीढ़ी को लेकर कविता में शब्दबद्ध किया गया दृष्टिकोण एक सत्य की अनुभूति कराता है। निखिलेश्वर ने अपनी कविताओं में आडंबर परंपराओं पर भी कटाक्ष किया है।

'गीताचार्य की समाधी' कविता में मनुष्य की विकृत मानसिकता पर प्रहार किया है——

''स्मशानो की सीमाओं को लाँघकर
मध्य युगीन कपालिकों के
तत्र भोग का बलि पशु बनकर
अब जाति कुल के कपाल
फूलों के चारों ओर नाच रहे है।''

निखिलेश्वर की कविताओं में इस तरह से मनुष्य के खोखले और अनावश्यक स्वरूप को दर्शाया गया है। उनके द्वारा संकलित कहानी एवं कविताओं संकलन में अन्य कविताएँ भी नूतन पीढ़ी के नव कवियों के लिए नव सृजन एक अनमोल दस्तावेज अवश्य माना जा सकता है।

1. निखिलेश्वर, विविधा, 2009, क्षितिज प्रकाशन, दिल्ली–32–पृ.9
2. वही–पृ.11
3. वही–पृ.12
4. वही–पृ.34
5. वही–पृ.36
6. वही–पृ.103
7. वही–पृ.133
8. वही–पृ.134

तेलुगु की दिगंबर कविता और निखिलेश्वर

विनीता कृष्णा

शोध सार : "तेलुगु की दिगंबर कविता ओर निखिलेश्वर का काव्य" प्रस्तुत प्रपत्र में भारत के दक्षिण भारत की सबसे लोकप्रिय और सर्वाधिक महत्वपूर्ण मानी जाने वाली तेलुगु भाषा का संक्षिप्त परिचय दिया गया है। इसमें प्राचीन तेलुगु ओर आधुनिक तेलुगु साहित्य की जानकारी देते हुए, सन् 1965 में तेलुगु काव्य में उत्पन्न काव्यधारा "दिगंबर कविता" के उद्भव उसके विकास की जानकारी दे गई है। दिगंबर कविता के आविर्भाव के समय तत्कालीन परिस्थितियों और उनके प्रभावजनित प्रवृतियों की जानकारी देते हुए यह स्पष्ट किया गया है ताकि तेलुगु काव्य को दिगंबर कविता का क्या प्रदेय है। अंत में दिगंबर काव्य के सशक्त कवि निखिलेश्वर जीवन का परिचय देकर उनकी काव्य यात्रा के बारे में जानकारी दी गई है तथा निखिलेश्वर के काव्य पर शोध की संभावनाओं के बारे में बताया गया है। कुल मिलाकर तेलुगु भाषा के प्रारंभिक साहित्य से आधुनिक साहित्य की यात्रा का संक्षिप्त परिचय, दिगंबर कविता से संबंधित महत्वपूर्ण तथ्य एवं दिगंबर कवि निखिलेश्वर की काव्य यात्रा के बारे में बताया गया है।

बीज शब्द : सामाजिक, प्रगतिशील, शासकीय, स्वतंत्रता

भारत के दक्षिण में बोली जाने वाली चार प्रमुख (तमिल, तेलुगु, कन्नड और मलयालम) में तेलुगु सर्वाधिक महत्वपूर्ण और लोकप्रिय भाषा है। भारत सरकार ने इसे छह शास्त्रीय भाषाओं (classical languages) (प्राचीन अथवा पारंपरिक भाषा)[1] में स्थान दिया है। तेलुगु को 'Italian of east'[2] भी कहा जाता है। जिस प्रकार प्रत्येक इटालियन शब्द के अंत में एक स्वर (vowel) होता है, वैसे ही तेलुगु शब्दों के अंत में भी स्वर होते हैं। इसी कारण तेलुगु और इटालियन के बीच समानता देखी जाती है। भारत में तेलुगु, हिंदी के बाद दूसरे स्थान पर बोली जाती है, और विश्व मे इसका चौदहवाँ स्थान है। इसकी लिपि ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न मानी जाती है। भारत के दक्षिण प्रांत के अधिपति श्री कृष्णदेवराय ने देशभर की भाषाओं में तेलुगु को सर्वश्रेष्ठ माना।

तेलुगु का प्रारंभ ईसा की पहली शताब्दी से अनुमानित है। शातवाहन राजा हाल रचित प्राकृत ग्रंथ 'गाथा सप्तशती' में तेलुगु के लगभग 100 शब्द मिलते हैं। छठी शताब्दी तक राजकार्यों में संस्कृत और प्राकृत का प्रयोग किया जाता था। छठी शताब्दी मे रेनाटी चोलो ने तेलुगु को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया, उन्होंने इसी समय सरकारी आदेशों को शिलालेखों पर खुदवाया। 575 ई. में तेलुगु का प्रथम शिलालेख प्राप्त हुआ।[3] दसवीं शताब्दी तक तेलुगु मात्र सामाजिक भाषा के रूप में व्यवहार में प्रयुक्त की जाती रही। इसका प्रयोग साहित्यिक क्षेत्र में लगभग ग्यारहवीं शताब्दी के आसपास आरंभ हुआ। तेलुगु के आदिकवि नन्नया द्वारा रचित 'आंध्र महाभारत' को तेलुगु का

आदिकाव्य माना जाता है। यह संस्कृत महाभारत का अनुवाद है। नन्नया ने इसके तीन सर्गों (आदि, सभा और अरण्य (अपूर्ण)) का अनुवाद किया। इनकी मृत्यु के कारण अपूर्ण रह गए अनुवाद को क्रमशः तिकन्ना एवं यर्राप्रगड़ा नामक विद्वानों ने पूर्ण किया। प्राचीन तेलुगु साहित्य में संस्कृत के वेद पुराण और भागवत जैसे ग्रंथों का अनुवाद हुआ। कालांतर में श्रृंगारकाव्य, नीतिकाव्य, प्रबंध एवं महाकाव्य; शतक साहित्य, अवधान विद्या तथा भक्ति और कीर्तनों के रूप में तेलुगु साहित्य का विकास हुआ। प्राचीन तेलुगु साहित्य में धर्म और संस्कृति का पोषण हुआ है। आंध्र महाभारत की रचना करके नन्नया ने तेलुगु साहित्य परंपरा का श्रीगणेश किया। आंध्र महाभारत के बाद अनेक श्रेष्ठ ग्रंथों की रचना हुई, जिसमें आंध्र महाभागवत (पोतना), आमुक्त माल्यदा (कृष्णदेव राय), मनुचरित्र (पैदन्न), श्रंगार नैषध (श्रीनाथ), पांडुरंग माहात्म्य (तेनाली रामकृष्णा) इत्यादि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

बीसवीं शती के पहले दशक से ही आधुनिक तेलुगु साहित्य रचना का प्रारंभ हुआ। आधुनिक युग के प्रारंभिक तेलुगु साहित्यकारों ने धर्म और संस्कृति के पोषण के साथ नवीन मूल्यों का संवर्धन करते हुए साहित्य के विकास में योगदान दिया। आधुनिक काल में तेलुगु साहित्य जनमानस से जुड़कर तत्कालीन परिस्थितियों और उसके प्रभाव व प्रतिक्रिया को भी साहित्य में प्रस्तुत करने लगा। आधुनिक काल मे विश्व पटल पर बहुत तीव्रता से परिवर्तन हुए, उनका प्रभाव भारतीय साहित्य पर भी पड़ा। तेलुगु साहित्य, विशेषकर काव्य में वैश्विक और भारतीय दोनों ही साहित्य रचनाओं की प्रवृतियाँ दिखाई देने लगी। भारत की अन्य भाषाओं की तुलना में तेलुगु ने अत्यंत वेग से परिवर्तित होना प्रारंभ किया। इस संबंध में प्रसिद्ध दिगंबर कवि निखिलेश्वर का कथन महत्वपूर्ण है– "पश्चिमी साहित्य में जो परिवर्तन पिछले 300 वर्षों में हुए थे वे तेलुगु में 100 वर्षों में ही संपन्न हुए"। वेग से होते परिवर्तनों ने किसी भी काव्यधारा या आंदोलन को अधिक समय तक टिकने नहीं दिया। वैश्विक परिवर्तनों ने भारत के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक सभी क्षेत्रों को प्रभावित किया। भारतीय जनता पहले स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्षरत रही, स्वतंत्र होने के बाद बेरोजगारी, आर्थिक समस्याएँ, राजनीतिक उथल–पुथल, वर्गभेद, जातिभेद और शोषण में उन्हें पस्त कर दिया। जनता व्यक्तिगत, सामाजिक और मानसिक तीन–तीन पक्षों पर युद्धरत थी। परंपरागत मूल्यों के संरक्षण का दायित्व और नवीन मूल्यों को अपनाने का आग्रह, इन दो पाटों के बीच पिसते साहित्यकार दोनों के बीच सामंजस्य स्थापित करने के लिए प्रयत्नशील थे। इन परिस्थितियों के प्रभाव से तेलुगु काव्य में कई नवीन काव्य प्रवृत्तियाँ जैसे राष्ट्रभक्ति, सामाजिक सरोकार, मानवतावाद, प्रकृति प्रेम, सर्वहारा वर्ग के प्रति सहानुभूति एवं विद्रोह, मौलिक अधिकारों के लिए संघर्ष और नए सुंदर समाज की स्थापना का आग्रह इत्यादि धीरे–धीरे पनपने लगी। ये प्रवृत्तियाँ आधुनिक तेलुगु की मुख्य काव्य धाराओं, भाव कविता, अभ्युदय कविता, दिगंबर कविता और विप्लव कविता में दिखाई देती है।

भाव कविता का समय 1910 से 1940 ई. का माना जाता है, इसे 'लिरिकल पोएट्री' भी कहते हैं। यह पश्चिमी काव्य की रोमांटिक कविता से प्रभावित है। छायावादी हिंदी काव्य और तेलुगु भाव कविता दोनों का प्रेरणा स्रोत रोमांटिसिज़्म था परंतु तेलुगु की भाव कविता ने (1910 ई.) में छायावादी कविता (1918 ई.) से लगभग 8, 10 वर्ष पूर्व ही प्रवेश कर लिया। दोनों काव्य धाराओं में राष्ट्रीयता, देशभक्ति, भारत की गौरवगाथा का गान, प्रकृति चित्रण, आत्मनिष्ठा, मानवतावाद और स्वच्छंदता इत्यादि प्रवृत्तियाँ व्यापक रूप से विद्यमान हैं। इसी समय रशिया की सोशलिस्ट क्रांति एवं मार्क्सवाद से प्रभावित काव्य रचनाएँ यहाँ वहाँ दिखाई देने लगी। मार्क्सवादी विचारधारा ने तेलुगु कविता के कथ्य को प्रभावित किया। 1940 के आस पास के समय में इन्हीं परिस्थितियों से प्रभावित होकर अभ्युदय कविता ने जन्म लिया। हिंदी में अभ्युदय कविता के समानांतर चलने वाली काव्यधारा 'प्रगतिवाद' के नाम से जानी जाती है। इसे प्रोग्रेसिव पोइट्री एवं प्रगतिशील काव्य के नामों से भी जाना जाता है। 1940 से 1975 तक का इसका रचना काल माना गया है। 1943 में 'अभ्युदय रचयितलू संघम' (प्रगतिशील काव्य रचयिता संगठन) अर्थात् "अरसमु" की स्थापना हुई। 1947 से 74 के बीच इसके छह सम्मेलन हुए। अभ्युदय कविता में सामान्य मानव को महत्व दिया गया। यह सामाजिक समानता की पक्षधर थीं। वर्ग–वर्ण भेदों का त्याग, शोषण विहीन समाज की कल्पना और अन्याय का विरोध, इस कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ थी। श्री श्री (श्रीरंगम श्रीनिवास राव), बेल्लमकोंडा रामदास, येचुरी सुब्रमण्यम एवं आरुद्रा इत्यादि कवियों ने प्रगतिशील काव्य को अपनी रचनाओं से समृद्ध किया। इस काव्यधारा में रचित अग्निधारा (दासरथी), त्वमेवाहम (आरुद्र), अग्निवीणा (आणि शेट्टी) इत्यादि काव्य रचनाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। इन सबसे अधिक लोकप्रिय अभ्युदय रचना 'नयागरा' काव्य संकलन (1944) है। 1955 ई. तक अभ्युदय काव्य उत्तरोत्तर विकसित हो रहा था, अचानक कम्युनिस्ट पार्टी की हार के कारण संपूर्ण अभ्युदय काव्य स्तब्धता की स्थिति में आ गया। काव्य रचनाएँ होनी लगभग बंद हो गई। इस काव्य से संबंधित अधिकांश कवियों ने दूसरी ओर कदम बढ़ा दिए। श्री श्री और आरुद्र जैसे पुरोधा अभ्युदय काव्य रचना छोड़कर सिनेमा क्षेत्र में रचनाएँ करने लगे। अभ्युदय काव्य में यह स्तिथि 1955 से 65 तक बनी रही। इस समय संपूर्ण विश्व में भी ऐसी ही स्तब्धता का अनुभव हो रहा था। यही समय था जब विभिन्न देशों में क्रांतिकारी आंदोलनों का प्रारंभ हुआ। अमेरिका में 'बीटनिक्स' या 'बीटजेनरेशन' (1940 से 50), इंग्लैंड में 'ऐंग्री यंग मैन' (1950), आंदोलन, रशिया मे निहिलिस्ट आंदोलन का उद्भव हुआ। भारत के बंगाल प्रांत में 'हंग्री यंग मैन' (1958) तेलुगु में इसे 'अकाली तरम' और हिंदी में 'बुभुक्षित कविता' कहते हैं। इन आंदोलनों में पुरानी मान्यताओं और पद्धतियों को छोड़ दिया गया और नैतिक एवं धार्मिक परंपराओं का निषेध कर दिया गया। आमूलचूल सामाजिक बदलाव की आकांक्षा इस साहित्य के मूल मे विराजमान थी। इस क्रांति का प्रभाव संपूर्ण भारतीय साहित्य पर भी पड़ा। तेलुगु काव्य परिदृश्य भी परिवर्तित हुआ। सामाजिक उथल–पुथल, दारुण शासकीय परिस्थितियों और बढ़ती हुई वर्ग वर्ण विषमताओं के कारण तेलुगु साहित्य जगत में पूँजीपति शोषकों के प्रति रोष तथा शोषितों

के प्रति दया और करुणा का भाव जाग रहा था। साथ ही मानव के प्रति संवेदना और कुछ न कर पाने की असमर्थता से दुखी कवियों का दुख अभिव्यक्ति के लिए बेचैन था। 'अभिनव नन्नया' के नाम से प्रसिद्ध तेलुगु कवि रायपरोलु सुब्बाराव का कहना है– "दुख बाधा या वेदना ही बदलाव का कारण होता है"। सामाजिक सरोकारों के कारण उपजी वेदना का उद्वेगमय और आक्रोशपूर्ण चित्रण ही दिगंबर कविता के रूप में जाना जाता है। संपूर्ण तेलुगु साहित्य को झकझोरकर 'शॉक ट्रीटमेंट' देने वाली दिगंबर कविता का प्रारंभ 1965 ई. में हुआ।

दिगंबर का सामान्य अर्थ नग्नता या वस्त्र हीनता से लिया जाता है किंतु तेलुगु दिगंबर कवियों की दिगंबरता या आवरणहीनता का संबंध केवल मानव आचरण से संबंधित है। इनका कहना है कि व्यक्ति को पहचानना है, तो जाति, धर्म, वर्ग और वर्ण के परदों को हटाकर मनुष्य को देखो। सच को सच के रूप में प्रस्तुत करना ही इनका मंतव्य था। ये कवि समाज से आग्रह करते हैं कि जाति धर्म के मुखौटे उतारकर अपने आपको पहचानो। इस दिखावट के ढकोसले के पीछे अपने आप को केवल एक बार अनावरत देखो, अपने निजरूप को ढंकने वाले मुखौटे उतार फेंको और अपने असली रूप से इस संसार का पालन करो। दिगंबर कविता पारदर्शिता और सामान्य सरल जीवन जीने का आग्रह करती है। इसमें निहित रचनाएँ शोषित वर्ग के प्रति संवेदना का दस्तावेज हैं। इन कवियों पर मार्क्सवादी विचारधारा का प्रभाव है और ये स्वीकार भी करते हैं। लेकिन अन्य किसी भी बीटनिक्स या निहीलिस्ट इत्यादि विदेशी आंदोलनों का प्रभाव अपने ऊपर स्वीकार नहीं करते। प्रसिद्ध साहित्यकार और आलोचक प्रोफेसर ऋषभदेव शर्मा भी यही बात कहते हैं–"वैचारिक स्तर पर यह काव्यांदोलन स्वयं को मार्क्सवादी चिंतन से जोड़ता है और इसीलिए इसे तेलुगु प्रगतिशील कविता के साठोत्तरकालीन नवोन्मेष के रूप में भी देखा जा सकता है।"[6] दिगंबर कविता का प्रवर्तन छह युवा कवियों ने मिलकर किया। इन्होंने अपने जाति व धर्म सूचक 'सरनेम' जैसे राव, रेड्डी इत्यादि त्याग कर नए नाम रख लिए। ये छह कवि हैं–1. नग्नमुनी 2. निखिलेश्वर 3. चेराबंडा राजू 4. महास्वप्न 5. ज्वालामुखी और 6. भैरवय्या। इन कवियों ने तीन काव्य संग्रहों का प्रणयन किया जो क्रमशः 1965, 66 और 68 में प्रकाशित हुए। इन्होंने अपनी कविता को कविता न कहकर 'दिक्' कहा। उन्होंने शक का नाम भी बदलकर दिगंबर शक रख दिया। उनके तीन संकलनों में कुल 93 कविताएँ संकलित हैं जिनमें नग्नमुनि की 25, निखिलेश्वर की 24, चेराबंडा राजू की 20, ज्वालामुखी की 6, महास्वप्न की 6 और भैरावय्या की 12 कविताएँ संकलित हैं। दिगंबर कवियों का मानना है कि विषम सामाजिक व्यवस्था को और भी विषम बनाने वाले दो तत्व हैं जाति और धर्म। मानव जब तक जाति और धर्म से जुड़ा रहेगा, तब तक जातिभेद, वर्ग–वैषम् और असमानता समाप्त नहीं होगी। सांप्रदायिकता के कारण कुल जाति और मत से संबंधित आडंबरों में वृद्धि हो रही है। दिगंबर कवि सांप्रदायिक आडंबरों, भेदभावों को त्याग कर नवीन युगबोध की स्थापना के लक्ष्य को लेकर चले हैं। उनकी कविता में निहित दृष्टि को समझने के लिए उनके घोषणा पत्र

को समझने का प्रयत्न करना होगा। उनकी कुछ पंक्तियाँ जो घोषणा पत्र से ली गई है इनकी विचारधारा पर प्रकाश डालती है। "सांप्रदायिक काव्य रचना में आडंबर, दंभ, पांडित्यदर्प, मिथ्या भ्रम आदि भरे हुए हैं। उन्हें तजकर आधुनिक काव्य रचना में सच्चाई, सरलता और युगबोध लाना चाहते हैं। सच्चे अंतर्मानव की अनुभूतियों की अभिव्यक्ति से सास लेने वाले आधुनिक मानव के आविष्कार के लिए हम सदा प्रयत्नशील रहते हैं। मानव इतिहास में कई धर्म सिद्धांत उत्पन्न हुए हैं। तत्कालीन परिस्थितियों के अनुसार निर्मित उन सिद्धांतों का महत्व उस समय रह चुका है। पर कालांतर में इतिहास के पूर्वागमन मे इन सब आशयो को केवल धर्म के ठेकेदारों की प्यास बुझाने के काम में लाया जा रहा है। ''इसलिए दिगंबर कवि इन इन मजहबों से, वादों से, कोई वास्ता नहीं रखते। अंतरराष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में आदमी को रखकर वादों के पासों से जुआ खेलने का काम तुरंत बंद हो यही हम चाहते हैं।"[7] इस प्रकार दिगंबर कवि धार्मिक आडंबरों द्वारा सदियों से शोषित जन को आगाह करना चाहते हैं। उनके मंतव्य में धर्म, जाति और वर्ण संबंधी सभी आडंबरों का निषेध होना चाहिए। गुलाम मानसिता से कार्य करने वाले नेताओं, साहित्यकारों और विकृत मानसिकता रखने वाले शवभोगियों को दिगंबरत्व के चाबुक से प्रताड़ित करना चाहते हैं। इस उन्माद को दूर करने के लिए दिगंबर कवियों ने पूरी सामाजिक व्यवस्था का 'ऑपरेशन' करने का प्रयत्न किया। उन्होंने भारतीय शक, संवत, सन्, साल, महीने, ऋतु और वारों को बदलकर नए नाम दिए। 1965 को सन् 1965 से बदल कर 'नग्नमुनि संवत् 1965' कहा। इसी प्रकार छहों कवियों के नाम पर निखिलेश्वर संवत, ज्वालामुखी संवत, नग्न मुनि संवत इत्यादि नाम रख लिये। सप्ताह के दिनों के नाम भी रविवार, सोमवार से बदलकर स्नेहवार, क्रांतिवार इत्यादि रख लिए। इन्होंने ऋतुओं को आशा, तपन, अश्रु, मदिरा, विरह और विषाद जैसे नए नाम दिए। दिगंबर कवियों का काव्य शोषितों को समर्पित है। इसलिए इन्होंने अपने काव्य संग्रहों का लोकार्पण भी किसी नेता या अभिनेता से न करवाकर सर्वहारा वर्ग से संबंधित व्यक्तियों से करवाया। इनके पहले काव्य संग्रह का लोकार्पण 1965 को एक रिक्शावाले के हाथों हुआ। दूसरे काव्य संग्रह का लोकार्पण होटल क्लीनर के द्वारा किया गया तथा तीसरे संग्रह का लोकार्पण एक भिखारिन (पूर्व में वेश्या) द्वारा करवाया गया। लोकार्पण का समय 'जीरोआवर' यानी रात को 12:00 बजे का था। आधीरात को जीरो आवर में स्वतंत्रता मिली थी,इसलिए इन कवियों ने पुरानी मान्यताओं और कुरीतियों से स्वतंत्रता पाने के उद्देश्य से लोकार्पण का समय भी 12:00 बजे रात को रखा। समाज के कोढ़ के समान पनपती बुराइयों के प्रति असीम घृणा और आक्रोश के अतिरेक से इनकी काव्यभाषा 'आदिम' हो गई है। यौन प्रतीकों का खुला प्रयोग, गाली गलौच और आक्रामकता सभ्य समाज के सुधि जनों की चेतना पर ऐसी चोट देती है कि एक गहरी तिलमिलाहट से व्यक्ति बिलबिला जाता है। अंतर्मन में गहरी चुभन देने वाली इस कविता की साहित्यकारों और पाठकों ने कहीं–कहीं बहुत भर्त्सना की है। दिगंबर कवियों को समझने के लिए उनकी चंद कविताओं को संदर्भ रूप लेकर समझा जा सकता है। "तेलुगु की दिगंबर कविता" नामक हिंदी काव्य संकलन में संकलित 'पराजित का विद्रोह' नामक अत्यंत लंबी कविता में देश के दलित शोषित और

सर्वहारा वर्ग के एक पराजित व्यक्ति पर किए गए अत्याचार का यथार्थ चित्रण करते हुए, धर्म के ठेकेदारों और समाज के मान्य वर्गों की नीचता का कच्चा चिट्ठा खोला गया है। कवि ज्वालामुखी कविता के अंत में शोषित, प्रताड़ित और पराजित व्यक्ति अचानक को पलटवार करते हुए चित्रित करते हैं। उनका कहना है कि अब पराजित व्यक्ति अपना शोषण करने वाले व्यक्ति पर पलटवार के लिए तैयार है, शोषण का विरोध करने को उठ खड़ा हुआ व्यक्ति विद्रोह करने के लिए निकल पड़ा है। धर्म राजनीति और प्रशासन के अंधे ठेकेदारों को अब भयभीत होकर बुरे कार्य त्यागने पड़ेंगे। नव भारत के निर्माण का पहला कदम (विद्रोह) उठाया जा चुका है। दिगंबर कविता में गांधीवादी और बौद्ध विचारधाराओं को भी महत्वहीन माना गया है। दिगंबर कवियों का कहना है कि गांधीवाद और बौद्ध धर्म की कोरी बातें गरीब के पेट में अन्न नहीं डाल सकती। ज्वालामुखी का कथन इस संदर्भ में दृष्टव्य है– "बोधिवृक्षम् पिडिकेडु नीडा निव्वलेदु, गांधी पदमु गरिटेडु गंजी पोय्यलेदु" बोधिवृक्ष मुट्ठी भर छाया नहीं दे सकता और गांधी शब्द एक कलछी मांड भी नहीं पिला सकता, इसलिए उनका पालन करके कोई लाभ नहीं। मंदिर, मस्जिद और चर्च जैसे धार्मिक स्थल केवल धर्म भेद व जातिभेद बढ़ाते हैं, इसीलिए उनका भी निषेध करना ही श्रेयस्कर है। दिगंबर कवि चेराबंडा राजू का कहना है–"लिंग भेदालू तप्पिते मसिदु चरचू मंदिरालु एंदुकू?" मस्जिद, चर्च और मंदिर धार्मिक वैषम्य बढ़ाने के अलावा किसी काम के नहीं। प्रसिद्ध हालवादी कवि बच्चन की निम्नलिखित पंक्तियाँ भी इसी आशय को प्रकट करती हैं– "दोनों एक/ना जब तक मंदिर मस्जिद में जाते/बैर बढ़ाते मंदिर मस्जिद/मेल कराती मधुशाला"।

सांप्रदायिकता के कारण मानवता का हनन अत्यंत शोचनीय बात है। दिगंबर कवि महास्वप्न तत्कालीन समाज में मानवता की शोचनीय स्थिति का चित्रण करते हैं–"अभय प्रदान करते/हाथ जैसे आकाश में/सोखे गए आंसू जैसे तारे/जीवन मरण के बीच/खून में लथपथ/सरहद की रेखा सी/मानवता/" दिगंबर कवि छद्मवेश धारी पाखंडी धर्मगुरुओं की भर्त्सना करते हैं, उन्हें समाज का को मानते हैं–"जगद्‌गुरु आ रहे हैं सावधान" नामक कविता मे ऐसे पाखंडी धर्मगुरुओ की बखिया उधेड़ कर रख दी है–"पालकी के सिवा/और किसी में भ्रमण नहीं करते'' ''पैर रखकर भी लंगड़े है/आर्थिक चिंतन के नाम पर/नई–नई पतिव्रताओं को पावन किए बिना नहीं रहते।'' सम्राटों के सामान जुलूसों में/भाग लेते ये जगतगुरु/इस कोढ़ व्यवस्था के/मूल आधार है/"। दिगंबर कवियों ने सामाजिकता को चोट पहुँचाने वाली हर बुराई को अपनी कविता में नग्न रूप में प्रस्तुत किया। भारतीय जनता शोषण व अत्याचार होते देखकर भी निर्लिप्त बनने का ढोंग करती है। जनता विरोध करने की हिम्मत भी नहीं जुटा पाती। इनकी निरवीर्यता को देखकर दिगंबर कवि आक्रामक हो उठते हैं। दिगंबर कवि भैरवैय्या ऐसी स्थिति में धिक्कार प्रकट करते हुए कहते हैं– "अरे/जंगली सूअरों सा जी रहे हो/तुम सब को/भविष्य की चिंता नहीं वर्तमान की वक्रगति का/विरोध करने का साहस नहीं नालायको सा/बेवाओं सा/रंडियों सा /जीवित शवों सा/निर्जीव प्राणियों सा/क्यों जीते हो तुम?'' असमर्थ को अधिकार देने वाले बैलों/चमड़ा

उधेड़कर तुम्हारा/उस पर मिर्च लगाकर/आग पर लुढ़काकर/तुम्हें मैं खा जाऊँगा"। यह कविता उनके मन के आक्रोश को प्रकट करती है। ये आक्रोश भी समाज की पौरुषहीनता के कारण उपजता है। शव के समान जीने वाले मानव को जगाने के लिए साहित्य में कभी ऐसी भाषागत दिगंबरता का प्रयोग अनुचित नहीं जान पड़ता। जनकल्याण, मानवतावाद और विश्व बंधुत्व की बोली बोलने वाले नेता और धर्म गुरु सभी पाखंडी नट सम्राट है। झूठ बोलकर असत्य को स्थापित करने की कुचेष्टा भी करने लगे हुए हैं। फरेब के मुखौटे पहने हुए, ये सभी पाखंडी धिक्कार के पात्र हैं। दिगंबर कवि झूठे वादों और समाज को हानि पहुँचाने वाली चेष्टाओं तथा स्वार्थ की जंग को साफ करने को कहते हैं। महास्वप्न की 'नटसम्राट' कविता इस संदर्भ में उल्लेखनीय हैं–"मुँह बंद कर/मुंडवाले सिर/ हो सके तो/जीभ काट लें/एक बार दर्पण में/अपना चेहरा देख लें/भास्कर अब/विविध पत्रों का यह अभिनय/'' मान मर्यादा आदि को/नाले में फेंक दें/मैली शर्म की साड़ी/बदबू फैला रही है।"

विश्व भर में बढ़ते हुए धार्मिक उन्माद, वर्ग वैषम्य, बाजारवाद, पूँजीवाद एवं मानव मूल्यों का क्षरण इत्यादि विसंगतियों के कारण फैली अशांति, अव्यवस्था और विषाक्तता को देखकर भी तेलुगु साहित्यकार अविचलित है। यथार्थ के भयंकर रूप को सामने देखकर भी तेलुगु कवि सौंदर्य, प्रेम और प्रकृति की रम्यता एवं आत्मप्रवंचना को काव्य में प्रस्तुत करने ही खुश है। भावी भविष्य के भयंकर रूप का लेशमात्र भय या चिंता भी इनमें नहीं है। काल्पनिकता के छद्मचित्रण करके ये कैसे खुश रह सकते हैं? ये प्रश्न दिगंबर कवियों को व्यथित करता रहता है। इसलिए यथार्थ को छोड़कर कल्पना के भाव जगत में विचरण करने वाले भाव कवियों ओर अभ्युदय कवियों के प्रति इनका क्रोध प्रकट हुआ है। भाव कविता को ये नपुंसक कविता कहकर तिरस्कृत कर देते हैं और अभ्युदय काव्य के रचयिताओं और उनके प्रसिद्ध काव्य संकलन 'नायगरा' को खारिज कर देते हैं। निखिलेश्वर उन पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं–"अभ्युदय कवि नेल्ला मन्दु तिनी निद्रा पोय्यावु/नयागरा जल प्रपातमू लो दूकलेका पोइन/अन्नया /गुड बाय/मी अंधरकी सलाम वालेकुम।" अर्थात अभ्युदय कवि, तुम अफीम खाकर सो गए नयागरा जलप्रपात में कूदकर मरे नहीं, फिर भी तुम्हें आखिरी सलाम ओर गुडबाय। दिगंबर कवियों की आक्रामक गाली–गलौज युक्त भाषा के कारण राचमल्ला रामचंद्र रेड्डी का कहना है–"दिगंबर कवियों के विकृत मानसिक उद्घाटन को कविता नहीं कहा जा सकता।" दिगंबर कवि ज्वालामुखी इसका जवाब देते हुए कहते हैं कि–"अश्लीलता और गाली–गलौच की भाषा का प्रयोग साठोत्तरी दशक की अनिवार्यता थी।[6] दिगंबर कविता केवल विद्रोह, आक्रोश और असंतोष व्यक्त करने वाली कविता मात्र नहीं है, इसका मूल कथ्य तो मानवतावाद का संदेश देना है। चेराबंडा राजू का मानना है कि– 'प्राणों को गिरवी रखकर भी विश्व को मानवता के भिक्षा देनी पड़े तो अवश्य दो'। सडी–गली सामाजिक व्यवस्था में केवल अपना स्वार्थ ही सिद्ध करने मे लगे हुए लोग साथी मानव के साथ अन्याय होते देखकर भी मुंह नहीं खोलते। निखिलेश्वर 'अर्धसत्य से आगे' कविता में आग्रह करते हैं कि केवल जीने के लिए अन्याय के साथ जीना

महापराध है, प्राणों पर आ बने तब भी अन्याय का साथ नहीं देना चाहिए। स्वार्थलिप्त और आत्मकेंद्रित जनता की सुप्त चेतना को तमाम आक्षेपों और विरोधो का सामना करते हुए भी दिगंबर कवि येन केन प्रकारेण जागृत करना चाहते हैं। इसके लिए अच्छे शब्दों का प्रयोग करने का विवेक आधुनिक युग में किसी काम का नहीं रहा। उद्वेगपूर्ण भाषा के पीछे मानवता की रक्षा का सदोद्देश्य है। दिगंबर कवि मानव को प्राणों की बाजी लगाकर भी मानवता को अक्षुण्ण रखने का आग्रह करते हैं। कवि निखिलेश्वर सुंदर समानता से युक्त समाज की स्थापना के लिए सभी सुधी जनों से सहयोग की आशा रखते हैं। वे समाज के लोगों को सुंदर समानता से युक्त समाज की स्थापना के लिए आमंत्रित करते हैं–"जाति धर्म का राग आलापते/कवि सम्राट के तर्क को/मटियामेट करने में/आमंत्रित करता हूँ मैं तुम्हें/गले काटती व्यवस्था में/तेरे घर को लुटेरों से बचाने/संपूर्ण सुंदर समता की स्थापना के लिए/अपने सामर्थ्य की रक्षा के लिए/आमंत्रित करता हूँ मैं तुम्हें।" तेलुगु की दिगंबर कविता मुट्ठी भर कवियों का आक्रोश मात्र नहीं है, सामाजिक पूर्वाग्रहों को त्यागकर नवीन मानदंडो की स्थापना का प्रयत्न है। सड़ी गली सामाजिक कुरीतियों और गुलामी में जीने वाली शासन व्यवस्था के प्रति विद्रोह करने का साहस भी इसमें दिखाई देता है। मानवता के पोषण और संरक्षण के प्रति कटिबद्ध तेलुगु के दिगंबर कवि काव्याडंबरों व मिथ्या प्रलापों से दूर है। वे पश्चिमी साहित्य का अंधानुकरण करने वाले साहित्यकारों की निंदा करते हैं और आडंबरहीन मौलिक सृजनात्मकता का विकास होते देखना चाहते हैं, अन्याय सहकर अपने आत्मगौरव का स्वयं हनन करने वाले लोगों में अस्तित्व बोध जगाना चाहते हैं। भौतिकतावाद के चंगुल में फंसकर मरणासन्न मानवता को पुनर्जीवित करने के लिए प्रयत्नशील दिगंबर कविता अपने प्रयत्न में असंख्य बाहर भर्त्सना का शिकार हुई हैं। उनकी आक्रामक एवं यौन प्रतीकों से युक्त भाषा के प्रयोग के कारण उन पर काव्यविकृति का दोष भी लगा। दिगंबर कविता में प्रयुक्त भाषा तत्कालीन विकट परिस्थितियों असंपृक्त होकर सोए हुए लोगों को जगाने के लिए उठाए चाबुक की तीखी मार के सामान है जो उनकी सुप्त चेतना को झिंझोड़कर जगाने में कुछ हद तक सफल भी हुई है। तेलुगु काव्य के क्षेत्र में दिगंबर काव्य धारा अपने क्रांतिकारी तेवर और समतावादी विचारधारा के कारण महत्वपूर्ण है और सदा रहेगी।

निखिलेश्वर दिगंबर कविता के सशक्त हस्ताक्षर हैं। छह शताब्दियों से इनका लेखन अनवरत जारी है। तेलुगु हिंदी और अंग्रेजी तीनों ही भाषाओं पर निखिलेश्वर को समान अधिकार है। निखिलेश्वर का जन्म सन् 1938 में तेलंगाना राज्य के यादाद्रि जिले में वीरवल्ली नामक ग्राम में एक कृषक परिवार में हुआ। उस्मानिया विश्वविद्यालय से बीए, बीएड और हिंदी भूषण की डिग्री इन्होंने प्राप्त की। जीवनयापन के लिए अध्यापन कार्य किया। निखिलेश्वर ने आर्मी में सिविलियन स्कूल मास्टर के रूप में काम किया, एयरफोर्स में लिपिक का कार्य किया। जीविकोपार्जन के साथ–साथ साहित्यसेवा भी करते रहे। मौलिक लेखन के साथ अनुवाद कार्य भी इन्होंने किया। अंग्रेजी और तेलुगु की महत्वपूर्ण रचनाओं को हिंदी पाठकों तक इन्होंने पहुँचाया। अंग्रेजी और हिंदी

की महत्वपूर्ण रचनाओं का तेलुगु अनुवाद भी किया। राजेंद्र यादव के प्रसिद्ध उपन्यास 'सारा आकाश' का तेलुगु अनुवाद बहुत प्रसिद्ध है। कविता, कहानी और निबंध रचनाओं के क्षेत्र में भी उन्होंने कार्य किया। इनके दो कहानी संग्रह प्रकाशित हुए, जिसमें इनकी 40 कहानियाँ संकलित हैं। इनके 13 काव्य संकलन अब तक प्रकाशित हो चुके हैं, अनुदित ग्रंथों की रचना दस के लगभग है। जीवनभर अनेक साहित्यिक व सांस्कृतिक संस्थाओं से निखिलेश्वर जुड़े रहे। जिनमें विप्लव रचयितलू संघम (रेवोल्यूशनरी राइटर्स असोसिएशन) अर्थात 'विरसम' मुख्य है, निखिलेश्वर जिसके संस्थापक सचिव थे। "जनसाहित्यिक सांस्कृतिक समाख्या' (पीपल्स लिटरल कल्चरल फ़ेडरेशन) के संस्थापक के रूप में भी बहुत समय तक रहे। निखिलेश्वर की तेलुगु रचनाएँ बहुत महत्वपूर्ण एवं लोकप्रिय रही, इनकी तेलगु रचनाओं का अनुवाद हिंदी और अंग्रेजी के साथ मराठी, पंजाबी, गुजराती, बंगाली, उडिया, तमिल, मलयालम, कन्नड और असमी भाषा में हुए हैं। इतनी भाषाओं में इनकी रचनाओं का अनुवाद किया जाना इस बात की पुष्टि करता है कि निखिलेश्वर के काव्य कथ्य, शिल्प, भाव और भाषा सभी दृष्टियों से श्रेष्ठ और लोकप्रिय है। ऑल इंडिया रेडियो ओर ईटीवी पर भी इनकी बहुत–सी रचनाओं का प्रसारण हुआ है। 84 वर्षीय निखिलेश्वर साहित्य लेखन में आज भी सक्रिय हैं, दिगंबर काव्य के साहित्य में प्रवेश करने के बाद निखिलेश्वर चर्चा के केंद्र में आ गए, लेकिन दिगंबर काव्य लेखन से पहले ही इन्होंने साहित्य जगत में पदार्पण कर लिया था। पहले ये कुंभम यादव रेड्डी के वास्तविक नाम से रचनाएँ किया करते थे। 60 वर्षों के लेखन काल में इनका साहित्य अनेकों पड़ावों से गुजरा है, समय और अनुभवों ने इनके काव्य को उत्तरोत्तर परिपक्व और कलयनोन्मुख बनाया है। दिगंबर काव्यधारा के अत्यंत महत्वपूर्ण हस्ताक्षर के रूप में प्रतिष्ठित निखिलेश्वर समकालीन सामाजिक विकृतियों को मिटाने के लिए संघर्षरत निखिलेश्वर जनता से अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने का आग्रह करते रहे। उनकी कविता में मानव, मानवतावाद और मानवीयता सदैव पृष्ठभूमि में विद्यमान रही है। इसी के पोषण का आग्रह उन्होंने किया। लोकतंत्र की सबसे बड़ी विकृति शोषण और अन्याय हैं। अपने स्वार्थ की रोटी सेंकने के लिए लोग सांप्रदायिकता की आग को हवा देते हैं। 'बदनाम बस्ती के मेरे दोस्त' कविता में धार्मिक विद्वेश से दूर रखने का संदेश देते हुए निखिलेश्वर कहते है–"इस बदनाम बस्ती के मेरे दोस्त/शायद तुम्हें याद होगा/तुम मुसलमान होने से पहले/एक हिंदू होने से पहले/शरीफ इंसान हो सबसे पहले"। एक 'धर्मग्रस्त महानगर' नामक कविता इसी आशय से लिखी गई अति संवेदनशील कविता है, जो पाठकों के अंतर्मन को छू जाती है। उसकी चंद पंक्तियाँ दृष्टव्य है–"सहज मृत्यु किसी भी क्षण जब/मनुष्य के प्राण उड़ा ले जाती है/तो फरियाद का कोई प्रश्न ही नहीं/लेकिन धर्म के बहाने जब/अपने ही भाई तलवारें बन जाए/तो किस भगवान की शरण जाए?'' भाड़े के हत्यारे के चाकू छुरों से/सांप्रदायिक द्वेष से फैल रहे खून में/कौन सा रंग का है हिंदू खून/कौन से रंग का है मुसलमान खून?/क्या कोई दिखा सकेगा अलग करके?'' निखिलेश्वर के काव्य में मानवीय संवेदना के साथ–साथ वातावरण और प्रकृति के प्रति सरोकार भी चित्रित हुए हैं, आने वाले भविष्य में विश्व भीषण जल संकट से गुज़रने वाला

है। 'आँसू बहा रहा है सूर्य' कविता में विकट भविष्य की चेतावनी देते हुए निखिलेश्वर आगाह करते हुए कहते हैं– 'अंतरिक्ष में लिपटा/ आग उगलता गोला/ भूमंडल में/नमक से भरा पानी/जहाँ आंखें दौड़ायें/पीने को एक बूंद भी नहीं/वर्तमान तो झेल रहे हैं/ भविष्य के जलयुद्ध में/ कहा प्यास बुझाएगा?" सभी समसामयिक एक सरोकारों पर काव्य रचना का प्रयास इन्होंने किया है। निखिलेश्वर का काव्य पाठकों को चिंतन के लिए बाध्य करता है, उन्होंने प्रवासी भारतीयों के संघर्षों का चित्रण करते हुए विदेशी प्रवास की आवश्यकता पर प्रश्न उठाया है। 'चलते फिरते मोहरें' कविता इसी विषय पर रचित है–"इमिग्रेशन के इसी प्रवाह में/नए भारतीय पीढ़ी के पांव तले पहचानो कौन–सी जमीन है/डॉलरों के पीछे भागती/इस जवानी का लक्ष्य क्या है? संघर्ष की अंधी दौड़ क्यों है? देश छोड़कर परदेश जा बसे भारतीय युवा एक मृगतृष्णा के पीछे अपना सुख चैन खो रहे हैं, बूढ़े माता पिता प्रतीक्षा करते रह जाते हैं और विदेशों में बसी संतान भी जीवनभर माँ बाप व अपने देश को मिस करती रह जाती है। भूमंडलीकरण और बाजारवाद ने भौतिकतावाद को इतना बढ़ावा दिया है कि व्यक्ति रुपयों और भौतिक वस्तुओं की लालसा में नैतिकता को परे रखकर पैसे कमाने के लिए भ्रष्टाचार, रिश्वतखोरी और कालाबाजारी जैसी अनैतिक गतिविधियों में लिप्त हैं। इसलिए मानव मूल्यों का हनन हो रहा है। मानव जीवन जीने के लिए संघर्ष नहीं करना चाहता। अन्याय का साथ देकर भोग विलास की वस्तुएँ आसानी से मिल सकती हैं, इसलिए अन्याय का साथ देने के लिए संकोच नहीं करता। निखिलेश्वर जीवन की चुनौतियों से डटकर संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैं। उनका कहना है भूमि पर जीने वाले प्रत्येक प्राणी संघर्ष करता है एक छोटा–सा कीड़ा भी कुचले जाने से बचने के लिए तेजी से भागता है–' किसी कीड़े को रौंदने दीजिए तो/देखिए वह कैसे फिसल जाता है/अपने बचाव में/संघर्ष ही तो मूल मंत्र हैं यहाँ/बिना सामान किए/कीड़े से बदतर जीवन है यहाँ"। जीवन के रहते उतार चढ़ाव सदा सहने पड़ेंगे, समाज व लोकतंत्र की कुरीतियों से बचने के लिए संघर्ष रूपी हथियार का प्रयोग करना ही होगा। अपने अस्तित्व को मरने से बचना भी बाट आवश्यक है।

इनके बहुचर्चित हिंदी काव्य संग्रह 'इतिहास के मोड़ पर' में संकलित रचनाएँ इनके व्यक्तित्व की अनेक पहलुओं को छूती नजर आती हैं। 'नए विश्वास के संग' नामक कविता में निखिलेश्वर के व्यक्तित्व के संवेदनात्मक पक्ष की अभिव्यक्ति हुई है। दिगंबर कवियों पर मार्क्सवाद का प्रभाव था इसलिए निखिलेश्वर भी इससे अछूते नहीं थे। लेकिन मार्क्सवाद से पहले उन्होंने नेहरू सोशलिज्म एवं आर्य समाज से प्रभावित होकर कविताएँ लिखीं। विषम परिस्थितियों के प्रति आक्रोश इनकी कविता में दिगंबर काव्य रचनाओं के पहले ही उपस्थित है। 1960 में लिखी कविता "कोपमु तो वेनक्की चूडु" (क्रोध से पीछे मुड़कर देख) में दिगंबर काव्य के बीज दिखाई पड़ते हैं। दिगंबर कविता अल्पायु में ही इतिहास बन जाने पर इनके काव्य ने अभिव्यक्ति का अन्य मार्ग प्रगतिशील काव्यधारा के रूप में ढूँढ लिया। इनकी अधिकांश रचना मानवाधिकारों की रक्षा के लिए आवाज उठाई गई है, जिसके कारण इन्हें

सरकार ने कुछ समय के लिए जेल में भी रखा। राजनैतिक दबाव के कारण भी इन्होंने लिखना नहीं छोड़ा। इनके संपूर्ण साहित्य में सर्वाधिक उल्लेखनीय कृतियाँ दिगंबर कविता, हिंदी की दिगंबर कविता, विविधा और अग्निश्वासा इत्यादि हैं। 'अनिश्वासा' नामक काव्य संग्रह को 2020 में भारतीय साहित्य का महत्वपूर्ण पुरस्कार 'केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार' मिला। इस काव्य संग्रह में उनकी मानवतावादी कविताएँ संकलित हैं। 'कोपमु तो वेनक्की चूडु' से प्रारंभ होकर दिगंबर कविता से होता हुआ विप्लव कविता का रूप लेकर अग्नि श्वासा में परिवर्तित होकर निखिलेश्वर का साहित्य आज भी मानवता के लिए एवं मानव कल्याण के लिए अनवर प्रयासरत हैं।

निखिलेश्वर की अत्यंत महत्वपूर्ण काव्यगत विशेषता है 'राष्ट्रीयता'। इनका मानना है कि मानव और समाज का पोषण करते हुए भी अगर कोई साहित्यकार राष्ट्रीयता को भूल जाता है तो उसका साहित्य कभी मानव हित के लिए नहीं हो सकता। राष्ट्रीयता को परे रखकर कभी मानवीयता का पोषण नहीं किया जा सकता। निखिलेश्वर की रचनाएँ और उनका समग्र साहित्य आने वाली पीढ़ियों के लिए मार्गदर्शन का कार्य करता रहेगा। इन्होंने युवा कवियों से अध्ययन करने का आग्रह किया है। ये प्राचीन कवियों और उनकी परिस्थितियों का आकलन करने के लिए युवाओं को प्रेरित करते हैं। भाषा, शिल्प और कथ्य का सूक्ष्म अवलोकन करके काव्यरचना करने का संदेश देते हैं। अपने विपुल साहित्य से तेलुगु को समृद्धि देने वाले निखिलेश्वर की काव्य साधना आने वाले वर्षों में अनवरत जारी रहे। मानवीयता के पोषक एवं युग प्रवर्तक साहित्यकार निखिलेश्वर की रचनाओं पर शोध कार्य होना चाहिए। लोक कल्याण के निहित लिखने वाले निखिलेश्वर का साहित्य केवल तेलुगु भाषा तक ही सीमित नहीं रहना चाहिए। इनकी अन्य महत्वपूर्ण रचनाओं का अनुवाद अन्य भाषाओं मे अवश्य होना चाहिए। साथ ही भारतीय भाषा के अन्य महत्वपूर्ण साहित्यकारों के साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन इनके साहित्य के साथ होना चाहिए, तभी भारतीय साहित्य को महत्वपूर्ण देय मिल पाएँगे और जनमानस को सत्य साहित्य के रचना की प्रेरणा मिलेगी।

संदर्भ सूची :

1. हिंखोज डिक्शनेरी
2. Venetian Explorer Nichole de konti 1395–1469
3. एन. डी. नरसिंघराव, सहस्र वर्षों का तेलुगु इतिहास –तेलुगु भाषा के आविर्भाव व विकास के चरण–पृ.10,
4. निखिलेश्वर, विविधा, 2009, क्षितिज प्रकाशन, दिल्ली–32, बीसवीं शती का तेलुगु साहित्य–पृ.11
5. डॉ. एम. रंगय्या (अनुवादक), तेलुगु की दिगंबर कविता, 'तेलुगु के दिक् कवि', निर्लभानंद वात्सायन।
6. प्रोफेसर ऋषभ देव शर्मा, 'भूमिका', तेलुगु की दिगंबर कविता,
7. 'दिगंबर पीढ़ी का घोषणापत्र', तेलुगु की दिगंबर कविता, 2004, प्रतिभा प्रकाशन, सिकंदराबाद

निखिलेश्वर के 'इतिहास के मोड़ पर' में हाशिए का समाज

अजित चुनिलाल चव्हाण

शोध सार : साहित्य और समाज जीवन का अन्योन्याश्रित संबंध है। साहित्य में अनेकानेक विमर्शों की इस इक्कीसवीं सदी में रचनाकारों ने हाशिए पर सरका दिए गए समाज को केंद्र में लाने के अनेक प्रयास किए हैं। इस रूप में हम साहित्य को आम आदमी को गति देने वाली शक्ति भी कह सकते हैं। मुख्य प्रवाह से पीछे छूटे–कटे समाज को हाशिए का समाज कहा जाता है। कोर, छोर, एक ओर होना, अलग करना, किनारे पर लगा हुआ, विकास की धारा से अलग, उपेक्षित, दुर्लक्षित इस रूप में हाशिए का अर्थ लिया जा सकता है। समाज का एक ऐसा वर्ग जिनकी मुख्यधारा में कोई भागीदारी नहीं होती। इसके अनेक कारण हो सकते हैं। अपनी अस्मिता की खोज में छटपटाते इस समाज को नयी पहचान दिलाने के भरपूर प्रयास होने चाहिए। हर दृष्टि से संपन्न मुख्यधारा के लोग ही नियम–कानून बनाते है। अर्थात् समाज की मुख्यधारा को अपने अनुकूल बनाने में इनकी भूमिका महत्वपूर्ण है। बढ़ी हुई शक्ति के कारण इनका दबदबा बढ़ता जाता है। धनबल–सत्ताबल के अतिरेक से सभी तरह से कमजोर लोग बार–बार सताए जाने से एक षड्यंत्र के तहत धीरे–धीरे हाशिए पर सरका दिए जाते हैं। ताकतवर लोगों द्वारा ही ऐसी परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है। राबर्ट ई. पार्क और एवर्टवी. स्टॉनवकीस्ट इन समाजशास्त्रियों–विचारकों ने हाशिए के आदमी को सीमांत आदमी कहकर संबोधित किया है। इस विषय में उन्होंने कहा है– "स्थान परिवर्तन के कारण अनेक मानव समूह हाशिए पर चले जाते हैं। स्थान परिवर्तन के प्रभाव के कारण संस्कृति में परिवर्तन होता है और दीर्घकाल के बाद प्रजातीय गुणों में भी अंतर आने लगता है। परिवर्तन के कारण व्यक्ति अपनी मूल संस्कृति से अलग होने लगता है और नयी संस्कृति से समरस नहीं हो पाता। वह दोहरी मानसिकता से गुजरने लगता है। वह अपने समुदाय की संस्कृति से अलग होकर अपने सबल लोगों की संस्कृति में प्रवेश करना चाहता है लेकिन वहाँ उसे उचित सहयोग नहीं मिलता और वह किनारे कर दिया जाता है।"[1] इस प्रकार आदमी दो संस्कृतियों के वातावरण में समानांतर जीवन जीने की विवशता से हाशिए पर डाल दिया जाता है। नयी जगह में अपने आपको समायोजित न कर पाना, आर्थिक कमजोरी आदि कारणों से भी यह सीमांत अर्थात् हाशिए का आदमी बनकर रह जाता है।

बीज शब्द : निखिलेश्वर, इतिहास, हाशिया, मोड, सीमांत, उपेक्षित, दुर्लक्षित, कमजोर, विवश, पूँजीवाद, समरस, संस्कृति, मुख्यधारा, सम्मान, साहित्य आदि।

डॉ. विजय रेड्डी उपाख्य निखिलेश्वर तेलुगु साहित्य के दिगंबर कविता (अकविता) आंदोलन के प्रवर्तकों में से एक हैं। आप विप्लव रचयितल

संघम (क्रांतिकारी लेखक संघ) के संस्थापक भी रहे हैं। मानवाधिकार संस्थाओं में आपकी सक्रिय भागीदारी रही है। आप सामाजिक यथार्थ के प्रति अत्यंत सजग रहे हैं। भारतीय साहित्य के संदर्भ में निखिलेश्वर की क्रांतिकारी कविता का अपना एक अलग महत्व है। वे विद्रोह को अभिव्यक्त करने वाले दिगंबर कवि और सशस्त्र क्रांति के समर्थक विप्लव कवि के रूप में जाने जाते हैं। इस संदर्भ में डॉ. ऋषभ देव शर्मा कहते हैं– "निखिलेश्वर ने परिवर्तन की तीव्रता को आत्मसात करते हुए तेलुगु साहित्य ने हाशियाकृत समुदायों के स्वर को स्त्री लेखन, दलित लेखन के माध्यम से बुलंद किया... जनसंघर्ष से जुड़ी क्रांतिकारी कविता का सिलसिला ऐतिहासिक तेलंगाना किसान सशस्त्र आंदोलन से लेकर सातवें दशक के नक्सलवादी और श्रीकाकुलम आदिवासी आंदोलनों के साथ जुड़कर नये प्रतिमानों को कायम करता रहा।... निखिलेश्वर ने तेलुगु साहित्य की दलित धारा के शीर्ष पर जाषुवा को स्थापित किया है, जिन्होंने मेघदूत की भाँति उल्लू के माध्यम से संदेश भिजवाया है।"[2] निखिलेश्वर मानव संवेदना के संवेदनशील रचनाकार हैं। उनका काव्य आम आदमी की दुर्गति का शोक संदेश है। आधुनिक तेलुगु कविता अगड़ा–वाद को उखाड़कर हाशिए पर सरका दिए गए मनुष्य की मौलिक संस्कृति को आधार बनाने के लिए संकल्पित है। निखिलेखर इनमें से एक प्रमुख नाम है। वे अपने तेजस्वी अक्षरों से कहीं खोई मानवता को खोजने का प्रयास करते हैं। निखिलेश्वर किसी भी साहित्य में संघर्षमय वर्तमान का उचित स्वर खोजने के लिए कविता की ओर मुड़ने को कहते हैं। सामाजिक धाराओं के साथ तेलुगु कविता की आधुनिकता की उन्मुक्त गूँज इस रूप में सुनाई पड़ती है–

"अक्षर को दूध पिलाकर
शब्द बनाना होगा
शब्द को अन्न बनाकर
वाक्य बनाना होगा।
वाक्य को शिक्षा देकर।
कविता बनानी होगी।
कविता को जीवन देकर।
हथियार बनाना होगा।"[3] (त्रिपुरनेनि श्रीनिवास)

यहाँ मौलिक रूप से तेलुगु कवि होने पर भी बचपन से ही हिंदी से लगाव रखने वाले निखिलेश्वर रचित 'इतिहास के मोड़ पर' साहित्य कृति में हाशिए पर डाल दिए गए समाज को खोजने का प्रयास है।

समाज में सकारात्मक विद्रोह को बहुत कुछ सहना पड़ता है। अपने अधिकारों की जायज मांग पर उसे लहुलुहान होना पड़ता है। संवेदनाहीन स्थिति में बौखलाया हुआ आम आदमी गुमनाम रास्ते में भटक जाता है, इस बात को लेकर निखिलेश्वर लिखते हैं–

"किसी गुमनाम रास्ते।
फिसलता आदमी।
बदल रहा भेड़िए में।

लोकतंत्र के चारों ओर।
गूँज रहा है।
गिरगिटों का विजयनाद।
अब बलिदान सारे।
शिलालेखों में परिवर्तिता।"[4]

लेकिन कवि शिलालेखों में परिवर्तित होने वाले विद्रोह को कहते हैं कि हमारा शाश्वत इतिहास झंझावातों का सामना करने वाले पृष्ठों से भरा पड़ा है। इस कारण हमारा संघर्ष जाया नहीं जाएगा।

निखिलेश्वर प्रगतिशील काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि हैं। उनकी कविताओं का मूल स्वर यथार्थ का है। जिसे पाठक मूल रूप से आजादी के बाद के भारत का यथार्थ भी कह सकते हैं। उनकी कविता 'अपने समय, समाज और परिवेश का तनाव झेलते मनुष्य की वेदना की अभिव्यक्ति है। भेड़िया ही कमर कस कर खड़ा हो जाए तो वही फैसला सुनाने लग जाए तो? भेड़–बकरी–सा आम आदमी को ही प्रताड़ना का शिकार होना पड़ेगा। कवि कहते हैं–

"जनतंत्र के भजन में।
सुख चैन की डकार लेते हुए।
साक्षी माल बची हुई हड्डियों पर।
दार्शनिक तरीके से पूछताछ कर सकता है।
सिर हिलाने वाले भेड़–बकरों के बीच।
बृहत जनतंत्र का नकाब ओढ़े।
विदेशी शिकारियों के साथ।
मानव अधिकारों के उद्घोष में।
अब कभी कभी, किसी को भी।
जितने चाहे।
'भारत रत्न' उपाधियों की घोषणा कर सकता है...?"[5]

यहाँ जनता भेड़–बकरी से कम नहीं है। वह अपनों के बीच ही शिकार बन गई है। प्रगतिशील विचारों से लैस कवि निखिलेश्वर हाशिए के समाज को सुखी, स्वस्थ, सुंदर और शोषणमुक्त देखने के पक्षधर हैं लेकिन व्यवस्था का जाल गरीब को और उलझा देता है। अपने को सभ्य कहलाने वाले लोग हाशिए के लोगों को शायद रिसता हुआ फोड़ा मानते हैं। उनकी गरीबी, बेरोजगारी, भूख कवि को विचलित कर देती है–

"हर रोज होटल में कुछ खाने के बाद।
जब बाहर कदम रखता हूँ तो।
6–8 हाथ पार जाते हैं मेरे सामने।
उन मुखडों में प्रतिफलित दीनता।
मैं एक अपराधी की भाँति सिर लटकाए चला जाता हूँ।
सत्यम! अब तुम क्या कहोगे?"[6]

यह प्रश्न अनुत्तरित ही रह जाता है। सभ्य नगरों से लेकर ग्रामों तक में सामान्य मानव के शोषण की समस्या एक–सी है। निखिलेश्वर समाज में समानता के पक्षधर है। ऐसी समानता के लिए व्यवस्था को ही समाधान ढूँढ़ना होगा।

निखिलेश्वर जी हाशिए को उलाँघते हुए लोग देखना चाहते हैं। लेकिन व्यवस्था विद्रोह को ही खून से लथपथ कर देती है। इसमें नारी जीवन अधिक प्रताड़ित होता है। वे अपनी 'बर्बर' शीर्षक कविता में ईश्वर के मौन को दबा हुआ शोक मानते हैं। उन्हें आम नागरिकों की जिंदगी कीचड़ में फंसी मनुष्य की इच्छा–सी लगती है और इसमें नारी? कवि चाहते हैं कि उसे अपने वैचारिक स्तर पर अपने निर्णय लेने के अधिकार हो। पुरुषवादी दृष्टि को सोचने–समझने की मानसिकता से स्त्री मुक्त होनी चाहिए। हर वर्ग की महिला की मुक्ति की अवधारणाएँ अलग–अलग हैं। युद्ध में फंसे महिला जीवन को लेकर कवि कहते हैं–

"इच्छा में उफनते क्षणों के लिए समर्पित
वियतनाम की स्त्रियों की मांसपेशियाँ।
इन मांसपेशियों पर दया नहीं।
...दो सिध्दांतों के नरभक्षियों के मुँह में।
तिलमिलाती शांति।
पशु का वारिस होकर विश्व नागरिक की अधोगति।"[7]

अनेक प्रवक्ता–भोक्ताओं के बीच नेतृत्व आँखों पर पट्टी बांधकर बैठा हो तो शांति समाधिस्थ हो जाएगी। शांति के ईश्वर की अनाथता के साथ उसके वारिस अर्थात् आम जन भी निस्सहाय ही रह जाएँगे। कवि चाहते हैं कि हाशिए को लाँघे, उसे तोड़े। मुख्यधारा में शामिल हो। निखिलेश्वर हाशिए या कमजोर वर्ग के रचनाकार होने से उनका लेखन बुनियादी सवाल उठाता है। हाशिए पर के आदमी के लिए का मुक्ति संघर्ष कहाँ है? सभ्य समाज में उनका स्थान कहाँ है? इस और ऐसे अनेक सवालों से निखिलेश्वर का साहित्य मुठभेड करता दिखाई देता है। वह मानव मुक्ति की बात करते हुए उसे अपना हक और हिस्सा मांगने को कहते हैं। इसके लिए वे हाशिए के आदमी को आमंत्रित करते हैं–

"भैंस की चरबी से।
भरे इन दिलों को।
आपने इन लोहे के हाथों से पिघलाने के लिए।
आमंत्रित करता हूँ मैं तुम्हें।।
आम आदमी के आर्तनादों को।
कुत्तों की भौं– भौं मानकर।
इठलाते, उपेक्षा करते।
कामांधौ के नेत्रों को।
उखाड़ फेंकने के लिए।
आमंत्रित करता हूँ मैं तुम्हें।...

इस दारूण दरिद्रता से युक्त।
भयंकर, इस विष–खंड में।
गले काटती व्यवस्था में।
तेरे घर को लूटते।
निर्मम लुटेरों से बचाने को।
आमंत्रित करता हूँ मैं तुम्हें।"[8]

यहाँ कवि आम आदमी के अस्तित्व का सवाल उठाकर संपूर्ण सुंदर समता की स्थापना के लिए, हाशिए के मनुष्य की सामर्थ्य की परीक्षा के लिए उसमें हुंकार भर व्यवस्था बदलने को आमंत्रित करते हैं। क्योंकि आपने ही देश में, अपने–अपनों के बीच में भी वह अजनबी–एकाकी हो गया है। उससे मीठा बोल अनेक उलझनों में उलझा दिया गया। रोज जीवन और परिवार में तनाव बढ़ाती अदम्य भूख रूपी फाँसी का फंदा उसके सिर पर मंडराता है। इस फंदे को, जानलेवा भूख को, बेरोजगारी के शूल को, अपने ही देश में पराया कर देने वाली व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के लिए ही निखिलेश्वर हाशिए के आम आदमी को आमंत्रित करते हैं।

देश की कुल आबादी में अधिकतर संख्या होने पर भी हाशिए के समाज का सिलसिलेवार विकास न हो पाना चिंता और चिंतन का विषय है। इस समाज को लगातार प्रताड़ित किया गया। बहुत हद तक शायद इन लोगों को अपने विकास के पर्याप्त अवसर नहीं मिल पाए। इन्हें सामाजिकता के साथ ही भेदभाव या वंचना, शैक्षिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक आर्थिक रूप की भी शिकार होना पड़ा है। निखिलेश्वर एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने प्रत्यक्ष रूप से हाशिए पर धकेले गए लोगों का उल्लेख किए बिना ही अपनी कविताओं में अनेक स्थलों पर वंचित–पीड़ित–प्रताड़ित, सताए हुए लोगों को अपने कथ्य का विषय बनाया है। उन्होंने अपनी तरह से मुख्यधारा के बरक्स हाशिए की पहचान की है। अपने लेखन कर्म को एक गंभीर सामाजिक दायित्व मानते हुए अनेक दृष्टिकोणों से इसकी चर्चा की है। भूख को आदमी के रूप में संबोधित करते हुए वे उसकी फटेहाल जिंदगी का करूण चित्र प्रस्तुत करते हैं। उनकी कविता का उद्देश्य मानव जीवन को हाशिए से उठाकर केंद्र में लाना है। जिंदगी में अनेक बातें हैं जो आम आदमी का मौत के रूप में पीछा करती है। इनसे लड़–झगड़कर बचे तो खस्ताहाल ही सही–जीवन, नहीं तो मरण निश्चित है। निखिलेश्वर की 'मौत का पीछा करते हुए।' कविता की पंक्तियाँ द्रष्टव्य है–

"मौत क्या है।
इस देश में उसका मूल्य क्या है?
रेल इंजन के नीचे।
सिक्के की भाँति सपाट होती हुई आशा।
नकली सुई की दवा से।
लक्कड–सा परस जाता है पूर्ण प्राण।
बस की रफ्तार के बीच टूटती जिंदगी,
किरासिन की लपटों में यहाँ।

कोयले की साँस सी बन जाती है औरत।
हरी–भरी धरती से दूर पछाड़े हुए लोग।
खाने के लिए उनके हाथ छोटे हो गये हैं।
नदी की धार में फेंकी जाती हैं सजीव मूर्तियों।"[9]

भूख आदमी बन जाती है। हाशिए के लोग आँसू की भाप बनकर जीते हैं। अन्नदाता खेत–खलिहानों में दम तोड़ रहा है। छाया बन हर समय हमारे साथ चलती मौत कभी–कभी सामने आ झकझोर कर हँसती है। मृत्यु का आदर करने को कहती है। सामाजिक असामनता के घोर विरोधी निखिलेश्वर मनुष्य को मनुष्य के स्तर पर जीने के अवसर खोजते हैं। सुख की लालसा में, दौलत की आड़ और दौड़ में गिरवी रख दिया गया आदमी अपने आप से भी दूर होता जा रहा है। वात्सल्य विहीन हो और अधिक सिमटता–सिकुड़ता जा रहा है। क्योंकि मैनेजर पांडेय के शब्दों में– "कविता अपने समय का 'कम्पास' (दिशा– सूचक यंत्र) होती है। कविता का सृजन होता ही इसलिए है कि वह मानवीय मूल्यों को जीवन के हाशिए से उठाकर केंद्र में प्रतिष्ठित करे। लेकिन अक्सर ऐसा होता नहीं है। मुख्य धारा की अवरोधी शक्तियाँ उनसे केंद्र में आने नहीं देती।"[10] बार–बार कुचले जाते हाशिए के आदमी की जिंदगी प्रवाहित नदी की तरह नहीं तो मात्र एक धारा बनकर रह गई है। घात–प्रतिघातों को झेलकर भी वह अपनी दिशा तय नहीं कर पा रहा है। सामान्य जीव से भी बदतर बनकर शरीर को बढ़ाकर मात्र दैहिक तुष्टि के लिए जीना भी जीना नहीं है। रोज गिड़गिड़ाकर, खटमल–सा, जूँ की भाँति डर के मारे डगमगाने के बजाय आत्मसंघर्ष कर सर उठाना होगा।

सामाजिक अगडा–वाद, सड़ी–गली रूढ़ियाँ, जाति व्यवस्था की भयावहता पर व्यंग्य करते हुए निखिलेश्वर लिखते हैं–

"परान्न भोगी उच्च कुल हैं अहंकार का मंत्र।
'तक्षकाय स्वाहा'।
उच्चारण मात्र से मुझे ढकेल दिया गया।
वर्णाश्रम के यज्ञकुंड में।
गीताचार्य का गुणकर्म विभाग।
मेरे हाथों पर कसता गया कर्म की बेडियाँ।
गुण कभी के पाताल में धंस कर।
नसीब की लकीरों की तरह।
शेष रह गया कर्म ही कर्म!
युगों–युगों से जाति कुल का वट वृक्ष।
जकड़ता ही गया आत्मसम्मान को।
आखिर दफना ही दिया गीताचार्य को।"[11]

सभी जन्म से पृथ्वीपुत्र होने से इस पर भेद नहीं करना है और जन्मजात समानता के तथ्य पर भी खेद नहीं जताया जाना चाहिए। आदमी की पहचान का आधार मात्र उसका कर्म और गुण हो। लेकिन मुख्यधारा के शक्ति संपन्न वर्ग ने ऐसा न मानने के कारण ही हाशिए का आदमी दफना दिया जा रहा है।

सही आबोहवा के लिए तरसता, शहरी आपाधापी, वैश्वीकरण–उदारीकरण की दौड़ में ऊँची–ऊँची इमारतों के बीच आम जीवन एक अदद से भरपेट भोजन करा सकने वाले रोजगार के लिए भी तड़प रहा है। इस पर निखिलेश्वर चिंतित हो कहते हैं–

"यह कैसी अजीब दास्तान है कि।
विश्व के दौलतमंदों की।
लिस्ट में भारतीय अरबपति।
और वहीं उखड़ रहे हैं जड़ से।
अन्नदाताओं के पेड़–पौधे,।
असहाय आत्माएँ घूम रही हैं।
हत्या और आत्महत्या के बवंडर में।"[12]

शायद यह स्थिति पूँजीपतियों के द्वारा बनाई गई आर्थिक नीति के कारण है। बनने वाली योजनाएँ मुख्यधारा के लोगों के अनुकूल होती हैं। समय–संयम को झेलना ही हाशिए के लोगों की नियति है। जमीन की जड़–तह तक खोदते जाना, बादलों की ओर भरी आँखों को देख गिड़गिड़ाते हुए हाथ फैलाना ही शायद उसका भाग्य है। समाज केंद्र के लोग उसे मुख्यधारा का प्रतीक नहीं बनने देना चाहते। लेकिन निखिलेश्वर को प्रकृति पर शासन करने वाले हाशिए के अधिनायक की प्रतीक्षा है। सड़ी–गली नैतिकता के घेरे को तोड़ सकने वाले परशुराम की प्रतीक्षा है। उन्हें हाशिए पर दबाई गई लपटों के आक्रोश के उबलने का इंतजार है। वे हाशिए की आने वाली जागृति की मुनादी करते हाथों में विद्रोह का झंडा देखना चाहते हैं–

"अंदर की आग में भड़कते शोले।
लाल और काला एक हो जाते हैं।
आदमी की लड़ाई में...
हर पल किसी कोने में तेज किया जाता है कोई हथियार
और तब हर शिरा में एक गठान बांध जाती है...
व्यवस्था में बेतरतीबी का सवाल।
रौंदे हुओं का रक्त।
महानगरों की सड़कों की तरह बिखरा है जहाँ।
हर पल बेरहमी के साथ।
'इंडिया' दौड़ लगाता है।
सदियों को, संप्रदायों के बीच के– वंशानुक्रम में।
मिले उत्तराधिकार की।
हर कामगार–शक्ति आत्मीयता महसूस करती है।
और 'भारत' आँखें खोलता है।"[13]

यहाँ भारत ने आँखें खोलने के साथ कवि का दुर्दम्य आशावाद झलकता है।

निष्कर्ष :

डॉ. निखिलेश्वर ने हाशिए पर सरका दिए गए आदमी की भूख, दुख, बेरोजगारी की यातना, असम्मान की हिंसा, तनाव को उजागर कर और इन सबके बीच भी अपने को जिंदा रखने की जद्दोजहद–जीवनी शक्ति, हाशिए पर रहते हुए भी–अपना अलग अस्तित्व बनाने की इच्छा और विपरीत परिस्थितियों में भी उनकी निरंतर संघर्ष करने की शक्ति को उजागर किया है। सामाजिक असमानता का घोर विरोध करने वाले निखिलेश्वर समाज में हर तरह की मानवता का पुरजोर समर्थन करते हैं। वे हाशिए के आदमी को डर से डगमगाने के बजाय जी भर कर जीने को कहते हैं। मुख्यधारा ने बनाई इस–छुटखेली व्यवस्था को नेस्तनाबूद करने वाली लड़ाई में झोंक देने की सलाह देते हैं। अपने बचाव में संघर्ष ही मूलमंत्र है। मैनेजर पाण्डेय के शब्दों में– "अब मुख्यधारा का मिथक टूट रहा है। राजनीति के केंद्रवाद तथा वर्चस्व के विरुद्ध आवाज उठ रही है। ऐसी स्थिति में साहित्य में मुख्यधारा का मिथक बहुत दिनों तक नहीं चल सकता। अब हाशिए के लोग अपनी अस्मिताओं की स्वतंत्रता के बारे में सजग हो रहे हैं और उनके रचनाकार अपनी रचनाशीलता की नयी राहें बना रहे हैं।"[14] निखिलेश्वर के 'इतिहास के मोड़ पर' कविता संकलन को ऐसे ही प्रयास की एक सकारात्मक–आशावादी अभिव्यक्ति माना जा सकता है। इसलिए तो इसमें मुख्यधारा की कविता से अलग रूप–रंग और स्वरों की कविताएँ मिलती है। इससे किसी को अचरज करने की आवश्यकता नहीं मालूम पड़ती। मैनेजर पाण्डेय मुख्याधारा का मिथक खूब जोर–शोर से प्रचारित किये जाने को हाशिए के लोगों के आक्रोश और प्रतिरोध को दबाने के अभियान का एक हिस्सा मानते हैं। लेकिन हाशिए के समाज के प्रबल पक्षधर, प्रखर रचनाकार निखिलेश्वर मुख्यधारा के प्रवाह को लाभान्वित होने के पक्ष में खड़े नहीं दिखते। उनके साहित्य का एकमात्र अभिप्राय मानवीय मूल्यबोध है। वे मुख्य धारा के दृष्टिकोण में बदलाव लाने के लिए प्रयासरत हैं। 'इतिहास के मोड पर' में की कविताएँ भरपूर विश्वास के साथ एक नये युग की ओर संकेत करती हैं–

"सबकुछ शून्य नहीं है।
इस वेदनामय वर्तमान में, कुछ तो साथी है।
अपनी विकल्प यात्रा में... मौत के आगे है जीवन।
और कलाना के पंख।
प्रतिक्षण साकार हो रहा है।
कहीं न कहीं एक वीर्यकण।
प्रकृति के समांतर।
मनुष्य का अनादी विकास।
विनाश पर।
मानव विश्वास की निरंतर विजय।"[15]

निखिलेश्वर का मानना है कि– लोकतंत्र की परिभाषा बदलने को अभी बहुत दूर चलना है, कई तरह के युद्ध लड़ने हैं और उन्हें इस युद्ध में विजयी होने का पूर्ण विश्वास है। ○

संदर्भ सूची :

1. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, 2019, मिलिन्द प्रकाशन, हैदराबाद–पृ. 104.

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. खरटमोल मदन नामदेव, हिंदी साहित्य और हाशिए का समाज, प्रशांत पब्लिकेशन्स, जलगांव, जनवरी 2020, पृ.150–151.
2. शर्मा ऋषभ देव, तेलुगु साहित्य का परिवर्तनशील परिदृश्य, पुस्तक चर्चा– संबंधी, स्वतंत्र वार्ता समाचार पत्र में प्रकाशित आलेख, 04.04. 2010,
3. निखिलेश्वर, विविधा, 2009, रिलिन प्रकाशन, दिल्ली, पृ.17–18
4. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद, पृ. 01
5. वही–पृ.14
6. वही–पृ.18–19
7. वही–पृ.20–21
8. वही–पृ.23–24–25
9. वही–पृ.50
10. दयाशंकर शरण, मुख्य धारा बनाम हाशिए की कविता, सितंबर 2021, आलोचना का आलोक, समालोचना. कॉम, संदर्भ दि. 09.03.2024
11. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड पर, 2019, मिलिन्द प्रकाशन, हैदराबाद, पृ. 55
12. वही–पृ.59
13. वही–पृ.45–46
14. दयाशंकर प्रारण, मुख्य धारा बनाम हाशिए की कविता, सितंबर 2021, आलोचना का आलोक, समालोचना. कॉम, संदर्भ दि. 09.03.2024
15. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद, पृ. 79

निखिलेश्वर के काव्य में व्यक्त सामाजिक और राजनीतिक चेतना
('इतिहास के मोड़ पर' के विशेष संदर्भ में)

लक्ष्मणाचार्युलु. म.

शोध सार : भारतीय भाषाओं में जहाँ हिंदी एक समृद्ध एवं विकसित भाषा है, वहाँ दक्षिण भारतीय भाषाओं में अपना महत्व रखनेवाली तेलुगु भाषा भी उतनी ही समृद्ध एवं विकसित भाषा है। दोनों भाषाओं को अपने–अपने प्राचीन व नवीन साहित्यकारों पर, विशेषतः कालजयी रचनाओं से उन्हें सुविख्यात बनानेवाले कवियों, श्री निखिलेश्वर (कुंभम यादव रेड्डी) ऐसे रचनाकारों में विविध भाषाओं का अच्छा ज्ञान है। उन्होंने अपनी कृति सुमनों से (हिंदी, तेलुगु एवं अंग्रेजी) तेलुगु–हिंदी एवं अंग्रेजी साहित्य वाटिकाओं को बड़े सुचारू रूप से सजाया है। भावात्मक एकता का समर्थन करने इस महान रचनाकार की रचनाओं में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना पूर्णतः व्यक्त हुई है। इनकी रचनाएँ कालजयी मानी गई हैं।

बीज शब्द : दिगंबर, विलक्षण, शीर्षक, सामाजिक, साहित्य, कविता

आधुनिक तेलुगु कविता में अतिवास्तविक कविता युग के उपरान्त जो कविता लिखी गयी थी, उसे दिगंबर कविता कहा गया। यह कविता लिखने वाले कवि अपने मन में उत्पन्न भावनाओं को यथावत नग्न रूप में प्रदर्शित करना चाहते थे। अभ्युदय कविता की एक शाखा बनकर विकसित इस कविता में अराजकता, अशांति, विद्रोह और मार्क्सवादी सिद्धांतों का प्रभाव था। साथ–साथ उसमें अश्लीलता की मात्रा अधिक थी। इसे प्रशंसा एवं निंदा दोनों सामान रूप से प्राप्त हुए। हिंदी की नई कविता व दिगंबर कवियों ने अपने समय की पूर्ववर्ती काव्य प्रवृत्तियों से भिन्न परिवर्तन, विद्रोह, स्वेच्छा तथा बौद्धिकता अपनाकर अपनी कविता को संश्लिष्ट, व्यंग्यात्मक, स्वच्छंदवादी, बौदि्धक, अरागात्मक, अश्लील एवं विद्रोहपूर्ण दिया था।

20वीं सदी में मनुष्य जीवन अनेक कारणों से संश्लिष्ट, निराशपूर्ण एवं अनेक समस्याओं का शिकार बन गया। परिणामतः अमेरिका में 'ग्रे जनरेशन', इंग्लैण्ड में 'एंग्री यंगमैन', हँन्ग्रेजी में 'घायल युवा जगत', बंगाल में 'क्षुधापीढ़ी', आंध्र प्रदेश में 'दिगंबर कविता' आंदोलनों के रूप में तथा अमेरिका में 'एन्टी एकादमिक पोएट्स जनरेशन' प्रारंभ हुआ।

Krishna Srinivas & GreatAmerican World Poets & In the late fifties, New York group wrote shock poems And joke poems & most prominent being Dermise Levertor, Levertor, Le Roj JonesAnd Frank 'O' Hara- दूसरे शब्दों में, इन सभी कवियों ने संप्रदाय को परंपरागत भावपक्ष व कलापक्ष को त्याग कर, सामाजिक विषमताओं, विद्रूपों, विसंगतियों से, भ्रष्टाचार से ग्रस्त

राजनीति व सामाजिक व्यवस्था व बेरोजगारी का विरोध करते हुए, विद्रोह करते हुए, विद्रोह किया था। इस समय के समस्त आंदोलनों के मूल में यांत्रिकता, शोषण व गिरनेवाले मानव मूल्यों का प्रभाव रहा।

इसी प्रकार आंध्र प्रदेश में प्रारंभ करके स्वल्प काल में ही व्याप्त हुए दिगंबर कविता – यानी "Naked पोएट्री" लिखने वाले कवियों ने नग्नमुनि, ज्वाला मुखी, निखिलेश्वर, चरबंडा राजु, भैरवैया महास्वप्न के नामों से काव्य निर्माण किया था।

सामजिक चेतना इस दिगंबर कविता का प्रमुख लक्षण है। राजनीतिक चेतना तो रहेगी ही। प्रयोगवाद व मार्क्सवादी सिद्धांतों से प्रभावित इस कविता के बारे में महाकवि श्रीश्री ने एक साक्षात्कार में कहा था (सृजन–अंक फरवरी–1970) श्रीश्री के साथ साक्षात्कार ये अपनी सृजनात्मक प्रतिभा का सदुपयोग नहीं कर पा रहे हैं। उनकी अशांति व उव्देलन का सही पथ–प्रदर्शन करें तो अच्छा होगा। ये यानी दिगंबर कवि हर एक वस्तु, भाव और नियम के विरुद्ध विद्रोह करना अपना कर्तव्य मानते हैं। मुझे यह समझ में नहीं आ रहा है कि मैं उनको मार्क्सवादी समझूँ या अनार्किस्ट। (यानी अशांति प्रेमी) इनमें राजनीतिक चेतना की अपेक्षा काव्य चेतना पर्याप्त मात्रा में है। यह कोई भ्रांति या भ्रम नहीं कि दिगंबर कविता केवल प्रतिशोध कविता है। मुझे तो दिगंबर (नग्न) कविता में काव्यात्मकता दृष्टिगोचर हुई।"

दिगंबर कवियों के अनुसार, "जब तक धरती पर निर्धनता रहेगी तब तक कोई भी मार्क्सवादी सिद्धांतों को चुनौती नहीं दे सकते।" थोड़े शब्दों में कहें तो दिगंबर काव्य एवं कथन में विश्रृंखलता, विद्रोह, अस्पष्टता, उपहास, अटपटापन, नारेबाजी, अश्लीलता एवं वीभत्स इत्यादि के साथ–साथ गद्यात्मकता एवं रस व अलंकार का बहिष्कार इत्यादि द्रष्टव्य है।

निखिलेश्वर व्यक्तित्व व कृतित्व :

अब हम इस काव्य पद्धति–विशेष के आलोच्य कवि, अनुवादक, कथाकार एवं आलोचक श्री निखिलेश्वर के बारे में जान लेंगे। एक प्रकार से दिगंबर कविता के प्रतिनिधि कवि भी माने जाने वाले श्री निखिलेश्वर जी का असली नाम कुंभम यादव रेड्डी है। इनका जन्म अगस्त 1938 को वीरवल्ली, यदाद्रि जिला, तेलंगाना में हुआ। (अगस्त) (छियासी) निखिलेश्वर इनकी कलम का नाम है। हम ईश्वर, परेमश्वर, विश्वेश्वर, जगदीश्वर, सर्वेश्वर इत्यादि नामों से तो परिचित हैं परंतु निखिलेश्वर एक ऐसा नाम है जो केवल तेलुगु साहित्य को दिगंबर काव्य विधा में ही पाया जाता है। इन्होने सेना में सिविलियन स्कूल मास्टर, वायुसेना बल में लिपिक (1960–1964) उप संपादक के रूप में, केशव मेमोरियल उन्नत विद्यालय (1966–1996) में नौकरियाँ की थीं। इनको अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए एवं अनेक संस्थाओं ने सम्मानित भी किया था। उनमें से कुछ हैं––

1) एक्सरे अवार्ड (1984)

2) एटुकूरी बलराम मूर्ती–साहित्य पुरस्कार (2003)

3) आवस्त सोम सुंदर साहित्य पुरस्कार (2008)

4) तेलुगु विश्वविद्यालय प्रतिभा पुरस्कार (2011)

5) श्री श्री सेंटिनरी साहित्य अवार्ड (2010)

6) फ्रीवर्स फ्रंट अवार्ड (2011)

7) केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार (2020)

इनकी जीवन संगनी का शुभनाम है श्रीमती यामिनिजि है, जो हाल में स्वर्गस्थ हो गईं। इनकी 04 संतान हैं जो अपने–अपने जीवन में सेटिल हो गईं।

सन् 1956 से लेकर 1964 तक इन्होंने अपने असली नाम से ही विविध रचनाएँ की थीं। 1965 ई. से अपनी कलम का नाम "निखिलेश्वर" बना लिया एवं उसी नाम से दिगंबर क्रांतिकारी कवि के रूप में साहित्य जगत में विख्यात हुए।

इस समय वे पचासी वर्ष के जवान है। वही जोश, वही उमंग, वही उल्लास, वही निबद्धता मैंने उनमें देखी जो उन्नीस सौ साठ–पैंसठ में विद्यमान थीं। जिज्ञासा, अध्ययनशीलता, सामाजिक व राजनीतिक परिवेश के प्रति सजगता उनमे यथावत है। उनकी निरंतर साहित्यिक साधना की पहचान के रुप में 2020 वर्ष के लिए केंद्रीय साहित्य अकादमी पुरस्कार उनका अनुपम कविता–संग्रह "अग्निश्वास" को प्राप्त हुआ।

कृतित्व :

श्री निखिलेश्वर जी तेलुगु गद्य–कविता में एक सनसनी दिगंबर कवि हैं। निखिलेश्वर जी एवं अन्य दिगंबर कवियों ने घोषणा की थी कि– "हम अपने स्वीय स्वर में बोलना चाहते हैं।" दिगंबर कविता के प्रथम अंक में "प्रथम कविता" श्री निखिलेश्वरजी की ही थी।

"आत्मयोनि" कविता द्वारा एक नवीन दिगंबर (नग्न) कवि के रूप में अवतरित हुए निखिलेश्वर जी उस कविता के धार को आज तक जारी रख रहे हैं। सन् 1965 से 1969 ई तक चले दिगंबर कविता आंदोलन में निखिलेश्वर जी का स्वर ऊँचा व सुदृढ़ है। 1965 ई. में छः दिगंबर कवियों में से एक बनाकर अतिवास्तविक रचनाधर्मिता अपनाते हुए वे 1970 ई. में क्रांतिकारी लेखक संघ में सदस्य बने। विरसं के (विप्लव रचयितल संघम) के नाम से विख्यात इस संघ के वे कार्यदर्शी भी रहे। निखिलेश्वर जी ने आज तक ज्वलनशील पीढ़ी (मांडुतुन्न तरम), युगस्तर, काल का अतिक्रमण कर, चार सदियों के गवाह के रुप में मेरा महानगर, स्मृति पर्वत (ज्ञापकाला कोंडा) खंड़तारों से होते हुए, निखिलेश्वर कविता, अग्निश्वास, लाइफ द एड्ज ऑफ़ नाइफ, (अंग्रेज़ी एवं इतिहास के मोड़ पर (हिंदी) इत्यादि अनुगम रचनाएँ लिखीं। गद्यलेखन में इनकी शैली विलक्षण है। दीवारों के पीछे, यह लोकतंत्र किसका है? हलचल वाले दशक में श्री श्री, कविताशोध, उद्वेलित कथाएँ, आवाहित अक्षर हुए, समस्त बदलावों को अपनाते, अस्तित्ववादी आंदोलन,

नारीवादी, दलितवादी व मुस्लिमवादी आंदोलन में इन्होंने भाग लिया तथा अपनी रचनाओं में इन्हें स्थान भी दिया था।

अब हम 'इतिहास के मोड़ पर' के परिप्रेक्ष्य में निखिलेश्वर जी को देखेंगे। इसके पूर्व "आत्मयोनि" नामक अपनी रचना में निखिलेश्वर जी ने लिखा था––

निखिलेश्वर – आत्मयोनि (दिगंबर शतक का प्रथम अंक)

1) तेलुगु के कवित्रय में प्रथम महाकवि भट्टू

2) रामराज नरेंद्र–नन्नया के आश्रय डाटा क्षासक

''नन्नय्या नु नरंद्रुडि बोंदलोने
निद्रपोनिय्यी
लेपकु, पीकानुलिमि
गोतिलोकि लागुताडु
प्रवंघागनल तोडलु ताडिमोदुलु
तकिते काल्लु वीरग गोट्टु
कुचमुलु एव्वरु एक्कनि पर्वताग्रामुलु तुलनु डी कोनि बध्धलु कोट्टु''

भाव : (हिंदी अनुवाद)

नन्नय्या को नरेंद्र की समाधि में ही सोने दें
जगाओ मत गला घोंटकर खींचेगा गड्ढ़े में
प्रबंध काव्य नायिकाओं के जांघ हैं ठूठ ताड़ के
धुएँ तोड़ दे टाँग
रतन हैं अनचढ़े पर्वत शिखर सीट से टकराए और टुकड़े कर दो।
इसमें अतीत का असीमित खण्डन व विशृंखल लैंगिक
पद प्रयोग ने मूल भावों को कुचल दिया था।

परंतु "इतिहास के मोड़ पर" तक आते–आते कवि निखिलेश्वर के कथ्य व कथन में परिपक्वता, निखार, शालीनता इत्यादि द्रष्टव्य हैं।

इतिहास के मोड़ पर :

जैसा कि इन्होंने अपनी आकृष्ट हिंदी रचना "इतिहास के मोड़ पर" के पुरोवाक में स्पष्ट किया था, मौलिक रूप से वे तेलुगु कवि होने पर भी बचपन से ही उन्हें हिंदी से लगाव रहा। काल क्रम में हिंदी साहित्य से उनका परिचय बढ़ता गया। तेलंगाना में तो उर्दू प्रचलित है ही। हिंदी शिक्षकों व मित्रों के कारण भी वे हिंदी से जुड़ गए। विद्रोही कविता दिगंबर पीढ़ी से वे प्रभावित हुए। उन कविताओं का अनुवाद भी करते–करते अपनी हिंदी अभिव्यक्ति, शक्ति

को और शक्तिशाली बनाने में सफल हो गए। उसी समय युग प्रभात, धर्मयुग, आलोचना इत्यादि हिंदी पत्र–पत्रिकाओं से इन्हें प्रोत्साहन भी मिला। उन लोकप्रिय पत्रिकाओं में श्री निखिलेश्वरजी की रचनाएँ प्रकाशित होने लगीं।

धीरे–धीरे समकालीन हिंदी कविता से उनका संपर्क बढ़ता गया। वे उन कवियों में एक बन गए जो यह मानते हैं कि यदि हृदय और मेधा के समन्वय से प्रतिफलित व स्पंदित हो तो वह सदैव जीवंत यानि कालजयी बनेगी।

"इतिहास के मोड़ पर" नामक इनकी उत्कृष्ट रचना संग्रह में कुल छप्पन, याने 56 भोग की तरह, छप्पन देशों की तरह 56 कविताएँ हैं और 'इतिहास के मोड़ पर' इस संग्रह की प्रथम कविता है। भगवान के घर में देर है अंधेर नहीं वाली सूक्ति इस संग्रह के प्रकाशन के विषय में सार्थक हुई क्योंकि उनके ही शब्दों में कहूँ तो, कई व्यक्तिगत कारणों से प्रकाशन में बहुत विलंब हो चुका। विश्व प्रसिद्ध मिलिंद प्रकाशन की ओर से प्रकाशित इस पुस्तक को हम "गागर में सागर" भी कहें तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। जिस प्रकार कविवर बिहारी की अनुपम रचना बिहारी सतसई के बारे में कहा जाता है, "देखन में छोटे लगैं घाव करैं गंभीर" वाला कथन भी इस रचना के विषय में सार्थक व सटीक बैठता है।

मात्र 103 पृष्ठों वाली इस पुस्तक ने उतनी लोकप्रियता पाई, वाह–वही लूटी की सैकड़ों पृष्ठ वाली अन्यों की अनेक रचनाएँ पा न सकी। छप्पन कविताओं में अधिकाँश कविताएँ तत्कालीन सुप्रसिद्ध अनेक हिंदी की लोकप्रिय व स्तरीय पत्रिकाओं में छप चुकी।

इस कविता संग्रह में दृष्टिगत कविताओं के शीर्षक भी अत्यंत आकर्षक, कुतूहलवर्द्धक, सारगर्भित, समसामयिक एवं प्रेरणास्पद भी हैं। जैसे– अर्द्ध सगी के आगे, दिगंबर पीढ़ी, बर्बर, नर का माँस, शवभोगी, मौत का पीछा करते हुए, आंबेडकर के हाथ में काला झंडा, गीताचार्य की समाधि, नर संहार, आखिर कब दक, कब तक सिकुड़ते जाओगे दलदल में चींटी का सफर कहाँ तक इत्यादि ऐसे शीर्षक हैं जो अपने आप में बेमिसाल एवं विलक्षण हैं। हर कविता कवि की प्रतिभा, अध्यवसाय, अनुशीलन शक्ति एवं मौलिक चिंतन को व्यक्त करते हैं। ये कोई संदेश व उपदेश देनेवाले कवि नहीं हैं। जीवन की कटु यथार्थता एवं सामाजिक विषमताओं, विसंगतियों को राजनीतिक दाँव–पेंच इत्यादि के साथ–साथ यह प्रबुद्ध पाठकों पर ही छोड़ देते हैं कि उन्हें क्या करना है, कैसे और क्या करना है।

"इतिहास के मोड़ पर" शीर्षक कविता में कवि की तीव्रतम अनुभूति अपेक्षाकृत गहरी व भावानुकूल भाषा में व्यक्त की गई।

इतिहास के हर मोड़ पर
विद्रोह का बहता खून
दू:ख़ातिरेक की
वेदना शून्य स्थित
बेताल की भाँति

अतीत का शव ढ़ोना ही
शेष उत्तराधिकार
किसी हमनाम रास्ते
फिसलता आदमी
बदल रहा है भेड़िये में
लोकतंत्र के चारों ओर
गूंज रहा है
गिरगिरों का विजय नाद
अब बलिदान सारे
शिलालेखों में परिवर्तित
फिर भी झंझावात का सामना करना ही
शाश्वत इतिहास है अपना।

बस यही है "इतिहास के मोड़ पर" शीर्षक से शोभित कविता जो गद्यात्मकता ओढ़कर, व्यंग्य–परिमाल से प्रबुद्ध कविता प्रेमियों के समक्ष प्रत्यक्ष होती है। इसमें कवि इतिहास को नयी दृष्टि से देखता है जिस पर तेलुगु के महाकवि श्री श्री का प्रभाव है। यह समसामयिक भी है एवं कालजयी भी। भारत का इतिहास अधिकांशतः रक्तरंजित है। भले ही हम भारतीय संस्कृति के अतीत की गौरवपूर्ण गरिमा पर गर्व करते हैं फिर भी केवल अतीत से काम नहीं चलेगा। अतीत के आधार पर हमें वर्तमान को बनाना है, संवारना है। परंतु दुर्भाग्य से वर्तमान समाज किसी अंधकारपूर्ण मार्ग में चलता–चलता कष्ट झेल रहा है। वह अनेक समस्याओं से जूझता किंकर्तव्यविमूढ़ भी हो रहा है। राजनीति स्वार्थसिद्ध का एक साधन बन गई एवं नैतिक मूल्य का हनन हो रहा है। वर्तमान में सामजिक व राजनीतिक चेतनाएँ धूमिल हो रही हैं शिथिल हो रही हैं। लोकतंत्र एक तमाशा बन गया एवं गंगा गए तो गंगाराम जमना गए जमनाराम, वालों की संस्था बढ़ रही है। भाई–भतीजावाद, भ्रष्टाचार इत्यादि चरम सीमा पर हैं। राष्ट्र के हित में जो अपने प्राण आहुति कर चुके उनके नाम केवल झंडा फहराते समय याद करते हैं। शिलालेखों, फोटो पर मालाएँ चढ़ाने तक उनके बलिदान सीमित हो गए। ऐसी स्थिति में कवि विद्रोह का आह्वान करता है, झंडा का बड़ी निर्भयता से सामना करने को उत्प्रेरित करते हुए कहता है यही हमारा शाश्वत इतिहास है। यह कविता 2008 में स्वतंत्र वार्ता नामक हैदराबाद से निकलने वाली लोकप्रिय हिंदी समाचार पत्र में प्रकाशित हुई एवं अनेकों की प्रशंसाएँ प्राप्त करने में सफल हुई।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि श्री निखिलेश्वर जैसे दिगंबर कवियों ने परिवर्तन, विद्रोह, स्वेच्छा तथा बौद्धिकता से प्रभावित होकर अनेक कविता को भले ही गयात्मक रूप देकर पूर्व कविता की तुलना में भिन्न संश्लिष्ट, व्यंग्यात्मक, जटिल, प्रयोगात्मक, स्वच्छंदवादी, बौद्धिक, अरागात्मक, अश्लील एवं विद्रोहपूर्ण बनाया हो फिर भी संवेदनशील एवं प्रबुद्ध होने के कारण अपनी कविताओं द्वारा सामाजिक व राजनीतिक चेतना की अलख जगाने में पाश्चात्य साहित्यिक प्रवृत्तियों व आंदोलनों से प्रेरित होकर विद्रोह अपनाते हुए मुक्त छंद विधान, मिश्रित शब्दावली, खंड विधान, नवीन शिल्प से अपनी कविताएँ सजाईं।

मानसिक नग्नता हेतु मनुष्य, चेतनायुक्त होकर एटीएम स्फूर्ति से सहज स्वाभाविक जीवन बिताना" अपना लक्ष्य जानने वाले दिगंबर कवियों में उल्लेखनीय प्रतिभा के धनी श्री निखिलेश्वर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व अनुपम एवं स्फूर्तिदायी हैं। वर्ण "नि" को गर्व इसलिए नहीं कि वह निराला निश्चलता, निदान, निर्मल एवं निराकार में है, बल्कि वह गौरव एवं गर्व का अनुभव इसलिए करता है कि वह "नीखिलेश्वर" में है। ○

संदर्भ सूची :

1. डॉ. कमला प्रसाद पांडेय, छायावादोत्तर हिंदी काव्य की सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि–पृ.5

निखिलेश्वर के काव्य में व्यक्त सामाजिक–राजनीतिक चेतना

दत्ता शिवराम साकोले

शोध सार : जीवन जगत के निरीक्षण–परीक्षण से स्वानुभव और व्यावहारिक दृष्टि का विकास होता है। शास्त्र–ज्ञान की अपेक्षा दुनिया को निकट से देखना, सुनना, गुनना, मथना, यथार्थबोध के लिए आवश्यक होता है। कवि इन सभी से अपने अनुभव जगत को विस्तृत और बहुआयामी बनाता है।

निखिलेश्वर जी का काव्यसंग्रह 'इतिहास के मोड़ पर' कविताएँ सामाजिक और राजनीतिक चेतना से ओतप्रोत हैं। सभी कविताएँ अपनी अलग पहचान बनाती दिखाई देती हैं क्योंकि इसमें अनुभव की व्यापकता और विविधता है। ज्ञानात्मक संवेदना से सम्पृक्त गहरी लोकानुभूति है। निखिलेश्वर की कविताओं में मानवीय मूल्यों के संरक्षण की आकुलता है। परिवर्तन की कामना एवं पुरातन तथा अधुनातन के द्वंद्वात्मक भौतिकवाद में से सार्थक और समयानुकूल चयन की सजग चेतना है।

बीज शब्द : इस्तेमाल, व्यवस्था, आंदोलन, साहित्य, चेतना, कविता

निखिलेश्वर जी का काव्य संग्रह 'इतिहास के मोड़ पर' सन् 2019 में मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद से हुआ इनमें कुल 56 कविताएँ हैं, जिनमें 9 कविताएँ दिगंबर पीढ़ी की हैं जो तेलुगु साहित्य में विद्रोही कविता के नाम से जानी जाती हैं। जिसका समय 1965 से 1970 का माना गया है। संग्रह की कविताओं का तेलुगु से हिंदी में अनुवाद किया गया है। प्रमुखतः एम. रंगय्याजी, टी. वसंता जी, डॉ. विजय राघव रेड्डी, दंडमूडि महीधर बाकी सभी कविताएँ निखिलेश्वर जी ने बचपन से ही हिंदी भाषा से लगाव होने के कारण हिंदी के पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित किए, जिनमें प्रमुख रूप से धर्मयुग, युगप्रभात, आलोचना, समकालीन भारतीय साहित्य के साथ–साथ सन् 2000 के बाद हिंदी मिलाप, स्वतंत्र वार्ता, गोलेकोंडा दर्पण आदि पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित करते रहे।

जैसा जीवन होता है वैसी अनुभूति होती है और जैसी अनुभूति होती है वैसी ही अभिव्यक्ति होती है। कवि जिस युग में जन्म लेता है उस पर तत्कालीन परिस्थितियों का प्रभाव किसी–न–किसी रूप में पड़ता है। निखिलेश्वर जी पर भी तत्कालीन समय का प्रभाव पड़ा जो आरंभ में विद्रोह के राह पर चल पड़े। आज 50 से 55 साल बाद भी दिगंबर पीढ़ी की कविता को भुलाया नहीं जा सकता क्योंकि निखिलेश्वर जी की कविता में न सिर्फ संवेदनशील और परिवेश सजग है, अपितु अपने विजन और अनुभव संपदा को व्यक्त करने का कौशल रखती है।

'इतिहास के मोड़ पर' कविता में निखिलेश्वर जी लोकतंत्र के यथार्थ की भयावहता को चित्रित किया है–

"लोकतंत्र के चारों ओर गूंज रहा है। / गिरगिटों का विजयनाद
साथ ही आतंकवाद।"[1]

कविता में भी कवि ने जनविरोधी शक्तियों की स्पष्ट शिनाख्त की है। अपने क्षोभ और आक्रोश को तनिक भी छुपाया नहीं है।

'आतंकवाद' कविता में निखिलेश्वर जी ने वैश्वीकरण के इस युग में बढ़ते हुए आतंकवाद को उजागर किया है। वे कहते हैं–

"मानव अधिकारों के वैश्वीकरण के तले
स्वतंत्रता को कुचलने का जतन / आंखों के इशारों से
प्राणों को फूंक रहा है, आतंकवाद / ग्लोबल मार्केट के संग्राम में।
विश्व व्याप्त भय उत्पात / कहाँ और किस ओर बैठेगा
यह दिशाहीन पंखों का उग्रवाद।"[2]

यह कविता स्वतंत्र वार्ता में 2002 में प्रकाशित हुई थी। उससे पहले यानी 11 दिसंबर, 2001 में अमेरिका दो गगनचुंबी इमारतें जिन्हें ट्विन टावर्स के नाम से जाना जाता है, जब आतंकवादी हमले से ध्वस्त हुई तो उन देशों के भी दिल दहशत से भर गए जिन्हें आये दिन आतंकवादी हमलों का सामना करना पड़ता था। ऐसे में निश्चित है कि निखिलेश्वर जैसे कवि कैसे शांत रह सकते हैं। कविता का जन्म भावनाओं से होता है और भावनाएँ पैदा होती हैं जीवन के आसपास के उन तत्वों के स्वभाव एवं बरताव से। "कवि की पीड़ा उसकी आँखों से आँसू बनकर नहीं आती, उसके कलम में सिपाही का काम करती है कवि अपने क्रोध को जीकर कविता बनाता है।"[3]

भावना जब गहरी और तीव्र हो जाती है तो अभिव्यक्ति कहलाती है। कवि जब अपनी खुली आँखों से समाज में हो रहे अन्याय, अत्याचार तथा धर्म के नाम पर राजनीति को देखता है तो उसकी छटपटाहट कविता के माध्यम से प्रकट होती है। निखिलेश्वर जी की एक कविता है 'अर्धसत्य के आगे' इस कविता में समाज व्यवस्था को हिंसक व्यवस्था बताते हुए कहा है–

"पौरुषत्व और नपुंसकता को
समांतर पलडों में तौलनेवाली इस हिंसक व्यवस्था में
समांतर कैसे जी सकते है, वाले भय से
समझौते के बदलते रंगों में / हत्या और आत्महत्या की भावना से भर
पशु हो जाना ही है आज का अर्धसत्य।"[4]

जब राजनीति का अपराधीकरण हो जाता है तो राजनीति किसी भी चीज का इस्तेमाल कर सकती है। जिनके हाथों देश का कारोबार सौंपा गया है वे ही जनता का इस्तेमाल कर रहे है। ऐसे में कवि निखिलेश्वर के मन में कैसे जी सकनेवाला सवाल आ जाना स्वाभाविक है। यह तो सिर्फ अर्धसत्य है। सच्चाई तो कुछ और ही है जिसे कवि ने यथार्थ रूप में स्वीकार किया है।

"हम आज झूठ और सच के बीच
भटकते तिलमिला रहे है, आत्मवंचना व्यूह में।
छुरी भौकनेवाले पीठ में इन लुटेरों के व्युह का
तहस नहस कर सकने वाला जन व्यूह
अब प्रत्येक क्षेत्र में साकार होता जा रहा है,
आज को इतिहास में लिखा जा रहा है / यही पूर्ण सत्य है।"[5]

इस प्रकार से निखिलेश्वर जी ने कविता में तत्कालीन समाज व्यवस्था पर निशाना साधा था। वैसे देखा जाए तो वे तेलुगु साहित्य में दिगंबर पीढ़ी के कवि माने जाते हैं। उनकी कविताओं में विद्रोह के स्वर देखने को मिलते हैं। 1964 से 1969 के बीच लिखी हुई कविता 'दिगंबर कविता' कहलाती है।

हिंदी में जहाँ अकविता का दौर चला वहीं तेलुगु में विद्रोह के राह पर तेलुगु कविता का आरंभ हुआ। नामवर सिंह ने एक संगोष्ठी में कहा, "छठे दशक में अमेरिका और इंग्लैंड में साहित्य के क्षेत्र में एक आंदोलन आया था। जिसे बीट जनरेशन और एंग्री यंग मैन मुवमेट के नाम से जानती है। उसके बाद भारत में पहले बंगाल में फिर हिंदी में फिर तेलुगु में क्रमशः भूखी पीढी, अकविता और दिगंबर पीढी के नाम से आंदोलन चले। इन आंदोलनों के पीछे निश्चय ही अमेरिकी और अंग्रेजी आंदोलनों की प्रेरणा थी, लेकिन ये अपने देश की परिस्थितियों से निरपेक्ष नये। ये सारे महानगरों में पैदा हुए थे और मुलतः आधुनिक पूँजीवादी व्यवस्था में मानवीय मूल्यों का जो ह्रास हुआ है जिसके विरूद्ध निर्दिष्ट थे।"[6]

तेलुगु साहित्य में निखिलेश्वर एवं उनके समकालीन कवियों ने वर्तमान व्यवस्था की तीखी आलोचना करनेवाली एक नए ढंग की विद्रोही कविता की शुरुआत दिगंबर पीढ़ी के साथ की। निखिलेश्वर जी ने उनके विद्रोह के राह पर तेलुगु दिगंबर पीढ़ी के सम्मान में लिखा है, "विद्रोह के राह पर अग्रसर हमारी दिगंबर पीढी यात्रा को भूलाया नहीं जा सकता। वह विद्रोह मुलतया साहित्यिक था। पर उसके तेवर युवा आक्रोश से भरे थे। मानवीय आत्मा के लिए एक स्वच्छ मानसिकता की तडपन थी। वे दिन भी क्या थे जब हम छह दिगंबर कवि निडर और निष्कलंक होकर विद्रोही यात्रा की तय किया था। वही अंत में एक क्रांतिकारी घाट में विलीन हो गया।"[7]

आधुनिक हिंदी साहित्य में कविता के क्षेत्र में जो आंदोलन चल रहे थे जिसमें प्रगतीवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, अकविता वहीं पर आधुनिक तेलुगु कविता अन्य विधाओं से आगे है। विश्व साहित्य में आधुनिक कविता में आई सभी प्रवृत्तियों को तेलुगु कविता ने आत्मसात किया और अनेक संदर्भों में तो इन प्रवृत्तियों ने आंदोलन का रूप ले लिया। जनता के संघर्ष से जुड़कर क्रांतिकारी परंपरा को तेलुगु कविता ने आगे बढ़ाया। यह सिलसिला ऐतिहासिक तेलंगाना, सशस्त्र किसान आंदोलन से लेकर इधर सातवें दशक में पनपे नक्सलवादी और श्रीकाकुलम आदिवासी आंदोलनों के साथ जुड़कर नये प्रतिमानों को कायम करता गया।

वैसे देखा जाए तो सातवें दशक के पूर्व दिगंबर पीढ़ी के कवियों का आगमन परिवर्तन के लिए आक्रोश भरा स्वर था। उस पीढ़ी में छह कवि थे निखिलेश्वर, ज्वालामुखी, चेरबंड राजु, भैरवय्या, महास्वप्न तथा नग्नमुनि। इनके द्वारा प्रकाशित काव्यसंग्रह में समकालीन युवा पीढ़ी पर गहरा प्रभाव पड़ा।

आत्मशोधन के साथ–साथ सड़ी–गली सामाजिक व्यवस्था को क्रांतिकारी मोड़ देने के लिए तीखे शैली को अपनाया था। शब्दों को ईंटो की मार की तरह और बेझिझक गालियों को उपयोग में लाया गया। इसका तत्काल प्रभाव अन्य भारतीय भाषाओं के काव्य आंदोलनों पर फैलता गया।

देश को आज़ादी मिलने के बाद भी देश की स्थिति में कोई परिवर्तन दिखाई नहीं देता। निखिलेश्वर जी ने, 'जो तुमने कहा वह झूठ नहीं' इस कविता में दूर के ढोल सुहाने लगते हैं पास जाकर देखो तो कांटे नजर आते हैं इस बात को चित्रित किया है–

"जो तुमने कहा वह झूठ नहीं, / इस देश का हर शहर
रिसता हुआ बडा घाव / दूर से वह लाले गुलाब
पास से दिखेगा खून से लथपथ।"8

इस प्रकार से निखिलेश्वर जी ने जीवन की वास्तविकता का यथार्थ चित्रण किया है। निखिलेश्वर जी की दिगंबर कविताओं को 'दिक' के नाम से संबोधित किया है जो चारों दिशाओं में फैले अंधकार को चीरते हुए आकस्मिक पथ निर्देशन में सक्षम है और जिनकी सरहदे मानवता के मूल्य में है। इनकी कविता बर्बर, तू कब रोया नहीं न, आमंत्रित करता हूँ, मारने की चाह, नर का मांस, अपने ही देश के एकांकी हूँ मैं, शवभोगी आदि कविताओं में केवल आक्रोश और क्रोध से खीज कर निराश होने के बदले एक नये मानवीय समाज की स्थापना के लिए कवि या लेखक व्यक्तिगत जीवन से तथा रचनाओं द्वारा आदर्श बने और मार्ग प्रशस्त करने का कार्य किया है।

निष्कर्षतः कहा जाए तो दिगंबर पीढ़ी के कवियों ने आधुनिक मानव के दिखावे और दम्भ भरे चेहरे पर लगे मुखौटे उतार फेंकने का प्रयास किया है।

संदर्भ सूची :

1. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद, पृ.09
2. निखिलेश्वर, आतंकवाद, मिलिंद प्रकाशन, पृ.10
3. मैं और मेरी कविता, गोलेकोण्डा दर्पण, शकीले आज भी, पृ.77
4. निखिलेश्वर, अर्धसत्य के आगे, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद पृ.12
5. वही–13
6. वर्तमान साहित्य, कविता विशेषांक, सेरा यात्री, 1992, पृ.325
7. निखिलेश्वर, विद्रोह के राह पर, संस्मरण, पृ.04
8. निखिलेश्वर, जो तुमने कहा वह झूठ नहीं, मिलिंद प्रकाशन, पृ.11

दिगंबर कवि निखिलेश्वर का काव्यात्मक संसार

सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त'

शोध सार : तेलुगु साहित्य में साहित्य अकादमी विजेता निखिलेश्वर का महत्वपूर्ण स्थान है। उनकी कविताए आधुनिक और जीवंत हैं। समकालीन समाज की समस्याओं, भावनाओं और विचारों को व्यक्त करती हैं। उनकी रचनाएँ अपार साहित्यिक और सामाजिक उपयोगिता रखती हैं और उन्हें एक महान कवि के रूप में पहचान दिलाती है। उनकी कविताओं में भाषा की उदारता, विचारों की गहराई और समस्याओं के सामाजिक पहलुओं पर उनका विशेष ध्यान होता है। निखिलेश्वर एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने तेलुगु साहित्य को नए आयाम दिए हैं और उनकी कविताएँ आज के समय के लिए मार्गदर्शन का कार्य कर रही हैं।

बीज शब्द : उत्थान, आदिवासी, धड़कनें, प्राकृतिक, कविता, साहित्य

निखिलेश्वर 1960 के दशक से जिन लेखकों, कलाकारों, सामाजिक आंदोलन कार्यकर्ताओं और प्रमुख लोगों से मिले उनमें से कुछ परिचित बने रहे और कुछ करीबी दोस्त बन गए। कुछ मित्र और आत्मीय बन गए। कुछ अग्रणी बन गए। डॉ. निखिलेश्वर ने ऐसे 35 लोगों के बारे में विभिन्न अवसरों, व्यक्तिगत परिचय और मैत्रीपूर्ण बातचीत के बारे में 'साहित्य संगम' नामक पुस्तक में लिखा है। यह डी. चंद्रशेखर रेड्डी के संपादन में एमेस्को द्वारा प्रकाशित हुई है। यह कोई योजनाबद्ध लेखन नहीं है, बल्कि उन व्यक्तियों को श्रद्धांजलि के रूप में कई लेख लिखे गए हैं। कुछ उन व्यक्तियों के जीवन में विशेष अवसरों की प्रतिक्रिया में प्रशंसा के रूप में लिखे गए थे। इसलिए ये न तो व्यापक और न ही सर्वांगीण हैं। ये एकमात्र अवसर हैं जब निखिलेश्वर ने उन लोगों के प्रति अपनी मित्रता, सम्मान और प्रशंसा व्यक्त की। हालाँकि, अपनी राय व्यक्त करने वाले इन व्यक्तियों और लेखकों ने तेलुगु साहित्य और तेलुगु समाज में प्रभावशाली भूमिका निभाई है, इसलिए यह जुड़ाव बहुत दिलचस्प है। साठ वर्षों के इतिहास का आंशिक प्रतिबिंब। कुछ विशेषताओं और दृश्यों की रिकॉर्डिंग। तब वे व्यक्तिगत थे लेकिन अब वे इतिहास का हिस्सा बन गए हैं जिन्हें हमें जानना आवश्यक है! ये निबंध निखिलेश्वर द्वारा स्पष्ट, स्पष्ट और ईमानदारी से कही गई बातों से भरे हुए हैं। इन्हें हम निस्संदेह तथ्यात्मक इतिहास के रूप में स्वीकार कर सकते हैं। इस पुस्तक को पढ़ने से इतिहास में लोगों की भूमिका के बारे में समझ बढ़ेगी ऐसा हम मानते हैं।

हालाँकि पहले उन्होंने के. यादव रेड्डी के रूप में कई रचनाएँ लिखी थीं, निखिलेश्वर का विशेष उत्थान छः दिगंबर कवियों में से एक के रूप में शुरू हुआ। उन छः में से केवल श्री निखिलेश्वर और नागनमुनि ही आज जीवित हैं। अन्य चार हैं चेरबंदराजू, महा स्वप्न, ज्वालामुखी और भैरवय्या।

निखिलेश्वर ने उनके पिछले अवसरों पर उनके बारे में, उनकी कविताओं की विशेषताओं के बारे में, दिगंबर कविता में उनकी भूमिका के बारे में, संक्षेप में ही सही लेकिन शक्तिशाली और भावुकता से लिखा है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, "सामूहिक गायन में दिगंबर कवि, जिनकी काव्य शैली उनकी है, अभिव्यक्ति की ताकत और कमजोरियाँ भी उनकी हैं।" कम्मिशेट्टी वेंकटेश्वर राव, जिन्होंने "अग्निसिखालु–मांचू जडुलु" कविता लिखी थी– एक महान सपना बन गई, उन्होंने घोषणा की कि "समय हवा पर एक धनुष है, इतिहास नींद के समुद्र पर एक तूफान के साथ आ रहा है", लेकिन वह शब्दों में रुक गए उनकी जीवनशैली, निराशा और वैराग्य के कारण कविता की। अविवाहित रहते हुए और खेती करते हुए 2019 में उनकी मृत्यु हो गई। मनमोहन सहाय, जिनकी कविता कैवल्य नामक रात के खंड में प्रकाशित हुई थी, "हृदय के किनारे पर धड़कने वाली प्राकृतिक भावना को पकड़ने, सच को वास्तव में नग्न बताने" के लिए दिगंबर कवि भैरवाय बन गए। उन्हें लगा कि यह दुनिया एक अव्यवस्थित लय है और यह जीवन स्वयं एक रहस्य । 19–12–2019 को उनका निधन भैरवानंद स्वामी के रूप में हुआ। बाकी चार नक्सली बारी, श्रीकाकुलम् आदिवासी और किसान सशस्त्र संघर्षों से प्रेरित होकर क्रांतिकारी कवियों में तब्दील हो गए और 1970 में ताल ठोक दी। इन छः में से सबसे पहले श्री चेरबंदराजू की मृत्यु हुई। उन्होंने अजरामारा आंदोलन के कई गीत लिखे और अजरामारा आंदोलन के कई गीत लिखते हुए कहा, "बूंद–बूंद करके, मैं इस भूमि की मुक्ति के लिए बीज के रूप में अपना खून छिड़कूँगा।" उन्होंने श्रम के इस तथ्य को अमर कर दिया कि 'परियोजनाएँ हमारे खून और बजरी से बनाई जाती हैं।' बद्दाम भास्कर रेड्डी, जो निखिलेश्वर से छोटे थे, जो उन्हें बचपन से जानते थे, 6 साल तक ब्रेन ट्यूमर से पीड़ित रहने और चेरबंदा के राजा के रूप में निधन के बाद 38 वर्ष की आयु में निधन हो गया। निखिलेश्वर ने अपने बचपन के दोस्त को विनम्र श्रद्धांजलि देते हुए कहा, "जब तक वह सचेत रहे, क्रांतिकारी चेतना के साथ रहे", "वह हर गीत के साथ बड़े हुए और मेरे वरिष्ठ बन गए"।

निखिलेश्वर का ज्वालामुखी (ए. वी. राघवचारी) से विशेष संबंध है, जिनका 2008 में लीवर की बीमारी के कारण निधन हो गया था, जो 1991 में हृदय के ऑपरेशन के बावजूद एक अथक और निरंतर पथिक के रूप में क्रांतिकारी चेतना फैला रहे थे। क्रांतिकारी साहित्यिक आंदोलन में ऐसी स्थिति थी कि "ज्वाला–निखिल" की जोड़ी को अलग करके नहीं देखा जा सकता था। दोनों के परिवार निजी जिंदगी में भी उतने ही करीब थे। निखिल ने कई मौकों पर कलम के योद्धा महावक्ता के बारे में लिखा है। इस खंड में लिखे लेख में ज्वाला ने अपनी आधी सदी की मित्रता का स्मरण करते हुए अनेक संगठनों के साथ मिलकर विभिन्न पहलुओं में किए गए आंदोलन कार्यों की व्याख्या की है। "कविता तभी है जब अक्षर को धार दी जाए। ज्वालामुखी, जो मानते थे कि लेखन तभी सार्थक है जब साम्राज्य को उखाड़ फेंका जाए, निखिलेश्वर ने कहा, ''जब तक लाखों सितारे नहीं टूटते, तब तक एक उज्ज्वल सुबह नहीं होती।'' उन्होंने एक सक्रिय कवि के रूप में अथक प्रयासों से सार्वजनिक

आंदोलनों का अनुसरण किया। निखिल ने अपने दोस्त को श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वह नई पीढ़ियों के लिए "विद्रोही वेदांतम" कवि बने हुए हैं।

जंगल में उनके साथ रहने वाले नग्नमुनि के साथ संबंध मित्रता की किताब के पन्ने खोलकर हमारे सामने पेश करते हैं, जिसमें थोड़े–बहुत मतभेद भी शामिल हैं। निखिलेश्वर लिखते हैं कि नग्नमुनि को लगा कि वीरसम के उद्भव के बाद भी दिगंबर कवियों को अपनी पहचान नहीं खोनी चाहिए। इसके अलावा, निखिलेश्वर ने अपनी यादें साझा कीं कि उन्होंने ही पहल की थी और दिगंबर कवियों के संस्करणों के प्रकाशन के लिए पैसे उधार लिए थे और प्रेस का काम देखते थे और वे प्रूफ़रीडर थे। निखिलेश्वर का मानना है कि आधुनिक तेलुगु कवियों में नग्नमुनी का विशेष स्थान है।

'दिगंबर कवुलु' के निदेशक सुब्रह्मण्यम को श्रद्धांजलि देते हुए कहा, "उनका किराए का घर हमारी शुरुआत और विकास के लिए आश्रय है।" उनका एबिड्स हाउस कई वर्षों तक हमारी चर्चाओं का केंद्र बिंदु रहा। "वह अपनी प्रोफ़ाइल से समझौता किए बिना अपने विचार व्यक्त करते थे," उन्होंने भावुकता से सोचा। सुब्रह्मण्यम जी स्वयं एक कवि हैं जिन्होंने "वी आर द नेशन ऑफ कावर्ड्स" नामक अंग्रेजी कविताओं का एक संग्रह प्रकाशित किया। वे उग्र मानवतावाद से मार्क्सवाद की ओर चले गए। बाद में निखिलेश्वर ने उन्हें मित्रतापूर्वक याद करते हुए कहा कि उन्होंने डब्ल्यू.पी.डी.ए.आर. के कार्यकारी समूह के सदस्य के रूप में लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए काम किया।

एक अन्य व्यक्ति जो उनके इतने घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण हैं कि कुछ लोग सोचते हैं कि वे सातवें दिगंबर कवि हैं, वे हैं श्री के.के. रंगनाधाचार्युलु। ज्वालामुखी उनके बचपन के दोस्त थे जो उसी परिसर में पले–बढ़े थे। वे हमेशा साथ रहते थे और इस तरह निखिलेश्वर के सबसे करीबी दोस्त बन गए। वे अपनी बुद्धिवादी एवं मार्क्सवादी सोच से आलोचना के शिखर पर खड़े रहे। भाषा की दृष्टि से उन्होंने दूसरा रूप दिया। हालाँकि उनका जन्म और पालन–पोषण एक तमिल वैष्णव ब्राह्मण परिवार में हुआ, लेकिन उन्होंने विचारों में आधुनिकता को अपनाया और विद्वानों के शोध के क्षेत्र में छात्रों, विशेषकर उनके अधीन अध्ययन करने वाले दलित छात्रों के लिए एक मार्गदर्शक बन गए। 57 साल की दोस्ती किस पड़ाव पर दार्शनिक जुड़ाव के साथ आध्यात्मिक जुड़ाव में बदल गई, यह बताते हुए मैंने उनसे भाषा, संस्कृति और आधुनिकता के बारे में बहुत कुछ सीखा, उस 'समानांतर साहित्यिक मंच' के बारे में बताते हुए उन्होंने बताया कि वह एक बाहरी मित्र बने रहे।

उनके जीवन का दूसरा चरण है झगड़ा। कुछ मित्रों के बारे में लिखा जो उस संगठन और आंदोलन में भागीदार थे। महाकवि श्री श्री, जिन्होंने घोषणा की कि विरसम की अध्यक्षता उनके लिए सबसे महान थी, ने श्री श्री के बारे में कुछ मजेदार यादें साझा कीं। "श्री श्री का व्यक्तित्व अद्वितीय है। मैंने उनमें एक छोटा बच्चा, एक निरंतर पाठक, एक विदूषक, एक ऐसा व्यक्ति देखा जो वर्णमाला पहेलियों से खेलता था। कुछ विरोधाभासों के बावजूद वह

अवमानना की आवाज बने रहे। श्री श्री ने याद दिलाया कि उन्होंने उस समय के स्थिर माहौल में ऐतिहासिक भूमिका निभाई थी। उन्होंने रवि शास्त्री को एक अमर पत्र–लेखक के रूप में सम्मान देते हुए उनकी प्रशंसा करते हुए कहा, "मानवीय रिश्तों और कई प्रकार के मानसिक विकारों से जुड़े आत्म–धोखे का एक शानदार लेखक।" 1961–62 तक आंदोलन के सहयोगी के रूप में वरवर राव के साथ उनके परिचय, तब से चली आ रही मित्रता और आपसी सम्मान के बारे में बात करते हुए कहा जाता है कि भले ही राजनीतिक मतभेदों के कारण क्रांतिकारी रेखा विभाजित हो गई, लेकिन उनके साथ कोई शत्रुतापूर्ण संघर्ष नहीं हुआ। उससे वरवर राव का अध्ययन, ईमानदारी, निष्ठा, नेतृत्व, उनके राजनीतिक कदम और अपने विश्वासों के प्रति उनकी दृढ़ता प्रभावशाली है। उन्हें कवि, आलोचक, राजनीतिक विश्लेषक और वक्ता के रूप में सम्मानित किया गया।

"क्रांति एक राष्ट्र के निर्माण में सबसे जरूरी है। एक राष्ट्र के जीवन में सबसे व्यापक, सर्वव्यापी जीवन शक्ति है। निखिलेश्वर कहते हैं कि क्रांति तभी पूरी होगी जब राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों के साथ–साथ साहित्य और संस्कृति के प्रति भी वैज्ञानिक समझ विकसित होगी। सवाल यह उठता है कि निखिलेश्वर किसके साथ थे? आपने विभिन्न सार्वजनिक संगठनों में किसके साथ काम किया? उनकी विचार प्रक्रिया के परिणाम क्या थे? यह संगम अप्रत्यक्ष रूप से बातों की जानकारी भी देता है। उन्होंने बेबाकी से अपने विचार व्यक्त किए। साहित्य संगम में कई दिलचस्प बातें हैं. हालाँकि, कालानुक्रमिक क्रम या किसी विशेष आधार पर विभाजन के अभाव और कुछ के मामले में लेखन का संदर्भ न जानने के कारण पाठक को कुछ असुविधा महसूस होती है। इतना ही नहीं उन्होंने कुछ बातें बहुत संक्षेप में बताईं। अतः जो लोग अनुभवी निखिलेश्वर से घटनाओं के बारे में अधिक विस्तार से जानना चाहते हैं, उन्हें राहत नहीं मिल सकती। हालाँकि, सभी साहित्य प्रेमियों के लिए अवश्य पढ़ी जाने वाली पुस्तक साथी संगम है। यह सामाजिक, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक तत्वों का संगम है।

संदर्भ सूची :

1. दिगंबर कवुलु
2. मंडुतुन्ना तरम
3. साहित्य संगम

निखिलेश्वर के काव्य में असंतोष और विद्रोह

सुपर्णा मुखर्जी

शोध सार : तेलुगु साहित्य प्राचीन एवं समृद्ध साहित्य है। तेलुगु साहित्य की परंपरा 11वीं शताब्दी के आरंभिक काल से शुरू होती है। जब महाभारत का संस्कृत से नन्नय ने तेलुगु में अनुवाद किया था। विजयनगर साम्राज्य के समय यह पल्लवित–पुष्पित हुई। तेलुगु साहित्य को मोटे तौर पर 4 भागों में विभाजित पर किया जाता है– 1. पुराणकाल (1001–1400), 2. काव्यकाल (1400–1700), 3. ह्रासकाल (1650–1900), 4. आधुनिक काल (1850 से अब तक)। इसी आधुनिक काल में 6 विद्रोही कवियों ने स्त्री लेखन, दलित लेखन, अल्पसंख्यक मुस्लिम लेखन के माध्यम से एक नवीन काव्यधारा को तेलुगु साहित्य के साथ जोड़ दिया जिसका नाम था 'दिगंबर काव्यधारा'। निखिलेश्वर के अलावा इस काव्यधारा के दूसरे कवियों के नाम हैं– ज्वालामुखी, चेरबंड राजू, भैरवय्या, महास्वप्न और नग्नमुनि। 'दिगंबर' शब्द का अर्थ होता है 'नग्न'। 'दिगंबर' पीढ़ी के घोषणा पत्र में उन्होने घोषित किया कि, 'दिगंबर कवि अपनी कविता को 'दिक' कहेंगे। दिशा दिखाकर मार्ग निर्देशन करनेवाले हमारे 'दिक'। हमारी सीमाएँ हैं विश्वन्तराल के हृदय। इन सीमाओं का अंत नहीं है। बीमार फेफड़ों को चीरकर 'कॉस्मिक' किरणों से मानव के लिए निवास–स्थान खोजने तत्परता हमारे 'दिक' में रहेंगी'।[1] हाँ, इन कवियों ने देश में फैले विभिन्न प्रकार के भ्रष्टाचारों को अपनी रचनाओं के द्वारा नग्न रूप में जनता के सामने रखा इसी कारण से इस काव्यधारा का नाम 'दिगंबर काव्यधारा' रखना ही सार्थक जान पड़ता है। श्री कुंभम यादव रेड्डी 'निखिलेश्वर' इस काव्यधारा के प्रवर्तक कवि के रूप में जाने जाते हैं। यह काव्यधारा 1965–1970 तक चली।

बीज शब्द : दिगंबर, संस्थान, प्रतिनिधि, विद्रोही, असंतोष, राजनीति

कुंभम यादव रेड्डी 'निखिलेश्वर' का जन्म सन् 1938 में गाँव वीरावल्ली, जिला यादाद्री, तेलंगाना में हुआ। उन्होंने उस्मानिया विश्वविद्यालय से बी.ए. और बी.एड. की उपाधि प्राप्त की। हिंदी भूषण परीक्षा को भी उन्होने पास किया। इसके बाद 1960–1964 तक उन्होने क्लर्क के रूप में Civilian School Master in Army में काम किया। 1964–1966 तक 'गोलकोंडा पत्रिका' दैनिक समाचार पत्र में संपादक के रूप में अपनी सेवा प्रदान की। 1966–1996 तक उन्होंने केशव मेमोरियल स्कूल में अंग्रेजी के अध्यापक के रूप में अपनी सेवा प्रदान की। 1979–1982 तक वे 'जन साहिती समस्कृतिका समक्या' नामक संस्था के प्रवर्तक और सदस्य रहे। इसके अलावा वे अनेकों संस्थानों के सदस्य रहे। निखिलेश्वर के द्वारा रचित प्रमुख रचनाओं के नाम– दिगंबर काव्युलु–1965–68, 1971, 2016 में इन कविताओं के तीन संस्करण प्रकाशित हुए। इसके अलावा मंडूतुन्ना तरम, अग्निश्वासा, गोदला वेणुकु, मेमु चुसिना जन चाइना (चीन पर यात्रा वृत्तांत) आदि हैं। विभिन्न पुरस्कारों से

सम्मानित निखिलेश्वर को 2017 में लिखी गई उनकी रचना 'अग्निश्वासा' के लिए 2020 में 'केंद्र साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। यह संपूर्ण भारतीय साहित्य परिवार के लिए गर्व की बात है। निखिलेश्वर की रचनाओं का हिंदी, बंगला, ओड़िया, अंग्रेजी, गुजराती, पंजाबी, आसामी, मलयालम आदि भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि भले ही निखिलेश्वर तेलुगु भाषा में लिखते हों लेकिन उनकी पहचान केवल तेलुगु कवि बने रहने तक सीमित नहीं है। उनकी रचनाएँ भारतीय साहित्य की अनमोल धरोहर हैं।

निखिलेश्वर के काव्य में असंतोष और विद्रोह : 'दिगंबर काव्यधारा' के प्रवर्तक निखिलेश्वर का नाम 'विप्लव रचयितल संघम' (क्रांतिकारी लेखक संघ) के संस्थापक के रूप में भी लिया जाता है। भारतीय साहित्य के अंतर्गत 'दिगंबर काव्यधारा' का अपना अलग महत्व है। निखिलेश्वर याद दिलाते हैं कि, 'जन संघर्ष से जुड़ी क्रांतिकारी कविता का सिलसिला ऐतिहासिक तेलंगाना किसान सशस्त्र आंदोलन से लेकर सातवें दशक के नक्सलवादी और श्रीकाकुलम आदिवासी आंदोलनों के साथ जुड़कर नए प्रतिमानों को कायम करता रहा। उन्होंने आगे बताया है कि जहाँ 'चेतनावर्तनम्' ने पुनरुत्थान की प्रवृत्ति अपनाई वहीं कवि सेना मेनिफेस्टो के साथ प्रकट करते हुए गुंटूर शेषेंद्र शर्मा ने चमत्कार और क्रांतिकारी आभास की कृत्रिम शैली को स्थापित किया, जबकि सी. नारायण रेड्डी नियोक्लासिकल धारा लेकर आए'।[2]

एक कवि के रूप में उन्होने लगभग 6 दशकों तक सामाजिक मुद्दों को लेकर साहित्य रचना का काम किया। मानवाधिकारों के उल्लंघन, सामंती व्यवस्था तथा भ्रष्टाचार के विरोध में उन्होने क्रांतिकारी रचनाओं को लिखा जिस कारण से उन्हें देशद्रोही कहकर जेल भी भेज दिया गया। लेकिन, कहते हैं न 'जहाँ न पहुँचे रवि, वहाँ पहुँचे कवि'। निखिलेश्वर की साहित्यिक यात्रा भी इसी प्रकार की है। निखिलेश्वर ने अपने साहित्य में असंतोष और विद्रोह को हमेशा जीवित रखा। आगे इसी विद्रोही और असंतोषी कविताओं से हम परिचित होंगे।

वैसे तो निखिलेश्वर मूलतः तेलुगु भाषी कवि हैं लेकिन चूँकि, वे दिगंबर साहित्यधारा के निखिलेश्वर का जुड़ जाना तो स्वाभाविक ही था। इसी कड़ी में वे हिंदी भाषा और साहित्य के साथ भी जुड़ गए। वैसे उन्होंने स्वयं यह भी स्वीकार किया कि, 'मौलिक रूप से मैं तेलुगु कवि होने पर भी, बचपन से हिंदी से मेरा लगाव रहा। तेलुगु माध्यम से हाईस्कूल की पढ़ाई के साथ–साथ हिंदी साहित्य से मेरा परिचय बढ़ता गया'[3] इसी लगाव और प्रेम ने ही उन्हें हिंदी में भी लिखने के लिए प्रेरित किया। साहित्य रचना क्यों की जाए? इस प्रश्न का उत्तर निखिलेश्वर ने स्वयं ही देते हुए लिखा है कि, 'केवल मनोरंजन के लिए कविता की जाए (उपन्यास, कहानी, कविता आदि) यह बेमानी लगती है। किसी भी समाज का यथार्थ रूप साहित्य में दर्शन हो तो कलात्मक शिल्परंजकता के साथ–साथ एक मानवीय दर्शन का अंतर्निहित आधार होना चाहिए। तभी एक सामाजिक रचना को रोगनिर्धारण तक ही सीमित न होकर असली जड़ तक

पहुँचना होगा। यदि ऐसा हुआ तो वह कृति मात्र दर्पण बनकर बेजान साबित हो जाएगी। इसीलिए चिकित्सा की विधियों का निर्देश करके जब वह रोग–निदान भी करेगा तभी वह उत्तम कलाकृति या साहित्य के रूप में स्थायित्व पा सकेगा'।[4] निखिलेश्वर की इस उक्ति से स्पष्ट हो जाता है कि साहित्य का सोद्देश्य होना निखिलेश्वर के लिए अति आवश्यक था। यह सोद्देश्यता ही उनकी रचनाओं में 'असंतोष और विद्रोह' के रूप में दिखाई पड़ता है।

राजनैतिक असंतोष : राजनीति का पर्यायवाची शब्द 'पॉलिटिक्स' है। यह शब्द यूनानी भाषा के 'पॉलीस' शब्द से बना है। जिसका अर्थ नगर अथवा राज्य है। प्राचीन यूनान में प्रत्येक नगर एक स्वतंत्र राज्य के रूप में व्यवस्थित होता था और इन राज्यों को नीति मतलब उचित नियमों के द्वारा दिशा निर्देश देना ही राजनीति करना कहलाता था। अर्थात् राजनीति के द्वारा राष्ट्र कल्याण करना ही राजनीति का प्रथम और अंतिम उद्देश्य होना चाहिए। लेकिन अगर यह न हो तो फिर कवि निखिलेश्वर का यह लिखना–

'किसी गुमनाम रास्ते / फिसलता आदमी
बदल रहा है भेड़िये में / लोकतंत्र के चारों ओर
गूंज रहा है / गिरगिटों का विजयनाद
अब बलिदान सारे / शिलालेखों में परिवर्तित'।[5]

उनके व्यक्तिगत राजनैतिक असंतोष को नहीं दर्शाता है उस 'फिसलते आदमी' के भी असंतोष को भी दर्शा रहा है जिसने बहुत विश्वास के साथ अपने ही तरह एक साधारण व्यक्ति को पहले नेता बनाता है और फिर उस नेता को अपना प्रतिनिधि बनाकर राज्य को व्यवस्थित बनाए रखने का दायित्व सौंपता है। लेकिन वह प्रतिनिधि जब दायित्व तो संभालता ही नहीं है अपितु लोकतंत्र के सम्मान को भी नष्ट कर देता है ऐसे में उस 'फिसलते आदमी' का प्रतिनधि बनकर फिर तो दिगंबर कवि निखिलेश्वर आक्रोशित स्वर में यह लिखने को बाध्य होते हैं कि–

इस लोकतन्त्र की साझेदारी में / तराजू को जो हथियाता है
सभी को नचानेवाला तानाशाह है / आज के चक्रव्यूह के निर्माता
वही कौरवों के उत्तराधिकारी / जनपथ के चारों ओर
जो हमराही हैं'।[6]

कवि का यह आक्रोश राजनीति में व्याप्त भ्रष्टाचार के विरुद्ध जनमानस को उद्वेलित करने में सक्षम है।

भ्रष्ट मानवाधिकार नियमों के प्रति असंतोष : राजनीति की आवश्यकता ही पड़ी मानव को संरक्षण प्रदान करने हेतु। मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम, 1993 में दी गई मानव अधिकार की परिभाषा के अनुसार, 'मानव अधिकार में प्राण, स्वतंत्रता, समानता और व्यक्ति की गरिमा से संबंधित ऐसे अधिकार अभिप्रेत है जो संविधान द्वारा प्रत्याभूत किए गए हैं तथा अंतर्राष्ट्रीय प्रसंविदाओं में सन्निविष्ट और भारत के न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय है'।[7] सरल भाषा में कहा जाए तो इसका अर्थ यह होगा कि मनुष्य के जीवन को रक्षा मिलना उन

नियमों के अनुसार जिनका उल्लेख संविधान में है। मानवाधिकार के अंतर्गत आता है। परंतु प्रश्न फिर से वही कि अगर इन नीति नियमों को बनानेवाला ही भ्रष्ट होगा तो फिर क्या वास्तव में मानवाधिकार से संबंधित नियमों का कोई औचित्य रह जाएगा? उत्तर है नहीं? इसी 'नहीं' उत्तर के कर्ण से ही निखिलेश्वर को अपनी कविता को 'दिगंबर' रूप धारण करवाकर लिखना ही पड़ता है कि,

'मानव अधिकारों की रक्षा के लिए
अब भेड़िया खुद कमर कसकर खड़ा है
वही सब कुछ बनकर / आराम से फैसला सुना सकता है।
भूख लगते ही / निश्चित ही किसी भी कोनदे में
किसी भी भेड़–बकरी को चुन सकता है'।[8]

कहने की अवश्यकता नहीं कि यहाँ 'भेड़िया', भ्रष्ट सरकार, प्रशासन आदि का प्रतीक है और 'भेड़–बकरी', 'साधारण मनुष्य का'। निखिलेश्वर के आक्रोश यह बहुत बड़ी विशेषता है कि उनका आक्रोश प्रतीकों के सहारे व्यक्त होता दिख पड़ता है। उनके आक्रोश में भी शालीनता है। यह शालीनता बहुत आवश्यक है क्योंकि यही शालीनता मनुष्य को मानवता से विमुख नहीं करता। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं कि कवि किसी भी गलत परिस्थिति के साथ समझौता करने को तैयार है।

आतंकवाद के प्रति आक्रोश : वैसे तो आज का मनुष्य सृष्टि का सबसे उत्कृष्ट प्राणी है। विज्ञान के सहारे उसने जल, थल, वायु और अब तो महाकाश पर भी उसने अपना परचम फैला लिया है लेकिन, अब पृथ्वी ही रहने लायक नहीं रह गई है। मनुष्य में, मनुष्य को 'मारने की चाह' प्रबल हो उठी है।

'अब सभ्य देशों में / जान से मारने की चाह
प्रवाहित हो रही है। / बर्बर जातियों को
शर्म आ रही है / सभ्य देशों की
पाशविक प्रवृत्ति देखकर'।[9]

इन पाशविक प्रवृत्तियों को साहस मिलता है तब, जब, मनुष्य की आत्मिक शक्ति भयभीत होकर घुटने टेक देती है, जब मनुष्य चाटुकार बन जाता है, जब मनुष्य का आत्मविश्वास डगमगाने लगता है। कवि इस सत्य से परिचित हैं। तभी तो उन्होने मनुष्य को साहस देते हुए लिखा है–

'तब फिर डर काहे का? / रोज गिड़गिड़ा कर
खटमल–सा, जूं की भाँति / सरकारी जासूस–सा
डर के मारे डगमगाने के बजाय
निकल आ बाहर / जी, जी भर जी।'[10]

निखिलेश्वर की चिंतन शैली की यही विशेषता है कि वे कभी व्यक्ति को हारते हुए नहीं देखना चाहते हैं। उन्हें पता है कि 'किसी भी साहित्य में संघर्षमय वर्तमान का सही स्वर खोजना हो तो कविता की ओर मुड़ना पड़ता है'।[11] इसी कारण से वे बारंबार मानवता को विजयी करने का प्रयास करते हैं।

लेकिन उनका यह प्रयास उनकी काव्य सृजन प्रक्रिया को बोझिल नहीं बनाती है। क्योंकि कवि का आक्रोशी मन किसी भी परिस्थिति में निराशावादी नहीं है। ऐसे में 'आमंत्रित करता हूँ' निमंत्रण के साथ कवि लिखते हैं,

'मध्यम वर्ग की फफूँही को / झुकी रीढ़ और
कपट आचरण करते / भयंकर इस विष खंड में
गले काटती व्यवस्था में / तेरे घर को लूटते
निर्मम लुटेरों से बचाने को / सम्पूर्ण सुंदर समता की
स्थापना के लिए / अपनी सामर्थ्य की परीक्षा के लिए
आमंत्रित करता हूँ मैं तुम्हें'।[12]

कवि के इस आमंत्रण में रहस्यवाद है। लेकिन रहस्य में भी विद्रोह का स्वर मुखरित है।

अंधानुकरण के प्रति आक्रोश : 'दिगंबर' पीढ़ी के घोषणा पत्र में यह लिखित रूप में मिलता है कि, 'विश्व शांति के लिए बड़े देशों के नेतागण हर रोज तोते की बोली बोलते हैं, पर अणु बमों के परीक्षणों के नाम पर विश्व वातावरण को विषाक्त बनाते जाते हैं। ये सचमुच ही महान अभिनेता हैं। इन अग्र देशों के राजनीति के अभिनय सम्राटों को चाहे वे किसी भी वाद या व्यवस्था में रहते हों, उनके अमानुषिक कार्यों को दिगंबर कवि घृणा की दृष्टि से देखते हैं'।[13]

उपर्युक्त विचार से यह तो स्पष्ट हो ही जाता है कि जनता की अंधभक्ति, नेताओं का झूठा आश्वासन आदि ही विश्व को विकास से दूर रखने का सबसे बड़ा कारण है। निखिलेश्वर ऐसे कवि तो नहीं हैं जो समस्या को देखकर, आक्रोश व्यक्त करके ही पल्ला झाड़ ले। उन्होने समाधान भी अपने तरीके से दिया है,

'गंदगी के चारों ओर / चक्कर लगाते
रीढ़–विहीन बुद्‍धिजीवी / अपार अमृत जन–सागर में
गिरता विष–बिन्दु'।[14]

कवि की इन पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि कवि जनता को सर्वेसर्वा मानते उन्हें पूर्ण विश्वास है कि जनता अगर विप्लव का विगुल बजाएगी तो कहीं कोई भ्रष्टाचारी नेता, पाशविक आतंकवादी अपने आपको सुरक्षित नहीं रख सकेगा। बुद्‍धिजीवियों के बुद्‍धि पर कवि को विश्वास है तभी तो बुद्‍धिजीवियों का मौन उन्हें खलता है। दिगंबर कवि की पंक्ति–

'शव के कपड़े / उतारते नेता गण
आर्ष–धर्म के नाम पर / जाति–धर्म की सीख देकर
अरण्य तत्व को बढ़ाते गुरुजन'।[15]

निखिलेश्वर के आक्रोश की चरम पराकाष्ठा को दर्शाने में सक्षम है। भ्रष्टाचार तथा भ्रष्टाचारियों की नकेल कसने में 'दिगंबर' कवि निखिलेश्वर पूर्णतः सक्षम हैं। उनके लिए समाज, देश, राष्ट्र की उन्नति से अधिक महत्वपूर्ण और कुछ नहीं है। ○

संदर्भ सूची :

1. 'धर्मयुग' 1 जनवरी 1967 से साभार पृष्ठ संख्या–पृ. ix
2. ऋषभ उवाच–blogspot
3. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद–पृ.2
4. निखिलेश्वर, विविधा, 2009, क्षितिज प्रकाशन, सिकंदराबाद–पृ.14
5. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद–पृ.9
6. वही–पृ.12
7. गूगल सौजन्य
8. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद–पृ.14
9. वही–पृ.26
10. वही–पृ.48
11. निखिलेश्वर, विविधा, 2009, क्षितिज प्रकाशन, सिकंदराबाद–पृ.17
12. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद–पृ.24–25
13. 'धर्मयुग' 1 जनवरी 1967 से साभार–पृ.xi
14. इतिहास के मोड़ पर–पृ.32
15. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद–पृ.32

संदर्भ ग्रंथ :

1. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, मिलिंद प्रकाशन, 2019, ISBN–978–81–7276–166–0
2. निखिलेश्वर, चयन एवं अनुवाद– विविधा, (समकालीन तेलुगु साहित्य की विभिन्न विधाओं का विशिष्ट संकलन), क्षितिज प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2009
3. अनुवादक– एम. रंगय्या, तेलुगु की दिगंबर कविता, (युवा शक्ति के क्रांतिकारी स्वर), प्रतिभा प्रकाशन, प्रथम संस्करण–2004

दिगंबर कविता के एक हस्ताक्षर निखिलेश्वर

अपर्णा चतुर्वेदी

शोध सार : निखिलेश्वर तेलुगु साहित्य के दिगंबर कविता आंदोलन के प्रवर्तकों में से एक माने जाते हैं। भारतीय साहित्य के संदर्भ तेलुगु की क्रांतिकारी कविता का अपना महत्व रहा। निखिलेश्वर जी याद दिलाते हैं कि– "जनसंघर्ष से जुड़ी क्रांतिकारी कविता का सिलसिला ऐतिहासिक तेलंगाना किसान सशस्त्र आंदोलन से लेकर सातवें दशक के नक्सलवादी और श्रीकाकुलम आदिवासी आंदोलन के साथ जुड़कर नए प्रतिमानों को कायम करता है।"[1]

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् स्वतंत्र भारत का जो स्वप्न सब ने देखा था वह साकार न हो पाया। सामान्य जन को लूटने वाली पूंजीवादी सामाजिक व्यवस्था ज्यों–की–त्यों बनी रही। खद्दरधारी समाजवाद के नाम पर जनता का शोषण कर रहे थे। इन सभी नेताओं के प्रति इन दिगंबर कवियों का आक्रोश फूटा।

बीज शब्द : सृजन, सामान्य, सामाजिक, दिगंबर, कविता, कवि

तेलुगु की आधुनिक कविता की एक नवीनतम उपलब्धि रही दिगंबर पीढ़ी। इन्होंने अपनी अभिव्यक्ति को कविता न कह कर "दिक् कहा– जो बीमार की परतों की चीर–फाड़ कर कॉस्मिक पथ निर्देशन में सक्षम हैं और जिनकी सरहदें मानवता के मूल्यों में हैं।"[2]

दिगंबर का अर्थ इनके काव्य में नग्न घूमना नहीं है, बल्कि आधुनिक मानव के दिखावे और दम्भ भरे चेहरे पर लगे मुखौटे उतार फेंकना है। दिगंबर कवि मानते हैं– "इस दिखावट के ढकोसले के पीछे अपने आप को केवल एक बार अनावृत्त देखो। तेरी हड्डियाँ, तेरे आँसू, तेरी परेशानियाँ, तेरा सुख–यही सच है।"[3]

आज भी मनुष्य के सामने रंग, वर्ण, वर्ग, कुल के सड़े कीचड़ की गहरी खाई है। इन खाइयों में ये राजकीय नेतागण लथपथ तैर रहे हैं। दिगंबर कवियोंने इन मजहबों से वादों से कोई वास्ता नहीं रखा। अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में आदमी को रखकर वादों के फाँसों से जुआ खेलने का काम तुरंत बंद हो ये चाहा।

निखिलेश्वर विप्लव रचयितल संघम क्रांतिकारी लेखक संघ के सक्रिय संस्थापक रहे और मानवाधिकार संस्थानों से जुड़े रहे। उनके सात कविता संकलन एवं पाँच गद्य रचनाएँ प्रकाशित हैं।

तेलंगाना के वर्तमान यादाद्री भोंनगिरी जिले के वीरावल्ली गाँव में कुम्भन यादव रेड्डी के रूप में जन्में, वे अपने उपनाम निखिलेश्वर से लोकप्रिय हुए। 1956 से 1964 तक उन्होंने अपने वास्तविक नाम से विविध रचनाओं का

सृजन किया। 1965 से उन्होंने अपना उपनाम निखिलेश्वर रखा और विप्लव कवि दिगंबर कवि के रूप में अपनी कलम का जादू फैलाया।

निखिलेश्वर जन साहित्य सांस्कृतिक समैक्य के व्यवस्थापक कार्यकर्ता रहे 1979–1982 तक। इनकी प्रसिद्ध कविताएँ रहीं– ईनाटिकी, दिगंबर कवुलु, मंडुतुन्न तरम (1972), ज्ञापकाल कोण्डा (2004), युगस्वम (2012), अग्निश्वास (2017) आदि। इतिहास के मोड़ पर इनकी हिंदी काव्य रचना रहीं।

अग्निश्वास के लिए उन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ। तेरासी वर्ष के निखिलेश्वर ने जीवनपर्यंत समाज में व्याप्त अन्याय, अत्याचार, आडंबर, वर्ग भेद के खिलाफ आवाज बुलंद की। उनकी रचना "आमंत्रित करता हूँ मैं" व्यवस्था में, समाज में व्याप्त अमानीवयता पर ऊँगली उठाती है।

"भैंसे की चरबी से
भरे इन, दिलों को
अपने लौह हस्तों से
पिछलने के लिए
आमंत्रित करता हूँ मैं तुम्हें।" पृ.47

स्वार्थसिद्धि हेतु राजनीतिक दावपेंच अपनाते सत्ताधारियों पर उनका आक्रोश 'मारने की चाह' कविता में व्यक्त होता है।

"अब सभ्य देशों में
जान से मारने की चाह
प्रवाहित हो रही है।" पृ.48

"चाहे कोई भी अमानुषिक
रीति से
अधिकार को हथियाने के लिए
घटिया राजनीतिज्ञ ही।
जग भर में फैले हैं।" पृ.48

निखिलेश्वर ने भारतीय भाषाओं के आदान–प्रदान से ही भारतीय साहित्य की सुसम्पन्नता को स्वीकारा विविधा के बारे में दो शब्द कहते हुए उन्होंने माना– "अंग्रेजी द्वारा जो अनुवाद का कार्य चलता रहा है, यदि वह हिंदी के माध्यम से फैलता जाए तो, आसानी से हम अपने आपको अधिक पहचान सकेंगे।"[6] (विविधा)

दिगंबर कवियों ने तत्कालीन समाज की सड़ी–गली मान्यताओं का खण्डन किया और क्रांतिकारी शैली अपनाकर एक निर्भयी रूप में दिगंबर कविता का सृजन किया। समकालीन भारतीय समाज की नैतिकता और मानवीयता के संदर्भ में आधुनिक तेलुगु साहित्य में बनते–बिगड़ते मूल्यों की चर्चा हुई है। असंतोष, आक्रोश विद्रोह और आमूलचूल परिवर्तनकारी क्रांति को कविता का सामाजिक लक्ष्य मानने वाले दिगंबर कवि वास्तव में मानवतावादी समता के स्वप्नदृष्टा रहे।

आधुनिक तेलुगु कविता में दिगंबर कविता अपने आप में एक अनोखा चिंतन बनकर उभरी। दिगंबर कविता परंपरा मात्र का निषेध करती है। उसका दिगंबरत्व सामाजिक व्यवस्था एवं राजनीतिक अन्याय के प्रति असंतोष की भावना व्यक्त होता है। उन्होंने समसामयिक समाज की तुलना असाध्य रोगों से ग्रस्त घृणित एवं कुकर्म व्यक्ति से करते हुए, रोग से मुक्ति की प्रार्थना/कामना करते हैं।

निखिलेश्वर ने अनुवाद के महत्व को जानकर स्वयं भी कृतियों का अनुवाद किया। आकाशम संतम नाम से उन्होंने हिंदी रचना 'सारा आकाश' का अनुवाद तेलुगु में किया। कांतानाथ के हिंदी उपन्यास 'और एक हिंदुस्तान' 1985 का अनुवाद तेलुगु में 'मेरो भारत देशम' नाम से किया।

निखिलेश्वर ने जहाँ एयरफोर्स स्कूल में क्लर्क व आर्मी में हेड मास्टर की नौकरी की (1960–1964) उन्होंने तेलुगु पत्रिका गोलकोंडा पत्रिका का संपादन भी किया। 1966 से 1996 तक लम्बी अवधि तक केशव मेमोरियल वॉयस स्कूल में अंग्रेजी अध्यापक के रूप में कार्य किया।

बहुभाषाविद् निखिलेश्वर ने तेलुगु साहित्य के दिगंबर कवि के रूप में ही नहीं, बल्कि एक विश्व लोकप्रिय रचनाकार के रूप में पहचान बनाई है। ○

संदर्भ सूची :

1. स्वतंत्र वार्ता, हैदराबाद : 04.04.2010 तेलुगु साहित्य का परिवर्तनशील परिदृश्य
2. तेलुगु की दिगंबर कविता : डॉ. एम रंगय्या, पृ.V
3. तेलुगु की दिगंबर कविता : डॉ. एम. रंगय्या, पृ.VI
4. तेलुगु की दिगंबर कविता : डॉ. एम. रंगय्या, पृ.47
5. तेलुगु की दिगंबर कविता, पृ.48
6. विविधा निखिलेश्वर

तेलुगु कवि निखिलेश्वर की कविता में चित्रित प्रगितिशील विचार : एक अवलोकन

दोड्डा शेषु बाबु

शोध सार : समकालीन तेलुगु साहित्य की प्रगतिशील विचारधारा के संदर्भ में निखिलेश्वर का स्थान महत्वपूर्ण माना जाता है। जिस प्रकार साठोत्तरी हिंदी कविता के संदर्भ में अकविता के माध्यम से कवियों ने सामाजिक वास्तविकता को यथार्थ रूप से प्रस्तुत करने की कोशिश की है, उसी प्रकार तेलुगु साहित्य में भी निखिलेश्वर या यादव रेड्डी ने भी अपनी कविताओं के माध्यम से तेलुगु समाज के साथ–साथ वैश्विक परिदृश्य को भी अपनी कविताओं में प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। वास्तव में इस कविता परंपरा को तेलुगु में दिगंबर कविता या नग्न कविता कहते हैं। इस दिगंबर कविता परंपरा में छः कवि आते हैं। वे है नग्नमुनि (मानेपल्लि ऋषिकेश्वरराव), निखिलेश्वर (यादवरेड्डी), चेरबंडराजु (बद्दम भास्कर रेड्डी), महास्वप्ना (कम्मिशेट्टि वेंकटेश्वरराव), ज्वालामुखी (वीरराघवाचर्युलु), भैरवय्या (मन्मोहन सहायम)। इन सबका मुख्य उपलक्ष्य भारतीय समाज में घटने वाली विभिन्न सामाजिक कुरीतियों के विरोध में आवाज उठाना है। जनता के पक्ष में रहकर सत्ता या साम्राज्यवादी ताकतों के विरोध में जनता को जागरूक करना, उनके साहित्य का मुख्य उद्देश्य है।

बीज शब्द : चेष्टा, सामाजिक, साम्राज्यवादी, आर्थिक, रूढ़िवादी परंपरा

रूढ़िवादी परंपरा का खंडन करते हुए, मनुष्यत्व को प्रतिस्थापित करना इन लोगों की मुख्य रीति रही है। इस संदर्भ में निखिलेश्वर लिखते हैं कि–

> "भगवान के लिए– राजाओं की समाधियों के लिए
> सोने की ईंटों से दीवार बनाने वाले इस देश में
> मिट्टी की दीवारों का रुदन सुनने वाला है कौन।"[1]

लेखक यहां मूर्ति पूजा का खंडन करते हुए, दलित, पीड़ित तथा उपेक्षित समुदायों के पक्ष में आवाज उठाता है। साम्राज्यवादी नीति की छाया आज और बढ़ने के कारण लोगों में सामाजिक और आर्थिक रूप से विभाजन स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है। अमीर और गरीबों के बीच का अंतराल भी बढ़ता जा रहा है। सत्ता तथा सरकार से संबंधित सभी व्यवस्थाएँ आज अमीरों के पक्ष में ही वकालत कर रही हैं। इसी प्रवृत्ति को लेकर कवि ने यहाँ पर बताने की चेष्टा की है। वर्तमान में कवि या कलाकार भी जनता की समस्याओं को अपनी कलाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने के बजाय केवल इतिहास को लेकर चर्चाएँ करने लगे हैं। उसमें भी केवल राजाओं के विलास में जीवन को लेकर ही ज्यादा चर्चाएँ आज पूरे भारत में दिखाई दे रही हैं। यही असली साम्राज्यवादी नीति है। इसी बात को लेकर कवि लिखते हैं कि–

"मरे हुए राजाओं की सड़ी हुई गाथाओं को
सराहनेवाले फर्जी इतिहासकारों से
पूछना चाहता हूँ
मानव विकास क्रम क्या सिखाया है तुमको।"[2]

यही वर्तमान साहित्य की असली स्थिति है। अधिकांश कवि या साहित्यकार आज केवल प्रायोजित कार्यों के लिए ही कविताएँ या साहित्य लिखने लगे हैं। इस प्रकार की शैली व रीति पर अपनी चिंता प्रकट करते हुए निखिलेश्वर लिखते हैं कि– "आज कल की युवा पीढ़ी बहुत कम समय में ही शान और नाम कमाना चाहती है। लेटेस्ट ट्रेंड नानीलु गैर गंभीर साहित्य का विलक्षण रूप है। स्त्रीवादी, दलित, माइनॉरिटी कविता आज चौराहे पर रही है। आज भी अनेक कविगण अच्छा काम करने पर भी, एक वर्ग के कविगण केवल सत्ताधारी पार्टियों के गुलाम बनकर अपनी रचनाओं को गिरवी रखने में आगे रहे है।"[3] अर्थात कविगण जनता के पक्ष में रहकर उनके अधिकारों के लिए लड़ने की बजाय सत्ता की वकालत करते हुए अपनी कविताओं को बेचने में तत्पर रहे हैं। निखिलेश्वर की कविता इस प्रकार की रीति का विरोध करती है। जनता के पक्ष में रहकर नेताओं से प्रश्न करती है। नेताओं के भ्रष्टाचार और तानाशाही आदि समस्याओं को लेकर जनता को जागरूक करने में निखिलेश्वर हमेशा आगे रहे हैं। इस संदर्भ में निखिलेश्वर लिखते हैं कि –

"जनता के पैसों से ही
जनाकर्षक योजनाओं से मां का अवतार लिया
अजेय व्यक्ति के पीछे
अकेलापन असुरक्षा की भावना
सभी शारीरिक दशाओं को पार कर
समय के साथ चली आ रही
नीली छायाओं के रहस्य परतों में
वह एक इतिहास की तरह
बची हुई मुस्कान के
अनेक विविधताओं की धोखेबाजी लोकतंत्र है।"[4]

तमिलनाडु की पूर्व मुख्यमंत्री जयललिता पर लिखित यह कविता समकालीन नेताओं की राजनीति का एक सही उदाहरण है। जनता के पैसों से ही जनता के लिए योजनाएँ बनाकर उन्हें अपने द्वारा दिए गए इनाम कहकर, नेता लोग आज अपने आप को राजाओं के रूप में घोषित करने की स्थिति हम स्पष्ट रूप से देख सकते हैं। अपने आप को दानवीर कर्ण और दयागुणों से संपन्न व्यक्ति के रूप मे आज नेतागण अपने आप को प्रदर्शित कर रहे हैं। इस प्रकार के विचार या प्रदर्शनों पर कवि प्रहार करता है। लोकतंत्र में प्रजा ही प्रभु है। लेकिन वर्तमान लोकतंत्र में जनता केवल वोट देने वाले यंत्र के रूप में आज भी रही है। इसका मुख्य कारण है पूंजीवादी सभ्यता से विकसित राजकीय व्यवस्था। निखिलेश्वर की कविता में मार्क्सवादी विचारधारा या भौतिकवादी सोच का स्पर्श हर संदर्भ में दिखाई देता है। आरंभ की दशा में वे

लोग 'विरसं' (विप्लव रचयितला संघम) अर्थात क्रांतिकारी लेखक संघ में रहने के कारण मार्क्सवाद और भौतिकवादी विचारधाराओं से अधिक प्रभावित थे। लेकिन विरसं की दिशा बाद में बदलने के कारण वह उस संस्था से बाहर आकर दिगंबर कविता की धारा से जुड़े है। गरीबों, पीड़ितों के पक्ष में वकालत करने के साथ–साथ उनकी कविता स्त्रियों के प्रति सहानुभूति रखती है। एक ही देश में रहने वाले विभिन्न समुदायों के बीच या विभिन्न लोगों के बीच उत्पन्न हए अंतराल को वह हमेशा खंडन करते हैं। मुख्य रूप से बाजारीकरण के संदर्भ में वर्तमान की स्थिति और भी भयानक रही है। इस स्थिति का उल्लेख करते हुए कवि लिखते हैं कि–

"एक ही विश्व में
अनेक विश्व है
एक ही देश में
अनेक देशों का चलन
सब कुछ अगम्य है।"

वे आगे लिखते हैं–

"एक तरफ सम्मोहनानंद
दूसरी तरफ विषाद के अनुभव की
छायाओं के जरिए चलता हुआ वर्तमान
सावधान कहने वाली लाल बत्तियों की रोशनी में ही
रास्ते के उसे पार धीमी छाया में
किसका भविष्य क्या है
यह छाया बता सकती है क्या"[5]

यही समाज की असली स्थिति है। देश की जनता में आर्थिक और सामाजिक अंतराल भूमंडलीकरण के कारण और बढ़ने लगे हैं। इसी कारण गरीब महिलाएं अपने मान–सम्मान को भी बेचने के लिए कहीं–कहीं मजबूर रही है। आज समाज में किसी भी तरह के भाईचारे की भावना नहीं बची है। सभी संबंध आर्थिक संबंध ही रहे हैं। वसुधैवकुटुंबम की बात अब सामाजिक संबंधों से ज्यादा आर्थिक संबंधों से ही परिभाषित होती रही है। निजीकरण की प्रक्रिया का प्रभाव मुख्यतः आम आदमी के जीवन पर ही अधिक दिखाई दे रहा है। विकास के नाम पर होने वाली सभी गतिविधियाँ इन्हीं आम लोगों के जीवन को प्रभावित करती रही है। लोगों को अपना गांव घर छोड़कर जाने के लिए मजबूर कर रहे हैं। आखिर विकास का अर्थ क्या है और इसका फल किसको मिल रहे हैं? यही बात निखिलेश्वर ने निम्नलिखित कविता के द्वारा स्पष्ट करने की कोशिश की है।

"किसी एक का जीवन ही नहीं
तेरा, मेरा, हमारा कहने वाले गड़बड़ की दुनिया में
कहीं पर भी स्थाई होने का भ्रम विच्छिन्न होकर
निर्वासित बनकर
निस्साहय होकर

वह किसी का जीवन ही नहीं चारों ओर जुड़ा हुआ आत्मानुबंधों का प्रेम है

निर्दय से तबाह होने पर
वह किसी का भी जीवन हो सकता
सीरिया लीबिया से
सागर के बीच से यूरोप तक
हवा में रखे दीपों की तरह
आखिर मनुष्य ही है ना
लहरों के बीच बुझनेवाले लोग
अमरावती
मल्लन्ना सागर कहीं पर भी
विकास चाहने वाला बलि
किसी और को नहीं मनुष्य को ही है ना"[6]

इतना ही नहीं निखिलेश्वर की कविता प्रवासी जीवन को लेकर भी चर्चा करती है। डॉलर की मोहब्बत में प्रवास होने वालों की सोच और बर्ताव को लेकर कवि ने अपनी भाषा में प्रस्तुत करने की चेष्टा की है। डॉलर और रुपयों के अंतः संबंध और दोनों समुदायों के विचार तथा आर्थिक संबंधों को लेकर कवि अपनी राय प्रकट करते हुए लिखते हैं कि–

"जीवन का मतलब
अमेरिका भागना या ऑस्ट्रेलिया
भूगोल के दोनों कोनों से लटकने वाले
दोनों खडों की खूँटी को
भारत उपखंड की जेब में
हर दिन NRI लोगों के डॉलरों की बारिश
प्रवास हुए, प्रवास होने वाली प्रतिभा को डॉलर में
रुपयों से तोलने का योग्य है तो बात करो
वरन् इस देश उसे देश आदि के भेदों को लेकर बात नहीं करना" 7

इतना ही नहीं निखिलेश्वर की कविता भारतीय लोकतंत्र पर भी विचार करती है। आज भी भारत के करोड़ों लोग क्यों वोट देते हैं, किसको वोट दे रहे हैं, यह भी नहीं जानते हैं। राजनीतिक पार्टियाँ जनता को जाति, धर्म व प्रांत आदि विचारों से भावुक बनाकर उनसे वोट लेते हैं। इसी कारण आजादी के अमृत वर्ष में भी हम गरीबी हटाने की बात कर रहे हैं। इसी कारण कवि मतदाता को कहते हैं कि इस भयानक दरिद्रता के विष कंठ से बाहर आने के लिए मतदाता को सही ढंग से अपने मतपत्र को इस्तेमाल करना होगा। व्यवस्था की समूल परिवर्तन के लिए मतदान करना ही एकमात्र कर्म है। इसी मतदान को अपने जीवन के पक्ष में सोच कर, इस्तेमाल करने की आवाज देता है। इस संदर्भ में कवि लिखते हैं कि–

"पांच साल में एक बार एक ही पल
तुम्हारे कागज को वोट से

पांच साल गुलाम बनकर
इस अमानवीय दरिद्र भयानक विष खंड में
इन कंठों को काटने वाली व्यवस्था में
इस बार तुम्हारे घर के चोरों से ही
समूल सुंदर समता व्यवस्था के लिए
ताकत दिखाने के लिए आमंत्रण दे रहा हूँ।"[8]

अतः स्पष्ट बात यह है कि निखिलेश्वर की कविता भौतिकवादी विचारों को प्रस्तुत करने के साथ–साथ सम समाज की स्थापना के पक्ष में आवाज़ उठती है। ○

संदर्भ सूची :

1. डॉ.द्वाना शास्त्री, तेलुगु साहित्य चरित्र, प्रगति पब्लिशर्स, हैदराबाद, प्र. व.2008–पृ.516
2. डॉ.द्वाना शास्त्री, तेलुगु साहित्य चरित्र, प्रगति पब्लिशर्स, हैदराबाद, प्र. व. 2008–पृ.516
3. द न्यू इंडियन एक्सप्रेस, 13 मार्च 2021 (आनलाइन एडिशन)
4. निखिलेश्वर, अग्निश्वासा, नवतेलंगाना पव्लिशिंग हाउस, हैदराबाद प्र.व. 2021–पृ.52
5. निखिलेश्वर, अग्निश्वासा, नवतेलंगाना पव्लिशिंग हाउस, हैदराबाद, प्र.व. 2021–पृ.34
6. निखिलेश्वर, अग्निश्वासा, नवतेलंगाना पव्लिशिंग हाउस,हैदराबाद, प्र.व. 2021–पृ.44
7. निखिलेश्वर, अग्निश्वासा, नवतेलंगाना पव्लिशिंग हाउस, हैदराबाद, प्र.व. 2021–पृ.30
8. डॉ.द्वाना शास्त्री, तेलुगु साहित्य चरित्र, प्रगति पब्लिशर्स, हैदराबाद, प्र. व. 2008–पृ.516

सदैव जिंदा रहने का वरदान प्राप्त दिगंबर कवि – निखिलेश्वर

प्रवीण प्रणव

शोध सार : हस्तीमल 'हस्ती' का लिखा एक ग़ज़ल मुझे बहुत पसंद है और उसका एक शेर है 'जिस्म की बात नहीं थी, उनके दिल तक जाना था, लंबी दूरी तय करते में वक्त तो लगता है।" किसी भी अनुदित साहित्य को पढ़ते हुए मुझे यह शेर याद आता है। अनुवाद का काम किसी रूह को जिस्म पहनाने जैसा ही है। यदि आप उस साहित्य की मूल भाषा से परिचित नहीं हैं, तब अनुवाद की गुणवत्ता बहुत महत्वपूर्ण हो जाती है। मुझे वैसे लोगों से जलन होती है, जो एक से ज्यादा भाषाएँ जानते हैं। उनके लिए आसान हो जाता है कि आप दूसरी भाषा के साहित्य को भी मूल रूप में पढ़ और समझ सकते हैं। यह मुझे परकाया प्रवेश जैसा लगता है, जहाँ आपकी पहुँच सीधे तौर पर दूसरे रूह तक भी हो जाए। यह मेरी कमजोरी रही कि लगभग दो दशक से यहाँ रहने के बावजूद मैं तेलुगु भाषा के साथ तारतम्यता स्थापित नहीं कर सका, जिसकी वजह से मुझे निखिलेश्वर जी, एन. गोपी जी तथा अन्य कई साहित्यकारों के साहित्य से परिचित होने का अवसर नहीं मिल सका। मैं आभारी हूँ केंद्रीय हिंदी संस्थान का कि इस संगोष्ठी की वजह से अनुवाद के माध्यम से ही सही, मैं निखिलेश्वर जी के साहित्य से परिचित हो सका।

बीज शब्द : लाचार, विवश, बलिदान, अध्यापन, कविता, तेलुगु कविता

बात यदि कविता की हो, किसे पसंद नहीं कि प्रेम कविताएँ लिखी जाएँ, सुखांत कविताएँ लिखी जाएँ, ऐसी कविताएँ हों जहाँ हर चेहरे पर मुस्कुराहट हो, हर खेत में लहलहाते फसल हों, हर हाथ को काम हो, हर किसी की इज्जत हो। लेकिन यदि ऐसी कविताएँ हकीकत की धरातल पर न लिखी गईं हों, तब इन्हें महज लफ्फाजी के सिवा कुछ नहीं कहा जा सकता। और इतना तो हम सब जानते हैं कि हकीकत में हमारी दुनिया, हमारे ख्वाबों की दुनिया से कितनी अलग है। हममें से ज्यादातर लोग इसे अपनी किस्मत, या अपनी कमजोरी, या लाचारी मान, इस परिस्थिति से तारतम्यता बिठाने की जुगत में लगे रहते हैं, लेकिन कुछ लोग पाश, दुष्यंत, धूमिल या निखिलेश्वर जैसे भी होते हैं, जो यह जानते हुए भी कि आवाज़ उठाने के अपने खतरे हैं, चुप रहने का विकल्प नहीं चुनते। दुष्यंत ने कहा–

'पक गई हैं आदतें बातों से सर होंगी नहीं
कोई हंगामा करो ऐसे गुज़र होगी नहीं
आज मेरा साथ दो वैसे मुझे मालूम है
पत्थरों में चीख़ हरगिज़ कारगर होगी नहीं।'

मीडिया को दिए गए एक साक्षात्कार में निखिलेश्वर ने कहा–"हालांकि, कुछ तेलंगाना के कवि आज भी अच्छा काम कर रहे हैं, लेकिन वर्तमान प्रवृत्ति यह है कि कवियों के एक वर्ग ने अपनी निष्ठा, सत्ता के हाथों सौंप दी है। यह एक खतरनाक प्रवृत्ति है। इस समय सभी लोकतांत्रिक, मानवाधिकार और वामपंथी ताकतों को एकजुट होना चाहिए।" वर्तमान के बारे में बात करते हुए निखिलेश्वर कहते हैं "अनेक पीढ़ियों के अथक/ आदोंलन में/ आशा–निराशाओं का / संक्रमित चित्र है यह वर्तमान।"

निखिलेश्वर उन चुनिंदा लोगों में हैं जिनका जन्म आज़ादी से पहले हुआ, जिन्होंने आज़ादी के बाद जनमानस में एक नई आशा और उत्साह का संचार देखा और धीर–धीरे उन आशाओं को हताशा और निराशा में बदलते भी देखा। बात यदि अपनी तकलीफ या अपने परिवार के कष्ट की हो, तो कई लोग आवाज़ उठाने लगते हैं; लेकिन समाज के दर्द के लिए अपनी आवाज़ उठाना और सत्ता का कोपभाजन बनना आसान नहीं होता। दुनिया मान कर चलती है कि 'स्वारथ लागि करहीं सब प्रीति'। ऐसे में आवाज़ उठाते ही आपकी जाति, आपकी राजनैतिक निष्ठा, आपका धर्म, इन सबको खंगाला जाता है और कोई वजह ढूँढी जाती है जिससे साबित किया जा सके कि इस मनुष्य को बोलने की बीमारी क्यों है। ऐसे में यदि बोलने की कीमत अपने अतीत से पीछा छुड़ाना हो, तो यह बहुत ही मुश्किल काम है। लेकिन यदि शोषित और वंचित वर्ग का दर्द आपको अपना लगने लगे, तब 'सुदामा पाण्डेय' अपनी पहचान मिटा कर 'धूमिल' बन जाते हैं, 'अवतार सिंह संधू' अपने नये नाम 'पाश' को अंगीकार करते हैं और 'कुंभम यादव रेड्डी' अपनी अब तक की पहचान मिटाते हुए, जन कल्याण के लिए बन जाते हैं 'निखिलेश्वर'।

पाश और निखिलेश्वर दोनों की ही कविताओं में संघर्ष का आह्वान है। पाश और निखिलेश्वर दोनों ही शोषितों और वंचितों के साथ खड़े नजर आते हैं। दोनों ही एक लंबी लड़ाई और संघर्ष के माध्यम से अपने हक़ की लड़ाई के आग्रही हैं। लेकिन एक अंतर जो साफ तौर पर परिलक्षित होता है वह यह है कि निखिलेश्वर लंबे समय तक शिक्षक रहे हैं। हालांकि पाश ने भी कुछ समय तक अध्यापन का कार्य किया लेकिन इससे उन्हें शिक्षक के तौर पर नहीं देखा जा सकता। पाश की कविताओं में बेचैनी है, उग्रता है। निखिलेश्वर की कविताओं में संघर्ष का आह्वान तो है लेकिन उससे पहले, दर्द में शामिल होने की संवेदना भी है। निखिलेश्वर की कविता कोई दिवास्वप्न नहीं दिखलाती, रातों–रात किसी चमत्कार की आस नहीं जगाती। उन्हें यह कहने में कोई कोताही नहीं कि संघर्ष का रास्ता लम्बा है और दर्द बेइंतहा।

'इतिहास के मोड़ पर' कविता में निखिलेश्वर कहते हैं कि वर्तमान परिस्थिति में नैतिकता का पतन हो रहा है। सत्ता, अपनी स्वार्थ–सिद्धि में रात–दिन लगी है, और आम नागरिक, अपनी परेशानियों में घिरा, सत्ता समर्थित झंझावातों का सामना करने को विवश है – "किसी गुमनाम रास्ते/ फिसलता आदमी/ बदल रहा है भेड़िये में।/ लोकतंत्र के चारों ओर/ गूंज रहा है/ गिरगिटों का विजयनाद। / अब बलिदान सारे/ शिलालेखों में

परिवर्तित। / फिर भी / झंझावातों का सामना करना ही / शाश्वत इतिहास है अपना।"

संघर्ष का रास्ता आज हमारे लिए एक विकल्प नहीं, बल्कि अनिवार्यता बन चुका है। 'संघर्ष' कविता में निखिलेश्वर लिखते हैं– "किसी कीड़े को रौंदने को दौड़िए / तो देखिए वह कैसे फिसल जाता है / अपने बचाव में। / संघर्ष ही तो मूलमंत्र है यहाँ / बिना सामना किए / कीड़े से बदतर है जीवन यहाँ।"

निखिलेश्वर को हैरानी भी होती हैं कि इतने कष्ट, इतनी पीड़ा के बाद भी अब तक बहुसंख्यक समाज ने संघर्ष का रास्ता क्यों नहीं चुना? क्यों नहीं इस भ्रष्ट व्यवस्था के खिलाफ पुरजोर आवाज़ उठाई। 'आखिर कब तब' कविता में निखिलेश्वर लिखते हैं– "दुख–दर्द का यह सिलसिला / आखिर कब तक? / यानी जन्म से मरण तक। / फिर भी यह जिंदगी / हजारों करोड़ों तक / यूँ ही बेवजह / पिघलती ही जाती है / तो फिर इंतजार की ये घड़ियाँ / कब शामिल होंगी इंकलाब में?"

किसी समतामूलक समाज के लिए आवश्यक है कि अमीर और गरीब के बीच की खाई धीरे–धीरे कम हो। किसी गरीब ने कभी नहीं कहा कि हमें बिना कुछ मेहनत किए अमीरों से छीन कर पैसे दे दिए जाएं। लेकिन सरकारी योजनाएं और समर्थन यदि मेहनतकश लोगों की बजाय पूँजीपतियों के लिए हो तब आक्रोश का पनपना स्वाभाविक है। एक कविता 'यह कैसा समय है' में निखिलेश्वर लिखते हैं –

यह कैसी अजब दास्तान है कि
विश्व के दौलतमंदों की
लिस्ट में भारतीय अरबपति।
और वहीं उखड़ रहे हैं जड़ से
अन्नदाताओं के पेड़–पौधे?
असहाय आत्माएँ घूम रही हैं–
हत्या और आत्महत्याओं के बवंडर में।

सत्ता पक्ष शक्तिशाली होता है, इसमें किसी को कोई संदेह नहीं। निखिलेश्वर भी 'कटाक्ष' कविता में लिखते हैं– "मानव अधिकारों की रक्षा के लिए / अब भेड़िया खुद कमर कसकर खड़ा है / वही सब कुछ बनकर / आराम से फैसला सुना सकता है। / भूख लगते ही / निश्चित ही किसी भी कोने में / किसी भी भेड़–बकरी को चुन सकता है।"

लेकिन यदि जन–जागरण हो जाए, यदि जनता संगठित हो जाए, यदि जनता संघर्ष का रास्ता चुन ले, तब परिस्थितियाँ बदल सकती हैं। निखिलेश्वर जनता को चींटी और सत्ता को हाथी बताते हुए 'चींटी का सफर कहाँ तक?'

कविता में लिखते हैं– "निरंतर चलनशील चींटी का सफर / आखिर कितनी दूर? / बड़ी–बड़ी काली चींटियों के बीच से गुजरती है / बहुत छोटी है, अल्पजीवी है / लेकिन हाथी की कान में घुस गई तो / पहाड़ सा हाथी तक छटपटाता है / बिखर–बिखर जाता है"।

आतंकवाद एक ऐसी समस्या है जिससे विश्व के लगभग सभी देश कभी न कभी प्रभावित हुए हैं। आम तौर पर आतंकवाद को किसी तरह की धर्मांधता से जोड़ कर देखा जाता है। लेकिन निखिलेश्वर इसके मूल में उस पूंजीवादी व्यवस्था को देखते हैं, जो आम नागरिकों को पहले भड़काती है, और फिर आतंकवाद के बहाने अपने कुत्सित प्रयासों को अंजाम देती है। 'आतंकवाद' शीर्षक कविता में निखिलेश्वर लिखते हैं –

जहाँ निर्भय खड़ा होना था
वहीं डर से पिघल रहा है आदमी
इलेक्ट्रॉनिक अक्षरों पर
डालराइजेशन के जाल में
सारे विश्व को फँसाने को बेचैन
जाति–नस्ल की भड़कती आग
भस्म होता हुआ सहजीवन।

निखिलेश्वर सवाल भी उठाते हैं कि जिस तरह आतंकवाद को एक ग्लोबल व्यवसाय बना दिया गया है उसकी परिणति कहाँ होगी? आतंकवाद को 'दिशाहीन पंखों का उग्रवाद' कहते हुए निखिलेश्वर लिखते हैं –

आँखों के इशारों से
प्राणों को फूँक रहा है आतंकवाद
ग्लोबल मार्केट के संग्राम में
विश्व व्याप्त भय उत्पात
कहाँ और किस ओर बैठेगा
यह दिशाहीन पंखों का उग्रवाद।

निखिलेश्वर एक शिक्षक भी हैं इसलिए सिर्फ पूंजीवादी व्यवस्था को कठघरे में खड़ा कर, उनके कर्तव्य की इतिश्री नहीं हो जाती। वह आम मनुष्य को भी अपने गिरेबान में झाँकने की सलाह देते हैं। निखिलेश्वर इस सच्चाई की ओर भी इशारा करते हैं कि आतंकवाद या धर्मांधता की चपेट में अक्सर निर्दोष गरीब ही आते हैं। 'बदनाम बस्ती के मेरे दोस्त' कविता में निखिलेश्वर लिखते हैं –

इस बदनाम बस्ती के मेरे दोस्त
शायद तुम्हें याद होगा–
तुम एक मुसलमान होने के पहले
एक हिंदू होने के पहले
शरीफ इंसान हो सबसे पहले
फिर यह कैसे हुआ–
एक मासूम मजदूर
मजहब के नाम पर
किसी खूनी तलवार का शिकार हुआ
बिना किसी जुर्म–
मौत का निवाला बना

वह भी तो इंसान था,
इतना भर कसूर था उसका
वह बदनाम बस्ती का गरीब था।

इस धर्मांधता से बचना कितना मुश्किल है इसकी बात करते हुए 'एक धर्मग्रस्त महानगर' कविता में निखिलेश्वर लिखते हैं–

कैसे बच सकते हैं हम
इस शहर के नजारों से
जहाँ भय का ही शासन हो?
कितनी दूर भाग सकते हैं हम
इन आशंकाओं के हथियारों से
जो पग–पग पर पीछा करते हों?
सजह मृत्यु किसी भी क्षण जब
मनुष्य के प्राण उड़ा ले जाती है–
तो फ़रियाद का कोई प्रश्न ही नहीं।

और यह परिस्थिति किसी एक विशेष शहर या महानगर की नहीं है। यह हमारे आस–पास के हर शहर, नगर, और कस्बे की हकीकत है। और परिस्थितियाँ जब ऐसी विकराल हो जाएं तब आपसी भाईचारा, सौहार्द, परस्पर विश्वास ही हमें इन खूनी पंजों से बचाने में सहायक हो सकता है।

सांप्रदायिक द्वेष से फैल रहे खून में
कौन से रंग का है हिंदू खून?
कौन से रंग का है मुसलमानी खून?
क्या कोई दिखा सकेगा अलग करके?
नफरत के इस घोर अंधेरे में
जमा खून केवल काला ही काला है
अपने इस धर्मग्रस्त महानगर को
कौन सी अलौकिक शक्ति बचा सकती है
सिवाय हमारे–आपके?

निखिलेश्वर तेलुगु के दिगंबर कवियों में से एक हैं। 'दिगंबर पीढ़ी का घोषणापत्र' में निखिलेश्वर कहते हैं "दिगंबर कवि अपनी कविता को 'दिक्' कहेंगे। दिशा दिखाकर मार्ग निर्देशन करने वाले हैं हमारे 'दिक'। हमारी सीमाएँ हैं विश्वंतराल के हृदय। इन सीमाओं का अंत नहीं है। बीमार फेफड़ों को चीरकर 'कॉस्मिक' किरणों से मानव के लिए नये निवास–स्थान खोजने की तत्परता हमारे 'दिक्' में रहेगी। यह जीवन तटस्थता में नहीं जिया जा सकता है और न ही द्वीप की तरह जीवन बिताया जा सकता है। जीवन में स्नेह प्रस्फुटित हो और हम किसी आशय से प्रतिबद्ध होकर जिएं – यही हमारा उद्देश्य है। हम चाहते हैं कि एक ऐसे राजकीय दृष्टिकोण का निर्माण हो, जो चित्तशुद्धि, सच्चाई आदि के सामाजिक ढांचे पर आधारित हो।" साथ ही

निखिलेश्वर यह उद्घोष भी करते हैं कि इस भूगोल पर जब तक गरीबी और भूख लिपटी रहेगी, तब तक मार्क्स के दृष्टिकोण को चुनौती देने का अधिकार किसी को नहीं है।

निखिलेश्वर की चिंता वैश्विक है। उनकी चिंताओं में छोटे–छोटे गाँव हैं जब वह कहते हैं–

"दूर–दूर उस छोर बसे गांवों की मिट्टी में
जागती हुई चिंगारियों में
जब तक पीढ़ियों को न्याय न मिले
कहीं भी जो डूबता नहीं, ढलता नहीं
हम सभी का प्रतिरूप
वही है निरंतर जलता सूर्य।"

निखिलेश्वर की चिंताओं में हैदराबाद या हैदराबाद जैसे शहर हैं, जब वह कहते हैं–

"कोल्लेरू सिमटते ही/ पेलिकन पक्षियों की आत्महत्या
गंडिपेट के सूखते ही/ क्षुभित कुलीकुतुबशाह की आत्मा से
क्षुधित है हाइटेक महानगर।/ प्रदूषण के जाल में
जकड़े मनुष्य को देखकर/ आँसू बहा रहा है सूर्य !"

निखिलेश्वर की चिंताओं में वियतनाम और उन जैसे कई और देश भी शामिल हैं –

"हथियार कारोबारियों के गोदामों में/ अफीम के निकट ही हैं मशीनगन
नर–माँस के विक्रेताओं के बाजारों में
उत्तर–दक्षिण वियतनाम के लोगों का नर–माँस
टूटे हाथ–पैर/ जोशीले साम्राज्यवादियों का है आहार।
अहंकारी चल पड़ते हैं/ कुकुरमुत्तों की जमीन पर।"

निखिलेश्वर एक तरफ तो अपने को एकाकी बताते हुए 'अपने ही देश में एकाकी हूँ मैं' कविता में लिखते हैं–

"मेरी अपनी संस्कृति ने/ जब ठुकरा दिया मुझे
हजारों वर्षों की उन्नति/ मेरी ही आँखों के आगे
मेरी सोच के प्रहार से / शिथिल हो गई
इतिहास में कहीं उसे जगह न मिली।
अपने ही देश के लिए/ पराया बना मैं / देश प्रेम से वंचित
हर नागरिक/ एक–एक द्वीप है।"

वहीं दूसरी तरफ आम जन–मानस को प्राइवेसी के नाम पर अपने आस–पास अजनबीयत की दीवार उठाने के प्रति आगाह भी करते हैं।

"अब सब कुछ है / फिर यह दूरी क्यों
अपनी 'प्राइवेसी' की आड़ में
आखिर कब तक सिकुड़ते जाओगे?"

यह 'प्राइवेसी' हमें न सिर्फ अपने देश, बल्कि विदेशों में भी एकाकी बनाए हुए है। 'एटलांटिक के उस पार' कविता में निखिलेश्वर कहते हैं–

"रोजगार की राह पर/ डॉलरों की दायरे में/ असुरक्षा की भावना में
अपनी 'प्राइवेसी' की रक्षा में / हर कोई इतने पास होते हुए भी
कितने ही मीलों दूर ...।/ एटलांटिक महासागर को पार करने पर भी
अपने आप में हर कोई अजनबी / सुख–सुविधाओं की दौड़ में
स्वदेशी भी बन जाते हैं विदेशी।"

दिगंबर कवियों में से एक ज्वालामुखी के कहा– "अच्छे शब्दों का प्रयोग करने का जो 'विवेक' कवि में रहता है, वह आधुनिक युग में आक्रोशित हो कर 'गाली' बन जाता है – 'आजादी', 'लोकतंत्र', जब मज़ाक बन जाते हैं, तब 'गाली' एक 'सवाल' बनकर उभरता है। दिगंबर कवियों ने 'गाँधीवाद' को नकारा है, बंदूक की भाषा का आह्वान किया है।" यहाँ बंदूक उठाने का अभिप्राय हिंसा नहीं बल्कि अपने हक़ की रक्षा करना है। पाश ने भी लिखा–

'हम लड़ेंगे
जब तक दुनिया में लड़ने की ज़रूरत बाक़ी है...
जब बंदूक़ न हुई, तब तलवार होगी
जब तलवार न हुई, लड़ने की लगन होगी
लड़ने का ढंग न हुआ, लड़ने की ज़रूरत होगी
और हम लड़ेंगे साथी...
हम लड़ेंगे
कि लड़े बग़ैर कुछ भी नहीं मिलता
हम लड़ेंगे
कि अभी तक लड़े क्यों नहीं
हम लड़ेंगे
अपनी सज़ा क़बूलने के लिए
लड़ते हुए मर जाने वालों की याद ज़िंदा रखने के लिए
हम लड़ेंगे साथी...'

लेकिन यह भी ध्रुव सत्य है कि लड़ाई अकेले नहीं लड़ी जा सकती। लड़ाई यदि बहुसंख्यक समाज के लिए हो, तब अकेले लड़ी भी नहीं जानी चाहिए। समाज जब तक संघर्ष की अनिवार्यता को नहीं महसूस करता और कंधे से कंधा मिला कर खड़ा नहीं होता, यह लड़ाई अधूरी रहेगी। इसीलिए निखिलेश्वर इस लड़ाई में साथ निभाने के लिए हम सब को आमंत्रित करते हैं। 'आमंत्रित करता हूँ' कविता में निखिलेश्वर लिखते हैं–

'इस दारुण दरिद्रता से युक्त
भयंकर इस विष–खंड में
गले काटती व्यवस्था में
तेरे घर को लूटते निर्मम लुटेरों से बचाने को
संपूर्ण सुंदर समता की स्थापना के लिए
अपनी सामर्थ्य की परीक्षा के लिए

आमंत्रित करता हूँ मैं तुम्हें।'

क्या हम तैयार हैं निखिलेश्वर के इस आमंत्रण को स्वीकार करने के लिए? क्या हम तैयार हैं अपने सामर्थ्य की परीक्षा देने के लिए? गोस्वामी जी ने भी लिखा 'दैव–दैव आलसी पुकारा'। क्या हम तैयार हैं अपने बाजुओं पर भरोसा करने के लिए? याद रखें पाश को ऐसे ही आमंत्रण देने की कीमत अपनी जान दे कर चुकानी पड़ी। हम खुशकिस्मत हैं कि एक ऐसे दौर में जहां मुंह खोलने की कीमत मौत हो, हमारे सामने निखिलेश्वर जैसे निर्भीक कवि मौजूद हैं, जो न सिर्फ आततायियों को आईना दिखा रहे हैं, बल्कि शोषितों को यह हौसला दे रहे हैं कि यह लड़ाई जीती जा सकती है, यदि हम संगठित हो जाएँ। निखिलेश्वर की कविताओं की रूह बहुत पाक है, आवश्यकता है कि इन कविताओं को अलग–अलग भाषाओं में अनुवाद की शक्ल में जिस्म पहनाए जाएँ ताकि इस आमंत्रण की गूंज न सिर्फ राष्ट्रीय, बल्कि वैश्विक स्तर पर सुनाई दे सके। आज हमारे साथ पाश, दुष्यंत, अदम गोंडवी और धूमिल जैसे कवि नहीं हैं लेकिन उनकी कविताएँ हमारे साथ हैं। निखिलेश्वर भी अपने जीवन और कविताओं के माध्यम से अपनी अमरता को कुछ यूँ लिखते हैं–

"यह जीवन शाश्वत नहीं, / पर जो कुछ हमने किया
पल–पल सबसे प्यार मिला / जीने की राह पर
ऊँच–नीच से लड़ना सीखा / एक बेहतर दुनिया के लिए
हम अगर मर–मिट भी जाएँ / यहीं रहेंगे
नई पीढ़ी के नए विश्वासों के संग
हम तो सदैव जिंदा ही रहेंगे।"

संदर्भ सूची :

1. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद

निखिलेश्वर के काव्य में यथार्थबोध

एल. अनिल

शोध सार : तेलुगु साहित्य के दिगंबर कवियों में निखिलेश्वर का महत्वपूर्ण स्थान है। निखिलेश्वर एक अंग्रेजी अध्यापक होते हुए एक समाजसुधारक कवि के रूप में सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय रहे हैं। निखिलेश्वर को 'अग्निश्वास' कविता संग्रह के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। निखिलेश्वर ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के यथार्थबोध को दर्शाने का प्रयास किया है। निखिलेश्वर अपने रचनाओं में दलित, निम्न, नीच एवं हाशिए के समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया है। उनकी कविताओं में मार्क्सवादी चिंतन का भी प्रभाव दिखायी देता है। निखिलेश्वर के कविताओं के माध्यम से नवयुवकों में क्रांति जागृति हुई है। निखिलेश्वर एक क्रांतिकारी कवि के रूप में भी प्रमुख हैं।

बीज शब्द : काव्य, यथार्थबोध, समाज, सामाजिक, क्रांतिकारी, कवि, राजनीतिक, सांप्रदायिक, किसान, मानवता आदि।

तेलुगु साहित्य के विद्रोही कवि निखिलेश्वर दिगंबर काव्य धारा के प्रमुख कवि हैं। उनका जन्म वीरवल्ली गाँव, नलगोंडा जिला, तेलंगाना में सन् 1938 में हुआ। निखिलेश्वर का मूल नाम कुंभम यादव रेड्डी था। इन्होंने सन् 1956 से लेकर 1964 तक अपने मूल नाम से ही रचनाएँ की। लेकिन आगे चलकर सन् 1964 से निखिलेश्वर नाम से रचनाएँ की हैं। इनकी शिक्षा बी.ए, बी.एड. उस्मानिया विश्वविद्यालय से हुई। उन्होंने सन् 1960 से लेकर 1964 तक सिविल स्कूल मास्टर इन आर्मी में लिपिक का कार्य किया। सन् 1964 से 1966 तक गोलकोंडा पत्रिका के सह–संपादक के रूप में कार्यभार संभाला। सन् 1966 से 1996 तक केशव मेमोरियल बॉयज हाई स्कूल में अंग्रेजी के अध्यापक के रूप में सेवानिवृत हुए हैं। 'विप्लव रचयितल संघम' (क्रांतिकारी लेखक संघ) के सक्रिय संस्थापक भी रहे। निखिलेश्वर दिगंबर कविता (अकविता) आंदोलन के प्रवर्तकों में से एक हैं। दिगंबर पीढ़ी के कवि निखिलेश्वर, ज्वालामुखी, चेरबंड राजु, भैरवय्या, महास्वप्न और नग्नमुनि हैं। दिगंबर कवि के बारे में ज्वालामुखी का कथन है कि– "दिगंबर कवियों ने गांधीवाद को नकारा है, बंदूक की भाषा का आह्वान किया है।"[1] इससे यही पता चलता है कि दिगंबर कवि क्रांतिकारी थे। इन्होंने क्रांति का समर्थन करते हुए तीन काव्य का संकलन किया है। जिसमें निखिलेश्वर की भी कविताएँ शामिल हैं। निखिलेश्वर की कई रचनाएँ सृजित हैं उनमें 'अग्निश्वास' उत्तम काव्य संग्रह के नाम से सन् 2020 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। इस कविता संग्रह का अंग्रेजी एवं हिंदी में अनुवाद भी हुआ है।

निखिलेश्वर ने स्वयं अनुवादक के रूप में कार्य किया है। हिंदी के राजेंद्र यादव का उपन्यास 'सारा आकाश' तेलुगु में 'आकाशम संतम' नाम से अनुवाद किया। इसी तरह से ओडिया के प्रसिद्ध लेखक सीताकांत महापात्र के

उपन्यास 'शब्दोरा आकाश' का तेलुगु में 'शब्द गगनम' नाम से अनुवाद किया। निखिलेश्वर ने काव्य के साथ–साथ गद्य लेखन पर भी अपना अधिकार प्राप्त किया। 'निखिला लोकम' नाम से उनकी आत्मकथा है। उनकी एक कहानी 'धूमिल हो गया नेह का चाँद' नामक 'विविधा' पुस्तक में संकलित है। इसमें सांप्रदायिक दंगों का चित्रण प्रस्तुत है। निखिलेश्वर ने अपनी रचनाओं के माध्यम से नवयुवकों में क्रांति को उत्पन्न करने का कार्य किया है। क्रांतिकारी लेखक होने के कारण वे कारावास भी गए हैं। उन्होंने अपना कारावास का अनुभव 'गोडाला वेनका' नामक गद्य पुस्तक में प्रस्तुत किया है। इसका अंग्रेजी, हिंदी, पंजाबी, मलयालम और कन्नड़ भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। निखिलेश्वर ने कई निबंधों की भी रचना की है। उन्होंने सामाजिक कार्य भी किए हैं जैसे – 'ग्रामीण गरीब संगठन' की भी स्थापना की है। 'जन साहित्य सांस्कृतिक समक्य' के प्रवर्तक सदस्य भी रहे। कई संगठन के सदस्य के रूप में भी कार्य किया। निखिलेश्वर लेखन के साथ–साथ जमीनी तौर पर भी सक्रिय सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में रहे हैं। उन्होंने अपने रचनाओं के माध्यम से यथार्थबोध को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

यथार्थ का तात्पर्य 'वास्तविकता' से है। सामान्यतः किसी भी वस्तु की वास्तविकता को चित्रित करना ही यथार्थ होता है। यथार्थबोध का अर्थ यह है कि 'वास्तविकता का ज्ञान' यथार्थबोध दो शब्द से मिलकर बना है। यथार्थ का अर्थ होता है जो समाज के जीवन एवं जगत के प्रत्यक्ष रूप को यथार्थ कहा जाता है। प्रो. सुवास कुमार यथार्थ के संदर्भ में अपना मत व्यक्त करते हैं कि– "यथार्थ मूलतः दर्शन शास्त्र से संबंधित शब्द है। यथार्थ उसे कहते हैं जिसकी वास्तव में सत्ता है, अस्तित्व है। इस अस्तित्व के साथ ही वस्तुगत यथार्थ जुड़ा होता है। पदार्थ अपने रूप की संपूर्णता में वस्तुगत यथार्थ है। किंतु यथार्थ की अवधारणा इतिहास के विभिन्न समयों में परिवर्तित और विकसित होती रही है। यथार्थ को व्यावहारिक तथा आत्मिक वास्तविकताओं का समन्वय माना गया तथा यथार्थवाद को इसका कलात्मक उद्घाटन।"[2] यथार्थ को देखा जा सकता है और अनुभव किया जा सकता है। यथार्थ कल्पना जगत से न होकर वह वस्तु जगत होता है। बोध शब्द का अर्थ यह है कि ज्ञान, चेतना और बुद्धि से प्राप्त वास्तविक सत्य से है। हम निखिलेश्वर के काव्य में यथार्थबोध को निम्न रूप से देख सकते हैं।

निखिलेश्वर ने 'अपने ही देश में एकाकी हूँ मैं' कविता के माध्यम से हाशिए के समाज का यथार्थ रूप को प्रस्तुत करते हैं। भारतीय समाज बहु जातियों में विघटित है। हमारे देश में अनेक जातियों की संस्कृति विभिन्न हैं। लेकिन यहाँ जाति एवं धर्म के आधार पर ऊँच–नीच का भेदभाव भी देखने को मिलता है। कवि कहते हैं कि हजारों वर्षों की उन्नति अपने ही आखों के सामने ढीली हो गई है और कहते हैं कि अपनी ही संस्कृति ने इतिहास में उसे कहीं जगह नहीं दी है –

"मेरी अपनी संस्कृति ने
जब ठुकरा दिया मुझे

हजारों वर्षों की उन्नति
मेरी ही आँखों के आगे
मेरी सोच के प्रहार से
शिथिल हो गई
इतिहास में कही उसे जगह न मिली।"[3]

निखिलेश्वर ने अपने काव्य में किसान के यथार्थ का मार्मिक चित्रण प्रस्तुत किया है। किसान अपने खेतों में दिन–रात मेहनत करता है लेकिन उसका कोई भविष्य दिखाई नहीं देता है। क्योंकि प्राकृतिक आपदाओं से फसल का नष्ट होना या जंगली जानवरों से फसल को बचाना, इन सारी दिक्कतों के बावजूद उसके खेत के माल का मूल्य वह खुद निर्धारित नहीं कर सकता है। इसलिए उसकी मेहनत की भी मजदूरी मिलना मुश्किल हो जाता है, और कभी–कभी उसकी लागत का भी खर्चा नहीं निकल सकता है। इसलिए किसान आत्महत्या करने लिए विवश होता है। किसान के जीवन में संघर्ष ही संघर्ष दिखाई देता है। इसलिए कवि कहते हैं –

"यहाँ स्वयं अपनी मातृभूमि में
किसान का भविष्य दफ़न है
जीवन जिन्हें तराशता है
उन्हीं पत्थरों के लिए
वह बदल जाता है आखेट में
और दबायी गयी लपटों का आक्रोश उबलता है।"[4]

'जो तुमने कहा वह झूठ नहीं' कविता में निखिलेश्वर कहते हैं कि मनुष्य का हृदय सड़क जैसा बन गया है जिस तरह से रोड पर दुर्घटनाएँ होती हैं उसी तरह से मानव जीवन में प्रतिदिन घटनाएँ घटित होती है। कवि समाज में गरीबी और आडंबर को देखकर निर्दयी गरीबी की यातना को प्रस्तुत करता है और कहता है कि भगवान एवं राजाओं के मकबरे सोने से बांधे जाते हैं लेकिन गरीबों के घर कच्चे मिट्टी के ही रह जाते हैं उनकी कोई सुनने वाला नहीं है। यहाँ कहना है कि जो जिंदा है उसे कोई मूल्य नहीं लेकिन जिसका अस्तित्व ही नहीं उसके लिए सोने की दीवारे हैं–

"भगवान के, राजाओं के
मकबरों के लिए
यहाँ दीवारें उठती हैं
सोने की ईंट......
पर सुनेगा कौन मिट्टी की
दीवारों का रोना?"[5]

निखिलेश्वर ने अपने काव्य में धर्म के नाम पर हो रहे सांप्रदायिक दंगे को भी प्रस्तुत किया है। सांप्रदायिक दंगों में मानव–मानव की ही लड़ाई है, यह दंगे मानवता में दुश्मनी फैलाने का कार्य करते हैं। किसी भी धर्म में मानव केंद्र में होता है तो ऐसे में सांप्रदायिक दंगे होने की संभावना बहुत ही कम दिखाई देती है। सांप्रदायिक द्वेष फ़ैलाने वाले में कौन–सा रंग का रक्त है? सभी

मानव में एक ही रंग का रक्त है क्या कोई बता सकता है? इसे अलग करके। इसलिए कवि कहते हैं –

"भाड़े के हत्यारों से चाकु छुरों से
सांप्रदायिक द्वेष से फ़ैल रहे खून में
कौनसी रंग का है हिंदू खून
कौनसी रंग का है मुसलमानी खून
क्या कोई दिखा सकेगा अलग करके।"[6]

कवि निखिलेश्वर कहते हैं कि सांप्रदायिक दंगे के समय धर्म के नाम पर सबसे पहले शरीफ व्यक्ति की ही हत्या होती है। बस उसका गुनाह यह है कि अपने समाज के साथ मुहल्ले में रहना। इसलिए कवि 'बदनाम बस्ती के मेरे दोस्त' कविता के माध्यम से धर्म की बजाय मानवता को अधिक महत्व देने की बात करता है –

"तुम एक मुसलमान होने के पहले
एक हिंदू होने के पहले
शरीफ इन्सान हो सबसे पहले।"[7]

'अंबेडकर के हाथ में काला झंडा' कविता के माध्यम से समाज में जिसने भी चेतना को मजाक समझा है, मसखरी किया है उनके लिए अंबेडकर के काला झंडा लहरा के विरोध किया जाता है। कवि कहता है कि –

"पल भर के लिए लोग
भीख में मिली रियायतों की सुंगध
का सुख लेते हैं।
सुरक्षा की नशीली झोंक में
जब भी वह चेतना का मखौल उडाता है मसखरी से
तभी आनेवाली जागृति की मुनादी करते
अंबेडकर के हाथ में
खतरे का झंडा लहराने लगता है।"[8]

मानव जीवन का मूलमंत्र संघर्ष है, संघर्ष के बिना जीवन व्यर्थ है। जिसके जीवन में संघर्ष नहीं है वह पशुतुल्य, कीड़े–मकौड़े से भी नीच है। इसलिए कवि अपने 'संघर्ष' नामक कविता में कहता है –

"संघर्ष ही तो मूलमंत्र यहाँ
बिना सामना किए
कीड़े से बदतर है जीवन यहाँ।"[9]

निखिलेश्वर ने 'आमंत्रित करता हूँ' कविता के माध्यम से आम जनता की आवाज का राजनीतिक नेता के लिए कोई महत्व नहीं है। यह आवाज उनके लिए कुत्तों के भौंकने जैसा समझते हैं। वह आम जनता पर ध्यान दिया नहीं जाता है। इसलिए कवि कामांधों के नेत्रों को उखाड़ने की बात करता है –

"आम आदमी के अंतर्नादों को

कुत्तों की भौं–भौं मानकर
इठलाते, उपेक्षा करते
कामांधों के नेत्रों को
उखाड़ फेंकने के लिए
आमंत्रित करता हूँ मैं तुम्हें।"[10]

निखिलेश्वर अपने दिगंबर कविता के घोषणा पत्र में कहते हैं कि– "अब भी मनुष्य के सामने रंग, वर्ण, वर्ग, कुल आदि सड़े कीचड़ की गहरी खाइयाँ बनी हुई हैं। इन खाइयों में ये राजकीय नेतागण लथपथ होकर तैर रहे हैं।"[11] राजनीतिक नेता धर्म एवं जाति के नाम पर आम जनता में लड़ाई करवाते हैं।

'कटाक्ष' कविता में कवि ने राजनीतिक नेता को भेड़िया का प्रतीक माना है। प्रजा को भेड़–बकरी का प्रतीक माना है। भेड़िया कभी रक्षा करनेवाला नहीं होता, वह भक्षण करनेवाला होता है। उसी तरह से राजनीतिक नेता लोग भी भेड़िये जैसे ही होते हैं। नेता लोग मानवाधिकार की बात करते हैं लेकिन सब कार्य मानव हनन का करते हैं। इसलिए कवि राजनीतिक नेता से आम आदमी को सतर्क रहने का संदेश देते हैं। –

"भूख लगते ही
निश्चित ही किसी भी कोने में
किसी भी भेड़–बकरी को चुन सकता है।"[12]

निखिलेश्वर के काव्य में यथार्थबोध का चित्रण हुआ है। इन्होंने समाज के दीन–दलित, गोर–गरीब एवं हाशिए के समाज को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। निखिलेश्वर ने अपने काव्य में धर्म, जाति से बढ़कर मानवता को महत्व दिया है। सांप्रदायिक दंगे को नकारा है। उनकी रचनाओं के माध्यम से नवयुवकों में क्रांति को जन्म दिया है। भारतीय राजनीति को भी अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। निखिलेश्वर अनुभवी साहित्यकार हैं, उन्होंने समाज को सूक्ष्म रूप से परखा है। निखिलेश्वर अपने काव्य में आम आदमी के जीवन को दर्शाने की चेष्टा की है।

अंततः निखिलेश्वर ने अपनी कविताओं के माध्यम से आम जनता के यथार्थबोध को प्रस्तुत किया है। दिगंबर कवि एक मानवतावादी, प्रगतिशील विचारधारा के साहित्यकार हैं। निखिलेश्वर के काव्य में यह सभी प्रवृतियों को दर्शाया गया है। इन्होंने समाज के यथार्थ को जाना है। दिगंबर कविता के केंद्र में मानव है, न कि किसी प्रकार से धर्म या जाति वह सिर्फ मानवता की बात करते हुए दिखाई देती हैं। दिगंबर कवि का तात्पर्य नंगा नहीं बल्कि आधुनिक मानव के चहरे पर लगे दिखावे के मुखोटों को उतार कर फेंकना ही दिगंबर कवि कहा जाता है। इसलिए निखिलेश्वर ने अपनी कविताओं में मानवता के यथार्थबोध को दर्शाने का कार्य किया है। निखिलेश्वर ने समाज में दीन–दलित लोगों की स्थिति को देखकर वे कुंभम यादव रेड्डी से निखिलेश्वर बन गए हैं। उनकी कविता का विषय मनोरंजन न होकर समाज के यथार्थबोध को प्रस्तुत करने वाला है।

संदर्भ सूची :

1. अनुवादक डॉ. एम. रंगय्या, तेलुगु की दिगंबर कविता, 2004, प्रतिभा प्रकाशन, सिकंदराबाद, पृ. मोड़–xviii
2. सुवास कुमार, गल्प का यथार्थ : कथालोचना के आयाम, 2010, वाणी प्रकाशन दिल्ली–पृ.14
3. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद, ISBN-978–81–7276–166–0–पृ.30
4. वही–पृ.44–45
5. वही–पृ.19
6. वही–पृ.66
7. वही–पृ.64
8. वही–पृ.45
9. वही–पृ.67
10. वही–पृ.23
11. अनुवादक डॉ. एम. रंगय्या, तेलुगु की दिगंबर कविता, 2004, प्रतिभा प्रकाशन, सिकंदराबाद–पृ.घोषणा पत्र–X
12. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद, ISBN-978–81–7276–166–0–पृ.14

'गुड़िया भीतर गुड़िया' रूपी व्यवस्था पर दिगंबर बाण 'अग्नि श्वास' – विद्रोही लेखक निखिलेश्वर

टी. सी. वसंता

शोध सार : दिगंबर कविता की परिभाषा, निखिलेश्वर की कविता में निहित क्रांति भावना। निराला तथा निखिलेश्वर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व की तुलनात्मक अध्ययन। कागज, कलम, दवात निखिलेश्वर दूध और पानी की तरह घुल–मिल गए। विधाता ने अग्निपथ पर चलते हुए आंदोलन को आदर्श मानकर अग्निश्वास लेते हुए आगे बढ़ने के लिए लिखा आज तक वे 'युद्धरत निखिलेश्वर' हैं। अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए कवि ने मगरमच्छ, चींटी, सिंह, गिद्द, कछुए, फिनिक्स आदि को प्रतीकों के रूप में व्यक्त किया है।

बीज शब्द : श्रम शक्ति, समिष्ठि विजय, साम्यवाद–पथ, दिगंबर कविता, दिगंबर बाण, 'गुड़िया भीतर गुड़िया', पूँजीपति व्यवस्था, लूट–मार संस्कृति, शोषण संस्कृति, सड़ गई व्यवस्था, स्वस्थ वर्ग–जाति रहित समाज, सशक्त आंदोलन

दिगंबर कविता समाज की अराजकता, पूँजीपति व्यवस्था, श्रमशक्ति को लूटने वाली लूट–मार संस्कृति, अवैज्ञानिक रीति–रिवाज, कुटिल राजनीति, शोषण संस्कृति, औरत पर होने वाले अन्याय, अत्याचार, सड़ गई व्यवस्था के विरुद्ध 'बुलंद आवाज़' है। क्रांति का आंधी–तूफान है। विप्लव ज्योति है।

'दिगंबर कविता' प्रजाहित के लिए स्वस्थ वर्ग जाति रहित समाज की स्थापना के लिए किया गया जमीन से जुड़े हुए सशक्त आंदोलन है। इस आंदोलन से जनजागृति हुई। सड़ गई जड़ों में कम्पन हुआ। इस आंदोलन का उद्देश्य है मानवीय मूल्यों से ओत–प्रोत स्वस्थ समाज का निर्माण।

'गुड़िया भीतर गुड़िया' इस व्यवस्था का प्रतीक है। इसमें एक के भीतर एक सात गुडियाँ होती हैं। इसे तेलुगु में 'गूडुबोम्मलु' कहते हैं। सबसे ऊपर की बड़ी गुड़िया बहुत सुन्दर रंगीन होती है। अंदर की गुड़ियाँ एक–एक व्यवस्था के प्रतीक हैं। दिगंबर कवियों ने दिगंबर बाणों से इसे विच्छेद करने का प्रयत्न किया है। सूक्ष्म दृष्टि से देखते हैं। नग्न सत्य सामने आते हैं। अंदर की गुड़ियाँ दरारों से भरी पड़ी हैं, सड़ गई हैं। व्यवस्था भी ऊपरी तौर पर बहुत ही रंगीन और आकर्षणीय दिखाई देती है। परंतु परत–दर–परत समाज का परदा उठाए तो समाज का छद्म रूप सामने आता है। निखिलेश्वर जी का कहना है– "दूर से वह लाल गुलाब है, नजदीक से वह रक्त श्राव व्रण है।" (निखिलेश्वर कवित्वम् पृ. 32)

डॉ. एस. जतिन कुमार ने 'निखिलेश्वर कवित्वम्' पुस्तक की भूमिका लिखी है। इसमें आपने महत्वपूर्ण बातें कही हैं व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर रोशनी

डाली है– 'एकादशी का उपवास करनेवाला जीवन हेतुवादी की ओर मुड़ा। धीरे–धीरे सोशलिस्ट भावचैतन्यम् कवि में जन्म लेने लगा। (निखिलेश्वर कवित्वम् पृ. 5) धीरे–धीरे इस क्रांति गीत के लिए छः कवि 1965 तक आते–आते टेक बन गए। एक नया नीड़ का निर्माण हुआ। इस नीड़ के निर्माण में केशव राव जी (नग्नमुनि), राघवाचार्य जी (ज्वालामुखी), यादवरेड्डी जी (निखिलेश्वर), भास्करेड्डी जी (चेरबंड राजु), मनमोहन सहाय जी (भैरवय्या), वेंकटेश्वर राव जी (महास्वप्न), आदि का महत्वपूर्ण योगदान है। आप सब दिगंबर कवि के नाम से प्रसिद्ध हुए। तेलुगु साहित्य में एक नए अध्याय का आरंभ हुआ।

कवि निखिलेश्वर के विचार में 'अग्निश्वास' एक ही पीढ़ी का नहीं है, पीढ़ी दर पीढ़ी यह श्वास चलता रहता है। निखिलेश्वर के लिए किताब 'महान क्रांति' है।

"प्रजाआंदोलनों से घुल–मिलकर, वर्ग चेतना का विस्तार करके श्रमिक विमुक्त विप्लओं के संग–संग चलने वाली कविता विप्लव कविता है। वही प्रजा कविता है।" (निखिलेश्वर कवित्वम् पृ. 11) कवि ने एक बिंदु में कल्लोलित समुंदर को भरने का प्रयत्न किया है –

'एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक
विरासत के रूप में
अनायास ही बेल की तरह लग जाता है अग्निशवस'

(अग्निशवस पृ. 5)

दिगंबर कविता का अर्थ समझाने का प्रयत्न निम्न पंक्तियों में हुआ है–

'ज्ञान कोश से
अविश्रांत उठनेवाली अशांत तरंगें हैं,
मृत्युहीन सच्चाई के लिए
समझौता नहीं, उस न्याय व्यवस्था में
निरंतर प्रक्षालन में
प्रवाहित होनेवाले आज्ञेय रूप
ऊपर उठनेवाली मानव लहरों में
जलनेवाली ज्वालामुख–वेदनाएँ –विप्लव'

(अग्निशवस पृ. 5)

प्रगतिवादी कवि प्रत्येक वस्तु को तर्क विज्ञान और बुद्धि की दृष्टि से देखता है। क्रांति, संघर्ष, हड़ताल, हँसिया, हल, हथौड़ा, किसान, मजदूर, रूस, लाल झंडा, लेनिन और मार्क्स आदि उनके काव्य के काव्य विषय बन गए।

हिंदी के महाकवि सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व विप्लव कवि निखिलेश्वर जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बीच कई समानताएँ हैं।

निराला की 'भिक्षुक', 'वह तोड़ती पत्थर', 'कुकुरमुत्ता', नए पत्ते आदि कविताएँ तथा 'चातुरी चमार', 'पगली', 'चोटी की पकड़' आदि रचनाएँ पीड़ितवर्ग के पक्ष में लिखी गई हैं। निराला की 'कुकुरमुत्ता' रचना में फ्यूडल व्यवस्था के रूप में गुलाब को, श्रमशक्ति के रूप में कुकुरमुत्ता को चित्रित किया गया है –

'खून चूसा खाद का तूने अशिष्ट
डाल पर इतना रहा कैपिटलिस्ट
कितनों को तूने बनाया है गुलाम'
(कुकुरमुत्ता पृ. 39)

'गुस्सा आया, काँपने लगे नव्वाब
बोले, चल गुलाब जहाँ थे, उगा,
सबके साथ हम भी चाहते हैं तब कुकुरमुत्ता
बोला माली – 'फरमाएँ मुआफ खता
कुकुरमुत्ता अब उगाया नहीं उगता'
(कुकुरमुत्ता पृ. 61)

निखिलेश्वर की कविताओं में भी ऐसी ही भावनाएँ दिखाई देती हैं –

'अँधेरे को गलियों में भिक्षुक अपना लेते हैं।'
(निखिलेश्वर कवित्वम् पृ. 101)

'गुलामों को भिखमंगों के रूप में
तैयार करनेवाली फ्यूडल व्यवस्था।'
(निखिलेश्वर कवित्वम् पृ. 94)

'यहाँ पर सभ्य जंगलों में
सरों पर बोरियों में
रीढ़ों की ढेरों में आकर
इस भूमि के वारिसों में दीन नजरों में
एक दाने भी न गिरने वाले खाली बरतन।'
(निखिलेश्वर कवित्वम् पृ. 94)

'आर्तनाद करनेवाली भूख
दरिद्र में ही संसार
पुकारे तो जवाब देनेवाली
मृत्यु से सहजीवन।'
(युगस्वरम् पृ. 38)

'एक चिथड़े के लिए
कुत्तों जैसी इंसानों की लड़ाई–झगड़े।'
(युगस्वरम् पृ. 45)

प्रसिद्ध पंजाबी लेखिका अमृता प्रीतम जी ने लिखा था–

"प्राचीन काल में बच्चे के जन्म के समय प्रसूती की कोठरी में एक कागज और कलम–दवात रख देते थे और घर का बुजुर्ग उस खाली कागज और कलम–दवात के पास खड़े होकर प्रार्थना सी करता था–"विधाता! तुम जब बच्चे के जन्म पर इस कोठरी में आओ, उस समय बच्चे की अच्छी तकदीर लिख जाना।" यह इंसान का कितना बड़ा विश्वास है– लिखे हुए अक्षरों में हालाँकि वह विधाता के लिखे हुए अक्षर कभी भी नहीं पढ़ सकेगा पर वही अक्षरों का आदर और लिखे हुए अक्षरों में यकीन लेखक और पाठक का करीबी रिश्ता बना। (अमृता प्रीतम – मनमंथन की गाथा पृ. 18)

कागज, कलम, दवात निखिलेश्वर दूध और पानी की तरह घुल–मिल गए। विधाता ने अग्निपथ पर चलते हुए आंदोलन को आदर्श मानकर अग्निश्वास लेते हुए आगे बढ़ने के लिए लिखा आज तक वे 'युद्धरत निखिलेश्वर' हैं।

अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए कवि ने मगरमच्छ, चींटी, सिंह, गिद्द, कछुए, फिनिक्स आदि को प्रतीकों के रूप में व्यक्त किया है।

कवि निखिलेश्वर को अटल विश्वास है –

'अब लौटनेवाली बसंत बहार तक
नई कोंपलें नए खून से पल्लवित होंगी।'
(निखिलेश्वर कवित्वम् पृ.160)

संदर्भ सूची :

1. निखिलेश्वर, अग्निश्वास, 2017
2. निखिलेश्वर, युग स्वरम्, 2012
3. निखिलेश्वर, निखिलेश्वर कवित्वम, 2017, संपादक डॉ. डी. चंद्रशेखर रेड्डी
4. सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, कुकुरमुत्ता, 1969, लोक भारती
5. अमृता प्रीतम, मन मंथन की गाथा, 1993, किताब घर

निखिलेश्वर के काव्य में व्यक्त सामाजिक और राजनीतिक चेतना

प्रकाश

शोध सार : भाषा को जीवित रखने के लिए निखिलेश्वर जी बहुत विचार विमर्श करते हैं। भाषा ही समाज में हमारी संस्कृति को बचाकर रखती हैं। भाषा के बिना व्यक्ति का समुदाय को पहचानना अधूरा है। एक बार निखिलेश जी एक अखबार के जरिए अपनी बातें रखते हुए कहते हैं कि– "राज्य सरकार से अन्य दक्षिणी राज्यों– तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल द्वारा उठाए गए विभिन्न उपायों को अपनाने के लिए कहते हुए उन्होंने कहा कि आंध्र प्रदेश सरकार अन्य तीन राज्यों की तुलना में भाषा की रक्षा के लिए ठोस कदम नहीं उठा रही है। सरकार को ऐसे सम्मेलनों के आयोजन पर करोड़ों रुपये खर्च करने के बजाय सरकारी रोजगार में तेलुगु माध्यम के छात्रों को प्राथमिकता देनी चाहिए और के.जी. से पी.जी. तक तेलुगु भाषा का अध्ययन अनिवार्य करना चाहिए"। जैसे आज के समय पर अंग्रेजी भाषा के.जी. से पी.जी. तक अनिवार्य है। इसके कारण लोगों ने अपने बच्चों को तेलुगु छोड़ अंग्रेजी की ओर प्रवेश में प्रोत्साहित कर रहे हैं।

इस आशंका से सहमत न होते हुए कि तेलुगु, जिसे अपने मूल शब्दों के स्वर–अंत और इस प्रकार संगीतमय होने के कारण पूर्व की इतालवी के रूप में जाना जाता है, दुनिया की लुप्तप्राय भाषाओं में से एक है, उन्होंने कहा कि प्रत्येक तेलुगु भाषी व्यक्ति को इसके प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए। मातृभाषा की रक्षा के लिए। वे चाहते थे कि सरकार यदि इसकी रक्षा के प्रति ईमानदार है तो ग्रामीण स्तर से लेकर सचिवालय तक सभी आधिकारिक मामलों में तेलुगु के उपयोग को लागू करे। वैश्वीकरण के इन दिनों में माता–पिता अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में भेज सकते हैं, लेकिन उन्हें अपने बच्चों को घर पर तेलुगु में बोलने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। तेलुगु–माध्यम शिक्षा को किसी भी कोने से, यहाँ तक कि सरकार से भी समर्थन का अभाव है। चूँकि अधिकांश शोध पश्चिमी देशों में किए गए थे, इसलिए अधिकांश विज्ञान, चिकित्सा और इंजीनियरिंग पुस्तकें केवल अंग्रेजी में उपलब्ध हैं और राज्य सरकार को प्रतिभाशाली अनुवादकों की मदद से इन सभी कार्यों को तेलुगु में पेश करना चाहिए।

निखिलेश्वर जी का मानना है कि अंग्रेजी माध्यम के छात्रों के उच्चारण और उच्चारण के कारण तेलुगु अपनी विशिष्ट शैली खो रही है। दूसरी ओर मजदूर, किसान और अन्य गरीब समुदायों के लोग अभी भी अपनी मूल भाषा में बात कर रहे हैं और अनजाने में भाषा के संरक्षण और विकास में योगदान दे रहे हैं। वह साहित्य के विकास पर किसी भी खतरे को खारिज करते हैं और कहते हैं कि आजकल तेलुगु में अच्छे लेखकों की कोई कमी नहीं है।

बीज शब्द : मानव अधिकार, मानवीय संवेदना, समाज, तेलुगु कविता

तेलंगाना राज्य में हिंदी भाषा धीरे–धीरे समाप्त होती जा रही है। गुरुकुल डिग्री कॉलेजों में द्वितीय भाषा के तौर पर हिंदी को घटा दिया गया है। इसके साथ–साथ सामान्य डिग्री कॉलेज में भी हिंदी भाषा को समाप्त करने का प्रयास तेलंगाना सरकार कर रही हैं। जब स्नातक में हिंदी हटा दिया जाए तो स्नातकोत्तर में हिंदी पढ़ने का अनुमति या हिंदी भाषा लेने में प्रवेश नहीं रहेगा। छात्र छात्राएँ हिंदी स्नातकोत्तर में प्रवेश नहीं लेंगे तो तेलंगाना के विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग धीरे–धीरे बंद हो जाएगा।

भाषा को लेकर तेलंगाना सरकार ने खास करके भारतीय राष्ट्र समिति ने वोट बैंक के लिए हिंदी भाषा को हटाकर उर्दू भाषा को कॉलेज और उच्च शिक्षा में लाया है। एक भाषा के साथ–साथ दूसरी भाषा को आगे बढ़ा सकतें हैं लेकिन एक भाषा को आगे बढ़ाने के लिए दूसरी भाषा को ख़त्म नहीं करना चाहिए। इन खराब सरकारी व्यवस्था को लेकर निखिलेश्वर जी कहते हैं कि–

"मानव अधिकारों की रक्षा के लिए
अब भेड़िया खुद कमर कस कर खड़ा है
वही सब कुछ बनाकर
आराम से फैसला सुन सकता है।
भूख लगते ही
निश्चित ही किसी भी कोने में
किसी भी भेड़ बकरी को चुन सकता है।
जनतंत्र के भजन में
सुखचैन की डकार लेते हुए
साक्षी माल बची हुई हड्डियों पर
दार्शनिक तरीकों से पूछताछ कर सकता है।
सिर हिलाने वाले भेड़ बकरों के बीच
बृहद जनतंत्र का नकाब ओढ़े
विदेशी शिकारियों के साथ
मानव अधिकारों के उद्घोषक में
अब कभी भी, किसी को भी
जितने चाहे,
'भारत रत्न' उपादियों की
घोषणा कर सकता है...?"

इस समाज में अपने काम से ज्यादा फिकर दूसरों के काम पर है। एक व्यक्ति अपने काम पर ध्यान नहीं देते हुए दूसरों के काम में कितनी तरक्की हो रही है, कितना फायदा मिल रहा है, मेरे से कितने आगे बढ़ गया है इन सब व्यर्थ बातों को सोचते हुए अपने ही काम को ख़राब कर बैठा रहता है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति का दुश्मन बन रहा है, एक नेता दूसरे नेता का दुश्मन बन रह है, एक टीचर दूसरे टीचर का दुश्मन बन रहा है, एक प्रोफेसर दूसरे प्रोफेसर का दुश्मन बनता जा रहा है। दिखने के लिए मेरा भारत महान

दिख रहा है लेकिन हर दिन हमारे देश में मारा–मारी, चोरी–चुंगी कर एक दूसरे के जान लेते हुए अखबार के ज़रिये दिखाई देता है। देश में लोग तो दिखने में गुलाब के तरह लाल दिखते हैं लेकिन वह सच में वैसा नहीं है। निखिलेश्वर जी एक कविता 'जो तुमने कहा वह झूठ है' में लिखते हैं कि–

"जो तुमने कहा वह झूठ नहीं
इस देश का हर शहर
रिश्ता हुआ बड़ा घाव
दूर से वह है लाल गुलाब
पास से दिखेगा खून से लथपथ।
सड़क के बीच खून की लकीरों में
टूटे हुए पैर का एक जीवन
फटे हुए सिर का एक चेहरा
यदि वह मैं होता
सोचकर सिहर जाता हूँ!
पास खड़ा है लारी बेजान मुज़रिम सा
स्टिंग था हाथों में
फिर भी रफ़्तार का गुलाम ड्राइवर
बेचारा अब बंद है/ पुलिस के हिरासत में!
मैं देख रहा हूं प्रतिदिन कदापि झूठ नहीं है
वह एक साधारण यथार्थ है
सड़क की तरह हृदय जड़ हो गया है
अब तुम ही कहो,
हर रोज़ होटल में कुछ खाने के बाद
जब बाहर कदम रुकता हूँ तो
6–8 हाथ पसर जाते हैं मेरे सामने
उन मुखड़ों में प्रतिफलित दीनता
मैं एक अपराधी की भांति सिर लटकाए चले जाता हूँ
सत्यम! अब तुम क्या कहोगे?
अपने पवित्र विशाल मंदिरों की
दीवारों के बीच
ऊँचे गोपुरों की छाया में
भगवान को बंदी बनाकर
व्यापार करने वाले स्थलों पर
आहें भरते–भरते हर आदमी से
'क्षमा करना'– हर भक्त से
स्वामी प्रर्ताना करने वाले भिखारी,
भिखारी, गरीब रौनक से
रूठे हुए लोग
इस जंगल में भेडियों
के लिए बचे हुए

भगवानों के राजाओं के
मकबरों के लिए
यहाँ दीवारें उठती है
सोने की ईंठ से...
पर सुनेगा कौन मिट्टी की
दीवारों का रोना ?"

राजनीति के नाम पर देश को अंधविश्वास में भटका रहे हैं, कहते हैं हम हिंदू हैं हम सब एक हैं। लेकिन वहीं मंदिर के पूजा पाठ के समय जात–पात हो जाता है ब्राह्मण, क्षत्रिय, शुद्र, वैश्य। वोट माँगते समय हम सब भाई–भाई और इलेक्शन जीतने के बाद तुम अलग हम अलग। आज हम सभी जिस अंधविश्वास में जी रहे हैं उनको बाहर निकाल कर वैज्ञानिक, तकनिकी की ओर आना चाहिए कवि निखिलेश्वर जी लिखते हैं–

"भगवान नहीं, शैतान नहीं
दो सिद्धांतों के नर भक्षियों के मुँह में
तिलमिलाती शांति
पशु का वारिश होकर विश्व नागरिक की अधोगति
कितने प्रवक्ता?
कितने भोक्ता?
रूपहीन अनगिनत भक्तों के बीच
यद्धरंग में भय, द्वेष की आँखों पर
पट्टी बाँध कर बैठे हैं महान नेता
मुद्राओं से अंकित ये सब हैं मेरे शत्रु
मेरे वारिसों को मिट्टी खिलाने वाले ये है शिखराग्र सिद्धांतकर्ता
अब बुद्ध है अनाथ
मेरे वारिस सभी हैं निस्सहाय"।

डॉ. बाबा साहेब अंबेडकर ने ही वोट का अधिकार दिया। बाबा साहेब ने दबे हुए समाज को ऊँचा उठाने के लिए वोट का अधिकार दिया था। उन्होंने एक नारा दिया था कि शिक्षित बनो, संघर्ष करो, संगठित रहो। आज हमें उनके बताए मार्ग पर चलने की ज़रूरत है। आज के समय में युवा अपनी वोट को पाँच–छह सौ रुपए में बेच लेते हैं। जो सोचने वाली युवा पीढ़ी अपने वोट को बेचकर देश को बर्बाद कर रही है। पाँच सौ में पाँच दिन का खाना नही मिलता है, इसी के कारण पाँच साल खुद हमें समस्या को भोगना पड़ता है। इसी अवकाश में राजनीति नेताओं ने युवाओं को पैसों से नचाकर देश का और देश के भविष्य का बर्बाद कर रहा है। निखिलेश्वर जी अपनी कविता में लिखते हैं–

"पाँच वर्षों में केवल
एक बार और वह भी
एक पल के लिए
कागज़ के 'वोट' के हक़ से

पाँच वर्ष अपना गुलाम बना
राजनीति के व्यभिचार के
शिकार न बने
जनतंत्र और स्वेच्छा को
कुछ एक खद्दर गमछों के पीछे
श्यामल नशीली नागों के
कारों के नीचे मिटती
अंतिम सांस को
एक बार रक्ताभिशेक से
बचाने के लिए मैं
आमंत्रित करता हूँ तुम्हें"।

निखिलेश्वर जी की रचनाओं में सामाजिक, राजीनीति, आर्थिक अन्य विषयों से संबंध में जो समाज में होने वाले अन्याय और अत्याचार को रूबरू होकर अपने काव्य में उतारा है। यही नहीं बल्कि इन समास्याओं के परिष्कार के मार्ग को किस प्रकार आज के युवा वर्ग और आज के समाज के लोग कर सकते हैं यह भी दिखाई देता है। भारत में जो समस्या राजनितिक, आर्थिक, शैक्षणिक और सामाजिक में आ रही है। इन सभी प्रकार की समस्याओं को निखिलेश्वर जी ने अपनी रचनाओं में बताया है। इतना ही नहीं इससे जागृत भी कराया है। निखिलेश्वर जी अपनी रचनाओं से समाज सुधारना चाहते हैं, सभी प्रकार के मनुष्यों को यह कहा गया है कि किसी के गुलाम बनकर नहीं जीना चाहिए, अपने आप पर धैर्य रख कर जीना चाहिए। जब तक हम इस समाज में जाति, धर्म के नाम पर लड़ते रहेंगे तब तक समाज का विकास नहीं होगा और हम पूर्ण रूप से स्वतंत्रता नहीं स्वीकार करेंगे। जाति, धर्म को हम एक सामान मानकर चलते हैं तो जल्द ही हमारे समाज का विकास होगा और सभी को सच्चाई से स्वतंत्रता मिलेगी।

संदर्भ सूची :

1. THE NEW INDIAN EXPRESS (21 DEC 2012)

2. इतिहास के मोड़ पर (कटाक्ष), निखिलेश्वर–पृ.14

3. इतिहास के मोड़ पर (जो तुमने कहा वह झूठ नहीं), निखिलेश्वर–पृ.18–19

4. इतिहास के मोड़ पर (बर्बर), निखिलेश्वर–पृ.21

5. तेलुगु की दिगंबर कविता (आमंत्रित करता हूँ मैं), निखिलेश्वर (डॉ. रंगैय्या)–पृ.47

निखिलेश्वरजी की चुनिंदा कविताओं में चित्रित मानवीय संवेदनाएँ

रजनी धारी

शोध सार : दिगंबर कवि 'श्री निखिलेश्वर जी की चुनिंदा कविताओं में चित्रित मानवीय संवेदनाएँ'। इस आलेख में विभिन्न परिस्थितियों में व्यक्ति के बदलते हुए स्वभाव तथा व्यवहार के बारे में कवि ने खुले शब्दों में समाज को सुधारने के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त की है। निखिलेश्वर कवि ने 'इतिहास के मोड़ पर' पुस्तक में जितनी भी कविताएँ प्रस्तुत की हैं सभी कविताएँ मानवीय संवेदनाओं को यथार्थ के धरातल पर झकझोरती हुई प्रतीत होती हैं।

बीज शब्द : कविता, कवि, मानवीय संवेदनाएँ, समाज, सामाजिक परिप्रेक्ष्य

साधारणतया यह माना जाता है कि व्यक्ति का स्वभाव उसके परिवार तथा समाज के अनुरूप ही होता है। जिस प्रकार हमने निखिलेश्वर जी के साहित्य को पढ़कर जाना है, उसमें भ्रष्टाचारिता, अनैतिकता तथा मूल्यहीनता के खिलाफ आवाज़ उठाई गई है जब रामराज्य का स्वप्न भंग हो गया तो उसके विरुद्ध विद्रोह की काव्यधारा दिगंबर कविता है। दिगंबर कवियों का विद्रोह सिर्फ वर्ग संघर्ष पर आधारित न होकर पूरे समाज, सभ्यता तथा संस्कृति के प्रति था। इस काव्यांदोलन को छः (6) युवा कवियों ने प्रवर्तित किया, जिन्हें काव्य जगत में उनके उपनामों—नग्नमुनि, निखिलेश्वर, चेरबंडराजु महास्वप्न, ज्वालामुखी और भैरवय्या से पहचाना जाता है।

निखिलेश्वर जी बहुत सरल, शांत, गंभीर, हृदयस्पर्शी, सत्यभाषी, विशिष्ट, विनम्र व्यक्तित्व के धनी हैं। उनकी 'इतिहास के मोड़ पर' पुस्तक से उनकी कुछ चुनिंदा कविताओं में व्यक्त मानवीय संवदेनाओं का उल्लेख करने का प्रयास है। आज के मानव में संवेदनाएँ न के बराबर हैं। व्यक्ति, व्यक्ति को सहन नहीं कर सकता आज सिर्फ दिखावा करके जीवन जिया जा रहा है।

कुछ पंक्तियाँ हैं—

'किसी गुमनाम रास्ते
फिसलता आदमी
बदल रहा है भेड़िये में...'

आज हर व्यक्ति अपने मन में एक डर लेकर जी रहा है। जीवन अब निडर होकर नहीं जिया जा सकता। बालक सहमे—डरे जीवन जीते हैं। उन्हें पुष्पित—पल्लवित होने का स्वछंद वातावरण नहीं मिलता। सभी आतंकवाद से पीड़ित हैं। निखिलेश्वर जी कहते हैं—

'इसी आकाश के नीचे
अनंत शंकाओं का मार्ग

सहमी–सहमी निगाहों से
सिर उठाने से पहले ही
किसी कोने से ए के 47 की गूंज।'

समाज में हर ओर अंधकार व्याप्त है जीवन की अंधी दौड़ में सब भागे जा रहे हैं। झूठ और सच का ज्ञान अथवा आभास करने वाला कोई नहीं। आज सच्चाई को एक कोने में खड़ा अपराध बोध कराया जाता है और झूठ पंख फैला कर खुले आसमान में उड़ान भरता है।

कवि कहते हैं–

'पौरुषत्व और नपुंसकता को
समांतर पलड़ों में तोलने वाली
इस हिंसक व्यवस्था में
हर किसी का ृकैसे जी सकते हैं'
वाले भय से
समझौते के बदलते रंगों में
हत्या अथवा आत्महत्या को
भावना से भर
पशु हो जान ही है
आज का अर्धसत्य।'

विक्षिप्त राजनीति की योजना पर कटाक्ष करते हुए कवि कहते हैं मानव अधिकारों के लिए अब भेड़िया खुद कमर कसकर खड़ा है। वहीं सबकुछ बनकर आराम से फैसला सुना सकता है। दिगंबर पीढ़ी के अंतर्गत कवि ने आज के युवा को जो अपनी पुरातन पीढ़ियों से जो विरासत प्राप्त हुई है उसको नकाराते हुए वह अपनी ही संवेदनाशून्य सोच में उलझा हुआ है।

'टूटे वात्सल्य की तत्रियों के बीच
हिलने वाले बंधुओं के संबंध
अर्थहीन गधे के भार से लदे
आधुनिकों के ये अपरिचित चेहरे।'

जो तुमने कहा वह झूठ नहीं कविता के माध्यम से कवि कहता है आज मनुष्य का हृदय जड़ हो गया है। वह मनुष्यता, मानवता भूल मकबरे बनवाने का शौकीन है। भूखा भिखारी भूख से मरे उसे उससे कोई आत्मीयता नहीं, वह सोने की ईंटों से अपनी प्रेम की दास्तान को अमर करेगा।

'भगवानों के लिए, राजाओं
के मकबरों के लिए
यहाँ दीवारे उठती हैं।
सोने की ईंट से
पर सुनेगा कौन मिट्टी की।'

कवि कहते हैं कि आज का मानव खोखला है, चिंताग्रस्त है, दिशाहीन है–

‘तू हमेशा रोता ही रहता है–
कि कोई तुझ पर हमला करेगा
कि परीक्षा में फेल हो जायेगा
कि सारा कारोबार ठप्प हो जायेगा
कि बीवी को कोई भगाकर ले जाएगा।’

समाज के ठेकेदार किस तरह सामान्य जन की तकलीफों को अपना हथियार बना कर उनकी संवेदनाओं से खेलते हैं–

‘शव के कपड़े, उतारते नेतागण
आर्ष–धर्म के नाम पर
जाति–धर्म की सीख देकर
अरण्य तत्व को बढ़ाते गुरुजन।’

जीवन और मरण शाश्वत है। कवि ने आज के समाजिक परिप्रेक्ष्य में मौत को बहुत ही सस्ता बताया है। ये कभी भी किसी रूप में भी आ जाती है। वे कहते हैं–

‘मौत का क्या है–
इस देश में उसका मूल्य क्या है?
रेल इंजन के नीचे
सिक्के की भाँति सपाट होती हुई आशा
नकली सुई की दवा से
लक्कड़ सा परस जाता है पूर्णपरण।’

आज मनुष्य चंद पैसों की खातिर, कुछ पाने की खातिर एक निर्दोष के प्राण लेने से भी नहीं हिचकिचाता।

भारतीय हतप्रभ कानून पर वार करते हुए कवि कहते हैं–

‘व्यवस्था में बढ़ती बेतरतीबी का सवाल
रौंदे हुओं का रक्त
महानगरों की सड़कों की तरह बिखरा जहाँ
हर पल बेरहमी के साथ
‘इंडिया’ दौड़ लगाता है।’

ऐसे कई अनगिनत मानवीय संवदेनाओं से जुड़े तथा उन्हें तार–तार कर देने वाले उदाहरण हमें निखिलेश्वर जी के साहित्य में मिलते हैं।

इनकी लेखनी में गलत, झूठ, फरेब, ढकोसलों, झूठी रवायतों के प्रति गहरा आक्रोश है। पर व्यक्तित्व सापेक्ष में देखा जाए तो यह बहुत ही शांत नदी के समान गंभीर है। सच ही कहा गया है वाचाल हर वक्त बोलते–बोलते कुछ प्रभावी नहीं कह पाता। उसके शब्दों में वाणी में वज़न नहीं होता। लेकिन जब निखिलेश्वर जी जैसे गंभीर साहित्यकार समाज में व्याप्त अराजकताओं के

प्रति अपनी लेखनी चलाते हैं तो निश्चय ही वह सत्ता को पलटने का कार्य करती है। ○

संदर्भ सूची :

1. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद—पृ.9
2. वही—आतंकवाद—पृ.10
3. वही—अर्धसत्य से आगे—पृ.12
4. वही—कटाक्ष—पृ.14
5. वही—दिगंबर पीढ़ी—पृ.15
6. वही—जो तुमने कहा वह झूठ नहीं—पृ.18
7. वही—तू कब रोया नहीं—पृ22
8. वही—शव भोगी—पृ.32
9. वही—मौत का पीछा करते हुए—पृ.40
10. वही—अंबेडकर के हाथ में काला झंडा—पृ.46

तेलुगु की दिगंबर कविता और साहित्य अकादमी से पुरस्कृत निखिलेश्वर का काव्य

संतोष वसंत कांबळे

अजित चुनिलाल चव्हाण

शोध सार : तेलुगु साहित्य के अंतर्गत निखिलेश्वर को दिगंबर कविता (अकविता) आंदोलन के प्रवर्तकों में से एक प्रमुख प्रवर्तक माना गया है। इन्हें 'क्रांतिकारी लेखक संघ' के संस्थापक के रूप में जाना जाता है। इनके द्वारा साहित्य जगत की सेवा करते हुए अपना महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया गया। इनके द्वारा सात कविता संकलन एवं पाँच गद्य रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। इन्होंने अन्य भाषाओं में रचित साहित्य का तेलुगु भाषा में अनुवाद भी किया। इनका मानना है कि भारतीय भाषाओं के पारस्परिक आदान–प्रदान से ही संपूर्ण भारतीय साहित्य सुसंपन्न बन सकेगा। अतः तेलुगु साहित्य से विभिन्न विधाओं की रचनाओं का समय–समय पर हिंदी में अनुवाद किया गया। ठीक इसी प्रकार हिंदी की रचनाओं का तेलुगु में भी अनुवाद कर इन दोनों भाषाओं के मध्य सही अर्थ में अनुवादक के सेतु धर्म का निर्वहण करते इन्हें देखा जा सकता हैं। इनके द्वारा तेलुगु की श्रेष्ठ और सुंदर रचनाओं से हिंदी पाठकों को लाभान्वित एवं आकर्षित करने का कार्य किया गया। साथ ही साथ हिंदी की श्रेष्ठ एवं सुंदर रचनाओं का अनुवाद कर तेलुगु साहित्य को समृद्ध बनाया। इनके द्वारा लिखित सामग्री समय समय पर प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती गई। निखिलेश्वर द्वारा लिखित 18 पृष्ठ का प्रकथन 'बीसवीं सदी का तेलुगु साहित्य', विगत शति के तेलुगु साहित्य की विकास प्रक्रिया और समृद्धि को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

बीज शब्द : दिगंबर, अकविता, तेलुगु साहित्य, धर्म, दलित, विमर्श आदि।

तेलुगु की क्रांतिकारी कविता का भारतीय साहित्य में विशिष्ट महत्व है। जन–संघर्ष से जुड़ी इन क्रांतिकारी कविताओं का समावेश तेलंगाना किसान सशस्त्र आंदोलन से प्रारंभ होकर सातवें दशक के नक्सलवादी एवं श्रीकाकुलम आदिवासी आंदोलन के साथ जुड़कर नये प्रतिमान स्थापित करता रहा। निखिलेश्वर द्वारा तेलुगु साहित्य में दलित धारा के अंतर्गत भी महत्वपूर्ण रचनाएँ की गई। इन्होंने मेघदूत की भाँति उल्लू को माध्यम बनाते हुए संदेश भेजने का कार्य किया। इनके द्वारा लिखित काव्य रचना– 'गब्बिलम' (चमगादड) के अंतर्गत भिजवाया गया यह संदेश किसी यक्षिणी का भेजा गया प्रेम संदेश न होकर दलितों की दुर्गति का शोक संदेश माना गया है। इस तरह की काव्य रचना संदेश काव्य के अंतर्गत एक अनोखा प्रयोग है। निखिलेश्वर ने दलित जातियों के उद्धार हेतु विभिन्न रचनाएँ प्रस्तुत की। स्त्री लेखन तथा अल्पसंख्यक–मुस्लिम लेखन को भी तेलुगु साहित्य में विशिष्ट विमर्श के रूप में इन्होंने समावेशित किया। जिसके द्वारा समाज के समक्ष इनकी समस्याओं,

परिस्थितियों एवं विपत्तियों–आपदाओं का उद्‌घाटन किया गया एवं उनके विकास की ओर समाज का ध्यान आकर्षित करने की पुरजोर कोशिश की गई।

निखिलेश्वर मूल रूप से तेलुगु कवि हैं परंतु हिंदी के प्रति बचपन से ही इनका लगाव रहा। तेलुगु माध्यम से हाईस्कूल की पढ़ाई करने के साथ हिंदी साहित्य से उनका लगाव बढ़ता गया। आधुनिक तेलुगु साहित्य समाहित विद्रोही कविता के दिगंबर पीढ़ी से जुड़े होने के कारण उन कविताओं का वे स्वयं अनुवाद करते थे। इनके द्‌वारा लिखी गई अनेक कविताएँ एवं लेख तत्कालीन प्रतिष्ठित पत्र–पत्रिकाओं जैसे– युगप्रभात, आलोचना एवं धर्मयुग जैसे पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए। तेलुगु दिगंबर एवं क्रांतिकारी आंदोलन से जुड़े होने के फलस्वरूप समकालीन हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं से भी इनकी कविताओं का संबंध रहा। निखिलेश्वर द्‌वारा आखिल भारतीय स्तर पर कई प्रदेशों में हुए कवि संम्मेलनों में सहभागीता निभाई गई।

निखिलेश्वर द्‌वारा अंग्रेजी साहित्य के साथ भी विशिष्ट जुड़ाव देखने को मिलता है। इन्होंने अंग्रेजी भाषा के अध्यापन कार्य के साथ–साथ अंग्रेजी में कविता लेखन कार्य भी किया। साथ ही साथ कई अनुवाद तेलुगु से हिंदी और अंग्रेजी में तथा उन भाषाओं से तेलुगु में भी किए। काव्य के रूप में इनका मानना है कि कविता चाहे किसी भी भाषा में हो यदि हृदय और मेधा के समन्वय से वह प्रतिफलित और स्पंदित है तो ऐसी काव्य रचना सदैव जीवित रहती है। निखिलेश्वर का मानना है कि कविता हृदय की भाषा है। अतः वह किसी भी भाषा के माध्यम से संप्रेषित की जा सकती है। इसके लिए आवश्यक है उसका अनुवाद भावात्मक होने के साथ–साथ सटीक भी हो। 'इतिहास के मोड़ पर' नामक काव्य संकलन में निखिलेश्वर द्‌वारा लिखित 56 कविताएँ सम्मिलित है।

दिगंबर कवि निखिलेश्वर के काव्य में राष्ट्रीयता की भावना

साहित्यिक आंदोलन के अंतर्गत राष्ट्रीयता की अभिव्यक्ति निखिलेश्वर के काव्य में बहुतायत से मिलती है। इनका मानना है कि राष्ट्र की उपेक्षा करके मानवता का हित कदापि संभव नहीं है ऐसे में राष्ट्रीय और सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास होगा। अतः तेलुगु की विभिन्न विधाओं का प्रतिनिधि चयन 'विविधा' जिसके अंतर्गत 24 कविताएँ, 4 कहानियाँ, 1 साक्षात्कार एवं 1 नाटक सम्मिलित है। 'विविधा' के चयन और अनुवाद का कार्य निखिलेश्वर द्‌वारा किया गया।

निखिलेश्वर का साहित्यिक योगदान देखते हुए इन्हें समय–समय पर अनेक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

पुरस्कार का नाम	**वर्ष**
एक्स–रे अवार्ड	1984
एटुकूरी बलराम मूर्ती साहित्य पुरस्कार	2003
अ. सोमसुन्दर पुरस्कार	2008
तेलुगु ब्रह्मोत्सवालु (तिरुपति)	2007

पो. श्री. तेलुगु विश्वविद्यालय प्रतिभा पुरस्कार (कविता)	2011
फ्री वेर्स फ्रंट अवार्ड	2010
श्री श्री शताब्दी पुरस्कार	2010

प्रकाशित रचनाएँ : दिगंबर कवुलु (तीन संकलन सहित अब तक पंद्रह (15) कविता संग्रह प्रकाशित। गद्य : निखिलेश्वर कथलु और गोडला बेनुका (दीवारों के पीछे जेल भी यादें) सहित पुस्तकों का प्रकाशन अनुमान हैदराबाद अज्ञात चरित्र पुटस (हैदराबाद मुक्ति संप्रमा–खण्डेराव कुलकर्णी) सारा आकाश (राजेंद्र यादव) सहित आठ ग्रंथों का प्रकाशन।

तेलुगु के दिक् कवि निखिलेश्वर

तेलुगु की आधुनिक कविता की एक नवीनतम उपलब्धि है यह दिगंबर पीढ़ी। इस पीढ़ी के सशक्त हस्ताक्षर ऐसे कवि हैं जो अपनी अभिव्यक्ति को कविता न कहकर दिक् की संज्ञा प्रदान करते हैं। इन दिक् कवियों के अंतर्गत अग्रलिखित छः सशक्त हस्ताक्षर कवि हैं– नग्नमुनि, निखिलेश्वर, ज्वालामुखी, चेरबंडराजु, भैरवय्या और महास्वप्न। दिगंबर पीढ़ी के विषय में स्पष्ट करते हुए निखिलेश्वर द्वारा लिखित इन पंक्तियों को देखा जा सकता है–

"मेरी यह पीढ़ी
आकाश तले स्वच्छ मेघ–सी
दुनिया की धूल को झटकते
रास्ते भर ढो रहीं है"[1]

इन कवियों के अनुसार दिक्का अर्थ है–जो बीमार की परतों को चीर–फाड़ कर 'कास्मिक' पथ निर्देशन में सक्षम हैं और जिनकी सरहदें मानवता के मूल्यों में हैं"–यह है दिगंबर कवियों द्वारा अपनी काव्य–धारा का मूल्यांकन।

दिगंबर कवि निखिलेश्वर, ज्वालामुखी, चेरबंड राजु, भैरवय्या, महास्वप्न और नग्नमुनि अपने तीनों संकलनों में विद्रोही कविता–यात्रा से समकालीन युवा पीढ़ी पर अमिट छाप छोड़ रहे थे। आत्मशोधन के साथ सड़ी–गली सामाजिक व्यवस्था को क्रांतिकारी मोड़ देने के लिए एक निर्भयी शैली में लिख रहे थे। इसका तत्काल प्रभाव अन्य भारतीय भाषाओं के काव्य–आंदोलनों पर पड़ा।

बीसवीं सदी के सातवें दशक के उत्तरार्ध में तेलुगु साहित्य विद्रोह को उपजीव्य बनाकर परिवर्तन की कामना करने वाला दिगंबर काव्यांदोलन उभरा। सम्पूर्ण परंपरा का निषेध करने वाले इस काव्यांदोलन को इन छः युवा कवियों ने प्रवर्तित किया, यह दिगंबर पीढ़ी न केवल अपनी मातृभाषा तेलुगु में ही, अपितु हिंदी, ओड़िया तथा असमीया भाषाओं में लोकप्रिय होती जा रही हैं, यह अत्यन्त ही हर्ष की बात है।

दिगंबर कवियों द्वारा की गई काव्य रचनाएँ 'दिक्' कहलाई। दिशा दिखाकर मार्ग निर्देशन करने वाले हैं हमारे 'दिक्'। हमारी सीमाएँ हैं विश्वंतराल के हृदय। इन सीमाओं का अंत नहीं हैं। बीमार फेफड़ों को चीरकर 'कॉस्मिक'

किरणों से मानव के लिए नये निवास–स्थान खोजने की तत्परता हमारे दिक् में रहेंगी। इस जीवन में किसी को पशु की तरह जीने का अधिकार नहीं हैं। काम करते हुए, खाते हुए, बच्चे जनते हुए रह जाने मात्र से अस्तित्व कायम नहीं रहता। आवश्यक होने पर भी वह जानवरों की तरह ही जीना कहा जायेगा। भौतिक आनंद के साथ हृदय को सर्वदा सचेतन रखते हुए, सबके बीच अपने आप में जीना ही वास्तविक अस्तित्व बोध है। यह जीवन तटस्था में नहीं जिया जा सकता है और न ही द्वीप की तरह जीवन बिताया जा सकता। जीवन में स्नेह प्रस्फुटित हो और हम किसी आशय से प्रतिबद्ध होकर जिएँ यही हमारा उद्देश्य है। समकालीन वैज्ञानिक युग में व्यक्ति अपने आपसे मुठभेड़ कर रहा है। वह भय–संत्रस्त होकर रह गया है। वह धन के पीछे पागल बनकर सुख–लालसा के पीछे कुत्ते की तरह फिर रहा है। सुख साधन ने अब आत्मा की बेड़ियाँ बनकर व्यक्ति की आजादी समूह के रास्ते में कभी रोड़ा न बने। लेकिन नियमों की निरकुशता में, सिद्धांतों के वक्र भाष्य से आदमी (व्यक्ति) को कठपुतली नहीं बनाना चाहिए। ऐसी तानाशाही, जो व्यक्ति को यंत्र का पुर्जा बनाती है, कभी सहनीय रहेगी?

हिंदी कविता के पाठक दिगंबर कविता के मन–मस्तिष्क को झकझोरने वाली मुद्राओं से अपरिचित तो नहीं है लेकिन इनका कोई प्रतिनिधि संकलन लंबे समय से प्रतीक्षित है। तेलुगु में प्रकाशित तीन कविता–संग्रहों से चुनी गई दिगंबर कविता के हिंदी अनुवाद का प्रस्तुत संकलन इसी दिशा में एक स्वागत–योग्य प्रयास है। यद्यपि आज का पाठक क्रांति के नाम पर नग्नता की वकालत के प्रति चार दशक पुराने पाठक जैसी प्रतिक्रिया दिखाने वाला नहीं है, तथापि भारतीय कविता की समान प्रवृत्तियों के ऐतिहासिक आकलन और तुलनात्मक अनुशीलन के लिए ऐसे अनुवादों की अभी और आवश्यकता है। भारतीय कविता और उसमें भी विशेषतः युवतर पीढ़ी की गत शताब्दी के साठोत्तरकालीन मानसिकता और उसके अंतर्विरोधों को समझने के लिए भी तेलुगु कविता के इस काव्यांदोलन का व्यापक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अध्ययन अभिप्रेत है।

दिगंबर कविता वीभत्स और कुरूप यथार्थ से पलायन करके कल्पित सुंदरता का प्रतिसंसार रचने को कवियों का मनोविलास मानती है। वह तो अपने परिवेश में परिव्याप्त भूख से उत्पन्न दारुण करुणा की वास्तविकता से पाठक को परिचित कराना चाहती है और इस स्थिति के लिए जिम्मेदार शोषक और शासक वर्ग की नीचताओं का पर्दाफाश करने पर उतारू है। 'गीताचार्य की समाधी' नामक कविता में निखिलेश्वर द्वारा निखिलेश्वर ने समाज के कटु यथार्थ को दर्शाते हुए लिखा है–

"शासन की बागडौर हथियाने
प्रतिशोध की इच्छा जाग उठी,
अस्तित्व के संघर्ष में
किसी भी जाति का कमजोर
एक सजीव हड्डियों का ढ़ाँचा!

आधुनिक कापालिको के बीच
अब फँस गयी है
वर्ग संघर्ष की चेतना!!"[2]

उसे लोकतंत्र के नाम पर भी तानाशाही ही विरासत में मिली है और इसके नाम पर उपयोग राजनेता सदा अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए करते हैं।

कहना न होगा कि कवि के लिए यहाँ कवित्व और लालित्य के स्थान पर आमजन की तिलमिलाहट और गुस्से की अभिव्यक्ति अधिक महत्वपूर्ण है।

असंतोष, आक्रोश, विद्रोह और आमूलचूल परिवर्तनकारी क्रांति को कविता का सामाजिक लक्ष्य मानने वाले दिगंबर कवि वास्तव में मानवतावादी समता मूलक समाज के स्वप्नदृष्टा हैं। उनके निकट कविकर्म भी वर्गयुद्ध का एक संवेदनाशील मोर्चा है जिस पर रचनाकार डटे हुए हैं। अपनी रचनाओं में राष्ट्र की स्थिति की प्रति अपना आक्रोश व्यक्त करते हुए निखिलेश्वर लिखते हैं–

"अपने पवित्र विशाल मंदिरों की
दीवारों के बीच
ऊँचे गोपुरों की छाया में
भगवान को बंदी बनाकर
व्यापार करने वाले स्थलों पर
आहें भरते–भरते हर आदमी से
'क्षमा करना' हर भक्त से
'स्वामी'– प्रार्थना करने वाले भीखारी
भीखारी, गरिब, रौनक से
रूठे हुए लोग।"[3]

अपनी कविताओं में निखिलेश्वर द्वारा उत्साह एवं जोश को भर देने वाली शब्दावली का प्रयोग किया गया है। जिसका उदाहरण हमें उनकी कविता 'आमंत्रित करता हूँ' में देखने को मिलता है।

"मध्यम वर्ग की फफूँ ही को
झूकी रीढ़ और
कपट आचरण करते
युवा वर्ग को
कला के नाम पर
पलायन का पाठ पढ़ाते
नामर्दों को
नरम मौका परस्तों को
जवान खून खौल उठाने के लिए
आमंत्रित करता हूँ मैं तुम्हें।"[4]

इस प्रकार निखिलेश्वर ने जनता को राष्ट्र के प्रति अपने अधिकारों की प्राप्ति हेतु सजग रहने का पाठ पढाया है साथ ही साथ शोषण के प्रति क्रांति

का स्वर अपनाने की बात कही है। अपने अधिकारों के प्रति जनता को सजग करते हुए निखिलेश्वर ने इस प्रकार लिखा है–

"पाँच वर्षों में केवल
एक बार और वह भी
एक पल के लिए
कागज के 'वोट' के हक से
पाँच वर्ष अपना गुलाम बना
राजनीति के व्यभिचार के
शिकार न बनें
जनतंत्र और स्वेच्छा को
कुछ एक खद्दर गमछों के पीछे
काले–विषैले नागों के
'कारों' के नीचे मिटती
अंतिम साँस को
एक बार रक्ताभिषेक से
बचाने के लिए मैं
आमंत्रित करता हूँ तुम्हें।"[5]

लेकिन अफसोस कि भारतीय जनता का चमड़ा बहुत मोटा है और वह आज भी लोकतंत्र के नाम पर तानाशाही को ही पीठ पर लादे विनाश के गर्त की ओर दौड़ी जा रही है। जबकि दिगंबर कविता अपनी तमाम दिगंबरता सहित इतिहास की वस्तु बन चुकी है।

निष्कर्षतः साहित्य अकादेमी पुरस्कृत निखिलेश्वर एक विद्रोही कवि होने के साथ–साथ समाज में घटित गलतियों को समाज के समक्ष यथार्थ रूप को प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है। निखिलेश्वर ने तेलुगु साहित्य के साथ ही हिंदी और अंग्रेजी साहित्य में भी साहित्य सृजन किया है।

संदर्भ सूची :

1. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद–पृ. 15
2. निखिलेश्वर, विविधा, 2009, क्षितिज प्रकाशन, दिल्ली–पृ.36–37
3. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद–पृ. 19
4. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद–पृ. 24–25
5. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड पर, 2019, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद–पृ. 19

मानवीय संवेदनाओं के सशक्त स्वर : कवि निखिलेश्वर

सुरभि दत्त

शोध सार : डॉ. निखिलेश्वर जी तेलुगु साहित्य के दिगंबर कविता के छः मूल प्रवर्तकों में से एक हैं, हिंदी साहित्यिक क्षेत्र में जिसे 'अकविता' कहते हैं। उन्नीस सौ पैंसठ वत्सर के मई महीने में, (06–05–1965) छटवी तारीख पर, आधी रात, बारह बजे तत्कालीन आंध्र प्रदेश राज्य की राजधानी हैदराबाद महानगर में, सर्वश्री महा स्वप्न, चेर बंडा राजू, भैरवैय्या, निखिलेश्वर, नग्न मुनि, ज्वाला मुखी– इन छः कवियों ने मिलकर इस धरा के आविर्भाव की उद्घोषणा की। उन्होंने कहा कि समाज में फैली कुरीतियों को शॉक ट्रीटमेन्ट (Shock treatment) देने के लिए इस धारा का श्रीगणेश हो रहा है। निखिलेश्वर के साथियों की कविता धारा का नाम तेलुगु में दिगंबर कविता थी, जिसका शाब्दिक अर्थ है, नग्न कविता (Naked Poetry)। लेकिन दिगंबर कवि के अन्वय के अनुसार 'दिक्' माने रास्ते को सूचित करनेवाली कविता। किसी तरह का अप्राकृतिक आच्छादन न होने वाली स्वच्छ कविता। निर्भीक कविता जो मानव में जीवंतता भरने का लक्ष्य लेकर उद्भवित हुई है। उन्नीस सौ पैंसठ से उन्नीस सौ सत्तर तक तीन संकलनों में रिबेल पोएट्स मूवमेंट (Rebel poet's movement) की भाव धारा में ही कविताएँ लिखते रहे। दिगंबर कविता आंदोलन ने इस बीच सैद्धांतिक कारणों से अपना मार्ग बदलना चाहा। तदनंतर निखिलेश्वर जी स्वतंत्र रूप से Revolutionery Writers Association से जुड़कर अपनी कविताओं द्वारा धर्मग्रह को व्यक्त करते ही आ रहे हैं। केंद्र साहित्य अकादमी द्वारा 2020 में 'अग्नि स्वासा' नामक कविता संग्रह के लिए पुरस्कृत निखिलेश्वर जी की कविता यात्रा पर यह प्रपत्र आधारित है।

बीज शब्द : दिगंबर कवि, कविता, मानवीयता, मानवीय संवेदनाएँ, साहित्य, तेलुगु आदि।

कविता किसी भी भाषा में हो, यदि हृदय और मेधा के समन्वय से प्रतिफलित और स्पंदित हो तो वह सदैव जीवित रहेगी"। ये शब्द हैं शिक्षाविद् युगीन कवि एवं मानवीय संवेदनाओं के सशक्त स्वर, कवि निखिलेश्वर जी के। मातृभाषा तेलुगु के साथ हिंदी और अंग्रेजी भाषा पर समान अधिकार रखते हैं। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भाषा व क्षेत्र की परिधि से आप कभी नहीं बंधे। क्षेत्रों की अदृश्य दीवार को अपने विचारों के मध्य नहीं आने दिया। स्वनाम धन्य निखिलेश्वर जी ने संपूर्ण मानव जाति की संवेदनाओं को अपनी लेखनी में उतारा है। आप अस्वीकार्य स्थितियों को सुधारने के लिए लेखनी को हथियार बना, सुप्त प्रशासन और सुप्त अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं के बंद कानों और आँखों को खोलने का प्रयास करते आ रहे हैं। मानवीयता को निगलते शोषण को, राष्ट्रों के मध्य वैमनस्यों को, युद्धों के मध्य नारित्व को कुचलती पाशविकता को, अबोध जीवन के रुदन को, धर्म, जाति के

नाम पर बिकती राजनीति आदि विषयों को आपने अपनी मर्मज्ञ लेखनी का विषय बनाया है।

कविता प्रकृति में रची बसी है। ईश्वर ने गीत और संगीत को लेकर ही सृष्टि रची है। झरनों में जलतरंग संगीत है। नदी का कल–कल बहता स्वर है। वृक्षों से टकराती हवा में सितार ध्वनि है। एक पौराणिक कथा है, संगीत और काव्य की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती ने ब्रह्मा से शिक्षा प्राप्त कर इसे आगे नारद जी को प्रदान किया। नारद ने इसे महर्षि भरत को प्रदान किया। भरत ने संगीत का आधार ग्रंथ काव्यशास्त्र लिखकर इस श्रेष्ठ कला का प्रचार पृथ्वी पर किया। प्रश्न उठता है कि ईश्वर जब प्रथम कवि है तो उसकी रचना मनुष्य कविता विहीन कैसे हो सकती है। हर मन कवि है। हर मन सुंदर कल्पना का संसार रचिता है।

इसे विडंबना ही कहा जाएगा कि जिस ईश्वर ने सुंदर सृष्टि रची, मनुष्य शरीर में संवेदनशील हृदय को स्थापित किया और कल्पनाशील मन खिलाया वही भौतिकता, विलासिता का साम्राज्य खड़ा करने की दौड़ में अपने होने के लक्ष्य से भटकता जा रहा है। इसी पीड़ा को कवि निखिलेश्वर ने अपनी हर रचना में अभिव्यक्त किया है। सत्य यह भी है कि वेदना कविता की जननी है।

आपकी विचार अभिव्यक्ति केवल पद्य तक सीमित नहीं है। गद्य में भी आपने अपने को प्रस्तुत किया है। और अनुवाद के माध्यम से साहित्य को विस्तार दिया है।

दक्षिण भारत के प्रथम बहुउद्देशीय केशव स्मारक विद्यालय को आपने 30 वर्षो तक अंग्रेजी अध्यापक के रूप में अपनी सेवाएँ दी हैं। मातृभाषा जिनकी तेलुगु है, अंग्रेजी के जो अध्यापक रहे, हिंदी जिससे उनका आत्मीय लगाव है, ऐसे बढ़ती आयु को पीछे छोड़ते हुए भी सतत् सक्रिय यादव रेड्डी जी (निखिलेश्वर) से दो तीन बार मिलने का सौभाग्य मिला। परंतु आप शिक्षक और कवि ही नहीं अपितु महान लेखक, कई पीढ़ियों के साहित्य के मर्मज्ञ हैं इसका परिचय राइटर्स एंड जर्नलिस्ट एसोसिएशन के आभासी कार्यक्रम में ज्ञात हुआ। संस्था के महामंत्री देवा प्रसाद जी ने जब मुझे उनकी रचनाओं पर विचार रखने का अवसर दिया,उस समय यह भी जाना कि साहित्यकार को हम उसकी रचनाओं से समझ सकते हैं। जो साहित्य समाज का दर्पण है वही लेखक के व्यक्तित्व का भी दर्पण है।

सरल सौम्य व्यक्तित्व के धनी कवि निखिलेश्वर ने समाज के लिए लिखा है। समाज में नई क्रांति लाने के लिए कलम उठाई है। समाज की सीमाएँ नहीं होतीं। दुनिया के किसी भी कोने में निवास कर रहे मनुष्य, समान मन–हृदय रखते हैं। सुख–दुःख का समान अनुभव करते हैं। मानवाधिकार संस्थाओं के सक्रिय सदस्य, विप्लव रचयितुल संघम् (क्रांतिकारी लेखक संघ) के संस्थापक निखिलेश्वर जी को क्रांतिकारी लेखक होने के कारण कारावास का कष्ट सहना पड़ा था। आपके 'मंडुतन्न तरम्' (पीढ़ी जो जल रही है), सहित पंद्रह कविता संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। 'निखिलेश्वर कथलु, गोडालु वेनुका' (दीवारों के पीछे जेल की यादें) सहित पाँच गद्य रचनाएँ दी हैं। अब तक दस

पुस्तकों का प्रकाशन हुआ है। जिनमें 'हैदराबाद अज्ञात चरित्र पुटलु '(हैदराबाद मुक्ति संग्राम–खण्डेराव कुलकर्णी) सारा आकाश (राजेंद्र यादव), प्रमुख हैं।

शीर्षक कविता से प्रारंभ 'इतिहास के मोड़ पर' पुस्तक में 'विश्व को चुनौती' तक 56 कविताएँ विभिन्न परिपेक्ष्य में लिखी गई हैं। क्रांतिकारी लेखक के भीतर राजनीतिक दल, श्रमिक शोषण, नारी उत्पीड़न, कमजोरों के दलन, विश्व युद्धों के विरुद्ध ज्वालाओं को धधकता हुआ अनुभव किया जा सकता है। विविधा पुस्तक में गद्य और पद्य दोनों ही संकलित हैं। सुंदर अनुदित रचनाएँ हैं। एक श्रेष्ठ कवि के लिए उत्तम गद्यकार होना अनिवार्य माना गया है। यह गुण कवि निखिलेश्वर जी के लेखन में परिलक्षित होता है। 'गद्य कवीनां निकषं वदंति'' का उदाहरण देते हुए वामन ने गद्य की महत्ता सिद्ध की है। आचार्यों के अनुसार गद्य को वृत्तानुगंधी होना चाहिए अर्थात काव्य रस से परिपूर्ण गद्य। साहित्य दर्पण 6/336 में उल्लेख आता है– 'गद्यपद्यमयं काव्यों चम्पूरित्यमिधीयते'।

चंपु में देखा गया है कि गद्य और पद्य दोनों का विनियोग नीर–क्षीर वत् नहीं होता। तिलतंडुलवत् पृथक पृथक बना रहता है। पहले गद्य को ही साहित्य माना जाता था। परंतु अब गद्य पद्य दोनों ही साहित्य के अंतर्गत आते हैं। 'गद्यपद्यमयी राजस्तुतिविरूदमुच्येत!' आधुनिक साहित्य को समझने के लिए और गद्य पद्य में लेखन को समझने के लिए यहाँ केसरी कुमार के विचार को उद्धृत करना समिचीन होगा,जो पुस्तक गद्य भारती में लिखते हैं– "आधुनिक काल में गद्य पद्य के केंद्रीकृत होने से साहित्य समृद्ध होकर व्यंजक बनता जा रहा है। वैज्ञानिक युग के सांस्कृतिक अभियान की यही स्वाभाविक गति है।" इस काल में जहां गद्य में कवित्व ने प्रवेश लिया वहीं कविता भी गद्यतव को प्राप्त करती गई है।

दिगंबर कवि निखिलेश्वर जी का साहित्य के आकाश में उदय किन कारणों से हुआ इसे जानने के लिए साहित्य के इतिहास की ओर मुड़ना होगा। बहु भाषी भारत की सभी भाषाओं का अपना माधुर्य है। इन भाषाओं के मध्य तेलुगु को पूर्वी इटालियन माना जाता है। शहद जैसी इसमें मिठास है। तेलुगु भाषा का साहित्य समृद्ध है। इसका इतिहास बहु–फल–रस जैसा मधुर और कर्णप्रिय है। तेलुगू में आदि कवि वागानुशासन उपाधि प्राप्त नन्नया हैं। इन्होंने संस्कृत के छंदों को तेलुगु में प्रयोग करके पंचम वेद कहलाए जाने वाले महाभारत का अनुवाद किया।

यहाँ हमें अनुवाद की महत्ता दृष्टिगत होती है। साहित्य जगत् के विस्तार में अनुवाद की भूमिका नवीन अवधारणा नहीं है। हर काल में हमें हर भाषा के साहित्य का अन्य भाषा में अनुवाद के उदाहरण मिलते हैं। आज यह बृहद स्तर पर किया जा रहा है। वैश्वीकरण के युग में एक देश के राज्य ही नहीं विभिन्न राष्ट्र भी साहित्य के स्तर पर एक दूसरे से जुड़ रहे हैं। मातृभाषा एवं अनुवाद में निष्णांत साहित्यकार और साहित्य प्रेम एक भाषा का साहित्य अन्य भाषा में अनुदित करके उसे जन–जन तक पहुँचा रहे है। अनुवाद

साहित्य को ही नहीं साहित्यकार के स्वरूप को भी व्यापक बनाता है। अन्ना, तिक्कना और एर्रना कवित्रय अनुवाद के भी विशिष्ट कवि थे।

कवि निखिलेश्वर लिखते हैं—"मेरा विश्वास है कि भारतीय भाषाओं के आदान—प्रदान से ही भारतीय साहित्य सुसंपन्न हो सकेगा।"

एक्स—रे अवार्ड, एदुकूरी बलराम मूर्ति साहित्य पुरस्कार, सोमसुंदरम पुरस्कार, तेलुगु ब्रह्मोत्सवालु (तिरुपति) सम्मान, तेलुगु विश्वविद्यालय प्रतिभा पुरस्कार आदि से सम्मानित कवि निखिलेश्वर जी ने समकालीन तेलुगु साहित्य की विभिन्न विधाओं का अनुवाद किया है। साथ—ही—साथ हिंदी साहित्य से कविता, कहानी और उपन्यासों का तेलुगु अनुवाद किया है। समकालीन तेलुगु साहित्यकार श्री श्री की (झंझा), बैरागी (मुझे किंचित विश्वास दो), सी. नारायण रेड्डी (इसलिए) ज्वालामुखी (मंदी), डॉ. एन. गोपि (अचल चलन) चलम की (मृत्यु) अदि अनेक रचनाकारों की कविताओं का अनुवाद किया है।

दूसरी ओर कई तेलुगु भाषा के विद्वानों ने आपकी कई हस्ताक्षर रचनाओं का सुंदर अनुवाद किया है। डॉ. रंगय्या जी ने 'आमंत्रित करता हूँ, मारने की चाह, नर का माँस, शव भोगी तथा अपने ही देश में एकाकी हूँ मैं, का अनुवाद किया है। सागर तट का टी हाउस, डर चींटी का सफर कहाँ तक का क्रमशः दंडमूड़ी महीधर, डा. विजयराघव रेड्डी तथा डा .टी वसंता ने किया है। कवि ने अनुवाद को कई स्थलों पर महत्व दिया है। वे कहते हैं कि अंग्रेजी द्वारा जो अनुवाद का कार्य चल रहा है, यदि वह हिंदी के माध्यम से फैलता जाए तो, आसानी से हम अपने आपको अधिक पहचान सकेंगे।"

हिंदी के समान तेलुगू साहित्य में भी आधुनिक काल का प्रारंभ गद्य—पद्य के रूपांतरण के साथ—साथ साहित्य में सर्वथा नवीन वस्तुपरक आंदोलनों के कारण हुआ है। इसके पीछे सुधारवादी नवजागरण कारण रहा है। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक आंदोलन नवजागरण आंदोलन के हिस्से रहे हैं। 1875 से प्रारंभ आधुनिक साहित्य के लिए तेलगु में 'नव्य साहित्यमु, अभिनव साहित्यमु आदि नामकरण किए गए हैं। आधुनिक साहित्य तेलुगु में स्थिर और सर्वमान्य है। 19वीं सदी में नवजागरण ने साहित्य को नई दिशा दी। साहित्य विचारों भावों संकल्पों की शाब्दिक अभिव्यक्ति है। साहित्य में किसी—न—किसी रूप में हित के निहित होने का भाव प्रबल है। 'मूल रूप में गद्य पद्म में वाणी को लिपिवद्ध किया जाना साहित्य है'। पद्य भाव प्रधान है और गद्य विचार प्रधान।

आधुनिक तेलुगु कविता का प्रथम आंदोलन भाव कविता है। भाव प्रधान कविता का सुंदर उदाहरण 'कुसुमाश्रुबुल' की ये पंक्तियाँ है—

'कन्नुल विदु सेयु सुम कोडमु द्रुंचि विचित्र शोभलन—
जेनेल किंचु नी प्रकृति चित्तमु नेत्तुरू लोलक जेयने
नेन्नडु मून ले वोडुपु टेडलु सोकिन बुल्कीरचु पू
चिन्नल हत्यचेय दलपेट्टुर क्रूरमु नन्नु वोटि किन।'

प्रकृति का चित्रण करते समय भाव, कवियों ने आंखों से दिखाई पड़नेवाले दृश्य जगत को नहीं बल्कि उन से हृदय में उत्पन्न होनेवाले भावों को महत्व दिया। भाव कवि फूल को तोड़ने की कल्पना से भी विचलित हो उठता है। जहाँ छायावाद का समानांतर आंदोलन तेलुगु भाव कविता है वहीं अभ्युदय कविता प्रगतिवादी कविता से निकट का संबंध रखती है। हिंदी के प्रयोगवादी कविता के काल में तेलुगु में 'दिगंबर कविता' और 'विप्लव कविता' का उद्भव हुआ। तेलुगु में ही विकसित 'वचन कविता' आंदोलन, भाव कविता के बाद तेलुगु कविता में हुई छंद क्रांति है।

तेलुगु में अभ्युदय साहित्य विशिष्ट ऐतिहासिक अवस्था में लिखा गया भाव कविता की 'भावना' की जगह इस कविता में दृष्टिकोण ने स्थान ले लिया।

यह कहा जा सकता है कि वैश्विक घटनाक्रम ने अभ्युदय साहित्य को जन्म दिया। प्रथम एवं द्वितीय विश्व युद्ध की ज्वाला ने, उपनिवेशवादी–नवउपनिवेशवादी नीति ने तथा पूँजीवादी अर्थव्यवस्था ने कवियों के भीतर वैचारिक क्रांति को जन्म दिया।

पूंजीवाद के विरुद्ध मार्क्स के अतिरिक्त मूल्य, वर्ग संघर्ष तथा द्वंद्वात्मक सिद्धांतों ने, कम्युनिस्ट मैनिफेस्टो ने तथा धर्म अफीम है जैसे विचारों ने अग्नि में घी का काम किया। तेलुग में श्री श्री जैसे कवियों पर इस वाद का गहरा प्रभाव पड़ा। सन् 1976 में आंध्र अभ्युदय रचइतुल संघम की ओर से 'उदय तारा' नामक संग्रह निकाला गया। अभ्युदय कवियों द्वारा वर्णिक छंद का भी प्रयोग किया गया तथा सहज प्रवाह के लिए छंद के नियमों को तोड़ दिया। इसी काल में ही दिगंबर कविता और विप्लव कविता जैसे आंदोलन भी हुए।

सन् 1955 के चुनावो में कम्युनिस्ट पार्टी की हार के बाद यह कविता शिथिल पड़ गई। इस काव्य आंदोलन से जुड़े अनेक कवि अलग होकर दिगंबर कविता व विप्लव कविता के सूत्रधार हुए।

तेलुगु की दिगंबर कविता, अभ्युदय कविता की पूरक व क्रांतिकारिता की नयी उपज को लेकर विकसित हुई है। दिगंबर कविता आंदोलन पूर्णतया भारतीय परिवेश से जुड़ा था। इसकी चेतना में भारतीय जीवन है। तेलुगु कविता में व्याप्त निःस्तब्धता और शिथिलता को दूर करने के लिए सन् 1965 में छः युवा कवि दिगंबर कविता आंदोलन के सूत्रधार बने। तीव्र बदलाव के लिए विलक्षण क्रांतिकारी कदम उठाए गए –

1) अपने नामों में परिवर्तन

2) ऋतु नामों के साथ काव्य संग्रहों का प्रकाशन

3) अति साधारण वर्ग द्वारा पुस्तक लोकार्पण,

एक पंक्ति में कह सकते हैं– 'असंतोष से उपजा है आंदोलन दिगंबर, आह से उपजा है ये गान'।

अभ्युदय कवियों द्वारा वर्णिक छंद का भी प्रयोग किया तथा सहज प्रवाह के लिए छंद के नियमों को तोड़ दिया। यादव रेड्डी जी ने निखिलेश्वर नाम वर्ष, अधिरा ऋतु, सन् 1960 दिगंबर महीने में होटल कर्मचारी के हाथों से प्रथम संग्रह का विमोचन कराया। अपनी कविताओं के मुख्य स्वर से जन चेतना लाने का प्रयास प्रारंभ किया। सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में फैली अव्यवस्था, रूढ़िवादिता, सत्ता की लड़ाई, लोकतंत्र का विकृत स्वरूप दलतंत्र, बेरोजगारी एवं भ्रष्टाचार आदि के विरुद्ध आवाज उठाने, इस पर प्रहार करने के लिए, सड़ी–गली व्यवस्था में परिवर्तन लाने के लिए कविताओं को माध्यम बनाया। विद्रोह और आक्रोश का स्वर इनकी रचनाओं में मुखरित है। इसके पीछे सुंदर समाज का निर्माण ही मुख्य उद्देश्य रहा है।

आपने यह सिद्ध किया कि मानवता वही है जहाँ सभी को सम्मान मिले। इसके माध्यम से आपने ज्ञान को ग्रास रूट लेवल (grass root level) पर प्रसारित किया और यह भी संदेश दिया कि सच्चा साहित्य वहीं है जो साधारण मनुष्य के जीवन से जुड़ा है जिसमें संवेदना हो। जो वेदना को, अभावों को भरने की क्षमता रखता है। जिसमें समाज की दूषित परंपराओं के विरुद्ध आवाज उठाने का साहस है। त्रिपुरनेनि श्रीनिवास की पंक्तियाँ उद्धृत करते हुए निखिलेश्वर जी लिखते हैं–

अक्षर को दूध पिलाकर/ शब्दों का अन्न देकर/ वाक्य बनाना होगा/ वाक्य को शिक्षा देकर/ कविता बनानी होगी/ कविता को जीवन देकर /हथियार बनाना होगा।

उनका मानना है कि कविता यदि पाठक को बिना साथ लिए चलती है या अस्पष्टता में खो जाती है तो उसकी सार्थकता संदेह में रहती है। कविता हृदय की भाषा है, इसलिए वह किसी भी भाषा के माध्यम से संप्रेषित की जा सकती है। साथ ही निखिलेश्वर यह कहते हैं कि किसी भी साहित्य में संघर्षमय वर्तमान का सही स्वर खोजना है तो कविता की ओर मुड़ना पड़ता है। निखिलेश्वर क्रांतिकारी यात्रा के वह युगीन कवि हैं जिनका उच्च संकल्प में विश्वास है। उनका मानना है कि जीवन के गहरे अर्थ को समझ कर हम उचित दिशा की ओर बढ़ सकते हैं। एक संकल्प हमें हमारे जीने का उद्देश्य बताता है वह है–'स्वयं के लिए नहीं सभी के लिए जीना है।' इसका अर्थ है सभी को जीवन का अधिकार, अभावों से मुक्ति। हर श्रमजीवी वर्ग को हर प्रकार की आधारभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराना। शोषण से मुक्ति दिलाना है।

दिगंबर पीढ़ी के विषय में निखिलेश्वर लिखते हैं–

'मेरी यह पीढ़ी आकाश तले स्वच्छ मेघ सी दुनिया की धूल को झटकते रास्ते भर ढ़ो रही है प्रश्नों के सलीब।'

इन पंक्तियों में वे संदेश दे रहे हैं कि दिगंबर कवि इस आकाश तले स्वच्छ मेघ–सा जो संसार है, जो दुनिया है, उस पर विकृतियों की जो धूल जम गई है उसको साफ कर झटक कर पुनः निर्मल बनाने के प्रयास में जुटी

है। साथ ही ऐसे प्रश्नों को लेकर चल रही है जो शांत मन को विचलित करते रहते हैं।

आपकी कलम से सृजित 'टूटी हुई तूलिका' समाज में व्याप्त विडंबनाओं के गहरे रंगों को दर्शाती है। शब्दों के सुंदर सागर में आपने मनुष्य की हर प्रकृति, प्रवृत्ति और विकृति को उजागर किया है। मननशील भविष्य के लिए चिंतित कवि निखिलेश्वर जी की संवेदनशील कविता की सुंदर पंक्तियाँ दृश्य को साकार करती प्रतीत होती हैं–

तीन शांत सागर, एक श्वेत हिमालय– मेरा प्रयत्न था कि चारों सीमाओं के बीच व्याप्त एक महोन्नत मूर्ति का चित्र उतारूँ।

आगे कहते हैं, क्यों एक सुंदर स्वप्न को साकार बनाने में असमर्थ हूँ मैं। कारण मालूम नहीं, चित्रपट पर मूर्तिमान हो जाता है एक अर्तनाद। अचानक एक तेज खंजर, गर्म बंदूक, तोप की आवाज, घाव, खून, मृत्यु। मृत्यु... दृश्यों को देख फाड़ देता हूँ चित्रपट को, सुंदर स्वप्न को संजोए एक नए चित्र के लिए प्रयास करता हूँ पुनः पुनः।

दिगंबर पीढ़ी के कवि निखिलेश्वर की ये पंक्तियाँ उनके कोमल मनोभावों को दर्शाती हैं तभी तो वे द्रवित हृदय से कहते हैं कि पृथ्वी जिसके तीन ओर शांत सागर हिलोरे ले रहा है। श्वेत हिमालय अडिग खड़ा हुआ है। ऐसी पृथ्वी पर ऐसा चित्र उकेरूं जो महानतम हो, श्रेष्ठ हो। अपने उस सुंदर स्वप्न को साकार करूँ, जहाँ सभी मिल जुल कर प्रेम से रहते हों। किसी के प्रति कोई दुर्भावना न हो। वे कहते है जब भी मैं इस स्वप्न को साकार करने बढ़ता हूँ, तभी समाज के किसी कोने में घृणा द्वेष की आग भड़क उठती है। एक दूसरे के शत्रु बने लोग घात प्रतिघात करते दिखाई देते हैं। मानव रक्त बहाने लगता है। जब अपने समक्ष मृत्यु को साक्षात खड़ा पाता हूँ, तब जो भी सुंदरतम चित्र मैने अपने मानस पटल पर उकेरा है उसे फाड़ देता हूँ।

परंतु कवि निखिलेश्वर हार नहीं मानते। वे पुनः नए सुंदर स्वप्न गढ़ने के लिए कलम उठा लेते हैं। भावों से भर कर लिखते हैं– जब प्रकृति शोक से मलिन नहीं होगी/ जब हर तरफ बरसती हरी भरी मुस्कानें होंगी/ तब प्रवेश करूँगा प्रशांत मेघों की छाया में/ सप्त वर्णों से सुशोभित महोन्नत मूर्ति का चित्र लिए आऊँगा आपके सामने।

युग कवि निखिलेश्वर की उत्कृष्ट रचना की उपरोक्त पंक्तियों को पढ़ते ही मुझे डॉ. राधाकृष्णन की इन पंक्तियों का स्मरण हो आया, जिन्होंने लिखा था– '"मानव का दानव होना उसकी हार है। मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है और मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है।"'

कवि भारी मन से कहते हैं, जहाँ हम मानव अधिकारों की रक्षा की बात कर रहे हैं, वैश्वीकरण को बढ़ावा दे रहे हैं वहाँ आतंकवाद का राक्षस विश्व में फैल कर प्राणों को फूँक रहा है'। कट्टरपंथी सोच मानवीय संस्कृति को ध्वस्त कर रही है। विश्व का एक नग्न सत्य यह है कि आंतकवाद का कोई एक चेहरा नहीं है। यह शांति से हल में विश्वास नहीं रखता। फेनेटिक आतंकवाद

दिशाहीन है। इसका परिणाम केवल विनाश है। ऐसी प्रवृत्ति को बढ़ने से रोकना होगा।

कविता 'आमंत्रित करता हूँ' की पंक्तियों में कवि मतदान के कर्तव्य को स्वीकार करते हैं परंतु यह भी सचेत करते हैं कि सत्ताधारी समय के साथी हैं। इनकी लुभावनी बातों में मत उलझना।

पाँच वर्षों में लिए केवल/ एक बार और वह भी/ एक पल के लिए/ कागज के वोट के हक से/ पाँच वर्ष अपना गुलाम बना/राजनीति के व्याभिचार के शिकार न बनें/

कामांधों के नेत्रों को उखाड़ फेंकने के लिए, जाति धर्म का राग अलापते कवि सम्राटों के तर्क को मटियामेट करने के लिए अंतिम सांस को/ एक बार रक्ताभिषेक से बचाने के लिए संपूर्ण सुंदर समता की स्थापना के लिए राजनीति के व्यभिचार के शिकार न बनें।

दिगंबर कवि निखिलेश्वर की ये पंक्तियाँ शासन सत्ता, एलीट वर्ग, और अपने स्वार्थ के लिए जात–पात को बढ़ावा देकर समाज को खोखला करने वालों पर अंकुश लगाने के लिए आम जनमानस को आमंत्रित करती हैं।

वास्तव में लोकतंत्र के मूल्यों की रक्षा करने के लिए लिखी गईं ये सशक्त पंक्तियाँ दिगंबर कविता का सौंदर्य हैं।

'मारने की चाह' और 'नर का माँस' कविताओं में उत्तर–दक्षिण वियतनाम केंद्र में हैं। चारों और शवों और शवों के अंगों से उद्विग्न कवि की पंक्तियाँ पाठक को बेचैन कर देती हैं–

'अस्त्रों के शवों का जुलूस अग्रसर हो रहा है शव पूजा के लिए। इसके पश्चात दृष्टि जाती है निराशा, हताशा की मनःस्थिति में लिखी कविता 'अपने ही देश में एकाकी हूँ मैं' की इन पंक्तियों पर–

मेरे देश ने मेरे आगे उलझनें ही उलझनें पेश कीं/ अदम्य मुख / बेरोजगारी के शूल/....हज़ारों वर्षों की उन्नति/मेरी ही आँखों के आगे मेरी सोंच के प्रहार से शिथिल हो गई/ इतिहास में कहीं उसे जगह न मिली।

प्रेम, प्रकृति सौदर्य पर कविताएँ हर कवि की लेखनी के विषय रहते हैं। इन पर सर्वाधिक लिखा गया है।

परंतु निखिलेश्वर जी ने प्रतिदिन देश विदेश में घटित होने वाली असहनीय स्थितियों पर लेखनी चलाई है।

एक श्रेष्ठ साहित्यकार वही है जो समाज से जुड़ करके लिखता है। कवि निखिलेश्वर की कविताओं में वैविध्य भी है, गहनता भी है, और हृदय की विशालता भी। तभी उन्होंने मानवीय अनुभूतियों को कलम से काव्य में उकेरा है। चीन की यात्रा के अनुभवों को साथ लेकर जब कवि भारत लौटे तब उन्होंने वहाँ की स्थिति को अभिव्यक्त करते हुए ये पंक्तियाँ लिखीं –

मासूम बच्चों के लाल–लाल गालों में/ विश्व मानव स्नेह के लिए/ हाथ फैला रहा है जनवादी चीन।

सफर के पहले (और लौटने के बाद) कविता की पंक्तियाँ इस सच से साक्षात्कार कराती हैं–

हर सफर के पहले/उम्मीदों के पहाड़/ दूर–दूर से ललचाते हैं और सफर से लौटने के बाद लगा दूर के पहाड़ सुहाने होते हैं। उनकी इस पंक्ति में दार्शनिकता दृष्टिगत होती है।

आप का मानना है– स्वप्न में खो जाना अपराध नहीं है/ केवल जीने के लिए/ अन्याय के साथ जीना महा अपराध है।

निखिलेश्वर सत्य पर पड़े धुंधले आवरण को हटा कर हमें यथार्थ से और कड़वे सच से परिचित कराते हैं। उनका मानना है कि छद्म जीवन पलायनवादिता है।

विकृत समाज की चर्चा करते हुए कवि प्रकृति कोप का जिम्मेदार मानव को मानते हुए लिखते हैं, जहाँ खिलते फूल और बहती नदी की हम चर्चा करते हैं वही प्रकृति दोहन भी कड़वा सत्य है। तकनीकी प्रगति ने इंसान की जिंदगी में गति तो दी है लेकिन गीत को छीन लिया है। संप्रेषण की सुविधाएँ बढ़ाईं लेकिन संबंधों के अपनत्व का स्पर्श छीन लिया। इस विषय को, मर्मज्ञ कवि ने मर्मस्पर्शी कविता 'आतंकवाद' में उठाया है –

विज्ञान की विजय यात्रा में/ सर्वत्र फैला हुआ साइबर वेब / भयभीत असहाय जीवन/ जहां निर्भय खड़ा होना था/ वहीं डर से पिघल रहा है आदमी।

आज अधिकांश लोग विशेषकर युवा पीढ़ी मूल्यों से दूर होती जा रही है। आधुनिक जीवन शैली में जड़ों से कट रही है। प्रकृति उसे बार–बार शिक्षा दे रही है। आतंकवाद, प्रकृति कोप और असुरक्षित भविष्य से डर लिए जी रहा है।

कवि की रचनाओं से साक्षात्कार करते हुए डॉ. ए. पी जे अब्दुल कलाम की पंक्तियाँ उद्धृत करने से स्वयं को नहीं रोक पा रही–

सुंदर हैं वे हाथ/ सृजन करते हैं जो सुख से/ धीरज से/ सच से /साहस से, हर क्षण, हर पल / हर दिन, हर युग।

लोकतंत्र की परिभाषा बदलने को अभी बहुत दूर चलना है और कई तरह के युद्ध लड़ने हैं...।

निखिलेश्वर जी में दिगंबर कवि का अलग ही स्वरूप दिखा। कलम के हथियार से समाज में फैली विकृतियों को काटना अवश्य चाहते हैं, दूषित परंपराओं पर चोट भी करते हैं, सत्ता की नीतियों पर प्रहार भी करते हैं परंतु इनकी कविताओं की व्याकुलता में कोमलता के दर्शन होते हैं। कलम हथियार अवश्य है परंतु आक्रोश नहीं। हर रचना में संवेदनशीलता, मानवीयता का सौंदर्य है। जहाँ वे 'आँसू बहा रहा है सूर्य' में लिखते हैं –

नए फॉसीवादियों के इशारे भर से आसमान में मंडराते हैं लोहे के गिद्ध/ प्रदूषण के जाल में जकड़े मनुष्य को देखकर/ आँसू बहा रहा है सूर्य। वहीं उनकी लेखनी नियमित जीवन का संदेश देते हुए प्रातः किरण और अस्ताचल को जाते सूर्य के सौंदर्य का चित्रण भी खूबसूरती से करती है।

कवि निखिलेश्वर जी राष्ट्र की सीमाओं से परे संपूर्ण विश्व की चिंता हृदय में रखते हैं। उनकी कामना है– भूमंडल पर बरस कर बहती जाए स्नेह अविरल सलिल धारा–सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे संतु निरामया सर्वे भद्राणि पश्यंतु मा कश्चिद् दुःख भाग भवेद।

निखिलेश्वर कवि के हृदय में संवेदना और सरसता का संगम है। पं. रविशंकर जी के सितार के तारों की झंकार में संगीत की सुर लहरियों में डूब कुछ समय के लिए सब भुला कर लिखते हैं– तुम्हारे नख की एक छेड़ से झूम कर बरसने वाले सप्त–स्वर... /सुदूर पर्वत शिखरों के पीछे समस्त पृथ्वी पर घूम कर / प्रतिस्पंदित होती हुई विश्व नाद में/ त कि ट तो म ता ता` के ताल में कूद कर मैं उन्मिल प्रकंपित तारों में....।

प्रकृति के सुंदर रूप, संगीत की लय ताल से अभिभूत कवि निखिलेश्वर ने नव परिवर्तन का सूत्र थामे रखा है। नई आशाओं और संभावनाओं को लेकर रचनाओं में बढ़ते हैं–

चींटी का सफर कहाँ तक? निरंतर चलनशील चींटी का सफर /आखिर कितनी दूर–/किसी से पूछा जाए तो क्या कहेंगे?/ हमारे कदमों के नीचे दबाकर भी/ धूल को झटक कर पुनः उठकर/ अपनी ही रफ्तार में वह पिपिलिकम–.....

नए विश्वास के संग कहते हैं –

सभी तो मानते हैं कि/ यह जीवन शाश्वत नहीं /जीने की राह पर ऊँच नीच से लड़ना सीखा/ एक बेहतर दुनिया के लिए।

हम मर मिट भी जाएँ/ यहीं रहेंगे नई पीढ़ी के नये विश्वासों के संग/ हम तो सदैव जिंदा रहेंगे।

साहित्य को अपनी विशिष्ट शैली से समृद्ध करने वाले युगीन साहित्यकार कवि निखिलेश्वर को समर्पित पंक्तियाँ–

'हर शब्द, धार चिंतन की बहाता है,
विचारों के विविध रंग खिलाता है।
करता जब मनुष्य, मनुष्यता का त्याग,
यही शब्द, लेखनी से मशाल जलाता है।।'

संदर्भ सूची :

1. निखिलेश्वर, इतिहास के मोड़ पर, मिलिंद प्रकाशन, हैदराबाद
2. निखिलेश्वर, विविधा, 2009, क्षितिज प्रकाशन, दिल्ली
3. डॉ. एम. रंगय्या (अनुवादक), तेलुगु की दिगंबर कविता, 2004, प्रतिभा प्रकाशन, सिकंदराबाद–03

दिगंबर कवि निखिलेश्वर का व्यक्तित्व व कृतित्व

पुट्टपर्ति नाग पद्मिनी

शोध सार : निखिलेश्वर जी को देखने से पता चलता है कि वे बड़े ही सीधे–साधे स्वाभाव के हैं। सादगी उनकी नस–नस में है। उनकी कविताओं में जो धर्माग्रह है, वह भी स्वच्छ तथा कठोर सत्य है। स्पष्ट है। तीखा है। उनकी भावनाओं में जो वेदना झलकती है, वह भी असली है, नकली नहीं।

निखिलेश्वर जी आजकल की कविता तथा कवियों को देखते हुए अचरज में पड़ जाते हैं कि इस जमाने के कवि नाम और कमाई के पीछे पड़ जा रहे हैं। 'विश्व श्रेय : काव्यं' वाले उत्तम लक्ष्य को इनकी कविताओं में ढूँढ़ पाना मुश्किल है। लेश मात्र भी देश की चिंता नहीं है इनमें! छोटी–छोटी कविताएँ लिखकर बड़ा नाम कामना इनका लक्ष्य है। कलम के सिपाही आज पुरस्कारों और ओहदों के सिपाही हो गए हैं।

बीज शब्द : कविता, कवि, साहित्य, दिगंबर कविता, तेलुगु

अशेष वाक् जाड्य मलापहंत्री / नवं नवं सुष्ठु सुवाक्य दायिनी
ममैव जिह्वाग्र सुरंग वर्तिनी / भव प्रसन्ना वदने च मे श्री :

'लक्ष्मी हृदय' के इस श्लोक का तात्पर्य है, 'मेरी वाणी के दोषों का परिमार्जन करो माँ! प्रसन्न तथा कल्याणकारी वाणी प्रदान करो!' हर किसी की प्रार्थना, मनोकामना यही हो तो संसार भर में प्रसन्नता की जल नीतियों की कमी ही नहीं होगी।

आचार्य विश्वनाथ, जगन्नाथ पंडित रायलु, भामह जैसे प्राचीन विद्वानों से आज तक के आचार्य रामचंद्र शुक्ल तक के महानुभावों ने काव्य की परिभाषा को अक्षर रूप दिया।

आचार्य मम्मट ने–

'काव्यं यशसे अर्थ कृते व्यवहाराविदे शिवेऽतरक्षतये
सद्य : पर निवृत्तये, कान्ता सम्मिता तयोपदेश युजे'

कहते हुए काव्य के प्रयोजनों को जिस तरह निबद्ध किया, वे ही आज तक आदिकतय अनुसरणीय हैं।

'विश्व श्रेय : काव्यम् , सत्यम् शिवम् सुन्दरम्' की भावना से सम्पन्न उन उन काव्यों के काल से गुजरते गुजरते हम आज वर्ग सेवा, माने स्त्रीवाद, माइनॉरिटी वाद 'दलितवाद' इत्यादि अनेक वादों की कविताओं के समाज में जीवन यापन कर रहे हैं।

लेकिन बुद्धिजीवी हमें तो सतर्क रहने की सूचनाएँ देते ही रहते हैं कुछ इस तरह,' अतीत की बुनियाद पर भावी भवनों का निर्माण करते चलो।' क्योंकि इस तरह के निर्माण ही सुदृढ़ तथा कई दशकों तक टिक कर रहते हैं।

इसी भावना को परिपुष्ट करते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान ने दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में केंद्र साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत दो तेलुगु कवियों के काव्यों पर प्रकाश डालने तथा उनके संदेश को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने का निर्णय ले लिया और वे प्रतिष्ठित कवि हैं आचार्य एन. गोपी और डॉ. निखिलेश्वर जी।

डॉ. निखिलेश्वर जी के व्यक्तित्व व कृतित्व के बारे में प्रपत्र समर्पित करने का अवसर मुझे देने हेतु मैं, डॉ. पुट्टपर्ति नाग पद्मिनी दिल से आभार प्रकट करना चाहूँगी।

डॉ. निखिलेश्वर जी तेलुगु साहित्य के दिगंबर कविता के छः मूल प्रवर्तकों में से एक हैं, हिंदी साहित्यिक क्षेत्र में जिसे 'अकविता' कहते हैं।

उन्नीस सौ पैंसठ वत्सर के मई महीने में, (06–05–1965) छठवी तारीख पर, आधी रात, बारह बजे तत्कालीन आंध्र प्रदेश राज्य की राजधानी हैदराबाद महानगर में, सर्व श्री महा स्वप्न, चेर बंडा राजू, भैरवैय्या, निखिलेश्वर, नग्न मुनि, ज्वाला मुखी– इन छः कवियों ने मिलकर इस धरा के आविर्भाव की उद्घोषणा की। उन्होंने कहा कि समाज में फैली कुरीतियों को शॉक ट्रीटमेन्ट (Shock treatment) देने के लिए इस धारा का श्रीगणेश हो रहा है।

इस संदर्भ में आचार्य के. के. रंगनाथाचार्य के विचार ध्यान देने योग्य हैं। 'आजकल का मानव मस्तिष्क, अचेतनता में डूब गया है। इसमें चेतनता लाने के लिए शॉक ट्रीटमेंट के सिवा दूसरा चारा नहीं है। इस कारण इन कवियों ने कडुवे शब्दों में तीव्र अभिव्यक्ति, यत्र तत्र अश्लील शब्दों को भी अपनाया।

इन कवियों ने अपने प्रथम संकलन का लोकार्पण, रिक्शा चलानेवाले नामपल्ली पांडु से करवाया। इनके दूसरे संकलन का लोकार्पण, विजयवाड़ा शहर के एक होटल क्लीनर के द्वारा हुआ। अज्ञान, अविद्या, अशक्तता के आसरे पर, देश को लूट रहे राजनीतिक दलों का सामना 'दिक्' नामक कविता संकलन द्वारा इन्होंने किया जिसका लोकार्पण 1968 जून में विशाखापट्टनम की एक भिखारिन यडमनूरि यशोदा द्वारा हुआ।

ध्यान देने की बात यह है कि इस आंदोलन की उपलब्धियों को निम्नवत परखना उचित होगा।

1. उन दिनों की जीवन स्थिति पर इन कवियों के हृदयों में तीव्र असहनता है। आम जनता जिस तरह इन परिस्थितियों से जूझ रही है, इसे देखते हुए चुप रहना इनके बस की बात न रही। संप्रदायवादी भावना पर भी इन्होंने अपना तीव्र क्रोध प्रकटकर जनता को उन पर दावा बोलने को प्रोत्साहित किया।

2. उन दिनों तेलुगु साहित्य में, छंद, मुक्तक, तथा वचन कविता खूब फैली हुई थी। लेकिन इन्होंने सीधे पाठक के हृदय में घुस जाने के लिए, अभिव्यक्ति से सम्बन्धित सम्प्रदायों के विरुद्ध अपना एक अलग ही रास्ता चुना।

3. भाषा के विषय में इन्होंने निर्णय ले लिया कि समाज को सजग करने के लिए कुछ अश्लील शब्दावली को भी अपनाएँ ताकि अपने भावों की तीव्रता–पाठक को सही तरह समझ में आएँ। उनका कहना था कि उन दिनों की सामाजिक परिस्थितियाँ। अश्लील शब्दों से भी बदतर थीं। गौर करने की बात यह भी है कि इन कवियों ने अंग्रेजी शब्दों के प्रयोग को अधिकतर नकारा जो उन दिनों की वचन कविता की प्रथा थी।

4. तब तक मात्र मध्यम वर्गीय पढ़े लिखे लोगों में ही व्याप्त छंदो मुक्त कविता को अपनी पाठन पद्धति के द्वारा अकवितावादियों ने सामान्य जनता के बीच पहुँचा दिया। इस तरह उनकी सभाओं में लाखों जनता, अत्यंत उत्साह तथा श्रद्धा से भाग लेने लगी।

तेलुगु के विख्यात आलोचक, श्री राचमल्लु रामचंद्र रेड्डी ने दिगंबर कविता में अश्लील शब्दों के प्रयोग का तीव्र स्वर में विरोध किया।

निखिलेश्वर के साथियों की कविता धारा का नाम तेलुगु में दिगंबर कविता थी, जिसका शाब्दिक अर्थ है, नग्न कविता (Naked Poetry)। लेकिन दिगंबर कवी के अन्वय के अनुसार 'दिक्' माने रास्ते को सूचित करनेवाली कविता।' किसी तरह का अप्राकृतिक आच्छादन न होने वाली स्वच्छ कविता। निर्भीक कविता जो मानव में जीवंतता भरने का लक्ष्य लेकर उद्भवित हुई है। सीमा रहित कविता जो विश्वंतराल के हृदयों में गूंजती है। बीमार फेफड़ों को चीरकर कास्मिक किरणों से शॉक ट्रीटमेंट देनेवाली कविता है।

ब्रिटेन के एंग्री एंग मेन (Angry Young Man) जैसे निराश तथा उदासीन रहने वाले नहीं हैं ये कवि। तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था में सड़ी हुई कुरीतियों का पर्दाफाश कर नयी व्यवस्था को आह्वानित करने की प्रेरणा देने वाली कविता है यह दिगंबर कविता। एक नयी पीढ़ी के सूरज की प्रतीक्षा करनेवाले आशावादी कवि हैं ये दिगंबर कवि।

रिक्शेवाले से या भिखारिन से कविता का लोकार्पण करवाने का अर्थ है, समाज के इस निम्न वर्गीय जनता से अपनी पहचान (Identity) को दिखाना! मंत्रियों, प्रमुख व्यक्तियों से होनेवाले लोकार्पण कार्यक्रमों की अवहेलना करना या सामना करना।

अधिकतर आलोचकों के विचारानुसार इस दिगंबर कविता धारा पर Beetnicks या एंग्री यंग मेन या अन्नार्ती कविता की व्यक्तिगत विशृंखलता का प्रभाव है। लेकिन विख्यात आलोचक के. के. रंगनाथाचार्य की दृष्टि में Beetnicks : Angry Young में कवियों की विश्रृंखलता दिगंबर कविता में नहीं है। तिस पर उन कवियों के मार्ग, बीच रास्ते में बंद हो गए। दिगंबर कविता में ऐसा नहीं है।

दिगंबर कवियों ने क्रमशः बिखरकर, सैद्धांतिक दृष्टि से अपने अपने भावों को Marxist समाज की आशा से सजाया। इसी लक्ष्य के साथ अभी भी चेतनता से कविता के मार्ग में उनमें से कुछ जीवित कवि आगे चल ही रहे हैं बिना किसी अवरोध के, जिनमें निखिलेश्वर जी भी एक हैं।

आइए अब निखिलेश्वर जी की कुछ कविताओं का स्वाद ले लें।

कविता के बारे में निखिलेश्वर जी क्या कहते हैं? 'कविता किसी भी भाषा में हो, यदि हृदय और मेधा के समन्वय से प्रतिफलित हो तो वह सदैव जीवित रहेगी। वैसे तो कविता, हृदय की भाषा है। इसीलिए किसी भी भाषा के माध्यम से सम्प्रेषित की जा सकती है। अनुवाद भावात्मक तथा सही हो।' सफल कवि तथा अनुवादक के रूप में निखिलेश्वर जी के ये विचार तो अत्यंत महत्वपूर्ण हैं ही। तथा अनुवादकों को मार्ग दर्शन भी दे रहे हैं।

'एक आस्था के लिए
आँख बंद किए
बलि चढ़ता हुआ कोई
विज्ञान की विजय यात्रा में
सर्वत्र फैलता हुआ साइबर वेब
भयभीत असहाय जीवन
जहाँ निर्भय खड़ा होना था
वहीं डर से पिघल रहा आदमी।'

स्वतंत्र वार्ता – में प्रकाशित (2002)

दिगंबर कविता समूह से बाहर आकर क्रांतिकारी कविता के भाव जाल को अपनाए हुए निखिलेश्वर जी की इस कविता में भी आम आदमी के लिए वही तड़प तथा वेदना जीवित है।

'जैसे भी हो, जी लेने में निपुण
बस वही आज के पाण्डव हैं,
चौकीदार बने,
नीति सूत्रों को जपनेवाले नए युधिष्ठिर।'

हिंदी मिलाप (1993 में प्रकाशित)

संप्रदाय वाद का अनुसरण निखिलेश्वर जी से सहा नहीं जाता। इस कविता में मिथकीय संकेतों द्वारा आजकल के मानव की युधिष्ठिरता पर व्यंग्य बाण उन्होंने चलाया।

'दिगंबर पीढ़ी' नामक कविता में वे कहते हैं–

'घड़ियों के म्यूजियम में
कभी के मौन हुए
बीते हुए कालकण्ठ के स्वर
अर्थ हीन गधे के भार से लदे
आधुनिकों के ये अपरिचित चेहरे।'

इन्हीं भावों की गूँज, 'अपने देश में एकाकी हूँ मैं' कविता में भी सुनाई देती है। 'अपने देश में एकाकी हूँ मैं' में!

'सदा आगे खड़े हो / प्रश्न करता है हैमलेट
नंगी तलवार लेकर / मेरे देश ने
मेरे आगे उलझनों को / प्रस्तुत किया,
वह है फांसी का फंदा / रोज सर पर
तनाव बढ़ाती / प्रबल भूख
बेकारी के शूल / उन शूलों में
सुंदर मुखवाले फूल / विकसित पंखुड़ियों के बीच
सूरज मुखी के फूल–सा / पंख उड़ाए गए
असहाय स्थिति में विषाद / विषाद के तारों के बीच
सूरज मुखी के फूल–सा / लटकता चाँद
एक सफ़ेद चमगादड!'

चाँद को सफ़ेद चमगादड बनाना तो निखिलेश्वर जी की उत्कृष्ट कल्पना शक्ति का परिचय देता है।

'शव भोगी' नामक कविता में वे शव भोगी कहते हैं किन किन को?

नेतागण जो शव के कपड़ों को खोलते हैं। गुरु जनों को जो आर्ष धर्म के नाम पर जाती धर्म की सीख देकर अरण्य तत्व को बढ़ाते हैं, बुद्धि जीवियों को जो बुद्धि की कसरत से, गंदगी के चारों ओर चक्कर लगाते रीढ़–हीन हैं।

'आमंत्रित करता हूँ 'मारने की चाह' 'मनुष्य का मांस' कविताएँ भी दिगंबर आंदोलन के सिद्धांतों के अनुकूल हैं जहाँ वे मजहबों, वादों से परे अंतर राष्ट्रीय राजनीति के क्षेत्र में आदमी को रखकर वादों के फांसों से जुआ खेलने के काम को तुरंत बंद कर देना चाहते हैं।

(दिगंबर कविता के बिखर जाने के बाद भी निखिलेश्वर जी में समाज के प्रति आवेग में कोई अंतर नहीं आया।

संघर्ष ही तो मूल सूत्र है यहाँ
बिना सामना किए
कीड़े से बदतर है जीवन यहाँ।'

लोकमत समाचार में (2002 में प्रकाशित)

विदेश यात्रा के दौरान लिखी गई निम्न कविता को देखिए–

'अटलांटिक के उस पार'
साफ़ सुधरी सडकों का जंगल है
तेज रफ़्तार मोटर गाड़ियों के बीच
आदमी गायब है,
अटलांटिक महा सागर को
पार करने पर भी
अपने आप में हर कोई अजनबी

सुख सुविधाओं की दौड़ में
स्वदेशी भी बन गए हैं विदेशी।'

जी हाँ! वैश्वीकरण के माया जाल में फंसने के बाद मानव का गायब होना तो अनिवार्य–सा हो गया है। अमेरिका या अन्य विदेशों की बात छोड़िए, हैदराबाद के हाई टेक सिटी में भी यही दृश्य आज कल देखने को मिल रहा है।

निखिलेश्वर जी की दूर दर्शिता को प्रणाम अर्पित कर चलिए आगे बढ़ें।

कवि की दृष्टि तो बहुत तीष्ण होती है। जहाँ रवि न पहुँच सकता है, वहां कवि की दृष्टि पहुँच जाती है अनायास! निखिलेश्वर जी चींटी की शक्ति को सराह रहें हैं 2018 में प्रकाशित इस तेलुगु कविता में, जिसकी हिंदी अनुवादक हैं डॉ. टी. वसंता।

'आखिर चींटी का सफर कहाँ तक?
चींटी से पूछोगे तो क्या कहेगी?
घास पूस से बतियाती
मिट्टी की परतों की सरिताओं को
पार करती
छोटे–छोटे काकर पाकर पर चलती उतरती
निरंतर चलन शील चींटी का सफर
आखिर कितनी दूर?'

किसी से पुछा जाए तो क्या कहें?' इस तरह चींटी का जीवन हर पल प्रश्नार्थक ही है न? लेकिन, निखिलेश्वर जी अगर यहीं पर रुकेंगे तो उनकी कवितात्मक शक्ति का परिचय हमें कैसे मिलेगा? इसीलिए वे आगे कहते हैं–

'हाथी के कान में घुस गई तो
पहाड़ सा हाथी छटपटाता है
बिखर बिखर जाता हैं!
यह है चींटी की आसमान शक्ति!'

यहाँ चींटी को प्रतीकात्मक रूप में ले लिया गया है जो धर्माग्रह से नाराज आम आदमी है।

चींटी की कहानी सुनने के बाद सूरज की तरफ निखिलेश्वर जी अपनी दृष्टि दौडाते हैं जो आँसू बहा रहा है। आखिर क्यों ?

'इस मिट्टी पर अधिकार जमाने के
राजनीति की शतरंज के खिलाडी
फंसे हैं, आधिपत्य के युद्ध में
मात खा गया
इंसानियत का मोहरा
नए फ़ासी वादियों के इशारे भर से
आस्मान पर मंडराते हैं

लोहे के गिद्ध
प्रदूषण के जाल में
जकड़े मनुष्य को देखकर
आंसू बहा रहा है सूर्य !
लोहे का गिद्ध मात खाया, इंसानियत का मोहरा
प्रदूषण के जाल में फंसा आदमी।'

यह सब देखकर निखिलेश्वर जी का सूरज आँसू बहा रहा है।

1998 में प्रकाशित इस कविता के बाद निखिलेश्वर जी कदम आगे बढ़ाते हैं, कहीं दूर दिखे विमोचन शब्दों के भ्रम जाल में भाग रहे मन को टटोलते हुए 2002 वाली अपनी कविता 'फिर भी वही संकट' में।

2002 में ही प्रकाशित 'नर संहार' नामक कविता में शव राजनीति की राख में व्यापारी दांव पेचों का खेल देखते हुए वे हुंकारते हैं। मानवी अंतर्मन के करुणा जल से इस नफरत की आग को बुझाने के लिए बुलाते हैं, सभी लोगों को!

2012 में प्रकाशित 'आखिर कब तक' में भी उनकी हृदय वेदना काम नहीं हुई है। इंतज़ार की घड़ियाँ, इनक्विलाब में शामिल होने की उनकी प्रतीक्षा अभी भी जारी है।

2014 में 'अतीत के द्वार पर' कविता में भविष्य के प्रति अटूट आस्था व्यक्त कर रहे हैं वे कुछ इस तरह!

'घायल पल
अतीत के द्वार पर
समय से कटकर
कब तक जी सकोगे?
पिघलती राहों पर
चलते चलते
गिरते गिरते
कब तक वहीं रहोगे?
कहीं न कहीं
हम सफर कोई
मिल ही जाएगा और
घावों पर मरहम लग ही जाएगा!'

2016 की कविता 'नए विश्वास के संग' में भी इसी आशा का सहारा लेकर निखिलेश्वर जी आगे बढ़ते हैं।

'एक बेहतर दुनिया के लिए
मर मिट भी जाएंगे
नई पीढ़ी के नए विश्वासों के संग
हम तो सदैव ज़िंदा ही रहेंगे।'

मिथकीय संकेतों द्वारा आधुनिक जीवन को नाप रहे हैं कवि, सं.2000 में प्रकाशित कविता में कुछ इस तरह–

'प्रगति के यजन कुंड में
भस्म होती श्रम शक्ति
ऊपर से फेंका गया प्रसाद
शेष याग फल!'

निखिलेश्वर जी की कविताओं के झरोखों से उनके जीवन की झाँकियों को परखने का प्रयत्न करें।

उन्नीस सौ अड़तालीस साल में तेलंगाना के यादाद्रि जिले में इनका जन्म हुआ। के.यादव रेड्डी इनका नाम रखा गया। इनकी पढ़ाई बी.ए., बी.एड. हिंदी 'भूषण' के बाद वे कुछ दिन सेना में, तदनंतर क्रमशः गोलकोंडा पत्रिका में तथा केशव मेमोरियल हाई स्कूल में अध्यापन वृत्ति में उन्नीस सौ छियानवे तक कार्यरत रहे। कविता, आलेख, अनुवाद विधाओं में अपना जन्म नाम के.यादव रेड्डी से ही विख्यात रहे। दिगंबर कविता आंदोलन की ओर आकृष्ट होकर वे 'निखिलेश्वर' बन गए। उन्नीस सौ पैंसठ से उन्नीस सौ सत्तर तक तीन संकलनों में रिबेल पोएट्स मूवमेंट (Rebel poet's movement) की भाव धारा में ही कविताएँ लिखते रहे। दिगंबर कविता आंदोलन ने इस बीच सैद्धांतिक कारणों से अपना मार्ग बदलना चाहा।

तदनंतर निखिलेश्वर जी स्वतंत्र रूप से Revolutionery WritersAssociation से जुड़कर अपनी कविताओं द्वारा धर्मग्रह को व्यक्त करते ही रहे। समाज में फैलती स्तब्धता, मूल्य खोती मानवता, धन की कमाई पर अत्याशा, समाज के प्रति निरासक्तता आदि के विरोध में अपना सशक्त स्वर वे सुनाते ही रहे।

इस बीच MISA के अंदर, उन्नीस सौ इकहत्तर में जेल की हवा भी इन्हें खानी पड़ी। लेकिन कविता का निरंतर प्रभाव रुका नहीं।

संपादक के रूप में 1. दिगंबर कविता का विशेष संकलन (1969 में) 2. प्रजा शक्ति (1980 से 1982 तक) 3. विश्व कविता संकलन (A.G.Office के द्वारा 1991 में) निखिलेश्वर जी ने काम किया।

निखिलेश्वर जी की कविताएँ, हिंदी, मराठी, पंजाबी, गुजराती, बंगाली, ओड़िया, तमिल, मलयालम, कन्नड़, असमिया, भाषाओं में अनूदित हैं।

इनकी अनेक कविताएँ राष्ट्रीय स्वर की अनेक पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित भी हुई हैं।

आकाशवाणी के द्वारा भी इनकी कविताओं का प्रचार प्रसार अनेक बार हुआ। और अब भी जारी है।

इस संदर्भ में मुझे उन दिनों का स्मरण हो आ रहा है जब मैं आकाशवाणी में कार्यक्रम निष्पादिका थी। 1993 प्रांतों में 'जीवन धारा तुंगभद्रा' नामक मेरा रूपक राष्ट्रीय रूपक शृंखला के अंतर्गत, देश भर के आकाशवाणी

केंद्रों से प्रसारित हुआ। इसकी रचना तथा प्रस्तुति मेरी ही थी। निखिलेश्वर जी से मैं ने प्रार्थना की कि कृपया इसे सुनें तथा अपनी राय दें।' इतने विख्यात कवि होते हुए निखिलेश्वर जी ने इस रूपक को सुनकर अपने अभिनंदन को अक्षर रूप देकर मुझे बहुकृत किया जो अभी भी testimony की तरह मेरे पास सुरक्षित है।

चलिए अब इन यादों के झरोखों से निकलकर आगे बढ़ें। निखिलेश्वर जी 'ध्वन्यालोक' मैसूर के फेलो शिप पाने के बाद, केंद्रीय साहित्य अकादमी तेलुगु सलाहकार मंडल के सदस्य भी रहे। (1992 से 1997 तक)

अकादमी की तरफ से केरल राज्य में यात्रा करने के बाद ICFA के प्रतिनिधि के रूप में, अमेरिका, चैना में यात्रा के दौरान अनेक साहित्यिक कार्यक्रमों में उन्होंने भाग लिया।

कई पुरस्कारों ने निखिलेश्वर का वरण कर, अपनी ख्याति बढ़ाई जैसे अवान्तस सोम सुंदर अवार्ड, तेलुगु विश्व विद्यालय पुरस्कार, श्री श्री सेंटेनरी पुरस्कार आदि अनेकों।

मुंबई, मैसूर, संभलपुर, भुवनेश्वर, गोवा, केरला, भिलाई, धारवाड़, इत्यादि अनेकों शहरों में इन्होने अपनी सक्षम वाणी सुनाई।

इनकी मुख्य रचनाएँ हैं, 'दिगंबर कवलु , मुन्दुन्न तरं, ई नाटिकी?, नालुगु स्तम्भाल साक्षिगा ना नगरम , अग्निश्वासा (साहित्य अकादमी द्वारा पुरस्कृत) निखिलेश्वर कवित्वं, The life Edge of Knife, इतिहास के मोड़ पर (हिंदी कविता संकलन) आदि।

इनकी गद्य रचनाएँ हैं, 'गोडला वेनुका' 'Political And Literary critic over Virasam' 'प्रपन्च साहित्यं लो तिरुगुबाटु उद्यमालु' 'निखिलेश्वर कथलु' (इनकी कहानियाँ) 'मारुतुन्न विलुवलु–समकालीन साहित्यं' 'आवहिंचिना अक्षरं' इत्यादि।

अनुवाद कला में भी निखिलेश्वर जी बहुत ही कुशल हैं। इनकी अनुदित रचनाएँ करीब 10 तक हैं।

केंद्र साहित्य अकादमी के द्वारा पुरस्कृत होने के बाद 'साक्षी' नामक दैनिक समाचार पत्रिका के लिए दिए हुए साक्षात्कार में उन्होंने कहा, 'जीवन संघर्ष मय है। समाज में फैली कुरीतियों को शॉक ट्रीटमेंट देने के लिए 1970 दशक में दिगंबर कविता का आविर्भाव हुआ था। दशक ही नहीं, शतक भी बदल गया, लेकिन अभी भी आज की युवा पीढ़ी की भावनाएँ टेढ़ी मेढ़ी ही हैं। मात्र पैसे की कमाई ही उनका लक्ष्य है। इन सबों को ठीक रास्ते पर लेन से ही समाज में प्रगति साध्य है।'

आगे उन्होंने कहा, 'कवि वर्ग के लिए यह परीक्षा का समय है। राष्ट्रवाद, देशभक्ति सदा चाहिए ही, लेकिन मूढ़ वादिता तथा संकुचित राष्ट्रीय तत्व तो बहुत ही खतरनाक हैं। कवि, इन सब कुरीतियों का सामना करने के लिए कविता को आयुध बनाता है तो उसे जेल भी जाना पड़ता है।'

वे आगे कहते हैं– 'आज भले ही विविध वर्गीय रचनाकार, दलितवाद, स्त्रीवाद, माइनॉरिटीवाद, भुभुक्षुवाद जैसे अलग–अलग वादों के आराधक हो गए हैं, लेकिन इन सब की दृष्टि मात्र अपने ही वाद की तरफ टिक कर रह गई है। राष्ट्रवादिता तो नहीं के बराबर है। क्या करें?'

निखिलेश्वर जी को देखने से पता चलता है कि वे बड़े ही सीधे–साधे स्वाभाव के हैं। सादगी उनकी नस–नस में है। उनकी कविताओं में जो धर्माग्रह है, वह भी स्वच्छ तथा कठोर सत्य है। स्पष्ट है। तीखा है। उनकी भावनाओं में जो वेदना झलकती है, वह भी असली है, नकली नहीं।

निखिलेश्वर जी आजकल की कविता तथा कवियों को देखते हुए अचरज में पड़ जाते हैं कि इस जमाने के कवि नाम और कमाई के पीछे पड़ जा रहे हैं। 'विश्व श्रेय : काव्यं' वाले उत्तम लक्ष्य को इनकी कविताओं में ढूँढ़ पाना मुश्किल है। लेश मात्र भी देश की चिंता नहीं है इनमें! छोटी–छोटी कविताएँ लिखकर बड़ा नाम कामना इनका लक्ष्य है। कलम के सिपाही आज पुरस्कारों और ओहदों के सिपाही हो गए हैं।

आखिर में उन्होंने कहा कि दिगंबर कविता आंदोलन के बाद वि.र.सं. में भी कुछ साल मैं रहा। लेकिन मैंने निर्णय ले लिया कि मेरी कविता मेरा आयुध है। स्वतंत्र रूप से ही मैं सामाजिक सर्वोन्नत क्रांति के लिए लड़ता रहूँगा। नाम नहीं बदला न कि भावनाओं को! 1965 की वही ऊर्जा अभी भी मुझ में है। वही लक्ष्य है मेरा! साहित्यिक आंदोलन और मेरे जीवनानुभवों के तरंग मुझे आगे बढ़ाते रहे और बढ़ाते रहेंगे भी!

डॉ. मृणालिनी जी जो साहित्य अकादमी के तेलुगु सलाहकार मंडली में हैं, उनके साथ यू–ट्यूब के साक्षात्कार में अपने दिल के अनेक विषयों को प्रकट किया।

उन्होंने कहा कि सोमरसेट मॉम का प्रभाव उन पर गहरा है। भक्ति वाद, भाव कविता तथा आध्यात्मिकता का भी प्रभाव उन पर है। दिगंबर कविता में प्रवेश के पहले से ही समाज की स्थिति को देखकर उनके मन में वेदना उमड़ पड़ती थी। 1960 में प्रकाशित उनकी तेलुगु कविता 'कोपं तो वेनक्कि चूडु' (क्रोध से पीछे मुड़कर देखो!) ही इसका साक्षी है।

भले ही उन्होंने माना कि अपनी दिगंबर कविता में जो शिल्प है, बाद की कविताओं में नहीं है। लेकिन मुझे लगा कि वि.र.सं. (विप्लव रचयितला संघमं्) के सिद्धांतों के अनुसार लिखी गई उन कविताओं का शिल्प तो पूरी तरह भिन्न होगा ही! बाद में मेरे जीवनानुभव, राजनीतिक परिणाम के नेपथ्य में जिन कविताओं की रचना मैंने की, उनका शिल्प तो भिन्न लेकिन उचित भी है। तिस पर अश्लील पदावली के मोहर से छुटकारा पाकर मेरी कविता, धर्मग्रह की ओर अधिक तीखी दृष्टि फेरने लगी।'

इस तरह निखिलेश्वर जी की कविता की पंछी दूर गगन की छाँव तक पहुँच गई है, धर्मग्रह का आयुध लेकर!

अपनी कविताओं में युद्ध के नेपथ्य में लिखी गयी कविताओं को वे सर्वोपरि मानते हैं। स्त्री की समस्याओं पर भी निखिलेश्वर जी ने अपनी सशक्त लेखिनी चलाई, कहानियों के द्वारा!

इनकी कविताओं और कहानियों में जीवन प्रतिफलित होने का ढंग ही कुछ और है। आयिन स्टीन की बातों को वे शत प्रतिशत मानते हैं और कहते हैं–

'मजहब के बिना साइन्स लंगड़ा है,
साइन्स के बिना मजहब अंधा है।
धर्म के बिना विज्ञान लंगड़ा है,
विज्ञान के बिना धर्म अंधा है।'

आजकल का समाज पूरी तरह भौतिक वांछाओं का भूखा हो गया है। अब फिर से शॉक ट्रीटमेंट देने के लिए दिगंबर कविता को दूसरा रूप धरकर आना ही होगा!'

निखिलेश्वर जी की आशा पूरी होने की संभावना तो नियति के हाथ में है।

आधार ग्रंथ :

1. निखिलेश्वर, अग्निश्वास (कविता संग्रह)
2. निखिलेश्वर, नालुगु शताब्दाल साक्षीगा ना नगरम (कविता संग्रह)
3. निखिलेश्वर कवित्वं, एमेस्को प्रकाशन (कविता संग्रह)
4. निखिलेश्वर, कालान्नी अधिगमिंची (कविता संग्रह)
5. Nikhileswar , Life & The Edge of the knife, (Poetry)
6. निखिलेश्वर, प्रपंचा साहित्यं लो तिरुगुबाटु उद्यमालु (गद्य)
7. निखिलेश्वर, निखिलेश्वर कथलु (गद्य)
8. आर. वेंकटेश्वरा राव, साहित्य तत्वं (आलोचना)
9. कडियाला राम मोहन राय, तेलुगु कविता विकासमु (आलोचना)
10. आचार्य के. के. रंगनाथाचार्य, तेलुगु आधुनिक साहित्यं लो विभिन्न धोरानुलु (आलोचना)
11. यू ट्यूब में उपलब्ध, निखिलेश्वर जी से साक्षात्कार (आई. ड्रीम)

निखिलेश्वर के काव्य में व्यक्त सामाजिक चेतना

टी. श्रीलक्ष्मी

शोध सार : किसी परिवार या समाज या देश को सुव्यवस्थित रूप से चलाने के लिए राजनीति का सहारा लेना पड़ता है। "सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक रचना राजनीतिक परिप्रेक्ष्य और मुद्दों पर प्रतिक्रिया के बिना कभी नहीं हुई है।" ऐसा माननेवाले कवियों में से निखिलेश्वर एक हैं। उन्होंने घोषणा की कि "जब तक दुनिया में भूख और गरीबी है, किसी में भी साम्यवाद को चुनौती देने की हिम्मत नहीं है।" जीवन में उनकी सादगी, कविता में सरलता, विनम्रता और ईमानदारी ऐसी विशेषताएँ हैं जो किसी भी समूह में से देखी जा सकती है। गहन विचारों से उनकी कलम चलती है चाहे वह कविता, कहानी, निबंध, आलोचना या अनुवाद। वह विचारकों के मस्तिष्क को छू जाती है। यह सोचने पर मजबूर कर देता है। यह हमें समाज को बदलने, निराशा के अंधेरे तोड़ने और सक्रिय दिखाने का आग्रह करता है।

बीज शब्द : चेतना, वंशज, अनंत, तांडवनृत्य, अशांत, ग्रामीण गरीब

निखिलेश्वर जी का वास्तविक नाम कुंभम यादव रेड्डी है (1938) उन्नीस सौ अड़तीस ईसवी में नलगोंडा जिले के भुवनगिरि के पास वीरवेल्ली गाँव में श्री कुंभम नरसय्या और नरसम्मा के एक गरीब किसान परिवार में पैदा हुआ इकलौता बेटा है। एक साल की उम्र से पहले ही उन्होंने अपने पिता को खो बैठा था। उसकी माँ अपना घर छोड़कर शहर आ गयी। वह कड़ी मेहनत करके अपने बेटे की देखभाल की। वे अपनी माँ के प्रति प्रेम प्रकट करते हुए कहते हैं कि अपना एक मजदूर परिवार है। इससे हमें यह स्पष्ट होता है कि उनके ग्रामीण गरीब किसान की पृष्ठभूमि और निखिलेश्वर जी की जनपक्षधर संस्कृति। रजाकारों के कुकर्मों के डर से घास के मैदानों में छिपकर रहने की घटना और अत्यधिक गरीबी और इकलौती संतान होने के कारण व्याप्त असुरक्षा की भावना उन्हें अभी तक भुलाया नहीं जा सका। वे ग्रामीण गरीबों के समुदाय के साथ घूमते रहते थे। एक नई पीढ़ी के लिए नये रक्त को इंजेक्ट करने के लिए, मानसिक शांति के लिए उनका आत्मनिरीक्षण प्रस्तुत 'हमारी विरासत' कविता के माध्यम से बताया गया है।

> अपनी सुरक्षा के लिए
> उन दीवारों को हमने ही बनाई
> अशांति से
> राहत पाने के लिए
> हमने तांडवनृत्य किया
> घोर अंधकार को तोड़ कर
> रोशनी देने के लिए
> किताबों को हमने लिखी

बलिदानियों का खून
अब दिलों कक द्वार खोलकर
दूर तक देखने से
उस समय के समानांतर दौड़ रही है
अनुभवों की विरासत में
यह पीढ़ी...

'चेतना' शब्द का अर्थ है – ज्ञान, होश, चैतन्य बोध जीवन है। कहा गया है कि जड़ 'या चेतना' में ही जगत् के सब पदार्थ निहित हैं। 'चेतना' में इच्छा, संवेदना और क्रिया निहित हैं। 'चेतना' शब्द का प्रयोग मानसिक क्रियाओं के लिए किया जाता है। मनोविज्ञान यह सिद्ध करता है– "चेतना मानव को विभिन्न अनुभूतियाँ प्रदान करनेवाला महत्वपूर्ण तत्व है। चेतना की परिभाषा नहीं हो सकती है। हम केवल अनुभव कर सकते हैं कि चेतना क्या है? लेकिन दूसरों को नहीं बता सकते।" – डी. डी. रघुसेन – डिक्शनरी आफ फिलासफी पृ 94

नये नाम की खोज करते समय कम्मिशेट्टि वेंकटेश्वर राव ने दिगंबर कवि के रूप में नया काव्य आंदोलन शुरू किया था। इसे हम सभी ने तुरंत स्वीकार कर लिया। हमने फैसला कर लिया है कि हमारे सभी नाम जातियों को दर्शाते हैं। इसलिए नया काव्य आंदोलन के अनुसार के. यादवरेड्डी – निखिलेश्वर के रूप में, ए. वी. राघवाचारी– ज्वालामुखी के रूप में, केशवराव – नग्नमुनि के रूप में, कम्मिशेट्टि– महाबोधि के रूप में और मन मोहन सहाय भैरवय्या के नाम से प्रसिद्ध हुए। कई बैठकों के बाद दिगंबर कवियों के लिए एक स्पष्ट स्वरूप तैयार हुआ है। हम सभी छः लोगों ने निड़र होकर उस समय के युवाओं के सामूहिक विद्रोह के लिए अपनी आवाज उठाई। हमने दूसरी दुनिया का सपना देखने के लिए मौसमों का भी नया नामकरण किया है– नग्न नामसंवत्सरम्, निखिलेश्वरनाम संवत्सरम्, ज्वाला नाम, चेरबंडा नाम, भैरव नाम, महास्वप्न नाम संवत्सरम् हैं। हमने ऋतुओं के नाम भी बदल दिए हैं– हमारे मौसम छः हैं– आश ऋतु, तपन ऋतु, अश्रु ऋतु, मदिरा ऋतु, विरह ऋतु, विषाद ऋतु। हमने सप्ताहों के नये नाम रखे हैं– हमारे सप्ताह छः हैं– स्नेह सप्ताह, क्रांति, सृजन, विकास, अनंत सप्ताह। व्यक्तिगत अस्तित्व के संरक्षण के लिए अक्षरों में नया विश्वास और आशा व्यक्त करने के इरादे से लिखी भावना को प्रस्तुत कविता में हम देख सकते हैं –

एक सार्वभौमिक गीत

'जब मैंने अधखुली आँखों में / अनंत आकाश को
अपना लिया था / अनंत रोदसी यात्रा में
वायु बनकर / विश्वगीत बनकर

मेरे सारे अस्तित्व का विस्तार होते ही
राग द्वेष से परे / पंचभूतों के प्रलय तांडव नृत्य में
विश्वांतराल में / क्रांति का झंडा फहराते हुए
विश्व नर के वंशज के / पता के लिए
आकाश से / एक सतत साँस सा
बरस रहे स्नेह महा सागर–सा
भूमि पुत्रों के साहस में/ लीन होते ही
कहीं भी देखो / पृथ्वी भर
विश्व नर के वंशज ही!'

दिगंबर कवियों के रूप में उनकी दिशा ने सनसनी पैदा कर दी। लेकिन (1969) उन्नीस सौ उनहत्तर तक आते–आते उनकी सोच में एक संकट, एक गंभीर मंथन शुरू हो गया। (1970) उन्नीस सौ सत्तर से एक और महत्वपूर्ण मोड़ वह था जब श्रीश्री, ज्वाला और अन्य लोगों ने नागरिक अधिकार आंदोलन में लोगों को उत्साहित करने के लिए दूरदराज गाँवों का दौरा किया और सार्वजनिक बैठकों में कविता पढ़ी। (1969) उन्नीस सौ उनहत्तर में पचास दिन जेल जीवन, वे अनुभव 'गोड़लु वेनुक' (दीवारों के पीछे) का लेखक बन गये। तभी 'मंडुतुन्न तरम्' संकलन प्रकाशित हुआ था। (1991) उन्नीस सौ इक्यानबे से (1996) उन्नीस सौ छियानबे तक वे केन्द्र साहित्य अकादमी के तेलुगु सलाहकार परिशद के सदस्य थे। उन्होंने कई साहित्यिक सम्मेलनों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में साहित्य विषयों पर भाषण दिया है। उनके राष्ट्रीय स्तर पर काव्यगोष्ठियाँ, पुरस्कार एवं काव्य पाठ निरंतर चलते रहे हैं। सारांश यह है कि निखिलेश्वर जी के चेतना संपन्न विचारों के कारण उनके काव्यों में एक नया मोड़ परिलक्षित होता है। ○

संदर्भ सूची :

1. निखिलेश्वर कवित्वम् – 5 Decades of Nikhileshwar"s Poetry EMESCO Books, Hyderabad
2. निखिल लोकम् – An autobiography – The world of Nikhil EMESCO Books, Hyderabad
3. युगस्वरम् (Yugaswaram) - The voice of an era
Navodaya Book House, Kachiguda - Hyderabad

मानवतावाद के हस्ताक्षर कवि निखिलेश्वर

जयप्रकाश नागला

शोध सार : तेलगु साहित्य का अपना एक पृथक अंदाज है। तेलगु कविताओं का हिंदी अनुवाद है दिगंबर कविता का अनुवाद डॉ. एम. रंगय्या ने किया है। यहाँ मै आपको परिचय कराता हूँ तेलुगु और हिंदी के साहित्यकार निखिलेश्वर से। निखिलेश्वर तेलंगाना के नामचीन साहित्यकार हैं। तेलुगु और हिंदी में उनका साहित्य विपुल मात्रा में प्रकाशित हुआ है। अहिंदी भाषी क्षेत्र से उन्होंने तेलुगु और हिंदी के बीच समन्वय पुल बाँधने का कार्य किया है। उल्लेखनीय है कि हाल ही में निखिलेश्वर को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है।
बीज शब्द : दिगंबर कवि, कविता, साहित्यकार, मानवतावाद, संवेदनशील मन

तेलुगु साहित्य का अपना एक पृथक अंदाज है। तेलुगु कविताओं का हिंदी अनुवाद है दिगंबर कविता अनुवाद डॉ. एम. रंगय्या ने किया है। एक बात दीगर सत्य है कि भारतीय भाषा साहित्य में साहित्यकारों ने मानवतावाद पर अधिकतम सृजन किया है। हिंदी के साहित्यकारों ने भी अपने साहित्य को इसी धरातल पर उतारा है। प्रेमचंद जैसे महान लेखक ने इसी विषय पर अपनी अधिकतम रचनाओं को केंद्रित करते हुए भारतीय समाज को बेनक़ाब किया है। तेलगु साहित्य में भी प्रेमचंद के दौर से ही बदलाव आया, यह नहीं कहा जा सकता। लेकिन प्रेमचंद के साहित्य से कुछ साहित्यकारों ने भारतीय साहित्य का परिवेश बदलने का असफल प्रयत्न किया। उसी समय भारतीय साहित्य में मात्र इतना ही फर्क देखा गया, वह था हिंदी साहित्य में दलित साहित्य। दलित साहित्य को पढ़ने और समझने में दलित साहित्यकारों ने हिंदी में भी बहुत सृजन किया है।

यहाँ मै आपको परिचय कराता हूँ तेलुगु और हिंदी के साहित्यकार निखिलेश्वर से। निखिलेश्वर तेलंगाना के नामचीन साहित्यकार हैं। तेलगु और हिंदी में उनका साहित्य विपुल मात्रा में प्रकाशित हुआ है। अहिंदी भाषी क्षेत्र में उन्होंने तेलुगु और हिंदी के बीच समन्वय पुल बाँधने का कार्य किया है। उल्लेखनीय है कि हाल ही में निखिलेश्वर को साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है।

मैंने उनके साहित्य में प्रखर मानवीय संवेदनाओं की धधग देखी है। उनके भीतर मानवीय संवेदना कूट–कूट कर भरी है। इसको अंतर्मन के भीतर से निकालकर साहित्य धरातल के गुलदस्ते में बहुत ही विचारात्मक रुप से सजाया है। उनकी एक कविता की पंक्तियों को प्रस्तुत करता हूँ–

मारने की चाह
'अब सभ्य देशों में
जान से मारने की चाह
प्रवाहित हो रही है।
बर्बर जातियाँ

शरमा रही हैं
सभ्य देशों की पाशविक प्रवृत्ति को देख।
किसी के उद्धार के मिस
खूनी नख
फाड़ने में व्यस्त है।'

आये दिन देश के किसी भी प्रांत में दंगे होते। कहने को तो हम सभ्य हैं, लेकिन कब और कैसे वह बंधा क्रूर नियति के जाल में, मनुष्य फँस रहा है, और इस जाल से बाहर वह किस तरह निकले यह तो नहीं सोचता, वह सोचता है तो सिर्फ अपने अहम, दंभ, अभिमान, हिंदू, दलित, ईसाई, मुस्लिम या फिर हिंदुस्तान और पाकिस्तान के बारे में। आनेवाली युवा पीढ़ी से क्या अपेक्षा रखें, इस बात पर गहन चिंतन की आवश्यकता हर किसी को है। कविवर निखिलेश्वर ने कविताओं में मनुष्य मन की उस पीड़ा को टटोला है, जो उसी के भीतर किसी अंधियारे कोने में छिपी है। मनुष्य मानो भीतर ही भीतर कराह रहा है। कवि के चिंतन में साफ झलक रहा है आतंकवाद, दहशत, फसाद का विरोध। मनुष्य का अहंकार ही मनुष्य को आपस में लड़ाता है। 'मनुष्य का मांस' नामक उनकी छोटी और चंद शब्दों की कविता में बहुत ही गहरे दृष्टिकोण से अपनी बात पाठकों के सामने रखी है।

'हथियारों के विक्रेताओं के गोदाम में
अफीम निकट ही है मशीनगन
मानव–मांस के विक्रेताओं के बाजार में
उत्तर–दक्षिण, वियेतनाम के लोंगो का मांस
टूटे हाथ–पैर
जोशीले साम्राज्यवादियों का है आहार।
अहंकारी चल पड़ते हैं
कुकुरमुत्ते की जमीन पर।'

कवि मन एक दंभ और अहंकार के बीच पनप रही साम्राज्य के विस्तारवादी सोच पर भी सोचता है। कविता की लंबाई से ज्यादा ऊँचे, गहरे चिंतन का दर्शन ऊपरयुक्त पंक्तियों में कवि द्वारा व्यक्त किया गया है। विगत दो तीन वर्षों से कोरोना से पीड़ित जनमानस नहीं चाहता कि अब भी मनुष्य को मनुष्य से लड़ना ही पड़ेगा। वास्तविक तथ्य यह भी है कि कितना भी मानवतावाद, साम्यवाद का जामा पहन ले, यह सबसे बड़ी उपलब्धि मनुष्य के लिए हो सकती है।

भैंसे की चर्बी से / भरे इन दिलो को
अपने लोह–हसतों से / पिघलाने के लिए
आमंत्रित करता हूँ मैं तुम्हें।

निखिलेश्वर संवेदनशील मन के कवि होने के साथ ही सरल भाषी कवि भी उन्हें कहना मेरी दृष्टि से अनुचित नहीं होगा। मैंने उनकी एक कहानी पढ़ी जिसमें भी उनका विद्रोह ही चीखता है। कुछ लोग असंवेदनशील होते हैं। 'धूमिल हुआ नेह का चाँद' कहानी में वास्तविक सोच मात्र मानवतावाद तक ही सीमित नहीं है। विगत कितने ही दशकों में किसी साहित्यकार ने इतना स्पष्ट

नहीं लिखा होगा। प्रेमचंद जैसे लेखकों के लिए भले ही उन दिनों लिखना एक मूरधन्यता थी, परंतु निखिलेश्वर भी अनेक विचारों को लेकर अपनी कलम को एक डर से बाहर निकालकर आदेशित करते हैं। भूख और बेकारी पर उनकी पंक्तियाँ 'अपने देश में एकाकी हूँ' कविता में पढ़ी।

रोज सिर पर / तनाव बढाती
प्रबल भूख, / बेकारी के शुल
उन शूलों में / सुंदर मुख वाले फल।

किसी एक विषय की मोहताजी नहीं करते हुए लिखी गई कविताओं के दस्तावेज खंगाल कर जब मैं लिखने के लिए अपनी कलम से शब्द शब्द पिरो रहा था तब मुझे भी मेरा अंतर्मन पूछ रहा था कि कविता वही लोग लिख पाते हैं जो मानव मन की संवेदना को समझते हैं। मेरी यह अप्रत्याशित सोच कितने प्रतिशत सही है, इसका प्रमाण मात्र निखिलेश्वर की कविताओं में मिल जाता है। उनके अनुसार ही कहना चाहता हूँ कि इक्कीसवीं सदी में पदार्पण करने के बाद भारतीय भाषा साहित्यकारों की तरह तेलगु साहित्य को भी अपनी आधुनिक वैज्ञानिक जनधर्मी, लोक–चेतना के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। सही मायने में कविताओं के अक्षर–अक्षर मानव मन की संवेदनाओं का है, दस्तावेज होते है। कविताएँ आम जीवन से तभी जुड़ती है जब कोई कवि जनधर्म और मानव संवेदनाओं से जुड़कर लिखता है। निखिलेश्वर ने तेलुगु, हिंदी और अंग्रेजी तीनों भाषाओं में साहित्य सृजन किया है। उनका अंग्रेजी कविता संग्रह प्रकाशित हुआ है। शुरुआती दौर में उन्होंने तेलुगु में ही लिखा, कुछ दिनों बाद वे हिंदी और अंग्रेजी की ओर मुड़े। निखिलेश्वर मूलतः तेलुगु भाषी होने के कारण अपने साहित्य का विस्तार–प्रचार का उद्देश्य लेकर वे अपने साहित्यिक विचारों को गति देना चाहते थे। उनकी तेलगु कविताओं का अनुवाद धर्मयुग – युगप्रभात आलोचना आदि पत्रिकाओं में कविता एवं गीत प्रकाशित हुए। निखलेश्वर अखिल भारतीय स्तर पर भी कवि सम्मेलन, साहित्य सम्मेलन में अपनी सहभागिता दर्ज की।

उनके द्वारा लिखित आलेख में एक पंक्ति बहुत ही विचारणीय है कि राष्ट्रीयता के सन्दर्भ में लेखक, साहित्यकार मानवता को मात्र अक्षरों में खोजते है। यह एक वास्तविक कथन उनकी कविताओं में भी इस बात के प्रत्यक्ष उदाहरण मिल ही जाते है। मानव जीवन की कई साधारण स्थितियों में निरंतर जीवन संघर्ष की सच्चाई को उजागर करते हुए असाधारण प्रश्नों को उठाना होगा। मानवीय समाज के निर्माण में समकालीन तेलुगु साहित्य को कई चुनौतियों का सामना करना होगा। उनके इस चिंतन को व्यापक रुप से लिया जाये तो यह बात मात्र तेलगु साहित्य के लिए ही लागु नही होती, बल्कि हिंदी के साथ – साथ हर प्रादेशिक भाषा के साथ समाननंतर लागु होती है। यदि हर भाषा के वरिष्ठ साहित्यकारों के अंतर्मन का बारीकी से जायजा लिया जाये तो निशचित ही निखिलेश्वर ने साहित्यकार, कवि और लेखक के मन की पीर को उजागर किया है। 'आमंत्रित करता हूँ' से उनकी कविता से चंद पंक्तियाँ प्रस्तुत करता हूँ,

'तेरे घर को लुटते
निर्मम लुटेरों से बचाने

संपूर्ण सुंदर समता की
स्थापना के लिए
अपने सामर्थ्य की परीक्षा के लिए
आमंत्रित करता हूँ तुम्हें।'

यहाँ निखिलेश्वर के भीतर एक जागरूक कवि अपनी कलम के साथ न्याय करता है कि मानव जीवन कितना अनमना–सा हो गया है। निरंतर संघर्षरत है। यदि इससे स्वयं को और स्वयं के घर को बचाकर रखना है तो तुम्हारे सामर्थ्य की हर तरह से परीक्षा ली जाएगी, उसमें सफल होने के लिए आवश्यक है क्षमता। इसलिए मैं तुम्हें आमंत्रित करता हूँ। साहित्यकारों की एक जैसी परिपाटी कुछ दशक पहले नज़र आती थी। जिसमें पीड़ा, करुणा, मानवता, संवेदना आदि के दर्शन हुआ करते थे। अब आधुनिक साहित्य पर पश्चिमी साहित्य भी हावी हो रहा है या साफ–साफ कहा जा सकता है कि हो गया है। साहित्य को चिंतन मुक्त कर दिया है, वर्तमान साहित्य ने। मानवतावाद पर लिखने वाला लेखक कब का मानवतावाद के विषय में बहुत सटीक लिख़ना भूल गया है। वह लिखता है फ़िल्मी– इलमी गपशप। गसिप कहानी, रंजनात्मकता में फूहड़ता। प्रचार पाने का कोई सस्ता एजेंडा बनाकर लिखता है। कविवर निराला के समय से मुक्त छंद में मानवतावाद प्रारंभ हुआ। वास्तव में मानवतावाद के बारे में मैंने पढ़ा था कि दर्शनशास्त्र में उस विचारधारा को मानवतावाद कहते हैं जिसमें मानव मूल्यों तथा उससे संबंधित समस्याओं पर ध्यान दिया जाता है। जीवन के नैतिक मूल्यों का आकलन ही मानवतावाद है। निखिलेश्वर ने 'अपने देश में एकाकी हूँ' कविता में इस विषय पर अपनी प्रस्तुति इस तरह दी है–

'मेरी अपनी संस्कृति ने
जब ठुकरा दिया मुझे
हजारों वर्षो की उन्नति
मेरी ही आँखों के आगे
मेरी सोच के प्रहार से
शिथिल हो
उसे इतिहास में कही जगह न मिली।'

निखिलेश्वर के साहित्य में भी मानवतावाद की प्रखर झलक मिलती अवश्य है। उक्त पंक्तियों में कवि ने एक पीड़ा को अपने अंतरमन से बाहर निकाला है। इतिहास के मोड़ पर, दिगंबर कविता, विविधा काव्य संग्रह में निखिलेश्वर की कविताएँ पढ़ी। उनकी इन्हीं कृतियों को ध्यान में रखते हुए इस वर्ष का साहित्य अकादमी पुरस्कार उन्हें प्राप्त हुआ है। ○

संदर्भ सूची :

1. दिगंबर कविता, अनुवादक–डॉ. एम रंगय्या–पृ.46, 47, 48, 49, 50, 51, 52, 53
2. इतिहास के मोड़ पर, निखिलेश्वर–पृ.7, 8, 27 आदि

लेखकों के नाम व पते

1. **प्रो. आई. एन. चंद्रशेखर रेड्डी,** सेवानिवृत्त प्रोफेसर, फ्लैट नं.401, चतुर्थ तल, रोड नं.36, प्लॉट नं.914, अरटि कायला मेट्रो रेसिडेंसी, उप्पल भगायत–1, एचएमडीए लेआउट, हैदराबाद–500039, तेलंगाना, ई–मेल–increddy.1954@gmail.com, मो. 9849670868

2. **प्रो. ऋषभदेव शर्मा,** 208–ए, सिद्धार्थ अपार्टमेंट, गणेश नगर, रामंतापुर, हैदराबाद–500013, तेलंगाना, ई–मेल–rishabhadeosharma@yahoo.com, मो.8074742572

3. **डॉ. देवाप्रसाद मायला,** 4–4–4/7, स्ट्रीट–7, लालम्मा गार्डन्स, पुप्पलगूडा, मनिकोंडा, हैदराबाद–500089, ई–मेल–devaprasadmyla@gmail.com, मो.9849468604

4. **डॉ. के. श्यामसुंदर,** सह–आचार्य, प्लॉट नं.693, जेएनआर एवं केएलआर फेस–2, मेडचल पोस्ट, मेडचल मलकाजगिरी जिला–501401, तेलंगाना, ई–मेल–shyamsunder.kondaveeti@gmail.com, मो.9848285647

5. **डॉ. विनीता कृष्णा,** हिंदी विभागाध्यक्ष, अरोरा डिग्री कॉलेज, चिक्कडपल्ली, अ–804, 8–3–328/1, सत्व मगनूस, शेकपेट, हैदराबाद–500033, तेलंगाना, ई–मेल–drvinita06@gmail.com, मो.9949071810

6. **डॉ. अजित चुनिलाल चव्हाण,** एसोसिएट प्रोफेसर, वसंतराव चव्हाण कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, श्री हेरंब, प्लॉट नं.12/ए, सरस्वती कॉलोनी, साईबाबा नगर के पास, शहादा, जिला–नंदुरबार–425409, महाराष्ट्र, ई–मेल–Chavan.ajit2@gmail.com, मो.9156583195

7. **डॉ. लक्ष्मणाचार्युलु. म.,** एस.एस. अपार्टमेंट्स, फ्लैट नं.401, लेन नं. 13, स्ट्रीट नं.8, हब्सीगूडा, हैदराबाद–500017, तेलंगाना, ई–मेल–lakshmanmarimganti123@gmail.com, मो.9640233930

8. **डॉ. दत्ता शिवराम साकोले,** हिंदी विभागाध्यक्ष एवं सहयोगी प्राध्यापक, शि.म.ज्ञा. मोहेकर महाविद्यालय, कळंब–413507, जि. उस्मानाबाद, महाराष्ट्र, ई–मेल–sakoledatta@gmail.com, मो.8055301886

9. **डॉ. सुरेश कुमार मिश्रा 'उरतृप्त',** मकान सं.2–6–89, जयपुरी कॉलोनी, जीएसआई, हैदराबाद–500068, ई–मेल– drskm786@gmail.com, मो. 7386578657

10. **डॉ. सुपर्णा मुखर्जी**, असिस्टेंट प्रोफेसर, भवन्स, विवेकानंद कॉलेज, सैनिकपुरी, हैदराबाद–500094, ई–मेल–drsuparna.mukherjee.81@gmail.com, मो.9603224007

11. **डॉ. अपर्णा चतुर्वेदी,** सहायक आचार्य हिंदी, गवर्नमेंट डिग्री कॉलेज स्वायत, नलगोंडा––508001 (तेलंगाना), ई–मेल–aparnachaturvedi1001@gmail.com, मो.9908185455

12. **डॉ. दोड्डा शेषु बाबु,** एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, गच्चीबौली, हैदराबाद–500032, ई–मेल–doddaseshubabu@gmail.com, मो.9985281090

13. **डॉ. प्रवीण प्रणव,** बी–415, गायत्री क्लासिक्स, नल्लगंड्ला फ्लाई ओवर के पास, लिंगमपल्ली, हैदराबाद–500019, ई–मेल–praveenpranav@gmail.com, मो.9908855506

14. **डॉ. एल. अनिल,** सहायक प्राध्यापक (अस्थायी), दूरस्थ शिक्षा निदेशालय, मौलाना आज़ाद नेशल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद–500032, ई–मेल–alokhande10@gmail.com, मो.8106849591

15. **डॉ. टी. सी. वसंता,** घर नं. 1–9–709, गली नं. 6, अड़िकमेट, हैदराबाद–500044, ई–मेल–chintalajayasree822@gmail.com, मो.9951484545

16. **डॉ. प्रकाश,** हिंदी विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, ए.वी.कॉलेज, दोमलगूडा, हैदराबाद–500029, ई–मेल–nayakprakash595@gmail.com, मो.8886034134

17. **डॉ. रजनी धारी,** असोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभागाध्यक्ष, हिंदी महाविद्यालय, नल्लाकुंटा, हैदराबाद–500007, ई–मेल–hmv50yr@rediffmail.com, मो.8555890652

18. **श्री संतोष वसंत कांबळे,** पुस्तकालयाध्यक्ष, उच्च शिक्षा और शोध संस्थान, दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, खैरताबाद, हैदराबाद–500004, ई–मेल–shreyashju@yahoo.co.in, मो. 8125981194

19. **डॉ. सुरभि दत्त,** 1–8–700/6, पद्मा कॉलोनी, कुशल कृष्ण अपार्टमेंट, फ्लैट नं.302, नल्लकुंटा, हैदराबाद–500044, तेलंगाना, ई–मेल–dattsurabhy@gmail.com, मो.9948999258

20. **डॉ. पुट्टपर्ति नाग पद्मिनी,** प्लॉट नं.37, वंशी निलयम, तरुणा एवेन्यू, लक्ष्मी नगर कॉलोनी, ईस्ट आनंद बॉग, मलकाजगिरी, हैदराबाद–500047, तेलंगाना, ई–मेल–nagap.puttaparthi@gmail.com, मो.7893976644

21. **डॉ. टी. श्रीलक्ष्मी**, म. न. 17–1–388/45, प्लॉट. नं. 58, रोड नं.13, लक्ष्मीनगर कालोनी, साईदाबाद, हैदराबाद–500059, ई–मेल–drbsrilakshmi@gmail.com, मो.7386176326

22. **डॉ. जयप्रकाश नागला,** हाउस नं.4–4–405, महाराणा प्रताप सिंह मार्ग, गाड़ीपुरा, नांदेड–431604, महाराष्ट्र, ई–मेल–nirnaymanch@gmail.com, मो.9922874972

रचनाकारों से निवेदन

यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित **'समन्वय दक्षिण'** पत्रिका में प्रकाशन हेतु पत्रिका की प्रकृति के अनुरूप केवल दक्षिण भारत से संबंधित रचनाएँ आमंत्रित हैं। कृपया सभी लेखक अपनी रचनाएँ केंद्रीय हिंदी निदेशालय द्वारा स्वीकृत मानक हिंदी, **कृतिदेव या यूनिकोड मंगल** फॉण्ट में टाइप कर **khshyderabad@yahoo.com** अथवा **cihmysore@gmail.com** पर भेजने का कष्ट करें। दूसरे अन्य फॉण्ट में लेख भेजने पर उसके साथ फॉण्ट भी भेजें। लेख में शोध सार, बीज शब्द, संदर्भ सूची **APA** फार्मेट (लेखक का नाम, पुस्तक का नाम, प्रकाशन वर्ष, प्रकाशन का नाम व पता, पृष्ठ संख्या आदि) में होना अनिवार्य है। लेखक अपनी रचना के साथ उसकी मौलिकता तथा कॉपीराइट हस्तातंरण संबंधी घोषण पत्र भरकर भेंजे। अस्वीकृत रचनाएँ लौटाई नहीं जाएँगी। मानदेय हेतु रचनाकारों से उनके लेख के साथ बैंक अकाउंट नंबर, बैंक का नाम एवं उसकी शाखा का नाम, आई.एफ.एस.सी. कोड आदि जानकारी उपलब्ध कराना अपेक्षित है।

✂..

'समन्वय दक्षिण' सदस्यता फार्म

नाम : ....

डाक का पता : ....

....

....

सदस्यता शुल्क : व्यक्तिगत प्रति अंक रु. 40.00, वार्षिक रु. 150.00
संस्थागत वार्षिक शुल्क रु. 250/–
(डाक व्यय प्रति अंक रु.35/– तथा
वार्षिक रु.100/– अतिरिक्त होगा)
विदेशों में प्रति अंक $ 10, वार्षिक $ 40.00

डी.डी./मनीऑर्डर का विवरण : ....

दूरभाष : .... ई–मेल ....

निर्धारित सदस्यता शुल्क का डी.डी./मनीऑर्डर सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, हैदराबाद के नाम देय हो। अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :
केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र, सर्वे नं. 9, बापूजी नगर, सौजन्या कॉलोनी के पास, पोस्ट–बोवेनपल्ली, सिकंदराबाद–500 011 (तेलंगाना)

मोबाइल नं. 9456010035 फोन नं. 040–29561035
ई–मेल : khshyderabad@yahoo.com

आलेख की मौलिकता/कॉपीराइट हस्तांतरण संबंधी घोषणा प्रपत्र

Declaration regarding originality of work & copyright transfer

सेवा में,

संपादक/ The Editor
समन्वय दक्षिण (पीयर रिव्यूड एंड रेफर्ड जर्नल)
(यूजीसी केयर सूची में सम्मिलित त्रैमासिक पत्रिका)
(ISSN : 2456-9445)
केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र
khshyderabad@yahoo.com

महोदय/महोदया, Sir/Madam,

मैं/हम यह संपुष्टि करते हैं कि ....

....

शीर्षक से मेरा/हमारा यह आलेख इससे पूर्व न तो पूर्ण अथवा आंशिक रूप में कहीं भी प्रकाशित हुआ है और न यह वर्तमान में कहीं प्रकाशन के लिए विचाराधीन है।

I/We confirm that my/our paper entitled ....

.... has not previously been published in whole or in part, is not currently being considered elsewhere for publication.

उपर्युक्त आलेख संस्थान की 'समन्वय दक्षिण' पत्रिका में प्रकाशन के लिए स्वीकृत होने की स्थिति में अन्यत्र अथवा किसी अन्य भाषा में संपादक/प्रकाशक की सहमति के बिना प्रकाशित नहीं कराया जाएगा।

If it is accepted for publication in the above Journal, It will not be published elsewhere in any language, without the consent of the editor and the publisher.

मैं/हम यह भी आश्वस्त करते हैं कि उपर्युक्त आलेख मेरा/हमारा मौलिक कार्य है और इसमें किसी प्रकार की साहित्यिक चोरी नहीं की गई है।

I/We also assure that this paper is my/our original work and there is no plagiarized material in above titled paper.

मैं/हम उपर्युक्त आलेख को 'समन्वय दक्षिण' पत्रिका ISSN : 2456-9445 में प्रकाशन के लिए स्वीकार किए जाने की स्थिति में इसके शीर्षक और/अथवा विषयवस्तु में आवश्यकतानुसार संपादन (काट–छाँट अथवा संशोधन) करने का अधिकार पत्रिका के संपादक/प्रकाशक को देता हूँ/देते हैं।

I/We also grant permission to the editor/publisher of the journal for making necessary changes (addition, deletion, modification) in the title and content of the paper, if required while being considered for publication.

मैं/हम यह स्वीकार करते हैं कि उपर्युक्त विवरण के अनुसार पत्रिका में प्रकाशनार्थ स्वीकृत किए जाने की स्थिति में इसके कॉपीराइट संबंधी समस्त अधिकार प्रकाशक (संस्थान) को स्वतः प्राप्त हो जाएँगे।

I/We acknowledge that in condition of acceptance for publication, the publisher (Institute) acquires automatically the copyright of the manuscript in all ways.

(A) First Author/Corresponding Author		
Name :		Signature :
Name and Address of the Organization :		Pin Code :
City :	State :	Country :
E-mail :	Mob :	Whatsapp No. :
Residential Address With Pin Code		
(B) Second Anthor		
Name :		Signature :
Name and Address of the Organization :		Pin Code :
City :	State :	Country :
E-mail :	Mob :	Whatsapp No. :
Residential Address With Pin Code		
(C) Third Anthor		
Name :		Signature :
Name and Address of the Organization :		Pin Code :
City :	State :	Country :
E-mail :	Mob :	Whatsapp No. :
Residential Address With Pin Code		

एकल लेखक होने पर (B) और (C) “NA” में लिखें

In case of sole author, Place mention “NA” in (B) (C)

भवदीय / भवदीया

Yours

First Author (Name & Signature) :

Second Author (Name & Signature) :

Third Author (Name & Signature) :

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

(शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार)

संपर्क : हिंदी संस्थान मार्ग, आगरा – 282005, (उत्तर प्रदेश)
वेबसाइट : https://www.hindisansthan.in/

संक्षिप्त परिचय

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा– शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा 1961 ई. में स्थापित एक स्वायत्त शैक्षिक संस्था है। इसका संचालन स्वायत्त संगठन केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल द्वारा किया जाता है। संस्थान का मुख्यालय आगरा में स्थित है और इसके आठ क्षेत्रीय केंद्र : दिल्ली, हैदराबाद, गुवाहाटी, शिलांग, मैसूर, दीमापुर, भुवनेश्वर तथा अहमदाबाद में हैं।

संस्था के प्रमुख उद्देश्य

(i) भारतीय संविधान के अनुच्छेद 351 के अनुपालन में अखिल भारतीय भाषा के रूप में हिंदी का विकास करते हुए इसके विकास और प्रसार की दृष्टि से उपयोगी शैक्षणिक पाठ्यक्रमों की प्रस्तुति एवं संचालन, (ii) विभिन्न स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण हिंदी शिक्षण का प्रसार, हिंदी शिक्षकों का प्रशिक्षण, हिंदी भाषा और साहित्य के उच्चतर अध्ययन का प्रबंधन, हिंदी के साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं के तुलनात्मक भाषा वैज्ञानिक अध्ययन को प्रोत्साहन और हिंदी भाषा एवं शिक्षण से जुड़े विविध अनुसंधान कार्यों का आयोजन, (iii) अपने विभिन्न पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिए परीक्षा आयोजन तथा उपाधि वितरण, (iv) संस्थान की प्रकृति एवं उद्देश्यों के अनुरूप उन अन्य संस्थाओं के साथ जुड़ना या सदस्यता ग्रहण करना या सहयोग करना या सम्मिलित होना, जिनके उद्देश्य संस्थान के उद्देश्यों से मिलते–जुलते हों और इन समान उद्देश्यों वाले संस्थानों को संबद्धता प्रदान करना, (v) समय–समय पर नियमानुसार अध्येतावृत्ति (फैलोशिप), छात्रवृत्ति और पुरस्कार, सम्मान पदक की स्थापना कर हिंदी से संबंधित कार्यों को प्रोत्साहन आदि।

संस्थान के कार्य

शिक्षणपरक कार्यक्रम : (i) विदेशी विद्यार्थियों के लिए हिंदी शिक्षण, (ii) हिंदीतर राज्यों के विद्यार्थियों के लिए अध्यापक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, (iii) नवीकरण एवं संवर्धनात्मक कार्यक्रम, (iv) दूरस्थ शिक्षण कार्यक्रम (स्ववित्तपोषित). (v) जनसंचार एवं पत्रकारिता, अनुवाद अध्ययन और अनुप्रयुक्त हिंदी भाषाविज्ञान के सांध्यकालीन पाठ्यक्रम (स्ववित्तपोषित)

अनुसंधानपरक कार्यक्रम (i) हिंदी शिक्षण की अधुनातन प्रविधियों के विकास के लिए शोध। (ii) हिंदी भाषा और अन्य भारतीय भाषाओं का तुलनात्मक व्यतिरेकी अध्ययन। (iii) हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में आधारभूत एवं अनुप्रयुक्त अनुसंधान। (iv) हिंदी भाषा के आधुनिकीकरण और भाषा प्रौद्योगिकी के विकास के उद्देश्य से अनुसंधान। (v) हिंदी का समाज भाषा वैज्ञानिक सर्वेक्षण और अध्ययन। (vi) प्रयोजनमूलक हिंदी में संबंधित शोधकार्य। अनुसंधानपरक कार्यों के दौरान द्वितीय भाषा एवं विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण के लिए उपयोगी शिक्षण सामग्री का निर्माण।

शिक्षण सामग्री निर्माण और भाषा विकास : (i) हिंदीतर राज्यों और जनजाति क्षेत्र के विद्यालयों के लिए हिंदी शिक्षण सामग्री निर्माण (ii) हिंदीतर राज्यों के लिए हिंदी का व्यतिरेकी व्याकरण एवं द्विभाषी अध्येता कोशों का निर्माण, (iii) विदेशी भाषा के रूप में हिंदी शिक्षण पाठ्यपुस्तकों का निर्माण, (iv) कंप्यूटर साधित हिंदी भाषा शिक्षण सामग्री का निर्माण (v) दृश्य–श्रव्य माध्यमों से हिंदी शिक्षण संबंधी पाठ्यसामग्री का निर्माण, (vi) हिंदी तथा हिंदीतर भारतीय भाषाओं के द्विभाषी/त्रिभाषी शब्दकोशों का निर्माण।

संस्थान के प्रकाशन : हिंदी भाषा एवं साहित्य, भाषाविज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, तुलनात्मक एवं व्यतिरेकी अध्ययन, भाषा एवं साहित्य शिक्षण, कोश विज्ञान आदि से संबद्ध विभिन्न विषयों पर उपयोगी पुस्तकों का प्रकाशन। अब तक 200 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित। विभिन्न स्तरों एवं अनेक प्रयोजनों की पाठ्यपुस्तकों, सहायक सामग्री तथा अध्यापक निर्देशिकाओं का प्रकाशन। त्रैमासिक पत्रिका गवेषणा, संवाद पथ, समन्वय दक्षिण, समन्वय पश्चिम, प्रवासी जगत, समन्वय पूर्वोत्तर, शैक्षिक उन्मेष, भावक, संस्थान समाचार एवं दो छात्र पत्रिका 'हिंदी विश्व भारती' तथा 'समन्वय' का प्रकाशन किया जाता है।

पुस्तकालय : भाषाविज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान, भाषा शिक्षण और हिंदी साहित्य के विभिन्न विषयों की पुस्तकों के विशेषीकृत संग्रह की दृष्टि से हिंदी के सर्वश्रेष्ठ पुस्तकालयों में से एक। लगभग एक लाख से भी अधिक पुस्तकों का विशाल संग्रह उपलब्ध है। लगभग 75 से भी अधिक जर्नल, शोधपरक पत्र–पत्रिकाएँ, उपलब्ध हैं।

संस्थान से संबद्ध प्रशिक्षण महाविद्यालय : हिंदी शिक्षण–प्रशिक्षण के स्तर को समुन्नत करने तथा पाठ्यक्रम में एकरूपता लाने के उद्देश्य से उत्तर गुवाहाटी (असम), आइजोल (मिजोरम), दीमापुर (नागालैंड) के राजकीय हिंदी शिक्षण–प्रशिक्षण महाविद्यालयों की संस्थान से संबद्धता।

योजनाएँ : (i) भारतीय सांस्कृतिक केंद्र, कोलंबो एवं कैंडी में सिंहली विद्यार्थियों के लिए केंद्रीय हिंदी संस्थान के पाठ्यक्रम को 2007–08 से शुरूआत, (ii) अफ़गानिस्तान के नान्गरहर विश्वविद्यालय (जलालाबाद) में संस्थान द्वारा निर्मित बी.ए. का पाठ्यक्रम 2007–08 से प्रारंभ, (iii) विश्व के कई अन्य देशों (चेक, स्लोवाकिया, संयुक्त राज्य अमेरिका, यूनाइटेड किंगडम, मॉरिशस, बेल्जियम, रूस, जापान, उज़्बेकिस्तान एवं कज़ाकस्तान आदि) के साथ शैक्षणिक सहयोग और हिंदी पाठ्यक्रम संचालन के संबंध में संवाद जारी, (iv) हिंदी के बहुआयामी संवर्धन के लिए हिंदी कॉर्पोरा परियोजना, हिंदी लोक शब्दकोश परियोजना, भाषा–साहित्य सीडी निर्माण परियोजना, पूर्वोत्तर लोक साहित्य परियोजना, हिंदी विश्वकोश परियोजना पर कार्य।

– डॉ. सुरेंद्र दुबे
उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल

– प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी
निदेशक
ई–मेलः directorkhs1960@gmail.com

13वें हिंदी भाषा संचेतना शिविर के उद्घाटन समारोह में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी तथा हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे।
दिनांक 18.01.2025 को 13वें हिंदी भाषा संचेतना शिविर के समापन समारोह के दौरान विद्यार्थियों द्वारा तैयार की गई हस्तलिखित पत्रिका 'लघु भारत (वीर भूमि) अंडमान निकोबार' का लोकार्पण करते हुए क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं अतिथिगण।

13वें हिंदी भाषा संचेतना शिविर के उद्घाटन समारोह के दौरान प्रशिक्षणार्थी एवं अतिथि गण।

अंदमान निकोबार, पोर्टब्लेयर में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक महोदय प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी शिक्षा सचिव, श्री एल. कुमार को देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण पुस्तक भेंं की। इस अवसर पर केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे, शिक्षा निदेशक, श्री विक्रम सिंह, टैगोर राजकीय शिक्षा महाविद्यालय की प्राचार्य श्रीमती मंजुलता राव तथा राज्य शिक्षा संस्थान, की प्राचार्य, श्रीमती संगीता चंद आदि उपस्थित थे।

संत ज़ेवियर कॉलेज (सशक्त स्वायत्त संस्थान), मुंबई, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा, भारतीय वैश्विक परिषद, नई दिल्ली एवं यूनियन बैंक ऑफ़ इंडिया, मुंबई के संयुक्त तत्वावधान में दिनांक 20 एवं 21 जनवरी 2025 को दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी "हिंदी का वैश्विक परिदृश्य" के उद्घाटन समारोह के दौरान पुस्तक विमोचन करते हुए अध्यक्ष फादर डॉ. कीथ डिसूज़ा, डॉ. दामोदर खडसे, डॉ. पुनीत गौड़, डॉ. फत्ताराम नायक, सुश्री लिलिया खोवाएवा, डॉ. आशा नैथानी दायमा, डॉ. अलका धनपत, डॉ. सतीश कनौजिया एवं संगोष्ठी संयोजक डॉ. भगवती प्रसाद उपाध्याय एवं अन्य अतिथिगण।

दि.19 जनवरी, 2025 को कादंबिनी क्लब एवं केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के संयुक्त तत्वावधान में डॉ. मोहिनी गुप्ता के प्रथम काव्य-संग्रह 'प्रेम के मोती' पुस्तक के लोकार्पण के दौरान विशिष्ट अतिथि के रूप में मंच पर उपस्थित केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं अन्य अतिथिगण।

केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र में 76वें गणतंत्र दिवस के अवसर एसोसिएट प्रोफेसर, डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, डॉ. संदीप कुमार, श्री शेख मस्तान वली, श्री सजग तिवारी एवं केंद्र के अन्य सदस्य गण।

संत जोसफ महिला महाविद्यालय, (स्वायत्त) विशाखापटनम, आंध्र प्रदेश और केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) के संयुक्त तत्वावधान में दि. 3-4, फरवरी 2025 को विशाखापटनम में आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में ली गई फोटो।

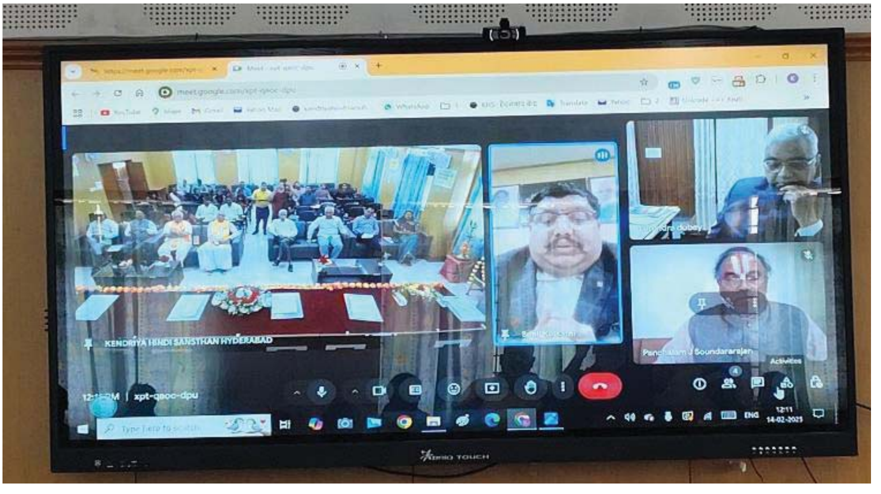

दि. 14 फरवरी**, 2025** को हैदराबाद केंद्र पर आयोजित 'काशी तमिल संगम परिसंवाद' कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में आभासी मंच से केंद्रीय हिंदी संस्थान**,** आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी मंच को संबोधित करते हुए।

दिनांक 3 फरवरी, 2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद में वसंत पंचमी एवं संस्थान के संस्थापक डॉ. मोटूरि सत्यनारायण की 124जयंती पर केंद्र सदस्य डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, डॉ. एस. राधा, डॉ. संदीप कुमार, श्री सजग तिवारी एवं श्री मस्तान वली। श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए।

दिनांक 22.02.2025 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के बहुउद्देशीय हाल में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के दौरान ली गई समूह में केंद्र क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे, डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, डॉ. एस. राधा, डॉ. संदीप कुमार, श्री सजग तिवारी एवं अन्य सदस्यगण।

14वें हिंदी भाषा संचेतना शिविर के उद्घाटन समारोह के दौरान केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए तथा मंच पर उपस्थित अतिथिगण।

विजयवाडा में आयोजित 14वें हिंदी भाषा संचेतना शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. मोटूरि सुभाष चंद्र बोस को सम्मानित करते हुए हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे साथ में डॉ. कामेश्वरी, डॉ. श्रीनिवास एवं डॉ. चारुलता।

विजयवाडा में आयोजित 14वें हिंदी भाषा संचेतना शिविर के समापन समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. मोटूरि सुभाष चंद्र बोस के साथ हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे साथ में डॉ. कामेश्वरी, डॉ. श्रीनिवास, डॉ. चारुलता एवं प्रतिभागियों के साथ ग्रुप फोटो।

481वें नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन समारोह में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के माननीय उपाध्यक्ष महोदय के साथ फोओ में 481वें नवीकरण पाठ्यक्रम में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं सांत्वना पुरस्कार प्राप्त प्रतिभागी साथ में प्रो. सर्राजु, प्रो. गंगाधर वानोडे एव डॉ. फत्ताराम नायक।

481वें नवीकरण पाठ्यक्रम के समापन समारोह में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के माननीय उपाध्यक्ष महोदय प्रो. सुरेंद्र दुबे द्वारा हस्तलिखित पत्रिका 'चंद्रपुर की धरोहर' का विमोचन करते हुए साथ में श्रीमती आशा दुबे, प्रो. आर.एस. सर्राजु, प्रो. गंगाधर वानोडे, डॉ. फत्ताराम नायक एवं डॉ. दीपेश व्यास।

हैदराबाद से प्रकाशित 'समन्वय दक्षिण' पत्रिका के अंक का विमोचन करते हुए केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के माननीय उपाध्यक्ष महोदय प्रो. सुरेंद्र दुबे साथ में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती आशा दुबे, प्रो. आर.एस. सर्राजु, प्रो. गंगाधर वानोडे, डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास एवं डॉ. एस. राधा।

केंद्र हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के माननीय उपाध्यक्ष महोदय प्रो. सुरेंद्र दुबे जी एवं उनकी धर्म पत्नी श्रीमती आशा दुबे जी के साथ गुरप फोटो में हैदराबाद केंद्र क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे, डॉ. फत्ताराम नायक, डॉ. दीपेश व्यास, डॉ. एस. राधा, डॉ. संदीप कुमार, श्री सजग तिवारी एवं श्री अजीत सिंह।

केंद्र हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा के माननीय उपाध्यक्ष महोदय प्रो. सुरेंद्र दुबे जी एवं उनकी धर्म पत्नी श्रीमती आशा दुबे द्वारा केंद्र के प्रांगण में वृक्षारोपण करते हुए साथ में केंद्र के समस्त सदस्य एवं 481वें नवीकरण पाठ्यक्रम के प्रतिभागी अध्यापक।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान कवि निखिलेश्वर जी का पुष्प देकर सम्मान करते हुए हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे साथ प्रो. अहिल्या मिश्रा एवं डॉ. राजीव कुमार सिंह।

कवि निखिलेश्वर जी परिवार सहित

पोट्टि श्रीरामुलु तेलुगु विश्वविद्यालय से वर्ष 2010 में प्रतिभा पुरस्कार प्राप्त करते हुए कवि निखिलेश्वर

वर्ष 2020 में केंद्रीय साहित्य अकादमी के अध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार के करकमलों से साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करते हुए दिगंबर कवि निखिलेश्वर।

दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान कवि निखिलेश्वर जी का स्मरण चिह्न, शॉल ओढ़ाकर सम्मानित करते हुए हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे एवं साथ में समापन समारोह में उपस्थित विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के शासी परिषद सदस्य प्रो. आर.एस. सर्राजु, प्रो. ऋषभदेव शर्मा, प्रो. एन. गोपि, प्रो. गोपाल, डॉ. निरजा गुर्रमकोंडा, डॉ. एस. राधा एवं अन्य अतिथिगण।

दि.14 फरवरी, 2025 को हैदराबाद केंद्र पर आयोजित 'काशी तमिल संगम परिसंवाद' कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित विशिष्ट अतिथि के रूप में केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के शासी परिषद सदस्य प्रो. आर.एस. सर्राजु, सम्मानित अतिथि के रूप में श्री के. सत्य राममूर्ति, आर. नागराज, केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक प्रो. गंगाधर वानोडे, कार्यक्रम उपस्थित तमिलभाषी अतिथि सदस्य एवं केंद्र सदस्यगण तथा माँ सरस्वती जी का पूजा अर्चना करते हुए।

प्रधान संपादक की कलम से...

'समन्वय दक्षिण' पत्रिका केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के हैदराबाद केंद्र से प्रकाशित दक्षिण भारत की साहित्य एवं संस्कृति पर केंद्रित पत्रिका है जिसमें दक्षिण भारतीय साहित्य, संस्कृति, भाषा, कला आदि पर शोध आलेख आमंत्रित किए जाते हैं। दक्षिण भारतीय संस्कृति का अर्थ दक्षिण भारतीय राज्यों तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु और केरल की संस्कृति से है। तेलुगु, तमिल, कन्नड और मलयालम भाषा–भाषी इलाकों में हिंदी पारस्परिक संपर्क का माध्यम ही नहीं बल्कि साहित्यिक अभिव्यंजना की वाहिका भी है।

'समन्वय दक्षिण' के प्रस्तुत अंक में तेलुगु साहित्य के दिगंबर कविता आंदोलन के प्रवर्तक कवि निखिलेश्वर जी की साहित्यिक यात्रा पर केंद्रित है। जनवरी–मार्च, 2025 का यह अंक तेलुगु की आधुनिक कविता में निखिलेश्वर जी में मार्क्सवादी विचारों द्वारा नई क्रांति का अघोष है।

इनके सात कविता संकलन एवं पाँच गद्य रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं। इन्होंने अन्य भाषाओं में रचित साहित्य का तेलुगु भाषा में अनुवाद भी किया। एक अंग्रेज़ी अध्यापक होते हुए एक समाज सुधारक कवि के रूप में सामाजिक आंदोलन में सक्रिय रहे हैं। निखिलेश्वर को उनकी तेलुगु कृति 'अग्निश्वासा' कविता संग्रह के लिए सन् 2020 में साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त हुआ है। निखिलेश्वर ने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज के दलित, निम्न एवं हाशिए के समाज के यथार्थ को प्रस्तुत किया है।उनकी कविताओं में मार्क्सवादी चिंतन का भी प्रभाव दिखाई देता है।

'गंदगी के चारों ओर/चक्कर
लगाते रीढ़–विहीन बुद्धिजीवी/
अपार अमृत जन सागर में
गिरता विष–बिंदु।'

कवि की इन पंक्तियों से स्पष्ट हो जाता है कि कवि जनता को सर्वोपरि मानते हैं। उन्हें पूर्ण विश्वास है कि जनता अगर विप्लव का बिगुल बजाएगी तो कहीं कोई भ्रष्टाचारी नेता, पाश्विक आतंकवादी अपने आपको सुरक्षित नहीं रख सकेगा।

साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित, तेलुगु एवं हिंदी भाषा पर भी अपनी पकड़ रखनेवाले, मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित तेलुगु कवि एवं साहित्यकार 'निखिलेश्वर' जी पर शोध पत्रिका का विशेषांक प्रकाशित कर हम बहुत गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

प्रो. सुनील बाबुराव कुळकर्णी
प्रधान संपादक 'समन्वय दक्षिण'
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

मुद्रक कर्षक प्रिंटर्स तथा प्रकाशक डॉ. गंगाधर वानोडे, क्षेत्रीय निदेशक द्वारा सचिव, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल के पक्ष में 40 APHB, OU रोड, विद्यानगर, हैदराबाद –500044 से मुद्रित तथा केंद्रीय हिंदी संस्थान, हैदराबाद केंद्र, सर्वे नं.9, बापूजी नगर, सौजन्या कॉलोनी के पास, रामन्ना कुंटा के सामने, बोवेनपल्ली, सिंकदराबाद–500011 (तेलंगाना) से प्रकाशित, संपादक– डॉ. गंगाधर बानोडे।